ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

11

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

खुत्बात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

11

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

नाम किताब

ख़ुत्बात ज़ुलफ़िक़ार 'फ़क़ीर'

11

मुरत्तिब : मुहम्मद हनीफ़ नक़्शबंदी

पहला एडीशन: 2014 साइज़: 23x36/16

पेज: 296 क़ीमत: 135/-

पेशकर्दा : जनाब मुहम्मद नासिर ख़ान

नाशिर

فرید بُکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House Darya Ganj, N. Delhi-2
Phones: 23247075, 23289786, 23289159 Fax: 23279998 Res.: 23262486
E-mail: farid@ndf.vsnl.net.in Websites: faridexport.com, faridbook.com

Name of the book

KHUTBAT ZULFIQAR *FAQEER* Vol. 11

By: **Prof. Muhammad Haneef Naqshbandi**

Translitration : **ABUDARDA**

Pages: 296 Price: Rs. 135/- Size: 23x36/16

Composed at: QAYAM GRAPHICS, Dehra Dun-248001
Ph.: 9675042215, 9634328430

Printed at: Farid Enterprises, Delhi-6

फ़हरिस्त-मज़ामीन

इश्क़ व मस्ती का सफ़र

हुक्मे ख़ुदा की अहमियत

मेहनत और रियाज़त

तालिबे इल्म की शान

अज़ान के फ़ज़ाइल

रोज़ा तरावीह के जिस्मानी फ़वाइद

अर्ज़-ए-नाशिर

الحمد لله لوليه والصلوة والسلام على نبيه وعلى آله وصحبه

اوتماعه اجمعين الى يوم الدين. اما بعد

उलमा और नेक लोगों के महबूब हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़्क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दी दामतबरकातुहू के उलूम व मारिफ़ वाले बयान को छापने का ये सिलसिला "ख़ुत्बाते फ़क़ीर" के उनवान से 1417 हि० (1996 ई०) से शुरू किया था और अब ये नवीं जिल्द आपके हाथों में है। जिस तरह शाहीन (बाज़) की परवाज़ हर आन बुलन्द से बुलन्दतर और बढ़ती चली जाती है कुछ यही हाल हज़रत दामतबरकातुहू के बयानात हिकमत व मारिफ़त का है। जिस बयान को भी पढ़ेंगे एक नई परवाज़े फ़िक्र नज़र आएगी। ये कोई पेशावराना ख़िताबत या याद की हुई तक़रीरें नहीं हैं बल्के हज़रत के दिल का सोज़ और रूह से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं जो अल्फ़ाज़ के सांचे में ढलकर आप तक पहुँच रहे होते हैं।

मेरी नवाए परेशाँ को शायरी न समझ
के मैं हूँ महरमे राज़ दरूने ख़ाना

"ख़ुत्बाते फ़क़ीर की इशाअत का ये काम हम ने भी इस नीयत से शुरू कर रखा है के हज़रत दामत बरकातुहुम की इस फ़िक्र से सबको फ़िक्रमंद किया जाए।" अलहम्दुलिल्लाह इदारा

"मक्तबतुल-फ़कीर" को ये ऐज़ाज़ हासिल है के हज़रत दामतबरकातुहू के इन बयानात को किताबी सूरत में अवाम के नफ़ा उठाने के लिए छापता है। हर बयान को तहरीर में लाने के बाद हज़रत दामतबरकातुहू से इस्लाह करवाई जाती है, फिर कंपोज़िंग और प्रुफ़रीडिंग का काम भी बड़ी बारीकी के साथ किया जाता है और आख़िर में प्रिन्टिंग और बाइन्डिंग का पेचीदा और तकनीकी मरहला आता है। ये तमाम मरहले बड़ी तवज्जेह और मेहनत को चाहते हैं जोके 'मक्तबतुल-फ़कीर' के ज़ेरे एहतिमाम अंजाम दिए जाते हैं। फिर किताब आपके हाथों में पहुँचती है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश की जाती है के इशाअत के इस काम में कहीं कोई कमी कोताही महसूस हो या इसकी बेहतरी के लिए सुझाव रखते हों तो इत्तिला फ़रमाकर अल्लाह के हाँ अज्र के हक़दार बनें।

बारगाहे ईज़्दी में ये दुआ है के अल्लाह जल्लेशानुहू हमें हज़रत दामतबरकातुहू के इन बयानात की गूंज पूरी दुनिया तक पहुँचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और इसे आख़िरत के लिए सदक़ा जारिया बनाएं, अमीन।

डा० शाहिद महमूद नक़्शबंदी अफ़ी अन्हु

ख़ादिम मक्तबातुल फ़कीर फ़ैसलाबाद

पेश-ए-लफ़्ज़

الحمد لله الذی نور قلوب العارفین بنور الایمان وشرح
صدور الصادقین بالتوحید والایقان وصلی الله تعالٰی علٰی
خیر خلقه سیدنا محمد وعلٰی اله واصحابه اجمعین اما بعد.

इस्लाम ने उम्मते मुस्लिमा को ऐसी मशहूर हस्तियों से नवाज़ा है जिनकी मिसाल दूसरे मज़हबों में मिलना मुश्किल है। इस एतिबार से सहाबाकिराम पहली सफ़ के सिपाही हैं। जिनमें हर सिपाही ﴿اصحابی کالنجوم﴾ "मेरे सहाबी सितारों की तरह हैं" की तरह चमकते हुए सितारे की तरह है जिसकी रोशनी में चलने वाले ﴿اهتدیتم﴾ यानी हिदायत पा जाओगे की बड़ी बशारत पाते हैं और रुश्द व हिदायत उनके क़दम चूमती है। उसके बाद ऐसी-ऐसी रुहानी हस्तियाँ दुनिया में आयीं के वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशानात छोड़ गयीं।

मौजूदा दौर में एक ज़बरदस्त हस्ती, तरीक़त के शहसवार, हक़ीक़त के दरिया के ग़ोताख़ोर, अल्लाह के भेदों को जानने वाले, नूर की तस्वीर, जाहिद, आबिद, नक़्शबंदी सिलसिले के असल, (हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ुक़्क़ार साहब) दामतबरकातुहू हैं। आप परवाने की तरह एक ऐसी कामिल हस्ती हैं के जिसको जिस पहलू से देखा जाए उसमें क़ौज़-क़ज़ह (इंद्रधनुष) की तरह रंग सिमटे हुए नज़र आते हैं। आपके बयानात में ऐसी तासीर होती है के हाज़िरीन

के दिल मोम हो जाते हैं। आजिज़ के दिल में ये जज़्बा पैदा हुआ के उनके ख़ुत्बात को तहरीरी शक्ल में एक जगह कर दिया जाए तो आम लोगों के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होंगे। इसलिए आजिज़ ने सारे ख़ुत्बात काग़ज़ पर लिखकर हज़रत अक़्दस की ख़िदमत आलिया में इस्लाह के लिए पेश किए। अल्लाह का शुक्र है के हज़रत अक़्दस दामतबरकातुहू ने अपनी बहुत ज़्यादा मश्ग़ूलियों के बावजूद न सिर्फ़ उनको सही किया बल्के उनकी तर्तीब वग़ैरह को पसंद भी फ़रमाया। ये उन्हीं की दुआ और तवज्जेह हैं के इस आजिज़ के हाथों ये किताब तर्तीब दी जा सकी।

ममनून हूँ मैं आपकी नज़रे इंतिख़ाब का

हज़रत दामतबरकातुहू का हर बयान बेशुमार फ़ायदे और नतीजे अपने में रखता है। उनको लिखते हुए आजिज़ की अपनी कैफ़ियत अजीब हो जाती है। बीच-बीच में दिल में ये बहुत ज़्यादा तमन्ना पैदा होती है के काश! के मैं भी इन बयान किए हुए हालात से सज जाऊँ। ये ख़ुत्बात यक़ीनन पढ़ने वालों के लिए भी नफ़े का ज़रिया बनेंगे। ख़ालिस नीयत और दिल के ध्यान से इनका पढ़ना हज़रत की बरकत वाली ज़ात से फ़ैज़ उठाने का ज़रिया होगा, इंशाअल्लाह।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआ है के वो इस मामूली सी कोशिश को क़ुबूल फ़रमाकर बंदे को भी अपने चाहने वालों में शुमार फ़रमा लें। (आमीन सुम्मा आमीन)

फ़क़ीर मुहम्मद हनीफ़ अफ़ी अन्हु
एम०ए०बी०एड०
मौज़ा बाग़, झंग

بسم اللہ الرحمن الرحیم

وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

अस्माउल हुस्ना के

मआरिफ़

बयान हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार
अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्देज़िल्लुहु

इक़्तिबास

देखो के गोली से शेर मर जाता है लेकिन उसी गोली को ग़ुलेल में रखकर मारें तो शेर तो क्या चिड़िया भी नहीं मरती। अलबत्ता बंदूक़ में डालकर मारेंगे तो शेर भी मरेगा और हाथी भी। इसी तरह इस्मे आज़म तो "अल्लाह" ही है। ये झूठी ज़बानों से निकलेगा तो असर नहीं होगा। जिस मुँह से इंसान चुग़लख़ोरी करता है, बोहतान लगाता है, दूसरों के बारे में बदज़बानी करता है और बदकलामी करता है। ऐसी ज़बान से ये लफ़्ज़ निकलेगा तो इसकी बरकतें ज़ाहिर नहीं होंगी। बरकतों के ज़ाहिर होने के लिए ज़बान ठीक होनी चाहिए। इस्मे आज़म तो "अल्लाह" ही है लेकिन जब किसी सच्ची ज़बान से निकले तो फिर इसका असर होता है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्दज़िल्लहु

अस्माउल हुस्ना के मआरिफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اِذْ يَرَوْنَ

الْعَذَابَ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (البقرہ:۱۶۵)

وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخر اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا○ (الفرقان:۵۹)

وقال اللّٰه تعالٰى فى مقام اخر○ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا

(الاعراف:۱۸۰)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

मुहब्बते इलाही फ़र्ज़े ऐन है

अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ﴾

और ईमान वालों को अल्लाह तआला से शदीद मुहब्बत होती है।

इसका बामुहावरा तर्जमा किया जाए तो ये बनेगा :

ईमान वाले अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत में सरशार होते हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मुहब्बत करना फ़र्ज़ ऐन है। ये ईमान की बुनियाद है। हज़रत हसन बसरी रह० एक अजीब बात फ़रमाते थे के जिस शख़्स ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को पहचाना वो उससे मुहब्बत किए बग़ैर नहीं रह सकता और जिसने दुनिया की हक़ीक़त को पहचाना वो उससे नफ़रत किए बग़ैर नहीं रह सकता। पिछली किताबों में है के अल्लाह तआला फ़रमाते हैं के ऐ मेरे बंदे! मैं तुझे दोस्त रखता हूँ। अपने हक़ के सबब से जो तुझ पर है अब तू भी मुझे अपना दोस्त बना ले। ये मुहब्बत का रास्ता शार्ट-कट है—

राह बरसों की तय हुई है पल भर में
इश्क़ का है बहुत बड़ा एहसान

जो इंसान इश्क़ के परों से उड़ता है उसके लिए वसूल इलल्लाह का रास्ता बहुत छोटा बन जाता है।

अक़्ल व बसीरत से मारिफ़त मिलती है

साइंस कहती है के इंसान के पाँच हवास हैं जबके उलमा के नज़दीक छः हवास हैं। पाँच हवास तो वे हैं जो साइंस भी मानती है :

1. क़ुव्वते बासरा यानी देखने की क़ुव्वत
2. क़ुव्वते सामिआ यानी सुनने की क़ुव्वत
3. क़ुव्वते शाम्मा यानी सूंघने की क़ुव्वत
4. क़ुव्वते ज़ायक़ा यानी चखने की क़ुव्वत
5. क़ुव्वते लामसा यानी महसूस करने की क़ुव्वत

एक और हिस भी है जिसको "अक़्ल व बसीरत" कहते हैं। सांइस इसे नहीं मानती, हम मानते हैं। ये छठी हिस सबसे आला

हिस है क्योंके पाँच हवास में तो जानवर भी शामिल हैं। इंसान की इम्तियाज़ी शान छठी हिस की वजह से है।

हर हिस की अपनी लज़्ज़तें हैं। अक़्ल व बसीरत वाली हिस से अल्लाह तआला की मारिफ़त मिलती है और मारिफ़त की लज़्ज़तें सबसे ज़्यादा होती हैं। मिसाल के तौर पर एक आदमी बहुत ही ख़ूबसूरत फूल देखता है तो वो अपनी बीनाई के बक़द्र उससे लुत्फ़ अंदोज़ होता है। जिसकी बीनाई ठीक होगी वो तो इसके शेड को देखकर और भी खुश होगा और जिसकी बीनाई ठीक न हो उसे पाँच नंबर का चश्मा लगा हुआ हो और उस वक़्त उसके पास चश्मा भी मौजूद न हो तो उसको फूल पूरी तरह नज़र नहीं आएगा। फूल की ख़ूबसूरती वही है जो उसके हुस्न को बारीकी से देख रहा होता है, वो लज़्ज़त पा रहा होता है और जिसके पास उसके हुस्न की हकीकत नहीं खुली होती वो आदमी लुत्फ़अंदोज़ होने से क़ासिर होता है।

इसी तरह जिस इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मारिफ़त हासिल हो जाए उसको वो लज़्ज़तें मिलती हैं जो किसी और तरीक़े से मिलना मुमकिन नहीं होतीं।

जहन्नम में भेजने से भी बड़ी सज़ा

क़ियामत के दिन सबसे बड़ी सज़ा ये होगी के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त नाफ़रमानों को अपने दीदार से महरूम फ़रमाएंगे। ये जहन्नम में भेजने से भी बड़ी सज़ा है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसके साथ हमकलामी से भी इंकार फ़रमा देंगे। इर्शाद फ़रमाएंगे :

﴿اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ﴾ (المؤمنون ١٠٨)

पड़े रहो फटकारे हुए इसमें और मुझसे गुफ़्तगू मत करो।

इसके बाद उनमें से कोई बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से हमकलामी नहीं कर सकेगा। एक मक़ाम पर क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ. (آل عمران:۷۷)﴾

न हमकलाम होगा उनसे अल्लाह और न निगाह करेगा उनकी तरफ़ क़ियामत के दिन।

एक मर्तबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी अलैहिस्सलाम की मौजूदगी में ये आयत पढ़ी :

﴿كَلَّا اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ. (مطففین:۱۵)﴾

मुजरिम लोग क़ियामत के दिन इस हाल में होंगे के उनके और परवरदिगार के दर्मियान हिजाब होगा।

जब नबी अलैहिस्सलाम ने ये आयत सुनी तो आपको रोना आ गया।

जन्नत में सबसे बड़ा इनाम

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का किसी बंदे को अपने दीदार से महरूम कर देना सब अज़ाबों बड़ा अज़ाब है और अल्लाह तआला का किसी को अपना दीदार करा देना सब इनामात से बड़ा इनाम है। हदीस पाक में आया है के जन्नती लोगों को बड़ा इनाम यही मिलेगा। चुनाँचे अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّ اَهْلَ الْجَنَّةِ يَدْخُلُوْنَ عَلَى الْجَبَّارِ كُلَّ يَوْمٍ مَرَّتَيْنِ فَيَقْرَءُ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنَ.

बेशक जन्नती लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दिन में दो मर्तबा पेश होंगे और अल्लाह तआला ख़ुद जन्नतियों को क़ुरआन सुनाएंगे।

वो मज्लिस कैसी होगी और उसके लुत्फ़ और मज़े कैसे होंगे।

आज जब कोई अच्छा क़ारी क़ुरआन मजीद की तिलावत करता है तो इंसान के रौंगटे खड़े हो जाते हैं और दिल पर अजीब सी कैफ़ियत तारी हो जाती है। जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपना कलाम खुद सुनाएंगे और ईमान वाले सुनने वाले होंगे तो सोचिए के उस वक़्त लज़्ज़त का क्या आलम होगा।

किताबों में लिखा है के जब लोग क़ब्रों से उठेंगे तो उनमें से बाज़ को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार नसीब होगा।

﴿وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ. اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ. (القيمة: ٢٢، ٢٣)﴾

कई चेहरे उस दिन तर व ताज़ा होंगे। अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे।

क़ियामत के दिन की मुसीबत का उन पर कोई ग़म न होगा। ﴿لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ﴾ न ग़म होगा उनको बड़ी घबराहट में।

जन्नत में सबसे बड़ी लज़्ज़त वाली चीज़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार होगा। इसलिए इर्शाद फ़रमाया :

﴿اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ط (القمر: ٥٥)﴾

बेशक मुत्तक़ीन बाग़ों में होंगे और नहरों में सच्चे ठिकाने में इक़्तिदार वाले बादशाह के पास।

आज दुनिया के बादशाह जलवा अफ़रोज़ हों तो महफ़िल सजाते हैं और जब मालिकुल मुल्क जलवा अफ़रोज़ होंगे तो कैसी महफ़िल सजी होगी। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का क़ुर्ब और उसके दीदार की लज़्ज़त पाने की दुआएं अक्सर करनी चाहिएं। राबिया बसरिया को किसी ने दुआ दी के अल्लाह तआला आपको जन्नत अता फ़रमा दे। उन्होंने आगे से जवाब दिया

﴿الجار ثم الدار﴾ पहले पड़ौसी फिर घर यानी घर की दुआ बाद में करना पहले पड़ौसी की बात करना के मेरा पड़ौसी कौन बनेगा।

खुशी के आँसू

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया ﴿وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ﴾ और अल्लाह तआला की रज़ा सबसे बड़ी चीज़ है।

अल्लाह रब्बलइज़्ज़त का राज़ी हो जाना मोमिन के लिए सबसे बड़ी खुशी की बात होती है। जब इंसान को बड़ी खुशी मिलती है तो उसकी आँखों से खुशी के भी आँसू निकल आते हैं। किसी आरिफ़ ने एक पत्थर को देखा वो रो रहा था। पूछा क्यों रो रहे हो? कहने लगा, इसलिए रोता हूँ के कहीं जहन्नम का ईंधन न बना दिया जाऊँ। उन्होंने दुआ कर दी ऐ अल्लाह आप इस पत्थर को जहन्नम का ईंधन न बनाइएगा। उनकी दुआ क़बूल हो गई। इन बुज़ुर्ग ने खुशख़बरी सुना दी और आगे चले गए। जब वो बुज़ुर्ग वापस आए तो देखा के वो फिर रो रहा है। चुनाँचे उन्होंने फिर पूछा के पहले तो इसलिए रो रहे थे के कहीं तुम्हें जहन्नम का ईंधन न बना दिया जाए। अब क्यों रो रहे हो? उसने कहा, हज़रत! पहले ख़ौफ़ का रोना था और अब खुशी से रो रहा हूँ के मेरा मालिक मुझसे राज़ी हो गया है।

एक बार हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको बुलाकर फ़रमाया के मुझे सूरः बईय्यनः सुनाओ। हदीस पाक का मफ़हूम है के मुझे हुक्म हुआ है के मुझे सूरः बैय्यनः सुनाओ। वो बड़े समझदार थे। चुनाँचे आगे से पूछने लगे, ऐ अल्लाह के महबूब! ﴿اَللّٰهُ سَمَّانِي﴾

क्या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया है? नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿نعم الله سماك﴾ हाँ अल्लाह तआला ने तुम्हारा नाम लेकर फ़रमाया के उबई बिन काब से कहो के क़ुरआन सुनाए। महबूब! आप भी सुनेंगे और मैं (परवरदिगार) भी सुनूंगा। ये सुनकर उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की आँखों में आँसू आ गए। उनका ये रोना ख़ुशी का रोना था।

कहाँ मैं और कहाँ ये निकहते गुल
नसीम सुबह तेरी मेहरबानी

हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ फ़रमा हैं। टाट का लिबास पहने हुए हैं। सब कुछ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर चुके हैं। ऊपर से हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम उतरते हैं। जिब्रील अमीन ने टाट का लिबास पहना हुआ था। उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में सलाम पेश किया और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के नबी! मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजा है। वो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के अमल से इतना ख़ुश हैं के उन्होंने आसमान के सब फ़रिश्तों को हुक्म दिया है के तुम भी सिद्दीक़े अकबर की तरह टाट का लिबास पहनो। इसीलिए मैं भी टाट का लिबास पहनकर हाज़िर हुआ हूँ। अल्लाह तआला ने फ़रमाया है के जाओ पूछ कर आओ के क्या अबूबक्र इस हाल में भी मुझसे ख़ुश हैं। सैय्यदना सिद्दीक़ अकबर ने सुना तो उनकी आँखों से आँसू आ गए और कहने लगे, मैं अपने रब से हर हाल में राज़ी हूँ।"

ख़ाएफ़ीन (डरने वालों) का मक़ाम

जिस बंदे के दिल में ये ग़म लगा हुआ हो के अल्लाह तआला

राज़ी हो जाएं। इस मक़सद के लिए वो गुनाहों से बचे और अपने दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ख़ौफ़ रखे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ऐसे बंदे को जन्नत अता फ़रमाएंगे :

﴿وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَى فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى﴾

(النازعات:۴۰،۴۱)

और जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा और अपने आपको ख़्वाहिशाते नफ़्स से बचाया, बेशक जन्नत ही उसका ठिकाना है।

सुब्हानअल्लाह! आम मोमिनीन को एक जन्नत और ख़ाएफ़ीन को अल्लाह तआला दो जन्नतें अता फ़रमाएंगे। लोगों ने एक घर बनाया होता है और एक मेहमानख़ाना। लगता है के अल्लाह तआला इन ख़ाएफ़ीन को इस तरह बाजमाअत जन्नत में जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएंगे के इनका अपना घर अलैहिदा होगा और उनकी मेहमाननवाज़ी का सिलसिला अलैहिदा होगा।

सालिक की एक ख़ास निशानी

किसी शायर ने कहा—

ہمہ شہر پر ز خوباں منم خیال ماہے
چہ کنم کہ چشم یک بیں نہ کند بہ کس نگاہے

सारा शहर हसीनों से भरा पड़ा है। मैं हूँ और मेरे महबूब का ख़्याल है। मैं क्या करूँ के जो आँख सिर्फ़ एक को देखने की आदी हो वो किसी और की तरफ़ उठती ही नहीं।

सालिक भी हक़ीक़त में यकबीं हो जाता है। क्या मतलब? मतलब ये है के उसकी निगाहें फ़क़त अपने मतलूब पर जम जाती

हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ही उसका मतलूबे हक़ीक़ी और मक़सूदे हक़ीक़ी बन जाता है। ये सालिक की एक ख़ास निशानी है। उसके दिल से ये निकलता है :

خداوند! مقصودِ من توئی ورضائے تو مرا محبت ومعرفت خود بدہ۔

या इलाही! तू ही मेरा मक़सूद और मैं तेरी ही रज़ा का तालिब हूँ। तू मुझे अपनी मारिफ़त इनायत फ़रमा दे।

इश्क़ और फ़िस्क़ की तरफ़ बुलाने वाले

इस दुनिया में दो सोचें रखने वाले इंसान हैं। एक तरफ़ दुनियादार हैं। दुनिया की तरफ़ बुलाने वाले। फ़िल्मों में काम करने वाले। गाना गाने वाले, दुनिया के मतवाले। कभी उनकी शक्लें देखा करें के उन पर कैसे नहूसत बरस रही होती है। दूसरी तरफ़ अंबिया किराम और उनके ग़ुलाम हैं। ये लोग अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के इश्क़ की तरफ़ बुलाते हैं। याद रखें के इश्क़े हक़ीक़ी ही इश्क़ है और इश्क़े मजाज़ी फ़िस्क़ है। अंबिया किराम इश्क़ की तरफ़ बुलाते हैं और अहले दुनिया फ़िस्क़ की तरफ़ बुलाते हैं। अल्लाह वालों के चेहरों पर रहमतें बरस रही होती हैं। जब के दुनिया वालों के चेहरों पर नहूसत बरस रही होती है। शैतान उनके सामने उनके बुरे अमलों को भी अच्छा बनाकर पेश करता है।

﴿أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوْءُ عَمَلِهِ فَرَآهُ حَسَنًا﴾

बस क्या वो शख़्स जिसके सामने उसके बुरे अमल मुज़य्यन कर दिए जाएं। बस वो उनको अच्छा समझे।

अल्लाह वाले कहते हैं के मेहनत करो और रब को मनाओ। जबके दुनियादार कहते हैं खाओ पियो और मज़े उड़ाओ। हमें

चाहिए के हम मेहनत करके अपने रब को मनाने की कोशिश करें।

क़द्रदानों से रब की क़द्र पूछो

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत की बातें भी अजीब हैं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا. (الفرقان:٥٩)﴾

रहमान के बारे में जानने वालों से पूछो।

एक बादशाह ने लैला के बारे में सुना के मजनूँ उसकी मुहब्बत में दीवाना बन चुका है। उसके दिल में ख़्याल पैदा हुआ के मैं लैला को देखूं तो सही। जब उसने देखा तो उसका रंग काला था और शक्ल भद्दी थी। वो इतनी काली थी के उसके माँ-बाप ने लैल (रात) जैसी (काली) होने की वजह से उसको लैला (काली) का नाम दिया। लैला के बारे में बादशाह का ख़्याल था के वो बड़ी नाज़नीन और परी जैसे चेहरे की होगी। मगर जब उसने लैला को देखा तो उससे कहा–

"तू दूसरी औरतों से तू ज़्यादा ख़ूबसूरत नहीं है?"

जब बादशाह ने ये कहा तो लैला ने जवाब में ये कहा–

"ख़ामोश हो जा तेरे पास मजनूँ की आँख नहीं।"

अगर मजनूँ की आँख होती तो तुझे दुनिया में मेरे जैसा ख़ूबसूरत कोई नज़र न आता।

देखने वाली आँख होती है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया के अगर तुम रब्बे रहमान के बारे में पूछना चाहते हो तो दुनियादारों से मत पूछो। उनको क्या पता है। फूल के बारे में कोई पूछना चाहे तो बुलबुल से पूछो। गिध को क्या पता,

जिसके दिमाग़ में मुर्दार की बदबू भरी होती है उसका फूल की खुशबू से क्या वास्ता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भी यही इर्शाद फ़रमाया है के तुम रब्बे रहमान के बारे में जानने वालों से पूछो। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ये फ़रमाना चाहते हैं के तुम रब्बे रहमान की क़द्र और शान क़द्रदानों से पूछो।

इस्मे जलालुहू के मआरिफ़

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रामते हैं :

﴿وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا. (الاعراف:١٨٠)﴾

और अल्लाह तआला के प्यारे-प्यारे नाम हैं। बस तुम उसे उन (नामों से) पुकारो।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का एक ज़ाती नाम है और बाक़ी सिफ़ाती नाम है। ज़ाती नाम अल्लाह है। इस नाम को इस्मे जलालुहू और सैय्यदुल उस्मा भी कहते हैं। निन्नावे सिफ़ाती नाम वे हैं जो क़ुरआन मजीद में बयान हुए हैं और अहादीस में उनके अलावा भी कई नाम आए हैं। चूँके अल्लाह तआला की सिफ़ात की कोई इंतिहा नहीं। इसलिए उनके सिफ़ाती नामों की भी कोई इंतिहा नहीं। इसीलिए नबी अलैहिस्सलाम ने ये दुआ मांगी :

"ऐ अल्लाह मैं तेरे हर उस नाम से दुआ मांगता हूँ जिसका इल्म तूने अपने रसूलों को दिया, या अपने मलाइका को दिया या जिसका इल्म तूने किसी को नहीं दिया। फ़क़त तेरे अपने पास मौजूद है। ऐ अल्लाह मैं तेरे उन नामों से भी तुझसे दुआ मांगता हूँ।"

इससे पता चला के अल्लाह तआला के सिफ़ाती नामों की

कोई इंतिहा नहीं। किसी कहने वाले ने क्या ख़ूब कहा है–

जिसके नामों की नहीं है इंतिहा
इब्तिदा करता हूँ उसके नाम से

किताब "फ़त्हुल्लाह" का इज्मिाली तारुफ़

अल्लाह तआला का ज़ाती नाम "अल्लाह" बड़ी मआरिफ़तें अपने अंदर लिए हुए है। इस पर मुझे अरबी ज़बान में लिखी हुई किताब पढ़ने का मौक़ा मिला जिसका नाम "फ़त्हुल्लाह" था। वो किताब एक हज़ार सफ़्हात की थी। उस किताब में अल्लाह तबारक तआला के नाम के मआरिफ़ बयान किए गए हैं।

क़ुरआन मजीद का निचोड़

"अल्लाह" का लफ़्ज़ क़ुरआन मजीद का निचोड़ है। एक इल्मी नुक्ता ज़हन में रखिए। क़ुरआन मजीद की सूरतों की तीन क़िस्में हैं। सूरः मुजादला की हर हर आयत के अंदर अल्लाह तआला का नामे मुबारक है। दूसरी वे सूरतें हैं जिनमें हर दूसरी तीसरी आयत के अंदर अल्लाह तआला का नाम मुबारक आता है। जैसे सूरः रहमान। इस सूरत में हर दूसरी आयत के बाद ﴿فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ﴾ (फबि अय्यि आलाई रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान) वाली ये आयत आती है। रब का लफ़्ज़ बार-बार आया है। ये भी अल्लाह तआला का नाम है। जो बक़िया सूरतें हैं अगर उन पर भी ग़ौर किया जाए तो हर पाँच सात आयतों के बाद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का मुबारक नाम आता है।

लफ़्ज़ "अल्लाह" क़ुरआन मजीद में छः सौ अठ्ठानवे (698) मर्तबा इस्तेमाल हुआ है। इसके अलावा एक मर्तबा तअऊज़ (अऊज़ुबिल्लाह) में और एक मर्तबा तस्मिया (बिस्मिल्लाह) में।

अगर दोनों को भी साथ मिला लिया जाए तो कुल सात सौ मर्तबा बनता है। अर्रहमान और अर्रहीम के अल्फ़ाज़ भी बहुत बार इस्तेमाल हुए हैं। अलबत्ता रब का लफ़्ज़ सबसे ज़्यादा इस्तेमाल हुआ है। हर चंद के आयतों बाद आपको रब का लफ़्ज़ मिलेगा। ऐसा महसूस होता है के अल्लाह तआला ने अपने नाम को इरा-दतन बार-बार इस्तेमाल फ़रमाया है ताके मेरे बंदों की ज़बान से मेरा नाम बार-बार निकलता रहे हालाँके कई जगह पर आयात का असलूब बताता है के बात किसी और अंदाज़ में भी हो सकती थी मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसे तरीक़े से बात की के नाम भी उसमें शामिल हो गया। मिसाल के तौर पर अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ﴾ और वे लोग अज़ाब की जल्दी कर रहे हैं।

अब इसका जवाब ये भी दिया जा सकता था के अज़ाब जल्दी आएगा मगर फ़रमाया ﴿وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهُ (الحج:٤٧)﴾ और वे लोग अज़ाब में जल्दी कर रहे हैं और अल्लाह हर्गिज़ अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करेगा।

एक और जगह पर इर्शाद फ़रमाया :

﴿ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ﴾ ये जो इनके हाथों ने आगे भेजा है।

अब असलूब ये बता रहा है के ये जहन्नम में जाएंगे। मगर जवाब क्या दिया गया :

﴿ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ. (الانفال:٥١)﴾

ये जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा और बेशक अल्लाह तआला बंदों पर ज़ुल्म नहीं करने वाले हैं।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने यहाँ भी अपना नाम मुबारक शामिल फ़रमा दिया। फिर एक और जगह पर फ़रमाया :

﴿وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ (یونس:۱۰۹)﴾

और आप उसकी इत्तिबा कीजिए जो कुछ आपको "वही" के ज़रिए अता किया और सब्र कीजिए हत्ताके अल्लाह तआला फ़ैसला कर दे।

इन आयतों में ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है जैसे सुनार नगीने को फ़िट करता है तो ज़ेवर का हुस्न बढ़ जाता है। इसी तरह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने कलाम को अपने नाम के नगीने के साथ ज़ीनत बख़्श दी।

उलमा ने यहाँ एक नुक्ता लिखा है। वो फ़रमाते हैं के अगर किसी आदमी को क़ुरआन मजीद के तर्जुमे का बिल्कुल ही पता न हो मगर वो क़ुरआन मजीद की तिलावत करे तो चूँके उसकी ज़बान से बार-बार अल्लाह का लफ़्ज़ निकल रहा होता है। इसलिए चंद सफ़्हात पढ़ने के बाद उसकी ज़बान से इतनी बार अल्लाह का नाम निकल आता है के उसको अल्लाह तआला का ज़िक्र का फ़ायदा नसीब हो ही जाता है।

हज़रत मुर्शिदि आलम रह० फ़रमाया करते थे के अगर ये मान लें के कलाम पाक को कशीद किया जाए यानी निचोड़ा जाए तो जो क़तरा निकलेगा वो "अल्लाह" होगा यानी अल्लाह का लफ़्ज़ पूरे क़ुरआन मजीद का निचोड़ और ख़ुलासा है।

दो मारिफ़ों का मुतहम्मिल नाम

ये अजीब बात है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम के शुरू में अलफ़ि लाम है। ये मारिफ़े के लिए इस्तेमाल होता है। अरब

ज़बान का क़ायदा है के किसी लफ़्ज़ को मारिफ़ा बनाने के लिए उसके शुरू में अलिफ़ लाम लगा देते हैं। और जिस लफ़्ज़ पर अलिफ़ लाम लगा दिया गया हो उस पर हर्फ़े निदा (یـا) "या" बराहेरास्त दाख़िल नहीं हो सकता। क्योंके अलिफ़ लाम भी मारिफ़ा बनाने के लिए और या भी मारिफ़ा बनाने वाला है। हाँ पूरी अरबी ज़बान में सिर्फ़ अल्लाह का नाम ऐसा है के उस पर अलिफ़ लाम भी दाख़िल और या भी दाख़िल हो सकता है। गोया के अल्लाह तआला नाम दो मारिफ़ें लिए हुए है।

बेनुक़्ता नाम तौहीद का पैग़ाम

अल्लाह तआला ने अपने लिए इतना बे-ऐब नाम पसन्द किया के किसी हर्फ़ पर नुक़्ता नहीं है। इसलिए के तौहीद चाहते थे। अगर नाम में नुक़्ता आ जाता तो शिर्क करने वाले लोग भी कोई जवाज़ ढूंढ लेते। इसलिए बता दिया के उसकी ज़ात व सिफ़ात में शिर्क की गुंजाइश नहीं है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात में तुम कोई नुक़्स नहीं निकाल सकते। और न किसी को उसकी ज़ात में शरीक कर सकते हो। वो हर ऐब से पाक है और हर शिर्क से बालातर है।

सब इशारे अल्लाह तआला की तरफ़

"अल्लाह" ऐसा नाम है के अगर इस नाम के हर्फ़ों को आप जुदा-जुदा करते जाएं तो बचने वाला नाम भी इसी तरफ़ इशारा करता है। मिसाल के तौर पर लफ़्ज़ "अल्लाह" का इशारा भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ है। अगर शुरू वाली अलफ़ि हटा दें तो बाक़ी लफ़्ज़ को कैसे पढ़ेंगे, (لِلّٰہ) लिल्लाह। इसका इशारा भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते

हैं :

﴿لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ﴾ (البقرة:٢٨٤)

उसी के लिए है जो कुछ आसमानों में है और ज़मीन में है।

अगर कोई दूसरी लाम भी हटा लें तो बाक़ी "लहू" बचेगा। इसका इशारा भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ﴾ उसी के लिए जो कुछ आसमानों में है और ज़मीनों में है। अगर दूसरा लाम भी हटा दें तो बाक़ी "हू" बचेगा। इसका इशारा भी अल्लाह तआला की तरफ़ है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ﴾ नहीं है कोई माबूद मगर वही।

क़ुर्बान जाएं उस परवरदिगार पर जिसने अपना ज़ाती नाम भी वही पसन्द किया के अगर कोई इस नाम के हरूफ़ को जुदा करके टुकड़े-टुकड़े भी कर दे तो हर बचने वाला टुकड़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ इशारा करेगा।

तक्मीले ईमान

अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ﴾ (الرحمٰن:٧٨) बरकत वाला नाम है तेरे रब का।

अल्लाह तआला ख़ुद बता रहे हैं के ये नाम बरकत वाला है। इसी नाम की वजह से हमें ईमान नसीब होता है। उलमा ने लिखा है के अगर कोई आदमी यों कलिमा पढ़े :

﴿لا الٰه الا الرؤف محمد رسول اللّٰه﴾ ला इलाहा इल्लर्रऊफ़ मुहम्मदुर्रसूल्लाह,

﴿لا الٰه الا الرحيم محمد رسول اللّٰه﴾ ला इलाहा इल्लर्रहीम

मुहम्मदुर्रसूल्लाह,

﴿لا الـه الرحمن محمد رسول الله﴾ ला इलाहा इल्लर्रहमान मुहम्मदुर्रसूल्लाह तो वो मुसलमान नहीं होता क्योंके सिफ़ाती नाम औरों के लिए भी इस्तेमाल हो सकते हैं। मसलन समीअ और बसीर औरों के लिए भी इस्तेमाल हो सकते हैं। जब तक वो ﴿لا اله الا الله محمد رسول الله﴾ ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूल्लाह कह कर ज़ाती नाम नहीं लेगा तब तक उसका ईमान मुकम्मल नहीं होगा।

दूरियाँ ख़त्म करने वाला नाम

ये ऐसा बरकत वाला नाम है के जहाँ आ जाता है वहाँ फ़ासले सिमट जाते हैं और दूरियाँ ख़त्म हो जाती हैं। मिसाल के तौर पर एक लड़की ना महरम थी। शरिअत कहती है के उसकी तरफ़ देखना हराम है और उसके साथ तन्हाई में बैठना हराम है। लेकिन जब इसी लड़की को निकाह के ज़रिए क़बूल कर लेते हैं तो वो अजनबिया सब अपनों से बड़ी अपनी बन जाती है हत्ताके उसे ज़िंदगी की साथी कहा जाता है। क़ुरआन अज़ीमुश्शान ने कहा :

﴿هُنَّ لِبَسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ. (البقرة:١٨٧)﴾

वो तुम्हारा लिबास है और तुम उनका लिबास हो।

ज़रा ग़ोर करें के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब इंसान का लिबास होता है। गोया बताया गया के ख़ाविन्द के सबसे ज़्यादा क़रीब उसकी बीवी और बीवी के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका ख़ाविन्द होता है। एक जान दो क़ालिब, जिस्म दो हैं और दोनों की जान एक है। ये इतना नज़दीका का ताल्लुक़ कैसे हुआ? अल्लाह के नाम की बरकत की वजह से क़ुरआन अज़ीमुश्शान

कहता है :

يَآ أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِىْ خَلَقَكُمْ مِنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ (النساء:١)

ऐ लोगो! डरो उस रब से जिसने तुम्हें एक नफ़्स से पैदा किया और उसी नफ़्स से उसका जोड़ा पैदा किया और फ़ैलाए इन दोनों में मर्द व औरतें। और डरते रहो उस अल्लाह से जिसके वास्ते से तुम आपस में सवाल करते हो और लिहाज़ करो क़ुर्बत दारी की।

﴿تساءل﴾ तसाअलू किसे कहते हैं? ऐसी बरकत वाली ज़ात है के उस ज़ात की बरकत से हम आपस में रिश्तेदारियाँ क़ायम करते हैं। अगर उसका नाम दर्मियान में न आता तो निकाह भी न होता। कितना बकरत वाला है वो नाम के जब दर्मियान में आता है तो फ़ासले सिमट जाते हैं। और अजनबी लोगों को एक दूसरे का अपना बना दिया। न सिर्फ़ यही बल्के जिसकी तरफ़ देखना हराम था उकसी तरफ़ देखना कारे सवाब बन जाता है।

इस्मे ज़ात की बरकात

इस नाम की बरकतें बहुत हैं लेकिन सच्ची बात है के हम इन बरकतों से वाक़िफ़ नहीं हैं। इसलिए के हमने कभी आज़माया ही नहीं। अगर कभी ऐसे लोगो के पास बैठ जाएं जिन्होंने इस नाम बरकतों को देखा भाला होता है तो वो इसके मआरिफ़ हमारे सामने खालेंगे के इस नाम की क्या बरकतें हैं।

इस्मे आज़म

हदीस पाक में आया है के अल्लाह तआला के नामों में से एक नाम इस्मे आज़म है। इस नाम की बरकत से जो दुआ मांगी जाएगी क़बूल होगी। इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रह० तहक़ीक़ करने

के बाद फ़रमाते हैं के अल्लाह तबारक व तआला का ज़ाती नाम "अल्लाह" ही इस्मे आज़म है। क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० ने तफ़्सीर मज़हरी में इस पर तफ़्सीली रौशनी डाली है। वो भी ही नतीजा निकालते हैं के इस्मे ज़ात अल्लाह ही इस्मे आज़म है। आसिफ़ बर्ख़िया को इस्मे आज़म मालूम था जिसकी वजह से उन्होंने मलिका बिल्क़ीस का तख़्त मंगवा लिया था लेकिन याद रखें के हर ज़बान इस क़ाबिल नहीं होती के जब वो इस नाम को ले तो हर दुआ क़बूल हो जाए। अलबत्ता कुछ ज़बान ऐसी होती हैं के वो ऐसा दर्जा पा लेती हैं के जब उनसे ये अल्लाह का लफ़्ज़ निकलता है तो फिर वो इस्मे आज़म वाला असर दिखा देता है। मिसाल के तौर पर ईसा अलैहिस्सलाम मुर्दे को कहा करते थे ﴿قُمْ بِإِذْنِ اللّٰهِ﴾ क़ुम बि-इज़्निल्लाह तो वो मुर्दा थोड़ी देर के लिए ज़िंदा हो जाता था। अगर आज हम क़ुम बि-इज़्निल्लाह कहें तो सोया हुआ बंदा नहीं जागता, मरा तो क्या ज़िंदा होगा। ये वही अल्फ़ाज़ हैं जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम इस्तेमाल करते थे और यही अल्फ़ाज़ हम कहते हैं बल्के अगर हम लाख मर्तबा भी कहें तो मुर्दा टस से मस नहीं होता। अल्फ़ाज़ वही हैं मगर ज़बान बदल गई। वो नबी की ज़बान थी और ये हमारी झूठी ज़बान होती है जिसकी वजह से असर नहीं होता।

देखो के गोली से शेर मर जाता है लेकिन उसी गोली को गुलेल में रखकर मारें तो शेर तो क्या चिड़िया भी नहीं मरती। अलबत्ता बंदूक़ में डालकर मारेंगे तो शेर भी मरेगा और हाथी भी। इसी तरह इस्मे आज़म तो "अल्लाह" ही है। ये झूठी ज़बानों से निकलेगा तो असर नहीं होगा। जिस मुँह से इंसान चुग़लख़ोरी करता है, बोहतान लगाता है, दूसरों के बारे में बदज़बानी करता है और बदकलामी करता है। ऐसी ज़बान से ये लफ़्ज़ निकलेगा तो

इसकी बरकतें ज़ाहिर नहीं होंगी। बरकतों के ज़ाहिर होने के लिए ज़बान ठीक होनी चाहिए। इस्मे आज़म तो "अल्लाह" ही है लेकिन जब किसी सच्ची ज़बान से निकले तो फिर इसका असर होता है।

मिसाल के तौर पर :

1.नबी अलैहिस्सलाम एक दरख़्त के नीचे आराम फ़रमा रहे हैं। तलवार लटकी हुई हैं समामा बिन असाल जो उस वक़्त तक ईमान नहीं लाए थे इधर निकले। उन्होंने देखकर कहा के ये तो गोल्डन चान्स है। तलवार भी है और मुसलमानों के पैग़म्बर भी सोए हुए हैं क्यों न इस मौक़े से फ़ायदा उठाऊँ। चुनाँचे वो दबे पाँव आए और उन्होंने तलवार अपने हाथ में ले ली। वो चाहते थे के वार करें मगर अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जाग गए। जब उन्होंने आप को बेदार देखा तो कहने लगे

﴿من يمنعك مني يا محمد﴾ ऐ मुहम्मद! आपको अब कौन मेरे हाथों से बचाएगा?

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, "अल्लाह।" इस लफ़्ज़ में ऐसी तासीर थी के उन पर ऐसा ख़ौफ़ तारी हुआ के उन्होंने कांपना शुरू कर दिया यहाँ तक के उनके हाथ से तलवार नीचे गिर गई। फिर नबी अलैहिस्सलाम ने तलवार उठाई और फ़रमाया ﴿من يمنعك مني﴾ अब तुझे मेरे हाथों से कौन बचाएगा?

ये सुनकर वो आपकी ख़ुशामद करने लगे के आप तो क़ुरैशी ख़ानदान में से हैं। बड़े अच्छे अख़्लाक़ वाले हैं। दुश्मनों को माफ़ कर देने वाले हैं और बुलन्द हिम्मत हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया जा मैंने तुझे माफ़ कर दिया। जब नबी अलैहिस्सलाम ने माफ़ फ़रमा दिया तो समामा बिन असाल खड़ा

रहा। आपने पूछ समामा! मैंने तुझे माफ़ कर दिया है। अब तुम जाते क्यों नही? उन्होंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब आपने तो माफ़ कर दिया। अब खड़ा इसलिए हूँ के आप मुझे कलिमा भी पढ़ा दीजिए ताके अल्लाह तआला भी मुझे माफ़ फ़रमा दें, अल्लाहु अकबर।

सातवीं सदी हिजरी में तातारियों का ऐसा फ़ितना उठा था के उन्होंने मुसलमानों से तख़्त व ताज छीन लिया था। उस वक़्त पूरी दुनिया में मुसलमानों के पास कहीं भी हुकूमत नहीं रही थी। तातारी इस क़द्र ग़ालिब आ गए थे के बग़दाद में एक दिन में दो लाख मुसलमानों को ज़िब्ह कर दिया गया था। मुसलमानों पर उनका इतना डर असरअंदाज़ था के एक तातारी औरत ने एक मुसलमान मर्द को देखा तो कहने लगी ख़बरदार! मत हिलना। वो वहीं खड़ा रहा। वो औरत घर में गई और ख़ंजर लाकर उसने उस मुसलमान मर्द को क़त्ल कर दिया। तातारी जिस शहर में जाते थे मुसलमान वो शहर ही ख़ाली कर देते थे।

दरबंद एक शहर का नाम है। एक तातारी शहज़ादा अपने गिरोह को लेकर पहुँचा और मुसलमानों ने वो शहर ख़ाली कर दिया। वो मुस्कराकर कहने लगा के हमारी बहादुरी देखकर मुसलमान हमारा नाम सुनते ही शहर ख़ाली कर देते हैं और ख़ाली करके भाग जाते हैं। पुलिस ने उसे ख़बर दी जनाब शहर में अभी तक दो बंदे मौजूद हैं। एक सफ़ेद बालों वाले बूढ़े और एक उनका ख़ादिम लगता है और वे दोनों मस्जिद में बैठे हैं। उसने चौंककर कहा, वो अभी तक नहीं निकले हैं? बताया गया के अभी नहीं निकले। कहने लगा उन्हें ज़ंजीरों में जकड़कर मेरे सामने पेश करो। पुलिस गई और उन्हें हथकड़ियाँ डालकर ले आई और उन्हें शहज़ादे के सामने लाकर खड़ा कर दिया। उनका नाम शेख़

अहमद दरबंदी रह० था और ये नक़्शबंदी सिलसिले के बुज़ुर्ग थे। शहज़ादे ने कहा तुम्हें पता नहीं था के मैं इस शहर में आ रहा हूँ? फ़रमाया पता था। कहने लगा फिर शहर से निकले क्यों नहीं? उन्होंने कहा हम क्यों निकलते, हम तो अल्लाह के घर में बैठे थे। वो तैश में आकर कहने लगा, अब तुम्हें मेरी सज़ा से कौन बचाएगा? जब उसने ये कहा तो हज़रत दरबंदी रह० ने जोश में आकर कहा, "अल्लाह", जैसे उन्होंने "अल्लाह" का लफ़्ज़ कहा उनके हाथ की हथकड़ियाँ टूटकर नीचे गिर पड़ीं। जब शहज़ादे ने ये मंज़र देखा तो सहम गया और कहने लगा ये कोई आम आदमी नहीं है चुनाँचे वो कहने लगा के अच्छा मैं तुम्हें इस शहर में रहने की इजाज़त देता हूँ।

हमारे इलाक़े में हज़रत ख़्वाजा गुलाम हसन सवाग रह० नाम के एक मशहूर बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनका एक बड़ा मशहूर वाक़िआ है। उस वाक़िए के सैकड़ों चश्मदीद गवाह मौजूद थे। एक जगह हिंदू और मुसलमान इकठ्ठे रहते थे। एक अमीर हिंदू हज़रत की तवज्जेह की बरकत से मुसलमान हो गया। हिंदुओं ने ख़्वाजा साहब के ख़िलाफ़ मुक़दमा दर्ज करा दिया के ख़्वाजा साहब हिंदुओं पर जादू करके मुसलमान बना देते हैं। जज भी हिन्दू था हज़रत को जो पुलिस गिरफ़्तार करके लाई वे भी सब हिन्दू थे। हज़रत जब जज के सामने पेश हुए, पुलिस के सिपाही और थानेदार ने हज़रत के गिर्द घेरा डाला हुआ था। जज ने हज़रत से पूछा के तूने इस हिंदू को क्यों मुसलमान किया है? हज़रत ने फ़रमाया के नहीं मैंने तो मुसलमान नहीं किया ये तो ख़ुद मुसलमान हुआ है। जज साहब ने इसरार किया के नहीं तूने मुसलमान किया है। आख़िर हज़रत ने हिन्दू थानेदार की तरफ़ उंगली का इशारा करके फ़रमाया क्या इसको भी मैंने मुसलमान

किया है, साथ ही लफ़्ज़े 'अल्लाह' के साथ क़ल्बी तवज्जेह दी तो वो फ़ौरन कलिमा पढ़ने लगा। अब दूसरे की तरफ़ इशारा किया तो वो भी कलिमा पढ़ने लगा। फिर इस तरह आप जिस हिंदू की तरफ़ भी इशारा करते वो मुसलमान हो जाता। यूँ वहाँ खड़े-खड़े पाँच हिंदुओं ने कलिमा पढ़ लिया। ये सूरते हाल देखकर जज दूसरे कमरे में चला गया के कहीं मेरी तरफ़ भी उंगली का इशारा न हो जाए और वहीं हुक्म सुनाया के ख़्वाजा साहब को बइज़्ज़त बरी किया जाता है। ये अब यहाँ से चले जाएं। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह के नाम में बड़ी बरकत है मगर अफ़सोस के हमें ये नाम लेना नहीं आता। सच्ची बात अर्ज़ करूं के ये तो एक ख़ाली चैक है जो इस पर लिख सकते हो लिख दो।

ख़्वाजा अबुल हसन ख़रक़ानी रह० हमारे सिलसिले आलिया नक़्शबंदिया के बुज़ुर्ग थे। एक मर्तबा वो इस्मे आज़म के फ़ज़ाइल सुना रहे थे। उस वक़्त का मशहूर फ़लसफ़ी और हकीम बू अली सीना भी वहाँ पहुँच गया। आप फ़रमा रहे थे के इस्मे ज़ात से इंसान की सेहत में बरकत, इंसान के अमल में बरकत, इंसान के रिज़्क़ में बरकत और इंसान की इज़्ज़त में बरकत होती है, अक़ली बंदे तो अक़ली होते हैं। लिहाज़ा उस बेचारे की अक़ल भी फँस रही थी। उसने महफ़िल के ख़त्म पर हज़रत से पूछा के जी इस एक लफ़्ज़ का ज़िक्र करने से इतनी तब्दीलियाँ आ जाती हैं। आपने फ़रमाया, "ऐ ख़र! तू चे दानी" यानी ऐ गधे तुझे क्या पता। अब जब मशहूर आदमी को मजमे के सामने गधा कहा तो उसके पसीने छूट गए। हज़रत भी परखने वाले थे। लिहाज़ा उन्होंने उसके चेहरे से पसीना उतरते हुए देखा तो पूछा, हकीम साहब पसीना आ रहा है। कहने लगा हज़रत! क्या करूं, आपने भरे मजमे मे लफ़्ज़ ही ऐसा कह दिया है। हज़रत ने फ़रमाया,

हकीम साहब! मैंने भरे मजमे में एक लफ़्ज़ गधा कहा और उसकी वजह से तुम्हारे तन बदन में तब्दीलियाँ आ गयीं। क्या अल्लाह के लफ़्ज़ में इतनी तासीर भी नहीं के वो बन्दे के दिल में तब्दीली पैदा कर दे।

हर चीज़ का असर होता है। खटास का नाम दो तीन दफ़ा लें तो मुँह में पानी आ ही जाएगा। मिठास का नाम लें तो माशाअल्लाह मुँह में मीठापन महसूस होगा। अगर खटास और मिठास के नाम की लज़्ज़त बंदा महसूस करता है तो क्या अल्लाह के नाम की लज़्ज़त महसूस नहीं कर सकता। महसूस करता है मगर वही जिसने मुहब्बत की हो। हर बंदे को ये लज़्ज़त महसूस नहीं होती। उसकी लज़्ज़त हमारे बड़ों को मिली। उनकी ज़िंदगियाँ हमारे लिए मीनारए नूर की हैसियत रखती हैं।

यही हैं जिनके सोने को फ़ज़ीलत है इबादत पर
इन्हीं के इत्तिक़ा पर नाज़ करती है मुसलमानी

ये लोग ﴿الخلوة فى الجلوة﴾ का मिस्दाक़ बन जाते हैं। वे जलवत में बैठकर ख़लवत के मज़े पाते हैं। ये ﴿الخلوة فى الجلوة﴾ यानी मजमे में तन्हाई कब नसीब होती है। इंसान को ज़िक्रे इलाही से नसीब होती है बल्के मैं तो ये कहता हूँ के हलवा भी इसी से नसीब होता है।

सूफ़ी की सिफ़ात

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया ﴿الصُّوفِى كَائِنٌ بَائِنٌ﴾ सूफ़ी काइन बाइन होता है।

सूफ़ी का लफ़्ज़ उस बंदे के लिए इस्तेमाल होता है जो अपने दिल को साफ़ करने की तमन्ना करता हो। सूफ़ी का लफ़्ज़ सिफ़ात से लिया गया है। अगर इसकी तहक़ीक़ मालूम करनी हो

तो तसव्वुफ़ व सुलूक की किताब में मुस्तक़िल बाब है, वो पढ़ लीजिए। काइन बाइन का क्या मतलब होता है?

﴿كائن مع الخلق من حيث الظاهر وبائن منهم من حيث الباطن﴾

ज़ाहिर में मख़्लूक़ के साथ होता है और बातिन में मख़्लूक़ से कटा हुआ होता है।

बाद में फ़रमाया :

الصوفی غریب قریب. ای غریب بین اهله و اصحابه من حیث توحش باطنه عنهم وقریب منهم من حیث تعلق ظاهره معهم.

सूफ़ी दूर होता है और क़रीब होता है यानी अपने घरवालों से दोस्तों से दूर होता है इस एतिबार से के उसका बातिन कटा होता है और उन से क़रीब होता है इस एतिबार से के ज़ाहिरी ताल्लुक़ उनसे रहता है।

यानी ज़ाहिर में उनके साथ उलफ़त होती है। क़रीब होता है और बातिन में सेस कटा हुआ होता है। एक अल्लाह से जुड़ा हुआ होता है। उसको मक़ामे तबत्तुल नसीब होता है। वो मख़्लूक़ से कट जाता है और अपने ख़ालिक़ से जुड़ जाता है। इसीलिए किसी ने कहा :

﴿الصوفی فرشی عرشی﴾ सूफ़ी फ़र्शी और अर्शी होता है।

यानी जिस्म के एबितार से फ़र्श पर होता है और अपनी रूह के एतिबार से अर्श पर होता है। ये अल्लाह वो नाम है जो बंदे को फ़र्श से उठाकर अर्श पर पहुँचा देता है।

या अल्लाह कहकर पुकारने में राज़

याद रखें के "या अल्लाह" कहकर पुकारने में ज़्यादा मज़ा है,

क्यों? इसमें क्या हिकमत और राज़ है? अगर या रहमान कहकर पुकारेंगे तो अल्लाह तआला की सिफ़्ते रहमानियत को पुकारेंगे। इसमें अल्लाह तआला की बाक़ी सिफ़ात नहीं आएंगी। मसलन सत्तारी और ग़फ़्फ़ारी वग़ैरह का ज़िक्र नहीं आएगा। इसी तरह अगर या सत्तार कहकर पुकारेंगे तो सिर्फ़ सिर्फ़ सिफ़्ते सत्तारी की तरफ़ इशारा होगा। बाक़ी सिफ़ात की तरफ़ इशारा नहीं होगा। पता चला के अगर अल्लाह तआला को उसके सिफ़ाती नामों से पुकारें तो सिर्फ़ एक सिफ़्त की तरफ़ इशारा होगा। पता चला के अगर अल्लाह तआला को उसके सिफ़ाती नामों से पुकारेंगे तो सिर्फ़ एक सिफ़्त की तरफ़ इशारा होगा लेकिन जब मोमिन बंदा या अल्लाह कहकर पुकारता है तो अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात की तरफ़ इशारा हो जाता है। हरूफ़ निदा में "या" सबसे कामिल है। ये क़रीब और बईद दोनों के लिए इस्तेमाल होता है। वाह मेरे मौला! निदा का लफ़्ज़ भी ऐसा है जो सबसे कामिल है और इस्मे ज़ात अल्लाह भी ऐसा है जो सबसे कामिल है। गोया जब हम या अल्लाह कहते हैं तो उस वक़्त ये बात ध्यान में रखें के इस वक़्त अल्लाह तआला की तमाम सिफ़ात को सामने रखकर उसे पुकार रहे होते हैं।

इस्मे ज़ात के हरूफ़ की मारिफ़त

अल्लाह का लफ़्ज़ लिखा जाए तो लिखने में चार हरूफ़ नज़र आते हैं मगर अदा करने में पाँच हरूफ़ हैं। लिखने में अलिफ़, लाम, लाम और हा हैं। लेकिन हक़ीक़त में इसमें पाँच हरूफ़ हैं। अलिफ़, लाम, लाम, फिर अलिफ़ जो हज़फ़ हो चुकी है और फिर आगे हा। हमारे अकाबिरीन ने इसकी मारिफ़त लिखी है :

अलिफ़ से अल्लाह, जो इस्म मुसम्मा है। जिसका ये इस्म है

वो कौन है? वो अपनी ज़ात में यकता है।

पहला लाम जमाल का लाम है यानी वो अपने जमाल में यकता है।

दूसरा लाम जलाल का है यानी वो अपने जलाल में भी यकता है।

आगे फिर अलिफ़ आ गया जो हज़फ़ हो चुका है।

आगे "ह" है ये गोल दायरा बना दिया गया यानी अगर तुम उसकी मारिफ़त हासिल करने के लिए सारी ज़िंदगी लगे रहोगे तो तुम उसकी मारिफ़त की तह तक नहीं पहुँच सकोगे और बाज़ मशाइख़ ने कहा के ये तौक़े अबूदियत है। इसमें बंदों के लिए इशारा है के अल्लाह तआला ने तुम्हारे गले में अपनी बंदगी का तौक़े अब्दियत डाल दिया है।

हाथ की उंगलियों से इस्मे ज़ात का नक़्श

आप इस आजिज़ की उंगलियों की तरफ़ देखें। ये इस्मे ज़ात "अल्लाह" बनता है। अलिफ़ लाम, लाम और ह। अल्लाह का लफ़्ज़ ऐसे लिखा जाता है। हमारे मशाइख़ अल्लाह तआला के नाम की शक्ल उंगलियों से बनाकर सालिकीन के दिल पर रखते हैं। हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबंदी बुख़ारी रह० पर अल्लाह तआला ने ये राज़ खोला। वो सालिकीन के दिल पर उंगली रखकर रूहानियत से अल्लाह का लफ़्ज़ कहते थे। मन्क़ूल है :

﴿كان ينقش اسم الله على قلوب السالكين.﴾

वो अल्लाह का नाम सालिकीन के दिलों पर नक़्श कर दिया करते थे।

सालिक को यों महसूस होता था के जैसे किसी ने मेरे दिल पर

अल्लाह का नाम नक़्श कर दिया है। उनका नाम तो बहाउद्दीन था मगर उसकी वजह से नक़्शबंद मशहूर हो गए। वो दिल में अल्लाह का नाम नक़्श कर दिया करते थे।

अब ये बात समझ में भी आती है। आपने वैल्डिंग देखी होगी। जब दो टुकड़ों में वैल्ड करना होता है तो एक रॉड होता है जिसके वोल्ट बहुत हाई होते हैं। वो जैसे ही रॉड को हाई वाल्टेज पर लगाते हैं तो स्पार्क होता है और दो टुकड़े आपस में जुड़ जाते हैं। अल्लाह वाले भी ऐसा ही करते हैं उनके अंदर रूहानियत का हाई वोल्टेज होता है। वो उंगली को रॉड बनाकर अल्लाह के नाम की शक्ल बंदे के दिल पर लगाते हैं तो उसे अल्लाह तआला से ताल्लुक़ नसीब हो जाता है। इसीलिए ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० फ़रमाया करते थे के जिस दिल पर ये उंगली लग गई उसको ईमान के बग़ैर मौत नहीं आ सकती।

हज़रत अब्दुल-अज़ीज़ दबाग़ रह० का कश्फ़

इस नाम (अल्लाह) के साथ अल्लाह की सारी मख़्लूक़ ज़िक्र करती है। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا یُسَبِّحُ بِحَمْدِہٖ (بنی اسرائیل:۴۴)﴾

और जो भी कोई चीज़ है वो अल्लाह तआला की हम्द बयान करती है।

इस आयत के तहत अब्दुल-अज़ीज़ दब्बाग़ रह० फ़रमाते हैं के मुझे अल्लाह तआला ने कश्फ़ में इसको सुनने की सआदत अता फ़रमाई। मैंने सुना के हर चीज़ का एक-एक ज़र्रा-ज़र्रा "अल्लाह रब्बी", "अल्लाह रब्बी" के नाम से अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है।

इस्मे ज़ात की इन्फ़िरादियत

अल्लाह तआला का यहनाम तारीख़े इंसानी में कभी ग़ैरुल्लाह के लिए इस्तेमाल नहीं हुआ। कई लोगों ने ख़ुदाई के दावे किए मगर अल्लाह का नाम कोई अपने लिए इस्तेमाल न कर सका। अगर इस्तेमाल हुआ है तो फ़क़त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए। फ़िरऔन ने रुबूबियत का दावा तो किया मगर उलहूयित का दावा नहीं किया। मेरे मालिक! आप कितने अज़ीम हैं के आपने अपने नाम को अपने लिए ख़ालिस फ़रमा लिया।

इस्मे ज़ात की बरकत से सूर फूंकने में ताख़ीर

हदीस पाक में आया है के दुनिया उस वक़्त तक क़ायम रहेगी जब तक के एक बंदा भी अल्लाह अल्लाह कहने वाला होगा। गोया अल्लाह के नाम की बरकत ने दुनिया को टूट-फूट से बचाया हुआ है। तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है के नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया के हज़रत इसराफ़ील अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला की तरफ़ से हुकम है के जब भी तुम मेरे बंदों से मेरा नाम सुनोगे तो चालीस साल तक तुमने सूर फूंकने में ताख़ीर कर देनी है। जब तक अल्लाह का नाम सुनो हर बार सूर फूंकने में ताख़ीर करते रहो। चुनाँचे जब आख़िरी बंदा अल्लाह का नाम लेने वाला होगा तो इसराफ़ील अलैहिस्सलाम नाम सुनकर उसके बाद चालीस साल तक इंतिज़ार करेंगे के है कोई अल्लाह का नाम पुकारने वाला? जब कोई अल्लाह का नाम लेने वाला नहीं होगा तो वो सूर फूंक देंगे और अल्लाह तआला क़ियामत बर्पा कर देंगे। ये कैसा अजीब नाम है के इस नाम कोसुनकर सूर फूंकना चालीस साल तक पीछे हटा दिया जाएगा। ऐ बंदे! अगर इस नाम को सुनकर फ़रिश्ते को हुक्म हे के तुम सूर फूंकने में ताख़ीर कर देना

तो अगर हम सुबह व शाम इस नाम को पढ़ेंगे तो क्या अल्लाह तआला परेशानियों को भेजने में ताख़ीर नहीं फ़रमाएंगे।

इस्मे ज़ात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़

इमाम राज़ी रह० का क़ौल है के जब आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने पैदा किया और उन्होंने अपने इर्द-गिर्द के माहौल को देखा तो पहला कलाम जो हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ज़बान से निकला वो अल्हम्दुलिल्लाह था। उन्होंने सबसे पहले इस्मे ज़ात के साथ अल्लाह तआला की तारीफ़ बयान की। जब जन्नती लोग जन्नत में जाएंगे तो वो उन्हीं की इक़्तिदा में जन्नत में दाख़िल होते वक़्त कहेंगे :

﴿اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ बेशक सब तारीफ़ें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों का रब है।

पढ़ो क़ुरआन और फिर समझो अल्लाह तआला की शान। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا. (زمر:٧٣)﴾

और चलाया जाएगा रब से डरने वालों को जन्नत की तरफ़

फ़रिश्ते भी अल्लाह तआला के नाम से उसकी हम्द बयान करते हैं :

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. (زمر:٧٥)

और आप देखेंगे के फ़रिश्तों को जो हलक़ा बांधे हुए होंगे। अर्श के इर्द-गिर्द और पाकी बयान कर रहे होंगे अपने रब की। और फ़ैसला होगा उनके दर्मियान हक़ का। और कहा जाएगा के

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

उलमा ने लिखा है के जो बंदा ये मन्नत माने के अगर मेरा फ़लाँ काम हो जाए तो अल्लाह रब्बुनइज़्ज़त की हर तरह की हम्द और तारीफ़ करूंगा और वो बंदा सिर्फ़ अल्हम्दुलिल्लाह ही कह दे तो उसकी तरफ़ से मन्नत अदा हो जाएगी।

अल्लाह तआला का नाम लेने से नूर बरसता है

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम लिया जाए तो रहमतें और नूर बरसता है। इसलिए के अल्लाह तआला ने अपने लिए नूर का नाम इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ. (النور:٣٥)﴾

अल्लाह आसमानों और ज़मीन का नूर है।

अल्लाह का नूर अजीब चीज़ है। हदीस पाक में आया है :

﴿اتقوا فراسة المؤمن فانه ينظر بنور الله.﴾

मोमिन की फ़रासत से डरो। ये अल्लाह के नूर से देखता है।

हज़रत अक़्दस गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं के अगर ग़फ़लत में भी अल्लाह का नाम लिया जाए तो भी फ़ायदा देता है। अरे अगर कोई ग़फ़लत से नाम ले तो उसको भी फ़ायदा होता है तो जो इंसान मुहब्बत से नाम लेगा, अल्लाह तआला उसको कितनी बरकतें अता फ़रमाएंगे।

सूरः मुजादला की हर आयत में इस्मे ज़ात लाने की वजह

क़ुरआन मजीद में एक सूरत ऐसी है जिसकी हर-हर आयत में अल्लाह का नाम आया है। वो सूरः मुजादला है। अब तालिब

इल्मों के ज़हन में सवाल पैदा होगा के सूरः यासीन को "क़ल्बे क़ुरआन" कहा गया है और सूरः फ़ातिहा को "फ़ातिहातुल किताब" कहा गया है। इन सूरतों की हर हर आयत में अल्लाह का नाम होना चाहिए था।

इसका जवाब ये है के क़ुरआन पाक की कुल एक सौ चौदह सूरतें हैं इसका आधा सत्तावन बनता है। इससे पहले सत्तावन सूरतें हैं। सूरः मुजादला क़ुरआन की अठ्ठावनवीं सूरत है। इससे पहले सत्तावन सूरतें हैं। सूरः फ़ातिहा पहले निस्फ़ की सूरत है और ये पहली सत्तावन सूरतों के लिए फ़ातिहातुल किताब है और सूरः मुजादला दूसरे निस्फ़ की पहली सूरत है। इस तरह ये सूरः मुजादला दूसरे निस्फ़ हिस्से के लिए फ़ातिहातुल किताब है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने पहले निस्फ़ क़ुरआन के लिए अलहम्दु को पसन्द फ़रमाया क्योंके उसमें सबके लिए जर्नल तालीम है और नमाज़ में इस सूरत को पढ़ने का हुक्म दिया गया है। जब मोमिन बंदा क़ुरआन मजीद को पढ़ते-पढ़ते आधा क़ुरआन पढ़ लेता है तो उसको अल्लाह तआला की ख़ासी मारिफ़त नसीब हो जाती है। उसके बाद अगला निस्फ़ हिस्सा शुरू होता है। अब अल्लाह तआला ने इस सूरत की हर हर आयत में अपने नाम को इस्तेमाल फ़रमाकर पैग़ाम दे दिया के ऐ मेरे बंदे! तुम आधा सबक़ पढ़ चुके हो और अब अगला आधा सबक़ शुरू कर रहे हो। अगले आधे सबक़ का निचोड़ ये है के तुम मेरा कलाम पढ़ रहे हो। तुम मेरे कलाम की हर हर आयत में मेरा नाम पाओगे अब तुम्हें ये पैग़ाम मिल रहा है के तुम जो भी काम करोगे अगर मेरा नाम मक़्सूद रहेगा तो तुम्हारा हर-हर अमल मक़्बूल होगा और अगर मेरा नाम नहीं लिया जाएगा तो तुम्हारा कोई अमल भी कबूल नहीं किया जाएगा।

अल्लाह तआला ने सूरः मुजादला में चालीस मर्तबा अपना नाम इस्तेमाल फ़रमाया। इस लिहाज़ से अल्लाह के नाम को और चालीस के अदद को बड़ी अहमियत हासिल है।

चालीस के अदद की बरकतें

चालीस के अदद की बरकतें भी बहुत ज़्यादा हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की क़ौम को चालीस रोज़े रखने का हुक्म हुआ। अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَإِذْ وٰعَدْنَا مُوسٰى أَرْبَعِينَ لَيْلَةً (البقرة:٥١)﴾

और जब हमने वादा किया मूसा अलैहिस्सलाम से चालीस रातों का।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने भी चालीस रातें गुज़ारीं :

﴿فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً (اعراف:١٤٢)﴾

पस पूरी हुई तेरे रब की मुद्दत चालीस रातें।

हमारे मशाइख़ ने यहीं से चिल्ला लिया है। माँ के पेट में जो बच्चा परवरिश पा रहा होता है उसकी हालत हर चालस दिन बाद बदल रही होती है। तो चालीस दिन अल्लाह तआला की याद में लगाने से रूहानी हालत भी बदल जाती है। हमारे मशाइख़ इसीलिए चालीस-चालीस दिन एतिकाफ़ की हालत में अल्लाह तआला की इबादत में गुज़ारा करते थे। इसी को चिल्ला कहते हैं। हमारे भी तबलीग़ी भाई भी चिल्ला लगवाते हैं क्योंके चिल्ला लगवाने से वाक़ई इंसान के दिल की हालत बदलती है।

रिवायत में आया है के जो आदमी चालीस नमाज़ें तक्बीरे ऊला से अदा करे उसको अल्लह तआला की तरफ़ से दो परवाने

मिलते हैं। एक निफ़ाक़ से बरी होने का और दूसरा जहन्नम से बरी होने का।

आह और इस्मे ज़ात

एक और अजीब बात सुनें। अल्लाह तआला के नाम के शुरू में "अलिफ़" और आख़िर "ह" है। "अलिफ़" और "ह" को मिलाया जाए तो "आह" का लफ़्ज़ बनता है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ. (التوبہ:١١٤)﴾

बेशक इब्राहीम बड़े नरम दिल और तहम्मुल मिज़ाज वाले थे।

वो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत में आहें भरते थे। जब इंसान पर मुहब्बत की कैफ़ियत होती है तो फिर उसके बस में नहीं रहता। आशिक़ों की पहचान भी यही है–

आह को निस्बत है कुछ उश्शाक़ से
आह निकली और पहचाने गए

लोगों को उसकी आहों से पता चल जात है के ये दीवाना है। रब की याद में इसकी आहें निकलती हैं। हमें भी यही काम करना है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम को इतना लेना है। इतना लेना है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम की बरकत से हमें भी ये सब नेमतें नसीब हो जाएं। इशदि बारी तआला है :

﴿أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ. (الزمر:٣٦)﴾

क्या अल्लाह अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं है?

हमें अल्लाह तआला भी काफ़ी है और अल्लाह तआला का नाम भी काफ़ी है यानी जिस तरह अल्लाह तआला की ज़ात बंदे

के लिए काफ़ी है इसी तरह ज़िक्र के मामले में अल्लाह तआला का नाम भी ज़िक्र के लिए काफ़ी है, माशाअल्लाह–

रहे हयात की तारीक रह गुज़ारों में
तुम्हारा नाम ही काफ़ी है रौशनी के लिए

इस्मे ज़ात का इस्तेमाल

अज़ान और नमाज़ दोनों की इब्तिदा भी अल्लाह के नाम से होती है और इख़्तिताम भी।

- अज़ान की इब्तिदा भी अल्लाह तआला के नाम से होती है और उसका ख़ात्मा भी अल्लाह तआला के नाम पर होता है। मौज़्ज़िन शुरू में अल्लाहु अकबर और आख़िर में ला इलाहा इल्लल्लाह कहता है।
- इसी तरह इक़ामत की इब्तिदा भी अल्लाह तआला के नाम से और इंतिहा भी अल्लाह तआला के नाम से।
- नमाज़ की इब्तिदा भी अल्लाह तआला के नाम से और इंतिहा भी अललाह तआला के नाम पर। अल्लाहु अकबर कहकर तहरीमा बांधते हैं और अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह कहकर नमाज़ मुकम्मल करते हैं।
- इंसान पर शैतान का हमला होता है वो अल्लाह से मदद मांगता है। चूँके अल्लाह तआला को शैतान से ज़ाती दुश्मनी है। इसलिए जब दुश्मन की बात चली तो परवरदिगार ने अपने बंदों से फ़रमाया के तुमने पनाह मांगनी है तो पनाह मांगने का तरीक़ा ये है के तुम यों पढ़ो ﴿اعوذ بالله من الشيطن الرجيم﴾ अऊज़ुबिल्लाहि मिनश् शैतानिर-रजीम। जब तुम यों कहोगे तो मैं परवरदिगार तुम्हें इस दुश्मन से पनाह अता कर दूंगा।

- अल्लाह तआला ने बिस्मिल्लाह में भी अपना ज़ाती नाम इस्तेमाल फ़रमाया। बचपन में उस्ताद बताते हैं के अलिफ़ खड़ी होती है और "ब" लेटी होती है। इसलिए जब बच्चे "ब" लिखते हैं तो वो लेटी होती है। लेकिन जब यही "ब" बिस्मिल्लाह में लिखी जाती है तो खड़ी हालत में लिखी जाती है। उलमा ने लिखा है के अल्लाह तआला के नाम में इतनी बरकत है के जब लेटी हुई 'ब' अल्लाह तआला के नाम के साथ नत्थी हो जाती है तो ये नाम लेटी हुई 'ब' को खड़ा कर देता है। ऐ बंदे! अगर तू भी इसी तरह अल्लाह तआला के साथ नत्थी हो जाएगा तो अल्लाह तआला तुझ गिरे हुए बंदे को क्यों नहीं ऊपर उठाएंगे।

अल्लाह तआला ने बहुत सारी नेमतें अता करने के लिए क़ुरआन मजीद में अपना ज़ाती नाम इस्तेमाल किया। थोड़ी देर के लिए क़ुरआन मजीद की सैर कीजिए ताके पता चले के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने कहाँ-कहाँ अपना ज़ाती नाम इस्तेमाल फ़रमाया है। मिसाल के तौर पर फ़रमाया :

- अल्लाह तआला ने जहाँ अपने दोस्तों का तज़्किरा फ़रमाया है वहाँ भी अपना ज़ाती इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا. (البقرة:٢٥٧)﴾

अल्लाह दोस्त है ईमान वालों का।

- दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ. (آل عمران:٦٨)﴾

अल्लाह मोमिनीन का दोस्त है।

- जो अच्छे बंदे होते हैं वे कहते हैं

﴿إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ. (الانعام:۱۶۳)﴾

बेशक मेरी नमाज़, मेरी क़ुर्बानी, मेरी ज़िंदगी और मेरी मौत अल्लाह के लिए है जो तमाम जहानों का परवरदिगार है।

- अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल के लिए अपना ज़ाती नाम पसन्द फ़रमाया है। इर्शाद फ़रमाया :

﴿ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ. (الحديد:۲۱)﴾

ये अल्लाह का फ़ज़्ल हे जिसको चाहे अता कर देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَلَوْ لَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ. (النور:۲۱)﴾

अगर अल्लाह का फ़ज़्ल न होता तुम्हारे ऊपर।

﴿وَلَوْ لَا فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ. (آل عمران:۱۵۲)﴾

और अल्लाह तआला फ़ज़्ल करने वाला है मोमिनीन पर।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ. (آل عمران:۷۳)﴾

कह दीजिए बेशक फ़ज़्ल तो अल्लाह तआला के अख़्तियार में है।

- अपनी रहमत के लिए भी इस्मे ज़ात को इस्तेमाल फ़रमाया। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَرَحْمَةُ اللّٰهِ﴾ और अल्लाह की रहमत।

- अल्लाह तआला की ख़ास रहमत "सकीना" नाज़िल होती है। उसका तज़्किरा भी इस्मे ज़ात से फ़रमाया :

﴿فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ. (الفتح:٢٦)﴾

बस अल्लाह तआला ने अपने रसूल पर सकीना नाज़िल फ़रमायई।

- दुनिया व आख़िरत के सवाब का तज़्किरा किया तो अपने ज़ाती नाम को पसन्द फ़रमाया। चुनाँचे इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ. (النساء:١٣٤)﴾

पस अल्लाह के हाँ दुनिया व आख़िरत का बदला है।

- जहाँ बंदों को नेक आमाल की तौफ़ीक़ देने का तज़्किरा फ़रमाया वहाँ भी इस्मे ज़ात को इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿وَمَا تَوْفِيْقِيْ اِلَّا بِاللّٰهِ. (هود:٨٨)﴾

मेरी तौफ़ीक़ सिर्फ़ अल्लाह की जानिब से है।

- इबादत का तज़्किरा फ़रमाया तो इस्मे ज़ात को पसन्द फ़रमाया, ﴿اُعْبُدُ اللّٰهَ﴾ अल्लाह की इबादत करो।
- कमाल की निस्बत अल्लाह तआला ने अपनी तरफ़ फ़रमाई। इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا. (التوبة:٤٠)﴾

और अल्लाह का कलिमा ही बुलन्द हो।

- अल्लाह तआला ने अपने बंदों पर एहसान जतलाया तो इस्मे ज़ात को पसन्द फ़रमाया :

﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ. (آل عمران:١٦٤)﴾

तहक़ीक़ अल्लाह ने एहसान फ़रमाया मोमिनीन पर।

एक जगह फ़रमाया :

﴿كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ. (النساء:٩٤)﴾

बस तुम पहले ऐसे ही थे। बस अल्लाह ने तुम पर एहसान फ़रमाया।

एक और जगह पर फ़रमाया :

﴿فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ. (الطور:٢٧)﴾

फिर अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया और हमें बचाया लू के अज़ाब से।

- जहाँ मोमिनों की तारीफ़ और नुसरत का वादा फ़रमाया वहाँ भी ज़ाती नाम को इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَاءُ. (آل عمران:١٣)﴾

और अल्लाह तआला अपनी मदद से जिसको चाहते हैं क़ुव्वत देते हैं।

- जब किसी को मुल्क देने का तज़्किरा फ़रमाया तो इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَاللّٰهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَاءُ. (البقرة:٢٤٧)﴾

और अल्लाह तआला जिसको चाहता है अपना मुल्क अता फ़रमा देता है।

- हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अल्लाह से मदद मांगने की तालीम दी। उसका तज़्किरा करते हुए भी ज़ाती नाम इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿وَقَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا.﴾

जब कहा मूसा ने अपने क़ौम से तुम लोग अल्लाह से मदद मांगो और सब्र करो।

- अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने बंदों का इम्तिहान लिया तो उसका तज़्किरा यों फ़रमाया :

﴿أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَىٰ. (الحجرات:٣)﴾

ये वे लोग हैं जिनके दिलों का अल्लाह ने तक़्वे के बारे में इम्तिहान लिया है।

- हुदूदे शरिआ का तज़्किरा करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴿تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ. (الطلاق:١)﴾

ये अल्लाह तआला की हुदूद हैं।

- ताज़ीम अशिया का तज़्किरा यों फ़रमाया :

﴿وَمَنْ يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللَّهِ. (الحج:٣٢)﴾

और जो कोई अल्लाह के शआइर की ताज़ीम करता है।

- हलाल व हराम का तज़्किरा करते हुए यों इर्शाद फ़रमाया :

﴿لَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ.﴾

और तुम न खाओ उन जानवरों का गोश्त जिनके ऊपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो।

जब तक उस पर अल्लाह तआला का नाम न लिया जाए तब तक ज़िब्ह मुकम्मल नहीं होता।

- जहाँ मुहरे जब्बारियत लगाने का तज़्किरा हुआ वहाँ भी अपने इस्मे ज़ात को इस्तेमाल फ़रमाया। फ़रमाया :

﴿خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ. (البقرة:٧)﴾

अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी है।

- जहाँ ख़शियत का तज़्किरा हुआ, वहाँ अपने ज़ाती नाम को इस्तेमाल फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ. (الاحزاب:٣٩)﴾

और वे नहीं डरते मगर अल्लाह तआला से।

एक मक़ाम पर फ़रमाया :

﴿اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا. (فاطر:٢٨)﴾

अल्लाह के बंदों में से अल्लाह से उलमा ही डरते हैं।

- जहाँ बंदों से कोई वादा फ़रमाया वहाँ इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى. (الحديد:١٠)﴾

और सब के साथ अल्लाह तआला ने अच्छा वादा फ़रमाया।

एक जगह पर फ़रमाया :

﴿وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ (المائدة:٩)﴾

अल्लाह का वादा है उन लोगों के साथ जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे। उनके लिए मग़फ़िरत है और बहुत बड़ा अज्र है।

- जब लोगों ने कोई बात पूछी और अल्लाह तआला ने फ़तवा दिया तो भी अपने ज़ाती नाम को इस्तेमाल फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया :

﴿يَسْتَفْتُوْنَكَ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ. (النساء:١٧٦)﴾

लोग फ़तवा पूछते हैं आप से। आप कह दीजिए के अल्लाह तुम्हें कलालः के बारे में फ़तवा देता है।

सुब्हानअल्लाह, अल्लाह तआला फ़तवा दे रहे हैं।

- अल्लाह तआला रोज़े महशर अदल फ़रमाएंगे। इसका तज़्किरा करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴿فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ (البقرة:١١٣)﴾

बस अल्लाह फ़ैसला करेगा उनके दर्मियान।

- अल्लाह तआला ने सच्चाई का तज़्किरा करते हुए ज़ाती नाम को इस्तेमाल फ़रमाया :

﴿قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ. (آل عمران:٩٥)﴾

कह दीजिए के अल्लाह ने सच फ़रमाया।

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا. (النساء:١٢٢)﴾

और अल्लाह तआला से ज़्यादा सच्चा कौन है?

- जो अल्लाह तआला के रास्ते पर चलते हैं अल्लाह तआला ने उन बंदों का तज़्किरा फ़रमाया तो ज़ाती नाम को पसन्द फ़रमाया। इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ.﴾

जो निकले अपने घर से हिजरत करके अल्लाह और उसकी रसूल की तरफ़।

- जब अल्लाह तआला ने मुहब्बत का तज़्किरा फ़रमाया तो वहाँ भी अपने इस्मे ज़ात को पसन्द फ़रमाया :

﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ. (آل عمران:١٤٦)﴾

और अल्लाह सब्र करने वालों से मुहब्बत करता है।

एक और मक़ाम पर फ़रमाया :

﴿وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ. (آل عمران:۱۴۸)﴾

और अल्लाह नेक काम करने वालों से मुहब्बत करता है।

एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

﴿اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ. (البقرة:۲۲۲)﴾

बेशक अल्लाह पसन्द करता है तौबा करने वालों और पाकीज़गी वालों को।

- जहाँ अपनी मख़्लूक़ को अपना ज़िक्र क़रने की तलक़ीन फ़रमाई वहाँ भी अपना ज़ाती नाम पसन्द फ़रमाया :

﴿يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا (الاحزاب:۴۱)﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह को कसरत से याद करो।

एक मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرَاتِ. (الاحزاب:۳۵)﴾

और अल्लाह को कसरत से याद करने वाले मर्द और औरतें।

हमारा ज़िक्र करने का तरीक़ा भी यही है। अल्लाह तआला मशाइख़ नक़्शबंदिया पर करोड़ों रहमतें नाज़िल फ़रमाए। जिन्होंने अपने दिलों में अल्लाह तआला की ख़शियत और मुहब्बत इतनी पैदा कर ली के अल्लाह तआला ने उनके सामने अपने इस प्यारे नाम के मआरिफ़ खोल दिए हत्ताके उन्होंने इस नाम का ज़िक्र करके अल्लाह तआला की मारिफ़त हासिल कर ली। उन्होंने अपने ताल्लुक़ वालों को भी इसी नाम का ज़िक्र करने की तलक़ीन फ़रमाई। लिहाज़ा हम ख़ुशनसीब हैं के "अल्लाह" हमारा हर वक़्त

का ज़िक्र है। अल्लाह तआला चाहते हैं के अब तुम मेरे इस नाम का ज़िक्र करो। या अल्लाह कैसे करें? इर्शाद फ़रमाया :

﴿الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيَامًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ. (آل عمران:١٩٠)﴾

जो याद करते हैं अल्लाह को खड़े होने, बैठने और लेटने की हालत में।

यानी तुम बैठना चाहो तो अल्लाह, खड़े होना चाहो तो अल्लाह, तुम लेटना चाहो तो अल्लाह, तुम उठना चाहो तो अल्लाह, तुम चलना चाहो तो अल्लाह। जब हर वक़्त अल्लाह अल्लाह कहते रहोगे तो ये अल्लाह का नाम तुम्हारे दिल में अल्लाह की मुहब्बत पैदा फ़रमा देगा। इंसान इतना ज़िक्र करे के वो बाक़ी सबको भूल जाए।

याद में तेरी सब को भुला दूँ कोई न मुझको याद रहे
तुझ पे सब घरबार लुटा दूँ ख़ानए दिल आबाद रहे
सब ख़ुशियों को आग लगा दूँ ग़म से तेरे दिल शाद रहे
सबको नज़र से अपनी गिरा दूँ तुझसे फ़क़त फ़रियाद रहे
अब तो रहे बस ता दमे आख़िर विर्दे ज़बाँ ऐ मेरे इलाहा
ला इलाहा इल्लल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाह

किसी ने क्या ख़ूब ही कहा है–

बताऊँ आप को क्या आशिक़ों का काम होता है
दिल उनकी याद में और लब पे उनका नाम होता है

इस्मे ज़ात की मिठास

जो बंदा इस नाम की बरकतों से वाक़िफ़ हो जाता है उसकी ज़िंदगी में बहार आ जाती है–

अल्लाह हू के बड़े मज़े
जो भी चाहे वो चख ले

किसी ने क्या ही अच्छी बात कही–

ऐ मोमिन अल्लाह का ज़िक्र कसरत से कर ताके दोनों आलम में इज़्ज़त पा ले।

ज़िक्र कर जब तक के तेरे जिस्म में जान है क्योंके दिल तो ज़िक्र से पाक होता है।

अगर दिल में मुहब्बते इलाही हो तो अल्लाह तआला का नाम लेते हुए लज़्ज़त आती है। एक साहब कहने लगे, आप जो ये अल्लाह अल्लाह करते हैं इसका क्या मतलब है? मुझे उस वक़्त एक शे'र याद आया और कहा, भई! बात ये है–

हम रटेंगे गरचे मतलब कुछ न हो
हम तो आशिक़ हैं तुम्हारे नाम के

जिस बंदे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत होती है वो अल्लाह का नाम सुनकर भी तड़प उठता है। ये मोमिन की पहचान है। क़ुरआन अज़ीमुश्शान सुनिए और दिल के कानों से सुनिए। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ. (الانفال:٢)﴾

बेशक ईमान वाले बंदे वे हैं के जब उनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल तड़प उठते हैं।

इस मज़मून को किसी शायर ने यों बयान किया है :

इक दम भी मुहब्बत छुप न सकी
जब तेरा किसी ने नाम लिया

अल्लाह के नाम के बारे में शायरों ने अजीब शे'र कहे। एक साहब कहते हैं—

नाम लेते ही नशा सा छा गया
ज़िक्र में तासीरे दौरे जाम है

एक और आरिफ़ ने तो अजीब मज़मून बांधा। वो फ़रमाते हैं—

हर वादी वीराँ में गुलिस्ताँ नज़र आया
क़ुर्बान मैं तेरे नाम की लज़्ज़त से ख़ुदाया

अल्लाह के नाम में अजीब लज़्ज़त है। एक शायर ने कहा—

نام چو برزبانم می رود
ہر بن مو از عسل جوئے شود

जब उसका नाम मेरी ज़बान से निकलता है तो गोया जिस्म के हर हर अंग से शहद का एक चश्मा जारी हो जाता है।

जिस्म के अंदर ऐसी मिठास आ जाती है। एक शायर ने कहा—

اللہ اللہ ایں چہ شیریں است نام
شیر و شکر می شود جانم تمام

किसी ने कहा—

अल्लाह अल्लाह कैसा प्यारा नाम है
जो रटे वो लायक़ इनाम है

किसी ने कहा—

अल्लाह कैसा प्यारा नाम है
आशिक़ों का मीना है और जाम है

जैसे पीने वाले जाम और सुराही से पीते हैं इसी तरह ये अल्लाह का नाम भी आशिक़ों के लिए जाम व सुराही की मानिन्द है। वे अल्लाह का नाम लेते हैं तो उनके दिल में मिठास आ जाती है।

जी हाँ अगर हमने अल्लाह की मुहब्बत का मज़ा चखा होता तो हमें पता होता के इस नाम लेने में सुकून कितना है। इस नाम को लेने से मख़्लूक़ की मुहब्बत दिल से निकलती है और अल्लाह तआला की मुहब्बत दिल में बैठ जाती है। हत्ताके अगर कोई बंदा रियाकारी करता है तो कुछ अरसे के बाद ये नाम उसके दिल में भी ख़ुलूस पैदा कर देता है। हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि ने एक अजीब बात लिखी है। वो फ़रमाते हैं :

"अगर किसी बंदे ने सारी ज़िंदगी में एक मर्तबा अल्लाह का लफ़्ज़ कहा होगा तो ये नाम उसके लिए भी कभी न कभी जहन्नम से निकलने का सबब बन जाएगा।"

सुकून की तलाश

याद रखें के जिस तरह अल्लाह तआला का नाम बरकत वाला है इसी तरह उसकी ज़ात भी बरकत वाली है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ. (الملک:۱)﴾

बरकत वाली है वो ज़ात जिसके हाथ में है मुल्क।

जब बंदा उस ज़ात के साथ वासिल हो जाता है तो उस बंदे की ज़िंदगी में भी बरकतें आ जाती हैं। आज हमारी ज़िंदगी में बरकतें नहीं हैं। न पैसे की कमी है, घर भी है, औलाद भी है, कारें भी हैं, बहारें भी हैं मगर सुकून नहीं। सुकून न होने की वजह

क्या है? इसकी वजह ये है के बरकत नहीं है। ये बरकत कैसे आएगी? जब हम अपनी ज़िंदगी में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम का कसरत से ज़िक्र करेंगे और अपने दिलों में अल्लाह तआला की मुहब्बत पैदा करेंगे और इसके साथ-साथ अपनी ज़िंदगी को शरिअत के मुताबिक़ बना लेंगे तो फिर हमारी ज़िंदगी में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाम की बरकत आ जाएगी। सुकून की तलाश में मारे-मारे फिरने वालों के लिए ख़ुशख़बरी है।

ऐनुल यक़ीन का मक़ाम हासिल करने की ज़रूरत

एक नुक्ते की बात अर्ज़ कर देता हूँ, इसे तवज्जोह से सुनिएगा। यक़ीन के तीन दर्जे हैं :

1. इल्मुल-यक़ीन, 2. ऐनुल-यक़ीन, 3. हक़्क़ुल-यक़ीन

मिसाल से ये बात ज़रा जल्दी समझ में आ जाएगीं आप सर्दी में ठिठुरते हुए किसी दोस्त के पास पहुँचे। वो कहता है, मैं अभी चाय लाता हूँ। जब उसने कहा के चाय लाता हूँ तो आपको इल्मीतौर पर पक्का यक़ीन होगा के वो गर्म गर्म चाय लाएगा। इसको इल्मुल-यक़ीन कहते हैं और अगर उसने वो चाय का कप आपके सामने लाकर रख दिया और आपने उसके अंदर से बुख़ारात उठते देखे, इसको ऐनुल-यक़ीन कहते हैं। उसके बाद आपने जब उस चाय को पिया तो पता चला के वाक़ई वो गर्म चाय थी, इसे हक़्क़ुल-यक़ीन कहते हैं।

सहाबा किराम को हक़्क़ुल-यक़ीन का मक़ाम नसीब था। चुनाँचे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे के मुझे जन्नत और जहन्नम पर इतना यक़ीन है के अगर वो मेरे सामने आ जाए तो मेरे यक़ीन में ज़र्रा बराबर भी इज़ाफ़ा न हो। यहाँ नुक्ते की बात है। हमारे मशाइख़ ने कहा के मौत के वक़्त बंदे

का ईमान सलामत रहता है जिसको कम से कम ऐनुल-यक़ीन का मक़ाम नसीब हो और इल्मुल-यक़ीन वाले ख़तरे में होते हैं। वे ऐसे लोग होते हैं जो कारोबार तो डटकर करते हैं मगर ग़फ़लत भरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वो नमाज़ भी ज़ाहिरदारी की पढ़ते हैं। उनकी फ़क़त हाज़िरी होती है, हुज़ूरी नहीं। वो सारा दिन दुकान के अंदर होते हैं और जब नमाज़ पढ़ने लगते हैं तो दुकान उनके अंदर होती है। ऐसी नमाज़ों से ईमान व यक़ीन में कमाल पैदा नहीं होता। इसके लिए मेहनत करनी पड़ती है और अल्लाह के रास्ते में क़ुर्बानियाँ देनी पड़ती हैं। इसलिए अपने यक़ीन को इल्मुल-यक़ीन के मक़ाम से ऊपर उठाकर कम से कम ऐनुल-यक़ीन तक पहुँचा जाए। और ऐनुल-यक़ीन का मक़ाम तब मिलेगा जब अल्लाह का ज़िक्र करके उसकी बरकतें अपनी आँखों से देखेंगे। इसीलिए नबी अलैहिस्सलाम ने दुआ मांगी :

﴿اَللّٰهُمَّ اَرِنَا حَقَائِقَ الْاَشْيَاءِ كَمَا هِيَ.﴾

ऐ अल्लाह! हमें चीज़ों की हक़ीक़त दिखा दीजिए जैसी के वो हैं।

क्या हमें भी कभी चीज़ों की हक़ीक़त नज़र आती है? हर चीज़ ज़िक्र करती है। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ. (بنی اسرائیل:۴۴)﴾

और जो कोई भी चीज़ है वो अल्लाह के नाम की तस्बीह कर रही है लेकिन तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते।

क्या कभी हमारे दिल में तमन्ना पैदा हुई के हम भी उनकी तस्बीह को समझ सकें। हाँ जब सालिक का दिल जारी होता है तो फिर उसको अल्लाह की निशानियाँ नज़र आती हैं। हमारे मशाइख़ ने लिखा है के जब सालिक ज़िक्र करते करते सुलतानुल

अज़्कार के सबक़ पर पहुँचता है तो उसे उस वक़्त ऐसा मक़ाम नसीब हो जाता है के उसके जिस्म का रवाँ रवाँ अल्लाह का ज़िक्र कर रहा होता है। उसे हर चीज़ ज़िक्र करती सुनाई देती है। चुनाँचे हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० फ़रमाते थे के मुझे कपड़ा भी ज़िक्र करता सुनाई देता है। हवा भी ज़िक्र करती सुनाई देती है। सुब्हानअल्लाह उन्होंने दुनिया में अल्लाह तआला की निशानियों को देखा है। क्या हमने भी कोई निशानी देखी? कौन देखे? हमें तो शक्लें सूरतें देखने से ही फ़ुर्सत नहीं है।

अल्लाह अल्लाह करने की मिक़्दार

अगर हम अल्लाह तआला के नाम की बरकतों से वाक़िफ़ होना चाहें तो उसे ज़रा आज़मा कर देखें। उसको दिल में से बार बार गुज़ारना पड़ता है। हज़ारों नहीं बल्के लाखों बार गुज़ारना पड़ता है, तब उसकी तासीर दिल में पैदा होती है। देखें हर चीज़ की एक मिक़्दार होती है। क़ुरआन अज़ीमुश्शान कहता है ﴿وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِمِقْدَارٍ (الرعد:٨)﴾ और अल्लाह तआला के हाँ हर चीज़ की एक मिक़्दार मुक़र्रर है।

जब एक बंदे को बुख़ार हो तो डाक्टर से एंटीबायोटिक दवाई पाँच दिन तक सुबह, दोपहर, शाम खाने को कहते हैं। ये एक मुस्तक़िल मिक़्दार है। अगर कोई आदमी पाँच दिन की बजाए दो दिन खाए तो उसे तीसरे दिन फिर बुख़ार हो जाएगा। डाक्टर उसे नए सिरे से पाँच दिन दवाई खाने को कहेगा। जिसको हेपेटाइटिस सी हो जाता है उसको तक़रीबन नव्वे टीके लगते हैं और डाक्टर कहते हैं के दर्मियान में नाग़ा नहीं होना चाहिए। अगर एक भी नाग़ा हो गया तो फिर नए सिरे से लगवाने पड़ेंगे। नव्वे टीके की एक मुक़र्रर मिक़्दार है। अगर ये मिक़्दार पूरी होगी तो बीमारी

ख़त्म होगी वरना आदमी मौत के मुँह में चला जाएगा। टीबी के मरीज़ों को लगातार नौ महीने तक दवाई लेनी पड़ती है। अगर एक वक़्त भी नाग़ा हो जाए तो कहते हैं के पहले वाली दवाई ख़त्म, अब फिर नए सिरे से शुरू की जाएगी। इसी तरह अगर अल्लाह तआला के नाम की बरकत मालूम करनी हो तो उसकी भी एक मिक़्दार है। जब हम अल्लाह के नाम को इस मिक़्दार के मुताबिक़ दिल से गुज़ारेंगे तो फिर दिल की बीमारियाँ दूर हो जाएंगी और उसकी बरकतें ज़ाहिर हो जाएंगी। एक मिसाल अर्ज़ किए देता हूँ अगर पानी की टोंटी लीक हो और क़तरा क़तरा पानी टपक रहा हो तो वो पानी का क़तरा चिप्स या पत्थर के फ़र्श में भी सुराख़ कर देता है। अब बताइए के अगर पानी का क़तरा लगातार बार-बार टपके तो वो पत्थर में रास्ता बना लेता है। क्या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का नाम अगर बार-बार बंदे के दिल पर पड़े तो क्या ये उसके दिल में रास्ता नहीं बना सकता? जी हाँ ये भी दिल में रास्ता बनाता है। मगर हम उसका ज़िक्र बार-बार नहीं करते। आजकल के सुलूक सीखने वाले भी बड़ी शान वाले हैं। उनसे पूछा जाए के मुराक़बा किया है? कहते हैं याद ही नहीं रहा, वक़्त ही नहीं मिलता।

वो तजल्ली की ताब न ला सका

सैय्यद बदवी शहर फ़ास के मशहूर वलीअल्लाह गुज़रे हैं। उनके हालाते ज़िंदगी में लिखा है के वे घंटों नहीं बल्के दिनों तक मुराक़बा करते थे। इस मुराक़बे में उनको अल्लाह तआला की तरफ़ से मारिफ़त का वो नूर नसीब हुआ के उनकी चेहरे पर इतनी नूरानियत थी के लोग उनके चेहरे की ताब न ला सकते थे। चुनाँचे जब वे लोगों में आते थे तो अपने चेहरे को छुपाते थे।

अब्दुल-मजीद नामी उनका एक ख़ादिम था। उसने उनकी कई साल ख़िदमत की। एक दिन हज़रत उससे बड़े खुश हुए और दुआएं देने लगे। उसने मौका पाकर अर्ज़ किया, हज़रत! आपके चेहरे का दीदार किए हुए बहुत मुद्दत गुज़र चुकी है। अब मेरा जी चाहता है के आप के चेहरे का दीदार कर लूँ। आप इस वक़्त खुश हैं। लिहाज़ा मेहरबानी फ़रमाकर अपने चेहरे का दीदार करवा दीजिए। उसके कहने पर हज़रत ने नक़ाब उठा दिया। उनके चेहरे का नूर इतना था के अब्दुल-मजीद इस तजल्ली की ताब न ला सका। चुनाँचे वो वहीं गिरा और अपनी जान दे दी, अल्लाहु अकबर।

आँसुओं से ख़ुशबू

शेख़ अकबर मुह्इयुद्दीन इब्ने अरबी रह० ने शेख़ अबुल-हम्द सैलानी रह० के बारे में लिखा है के उन्हें अल्लाह तआला की ऐसी मुहब्बत नसीब थी के जब वो अल्लाह तआला की मुहब्बत में रोते थे तो उनकी आँखों से निकलने वाले आँसुओं से मुश्क जैसी खुशबू आया करती थी। अल्लाहुअकबर मुहब्बते इलाही में निकले हुए आँसुओं की क़द्र देखो। वो फ़रमाते हैं के लोग खुद उनकी आँखों से निकलने वाले आँसुओं से मुश्क की सी खुशबू सूंघा करते थे।

मुँह से ख़ुशबू

इमाम आसिम रह० के बारे में आता है के उनके मुँह से खुशबू आती रहती थी। किसी ने पूछा, हज़रत आपके मुँह से बड़ी खुशबू आती है। आप मुँह में क्या रखते हैं? फ़रमाने लगे, मैं तो कुछ नहीं रखता। उसने कहा के हमें आपके मुँह से अंबर से ज़्यादा बेहतर खुशबू महसूस होती है। फ़रमाने लगे, हाँ एक मर्तबा

ख़्वाब में नबी अलैहिस्सलाम का दीदार नसीब हुआ। मेरे आक़ा ने इर्शाद फ़रमाया, आसिम! तुम सारा दिन इख़्लास के साथ क़ुरआन मजीद पढ़ते पढ़ाते हो। क्यों न मैं तुम्हारे मुँह को बोसा दे दूँ। चुनाँचे जब नबी अलैहिस्सलाम ने मेरे मुँह को बोसा दिया तो उस वक़्त से मेरे मुँह से मुश्क की ख़ुशबू आती है।

जी हाँ मुहब्बत का ताल्लुक़ जोड़कर तो देखें। हमें तो नफ़्स व शैतान आगे बढ़ने ही नहीं देते। हम तो मख़्लूक़ में ही अटके फिरते हैं। हम क्या जानें के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत का नशा क्या होता है।

इस्मे ज़ात के लिए "अना" और "नह्नू" का इस्तेमाल

तालिब इल्मों के लिए एक इल्मी नुक्ता अर्ज़ करता चलूँ। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपनी ज़ात के लिए कहीं ﴿انا﴾ "अना" का लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया है और कहीं ﴿نحن﴾ "नह्नू" का लफ़्ज़। इस सिलसिले में ये बात याद रखें के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जब मुजर्रिद ज़ात का ज़िक्र करते हैं तो अना का सेग़ा इस्तेमाल फ़रमाते हैं और जब ज़ात और सिफ़ात का तज़्किरा फ़रमाते हैं तो ﴿نحن﴾ "नह्नू" का सेग़ा इस्तेमाल फ़रमाते हैं। मिसाल के तौर पर :

- मुजर्रिद ज़ात का ज़िक्र करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴿إِنَّنِيْ أَنَا اللّٰهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِيْ (طٰہٰ:١٤)﴾

मैं ही ख़ुदा हूँ। मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं। पस मेरी इबादत करते रहो।

- और ज़ात और सिफ़ात दोनों का तज़्किरा करते हुए इर्शाद फ़रमाया :

﴿وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ. (ق:١٦)﴾

और हम उसको उसकी रगे शह से भी ज़्यादा क़रीब हैं।

परवरदिगारे आलम का अपने आशिक़ों से प्यार

अल्लाह तआला को अपने आशिक़ीन से इतनी मुहब्बत है के जब क़ुरआन मजीद में उनका तज़्किरा किया तो फ़रमाया :

﴿يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهُ. (المائدة:٥٤)﴾

अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत करेंगे और वे अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे।

अक़्ल कहती है के यों फ़रमाना चाहिए था के ये अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे और अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत करेंगे मगर नहीं मुहब्बत चीज़ ही कुछ और है। परवरदिगारे आलम को अपने उश्शाक़ से इतना प्यार है के इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿يُحِبُّهُمْ﴾ अल्लाह तआला उन बंदों से मुहब्बत करेंगे, ﴿وَيُحِبُّوْنَهُ﴾ और ये बंदे अल्लाह तआला से मुहब्बत करेंगे। अपनी मुहब्बत को मुक़द्दम फ़रमाया। इसीलिए हदीसे क़ुद्सी में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿الا طال شوق الابرار الى لقائى وانا اليهم لا شد شوقا.﴾

जान लो के नेक लोगों का शौक़ मेरी मुलाक़ात के लिए बढ़ गया और मैं उनकी मुलाक़ात के लिए उनसे भी ज़्यादा मुश्ताक़ हूँ।

जबके दुनिया कहती है–

उलफ़त में जब मज़ा है के हों वो भी बेक़रार
दोनों तरफ़ हो आग बराबर लगी हुई

मगर यहाँ मामला ही कुछ और है। यों मालूम होता है के इश्क़ की जितनी आग सालिक के दिल में होती है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उससे ज़्यादा बढ़कर उससे प्यार फ़रमाते हैं। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं के मेरा बंदा जब मेरी तरफ़ चलकर आता है तो अगर वो एक क़दम चलता है तो मेरी रहमत दो क़दम आगे बढ़ती है। अगर वो एक बालिश्त आता है तो मेरी रहमत उसकी तरफ़ दौड़कर जाती है। पता चला के जितना प्यार बंदा अपने रब से करता है अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उससे बढ़कर उससे प्यार करते हैं। इसलिए ख़ुशनसीब है वो बंदा जो अल्लाह तआला से टूटकर प्यार करता है।

अल्लाह तआला अपने आशिक़ीन को दुनिया में चार इनामात अता फ़रमाते हैं :

1. सबसे पहले उनको बग़ैर ख़ानदान के इज़्ज़त अता फ़रमाते हैं। कुछ लोगों को ख़ानदान और हसब नसब की वजह से इज़्ज़त मिलती है। जो अल्लाह का बन जाता है ख़्वाह वो मामूली ज़ात-पात का भी हो अलाह तआला लोगों के दिलों में उसकी ऐसी मुहब्बत बिठा देते हैं के उसको इज़्ज़तें नसीब हो जाती हैं।

2. दूसरा इनाम ये मिलता है के बग़ैर कसब के अल्लाह तआला उनको इल्म अता फ़रमाते हैं। एक इल्मे कस्बी होता है जो मदरसों में दर्स व तदरीस के ज़रिए से हासिल होता है और एक इल्मे लदुन्नी होता है जिसका तज़्किरा अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में यों फ़रमाया :

﴿فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا. (الكهف:٦٥)﴾

पस पा लिया उन्होंने अल्लाह के बंदों में से एक बंदा जिसको

हमने अपने पास रहमत दी थी और अपने पास से इल्म दिया था।

3. तीसरा इनाम ये मिलता है के अल्लाह तआला उसको बग़ैर माल के रिज़्क़ अता फ़रमा देते हैं। वो ज़ाहिर में तो फ़क़ीर होता है मगर दिल का बड़ा अमीर होता है। अमीरों के पास भी ऐसे दिल नहीं होते जो अल्लाह तआला अपने वलियों को अता फ़रमा देते हैं।
4. अल्लाह तआला अपने आशिक़ीन को चौथा इनाम ये देते हैं के बग़ैर जमाअत के उनको उन्स अता फ़रमा देते हैं।

जन्नतियों के चार गिरोह

घरों में आम लोग मेहमान आते हैं तो आदमी अपने नौकर से कह देता है के इनको पानी पिलाओ लेकिन जब क़रीबी रिश्तेदार आते हैं तो खुद जग हाथ में लेकर उनको पिला रहा होता है। ये इज़्ज़त अफ़ज़ाई की वजह से है। इसी तरह जन्नत में जन्नतियों के चार गिरोह होंगे।

1. एक गिरोह वो होगा के जिनको जन्नत के खुद्दाम शर्बत पिलाएंगे। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ. (الواقعہ:١٧)﴾

चक्कर लगाते हैं उनके इर्द-गिर्द लड़के, हमेशा के लिए रहने वाले।

ये जन्नत के ख़ादिम होंगे जो उनको शर्बत पिलाएंगे।

2. फिर एक और जमाअत ऐसी होगी जिनको मलाइका मशरूब पिलाएंगे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया ﴿بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ﴾ सफ़ेद रंग की पीने वालों को मज़ा देने वाली। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के फ़रिश्ते पिला रहे होंगे।
3. एक जमाअत ऐसी होगी जिनको जन्नत के दारोग़ा शराब

पिलाएंगे। ﴿وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ﴾ और उसमें मिलावट है तसनीम से।

इस आयत के तहत मुफ़स्सिरीन ने लिखा है के रिज़वाने जन्नत ख़ुद उनको मशरूब पिलाएंगे।

4. एक जमाअत ऐसी होगी जिनके बारे में अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं ﴿وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا﴾ उनका परवरदिगार उनको शराबे तहूर पिलाएगा।

उलमा ने लिखा है के अल्लाह एक साइमुद्दहर को देखेंगे और मुस्कराकर फ़रमाएंगे, "ऐ मेरे आशिक़! तू मेरी ख़ातिर पीता न था अब पी ले, तू खाता न था अब खा ले। तू मेरा मेहमान है और मैं तेरा मेज़बान हूँ।"

﴿نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ. (حٰمٓ سجدہ:۳۲)﴾ मेहमानी है बख़्शने वाले मेहरबान की जानिब से।

मुहब्बते इलाही मांगने की तालीम

अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें अल्लाह तआला से उसकी मुहब्बत मांगने की तालीम दी है। मिसाल के तौर पर :

- नबी अलैहिस्सलाम ने ये दुआ मांगी :

﴿اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُّحِبُّكَ﴾

ऐ अल्लाह! मैं आपसे आपकी मुहब्बत मांगता हूँ और आपसे मुहब्बत करने वालों की मुहब्बत भी मांगता हूँ।

- एक और मौके पर फ़रमाया :

﴿اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنَ الْمَاءِ الْبَارِدِ﴾

ऐ अल्लाह! अपनी मुहबबत को मेरे नज़दीक ठंडे पानी से भी

ज़्यादा मरग़ूब बना दे।

जब बंदा सेहरा में रेत पर चल रहा हो, सख़्त गर्मी हो, पानी न मिले और जान निकल रही हो तो उस वक़्त वो ठंडा पानी बड़ी रग़बत से पीता है। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ में यही अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! जिस तरह वो बंदा रग़बत और शौक़ से उस ठंडे पानी को पीता है मुझे तेरी मुहब्बत की लज़्ज़त उससे भी ज़्यादा नसीब हो जाए।

- हदीस पाक में आया है के एक मर्तबा अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ شَوْقًا اِلٰی لِقَاءِكَ وَلَذَّةِ النَّظَرِ اِلٰی وَجْهِكَ الْكَرِیْمِ.

ऐ अल्लाह! मैं आपसे मुलाक़ात का शौक़ मांगता हूँ और आप से आपके करीम चेहरे को देखने की लज़्ज़त तलब करता हूँ।

दुनिया और आख़िरत में ख़ुशख़बरी

अल्लाह तआला के हाँ अपने आशिक़ों का बड़ा मक़ाम है। दुनिया में भी उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाते हैं और आख़िरत में भी। दुनिया में तो ये ख़ुशख़बरी सुनाई ﴿هُمْ رِجَالٌ لَّا یَشْقٰی جَلِیْسُهُمْ﴾ ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के वे बंदे हैं जिनके पास बैठने वाला बंदा कभी बदबख़्त नहीं होता।

और आख़िरत में कैसे इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाएंगे? किताबों में लिखा है के एक आदमी मर गया। अल्लाह तआला ने उसकी बख़्शिश फ़रमा दी। उसने पूछा ऐ परवरदिगारे आलम आपने मुझे किस अमल की वजह से बख़्शा? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया मेरे बंदे! तेरा एक अमल तेरे नामए आमाल में ऐसा है के जिसकी वजह से मैंने तुझे बख़्श दिया है। उसने कहा, ऐ अल्लाह!

मेरे तो सारे आमाल ही ख़राब हैं। मैं ग़ाफ़िल और बदकार था, आपको मेरा कौन सा अमल पसंद आया? अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया, तेरे नामए आमाल में लिखा है के एक मर्तबा मेरा एक वली बायज़ीद बुस्तामी रास्ते में जा रहा था। तुम्हें मालूम नहीं था के ये कौन है। तुमने किसी से पूछा के ये कौन है? उसने कहा के ये बायज़ीद बुस्तामी है। तुमने पहले सुन रखा था के वो अल्लाह के दोस्तों में शुमार होते हैं। लिहाज़ा तुमने मुहब्बत से मेरे वली पर नज़र डाली थी। मैंने उसी एक नज़र डालने की बरकत से तुम्हारे गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा दी, सुब्हानअल्लाह।

इस्मे ज़ात में मशग़ूलियत की इंतिहा

कोशिश करें के ज़िक्र करते-करते दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ऐसी मुहब्बत नसीब हो जाए के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सिवा हर चीज़ भूल जाएं–

ज़र्बें लगा के कलिमए तैय्यब की बार बार
दिल पे लगा जो ज़ंग है उसको हटाइए

मशग़ूल इस्मे ज़ात में हों आप इस तरह
उसके सिवा हर एक बस भूल जाइए

बल्के एक बुज़ुर्ग तो यहाँ तक फ़रमाते हैं ﴿عَجَبٌ لِمَنْ يَقُوْلُ ذَكَرْتُ رَبِّى﴾ यानी जब कोई कहता है के मेंने अपने रब का ज़िक्र किया तो मैं ताज्जुब करता हूँ।

गोया वो ये कहना चाहते थे के मैं अल्लाह तआला को भूलता ही कब हूँ जो मैं उसे याद करूँ।

شربت الحب كاس بعد كاس
فما نفد الشراب ولا رويت

मैंने मुहब्बत की शराब प्यालों के प्याले पी ली। पस न तो शराब ख़त्म हुई और न ही मैं सैर हुआ (छका)।

अल्लाह वालों के इश्क़ का तो मामला ही और है के वे जाम भर-भर कर पीते हैं और उनके दिल भरते ही नहीं।

रहमान की शान पूछना चाहो तो

इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿الرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا (الفرقان:٥٩)﴾

रहमान के बारे में ख़बर रखने वालों से पूछो।

अल्लाह तआला ये फ़रमाना चाहते हैं के अगर तुम हमारे इश्क़ व मुहब्बत की दास्तानें पूछना चाहते हो तो हमारे आशिक़ों से पूछो। किसी अंजान से न पूछना। उन बेचारों को क्या पता।

हमारे हुस्न व जमाल की दास्तानें हमारे आशिक़ों से पूछो

हमारी शान हमारे दोस्तों से पूछो। हमारी शौकत कैसी है? ﴿الرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا﴾ अर्रहमानु फ़स-अल बिही ख़बीरा।

- हम कितने ग़य्यूर हैं के जब कोई बंदा किसी ग़ैर की तरफ़ मुहब्बत की नज़र उठाता है तो हम उससे रूठ जाते हैं। नज़रें हटा लेते हैं। उसको अपने दर से पीछे हटा देते हैं। उस बंदे को हमारी शाने बेनियाज़ी मालूम करनी हो तो ﴿الرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا﴾ अर्रहमानु फ़स-अल बिही ख़बीरा। हम ऐसे बेनियाज़ हैं के बलअम बऔर की चार सौ साल क इबादत को ठोकर लगाकर रख देते हैं। मिस्र के मीनार पर अज़ान देने के लिए आदमी चढ़ता है। वो ग़ैर महरम पर नज़र डालता है और उसका ईमान छीन लिया जाता है। नीचे उतरकर मुरतद बन

जाता है। फ़रमाते हैं के हमारी शान हमारे आशिक़ों से पूछो। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इर्शाद फ़रमाया के ऐ मेरे बंदो! मैं सब गुनाहों को बख़्श दूंगा लेकिन अगर तुम शिर्क करोगे और मेरी मुहब्बत में किसी और को शामिल करोगे तो मैं इस बात को क़तअन माफ़ नहीं करूंगा। किसी ने किसी मुहद्दिस से पूछा, हज़रत! जब शिर्क भी एक गुनाह है तो फिर ये माफ़ी के क़ाबिल क्यों न ठहरा? उन्होंने फ़रमाया के शिर्क का गुनाह भी है और साथ-साथ अल्लाह तआला की ग़ैरत का मामला भी है। वो फ़रमाते हैं के जब तुमने हमारे हुस्न व जमाल को जान लेने के बावजूद मुहब्बत की नज़र ग़ैर की तरफ़ उठा ली तो हम तुमको अपने दर पर नहीं आने देंगे।

- हम कितने अज़ीम हैं के हमारे सामने जब कोई आदमी नाज़ करता है तो हम उसके नाज़ को तोड़ देते हैं। जब कोई तकब्बुर करता है तो उसको हम सज़ा देते हैं। ﴿الكبر ردائى﴾ बुलन्दी और अज़्मत तो हमारी चादर है।

- हमारा हुक्म चलता है। हमारे सब बंदे हमारे सामने गर्दन झुकाए हुए हैं। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम चाहते हैं के मैं जन्नत में रहूँ लेकिन अल्लाह तआला नहीं चाहते। चुनाँचे जन्नत छोड़कर ज़मीन पर आना पड़ा। हुक्म किसका चला? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम चाहते हैं के मेरा बेटा बच जाए। लेकिन अल्लाह तआला ने न चाहा और उनका बेटा ग़र्क़ हो गया। हुक्म किसका चला? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम बेटे को छुरी के नीचे देकर लिटाए हुए हैं। वो चाहते हैं के ज़िब्ह कर दें लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने न चाहा। लिहाज़ा बेटा ज़िब्ह

न हुआ। हुक्म किसका चला? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का। नबी अलैहिस्सलाम ने अपने ऊपर शहद खाना मना फ़रमा दिया था। अल्लाह तआला ने "वही" नाज़िल फ़रमा दी :

﴿يٰاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ. (التحریم:۱)﴾

ऐ नबी! तुम वो क्यों हराम करते हो जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए हलाल किया है।

अल्लाह तआला के इस ख़िताब के बाद अल्लाह के महबूब ने भी अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर अमल किया। हुक्म किसका चला? अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का। क़ियामत वाले दिन अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ﴿لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ﴾ (आज किसकी बादशाहत है?) कोई जवाब देने वाला नहीं होगा। एक हज़ार साल तक ख़ामोशी रहेगी। फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त खुद ही इर्शाद फ़रमाएंगे ﴿لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ﴾ अल्लाहु अकबर। ﴿اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا﴾ अर्रहमानु फ़स-अल बिही ख़बीरा यानी अल्लाह के बारे में उसके जानने वालों से पूछो।

प्यारों की दिलदारी

एक रिवायत में आया है के अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को इर्शाद फ़रमाया, "ऐ मेरे प्यारे मूसा! मेरे कुछ बंदे ऐसे हैं के वो सरगोशी करें तो मैं कान लगाकर सुनता हूँ, वे पुकारें तो मैं मुतवज्जेह हो जाता हैं। वे मेरी तरफ़ आते हैं तो मैं उनके क़रीब हो जाता हूँ। वो मेरा तक़र्रुब ढूंढते हैं तो मैं उनकी किफ़ायत करता हूँ। वे मुझे अपना सरपरस्त बना लेते हैं तो मैं उनकी सरपरस्ती क़बूल कर लेता हूँ। वो ख़ालिस मुझसे मुहब्बत करते हैं और मैं भी उनसे मुहब्बत करता हूँ। वे अमल करते हैं तो

मैं उनको जज़ा देता हूँ। मैं उनके कामों का मुदब्बिर हूँ। मैं उनके दिलों का निगहबान हूँ। उनके अहवाल का मुतवल्ली हूँ। उनकी बीमारियों का शाफ़ी हूँ। उनके दिलों की रौशनी हूँ। उनके दिलों की तस्कीन हूँ। उनके दिलों की तस्कीन मेरी याद में है। उनके दिलों की मंज़िल मेरे पास है। उनको मेरे सिवा चैन नहीं मिलता।

काश के हमें भी अल्लाह तआला मुहब्बत में वो कैफ़ियत नसीब हो जाए के अल्लाह तआला की याद के सिवा हमें चैन न आए। जिस तरह एक आदमी अगर एक वक़्त खाना न खाए तो वो अगले वक़्त कमी महसूस करता है इसी तरह अगर हम भी एक वक़्त में अवराद व वज़ाइफ़ न करें तो हमें भी क़ल्बी तौर पर कमी महसूस होगी। ज़िक्र के बग़ैर हमें खाना और नींद अच्छी ही न लगे। जब ये कैफ़ियत दिल में आ जाए तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें भी आशिक़ीन में शामिल फ़रमा देंगे।

सिफ़ाती नामों के मआरिफ़

अब तक तो आपने इस्मे जलालुहू "**अल्लाह**" की बरकात सुनीं। अब कुछ सिफ़ाती नामों का ज़िक्र किया जाएगा। इनमें से दो नाम तो ऐसे हैं के जिनका हदीसों के अंदर ज़िक्र आया है और तीन नाम अस्माए हुस्ना में से बयान किए जाएंगे।

ग़िलाफ़े काबा पर दो सिफ़ाती नामों की कसरत

अल्लाह तआला के दो सिफ़ाती नाम हैं, 1. हन्नान, 2. मन्नान।

ये दोनों अस्माए हुस्ना में से नहीं हैं लेकिन अहादीस में आए हैं। अजीब बात ये है के अगर आप हज या उमरे पर जाएं तो

गिलाफ़ काबा पर हर दूसरी तीसरी लाइन पर "या हन्नान", "या मन्नान" लिखा हुआ नज़र आएगा। चारों तरफ़ पूरी-पूरी लाइन पर यही नाम लिखे हुए हैं। और भी नाम लिखे हुए हैं। मगर उनकी पूरी लाइनें नहीं हैं ये आजिज़ बहुत अरसे तक ये सोचता रहा के आख़िर उलमाए उम्मत ने इन दो नामों की पूरी-पूरी लाइने क्यों लिखी हुई हैं। जब इनके मतलब सोचे तो अजीब व ग़रीब मतलब सामने आए।

"हन्नान" का मफ़हूम और मआरिफ़

"हन्नान" उस हस्ती को कहते हैं के अगर उससे कोई रूठना चाहे तो वो उसे रूठने न दे यानी अल्लाह तआला अपने बंदों को अपने से दूर नहीं जाने देते। इसलिए जब कोई बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के दर से ग़ाफ़िल होता है तो वो उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करते हैं। कभी उसके कारोबार में परेशानी, कभी सेहत में परेशानी, कभी कोई और परेशानी। ये छोटी-मोटी परेशानियाँ इसलिए आती हैं के ये जागे और मेरे दर पर आए।

यहाँ एक बुज़ुर्ग ने नुक्ता लिखा है के पाक हे वो परवरदिगार जो अपने बंदों को परेशानियों की रस्सियों में जकड़-जकड़ कर अपनी बारगाह की तरफ़ खींच रहा होता है। जैसे मछली शिकारी से दूर भागती है ओर वो उसको क़रीब खींचता है। इसी तरह जब बंदा अपने गुनाहों की वजह से अल्लाह तआला से दूर हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके हालात इस तरह बना देते हैं के जिनकी वजह से उसे हीट पहुँचती है। और वो अल्लाह तआला के दर पर आकर दुआएं मांगना शुरू कर देता है। देखिए के अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में कितने बेहतरीन अंदाज़ में फ़रमाया ﴿فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ﴾ ओ मेरे बंदो! तुम किधर जा रहे हो? और एक जगह पर

फ़रमाया :

﴿يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ (الانفطار:٦)﴾

ऐ इंसान! तुझे तेरे करीम परवरदिगार से किस चीज़ ने धोके में डाल दिया।

जैसे माँ अपने बेटे को प्यार से मना रही होती है के बेटा! तू अपनी अम्मी से रूठ गया। इस अंदाज़ में फ़रमाया के तुम मुझसे क्यों रूठ रहे हो?

"मन्नान" का मफ़हूम और मआरिफ़

"मन्नान" उस हस्ती को कहते हैं जो एहसान तो करे मगर उसको एहसान जताने की आदत न हो। कई लोग एहसान तो करते हैं मगर जतलाते भी हैं। लेकिन अल्लाह तआला वो एहसान फ़रमाने वाले हैं के जो बंदों पर एहसान भी करते हैं और जतलाते भी नहीं हैं। अब देखें के अल्लाह तआला के हमारे ऊपर कितने एहसानात हैं। याद रखें के अगर अल्लाह तआला हमें :

बीनाई (देखने की ताक़त) न देते तो हम अंधे होते, गोयाई (बोलने की ताक़त) न देते तो हम गूंगे होते, समाअत (सुनने की ताक़त) न देते तो हम बहरे होते, अक़्ल न देते तो हम पागल होते, सेहत न देते तो हम बीमार होते, माल पैसा न देते तो हम फ़कीर होते, इज़्ज़त न देते तो हम ज़लील होते और औलाद न देते तो हम बेऔलादे होते।

मालूम हुआ के हम जो इज़्ज़तों भरी ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं ये उस मालिक का एहसान ही तो है। अलबत्ता अल्लाह तआला ने अपनी नेमतों में से एक नेमत ऐसी भी दी है के उस नेमत जैसी और कोई नेमत ही नहीं। इस मौक़े पर अल्लाह तआला ने इर्शाद

फ़रमाया :

﴿لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ. إِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا ﴾ (آل عمران:۱۶۴)

बेशक अल्लाह तआला ने ईमान वालों पर एहसान किया के उसने अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनमें मबऊस फ़रमाया।

वाक़ई काएनात में कोई दूसरी नेमत ऐसी हो ही नहीं सकती जैसे किसी को अपने मॉडल पर बड़ा नाज़ होता है इसी तरह यों लगता है के अल्लाह तआला को भी अपने महबूब पर इतना नाज था के इस नेमत को भेजते हुए अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया के हाँ हमने ईमान वालों पर एहसान फ़रमाया है।

करीम का मफ़हूम और मआरिफ़

अस्माए हुस्ना में से अल्लाह तआला का एक नाम "करीम" है। करीम उस हस्ती को कहते हैं जो किसी साइल को आता हुआ देखे तो उसकी कैफ़ियत का खुद अंदाज़ा लगाकर उसके मांगने से पहले उसको अता कर दे। कुछ लोगों की आदत होती है के वे कुछ लोगों को देखते हैं तो उनके मांगने से पहले ही उसको कुछ दे देते हैं। इसी तरह जब बंदा सच्ची तौबा की नीयत से अपने घर से चलकर अल्लाह के दर पर पहुँच जाता है तो उसका नदामत से चलकर आ जाना ही काफ़ी हो जाता है अगरचे उसने अभी तक हाथ ही न उठाए हों।

बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है के एक आदमी जिसने सौ आदमियों को क़त्ल किया था तौबा के इरादे से नेकों की बस्ती की तरफ़ चल पड़ा। अभी पहुँचा नहीं था बल्के रास्ते में ही था के उसे मौत आ जाती है। जन्नत के फ़रिश्ते भी आ जाते हैं और जहन्नम के भी। अब दोनों तरफ़ से दलाइल चलते हैं। दोज़ख़ के

फ़रिश्तों का दावा था के सौ बंदों का क़ातिल है, लिहाज़ा इसे हम लेकर जाएंगे जबके जन्नत के फ़रिश्तों का दावा था के तौबा की नीयत से चल पड़ा था, लिहाज़ा हम लेकर जाएंगे। मामला बारगाहे इलाही में पेश हुआ। परवरदिगारे आलम ने फ़रमाया के तुम ज़मीन की पैमाइश कर लो के ये किस बस्ती से ज़्यादा क़रीब है। अगर अपनी बस्ती के क़रीब है तो ये गुनाहगारों में से है और अगर नेकों की बस्ती के क़रीब है तो फिर ये नेकोंकारों में शामिल है। चुनाँचे ज़मीन की पैमाइश की गई। अल्लाह तआला ने ज़मीन को हुक्म दे दिया के ऐ नेकों की तरफ़ वाली ज़मीन! तो ज़रा सुकुड़ जा। चुनाँचे ज़मीन सुकुड़ गई। लिहाज़ा जब पैमाइश की गई तो फ़रिश्तों ने देखा के उसे दोनों तरफ़ के रास्ते के बिल्कुल दर्मियान में मौत आई है और उसकी लाश नेकों की बस्ती की तरफ़ गिरी थी। अब चूंके लाश नेकों की बस्ती की तरफ़ गिरी लिहाज़ा अल्लाह तआला ने इतने क़ुर्ब को भी क़ुबूल करके उसका शुमार नेकों में फ़रमा दिया। तो अगर मरते-मरते भी हमारी लाश नेकों की तरफ़ गिर जाएगी तो अल्लाह तआला फिर भी नेकों में शुमार कर देंगे और अगर हम जीते जागते इन महफ़िलों में जाकर उनकी सोहबत अख़्तियार करेंगे तो फिर अल्लाह तआला हमारे आने को क्यों नहीं क़ुबूल फ़रमाएंगे।

क़ियामत के दिन उस करीम ज़ात का करम ज़ाहिर होगा। इसीलिए किसी आरिफ़ ने क्या ही ख़ूब कहा है–

وَفَدْتُ عَلَى الْكَرِيْمِ بِغَيْرِ زَادٍ
مِنَ الْاَعْمَالِ وَالْقَلْبِ السَّلِيْمِ
فَاِنَّ الزَّادَ اَقْبَحُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
اِذَا كَانَ الْوُفُوْدُ عَلَى الْكَرِيْمِ

मैं करीम की ख़िदमत में बग़ैर ज़ादेराह के हाज़िर हो गया हूँ। न मेरे पास आमाल हैं और न संवरा हुआ दिल है और ज़ादे राह सबसे बुरी चीज़ समझी जाती है जब जाने वाले ने किसी करीम के पास जाना हो।

अगर कोई मिनिस्टर आपको अपने घर खाने पर बुलाए और आप अपना खाना टिफ़िन में लेकर जाए तो क्या वो अच्छा समझेगा? वो कहेगा के तुम मेरी दावत पर आए हो अपना खाना साथ क्यों लाए हो?

उलमा ने करीम का एक मतलब ये भी लिखा है के करीम वो ज़ात होती है जो अगर कोई चीज़ दे दे तो उसे वापस लेने की आदत न हो। अल्लाह तआला अपनी नेमतें वापस नहीं लेते। अलबत्ता हम अल्लाह तआला की नेमतों की नाक़द्री की वजह से इन नेमतों को धक्के दे-दे कर वापस भेजते हैं।

रहमान और रहीम के मआरिफ़

अल्लाह तआला की सिफ़्ते रहमत भी एक अजीब सिफ़्त है। ये अजीब और मज़े की बात है के अल्लाह तआला की जितनी भी सिफ़ात हैं हर सिफ़्त के मुक़ाबले में अल्लाह तआला का एक नाम है लेकिन अल्लाह तआला की रहमत की सिफ़्त ऐसी है के उसके मुक़ाबले में उसके दो नाम हैं, "रहमान", "रहीम।" मालूम हुआ के ये सिफ़्त बाक़ी सिफ़ात पर ग़ालिब है। इसीलिए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ (الاعراف:١٥٦)﴾

और मेरी रहमत ने हर चीज़ का इहाता किया हुआ है।

अब यहाँ एक सवाल पैदा होता है के दो नाम बनाने की क्या

ज़रूरत थी हालाँके रहमान भी रहमत से निकला है और रहीम भी रहमत से निकला है। एक ही नाम काफ़ी था। लेकिन ग़ौर करने से ये बात बख़ूबी समझ में आ जाती है। देखें के बंदे का अमीर होना एक सिफ़्त है और उसका सख़ी होना दूसरी सिफ़्त है। ऐन मुमकिन है के एक बंदा बड़ा अमीर हो लेकिन कंजूस मक्खी चूस हो और एक दमड़ी भी ख़र्च न करता हो। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से उसके दिल को कुछ होता हो। अब ये अमीर तो है मगर उसमें ख़र्च करने की सिफ़्त नहीं है और एक आदमी दिल का हातिम ताई हो मगर उसके पल्ले ही कुछ न हो तो उसकी सख़ावत का ये जज़्बा भी किसी काम का नहीं। माल का होना एक अलैहिदा सिफ़्त है और माल को ख़र्च करने की आदत होना अलैहिदा सिफ़्त है। इसलिए अल्लाह तआला ने अपनी सिफ़्ते रहमत के दो नाम तजवीज़ किए, एक रहमान और एक रहीम। गोया अल्लाह तआला ने बता दिया के ऐ मेरे बंदो! मेरे पास रहमत के ख़ज़ाने भी बेशुमार हैं और मेरी रहमत ख़र्च भी बेशुमार हो रही है।

रहमान का मतलब ये है के वो अपने पराए सब पर मेहरबान है। मुसलमानों पर भी मेहरबान है और काफ़िरों पर भी। काफ़िर भी तो अल्लाह तआला की मख़्लूक़ हैं। इसलिए अल्लाह तआला उनको भी खुशियाँ देते हैं और उनकी कई तमन्नाएं पूरी होती हैं। अल्लाह तआला उनके नेक आमाल का बदला दुनिया में ही दे देते हैं। और रहीम का मतलब ये है के क़ियामत के दिन तो उसकी रहमत ख़ालिस ईमान वालों के लिए होगी। इसीलिए क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया गया :

﴿كَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا. (الاحزاب:٤٣)﴾

अल्लाह तआला की सिफ़्ते रहमत के दो हिस्से हैं। एक

रहमानियत और एक रहीमियत। अल्लाह तआला ने मर्द के अंदर रहमानियत की तजल्ली को ज़्यादा रख दिया और औरत के अंदर रहीमियत की तजल्ली को ज़्यादा रख दिया। इसलिए बाप भी औलाद से मुहब्बत तो करता है लेकिन जहाँ डिसिपिलिन का मसअला आ जाता है वहाँ उसको सीधा भी कर देता है। चूँके अल्लाह तआला को निज़ाम को ठीक रखना था। इसलिए उसने बाप की तबियत ही ऐसी बना दी के वो नरमी भी दिखाता है और गर्मी भी दिखाता है। वो उसे प्यार भी देता है और शेर की आँख से भी देखता है। अल्लाह तआला ने माँ के अंदर रहीमियत की सिफ़त को डाला होता है। इसलिए दुनिया में माँ ही तो है जो अपने नेक बच्चों से मुहब्बत करती है तो उसे बुरे बच्चों से भी मुहब्बत होती है। बाप अपने बुरे बेटे को कह देगा के चलो घर से दफ़ा हो जाओ लेकिन माँ कभी नहीं कहेगी बल्के माँ के बारे में मशहूर है के खुद तो मार लेगी लेकिन वो किसी को नहीं मारने देगी। बाप लायक़ से मुहब्बत करेगा लेकिन नालायक़ बच्चों से बेज़ारी का इज़्हार भी कर देगा मगर माँ तो माँ होती है। वो कहती है के मैं क्या करूँ? लायक़ और नालायक़ होना तो मुक़द्दर की बात है। मैं तो अपनी ममता के हाथों मजबूर होकर अपनी सारी औलाद से मुहब्बत करूंगी। माँ को माल पैसे की तलब नहीं होती। उसकी मुहब्बत उसके दिल के उस जज़्बे की वजह से है जिससे वो समझती है के ये मेरा जिगर गोशा है। ये मेरी आँखों की ठंडक और दिल का सुकून है।

रहमते इलाही की इंतिहा

अल्लाह तआला की रहमत का तो ये हाल है के एक आदमी जो बुतों का पुजारी था। वो बैठा या सनम! या सनम! या सनम!

की तस्बीह पढ़ रहा था। वो या सनम कहते-कहते रात को थक गया तो उसे ऊँघ आने लग गई। जब ऊँघ आई तो उसकी ज़बान से "या सनम" की बजाए "या समद" का लफ़्ज़ निकल गया। जैसे ही उसकी ज़बान से ये लफ़्ज़ निकला तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया :

﴿لَبَّيْكَ يَا عَبْدِى﴾ मेरे बंदे! मैं हाज़िर हूँ। मांग क्या मांगता है?

फ़रिश्ते हैरान होकर पूछने लगे, ऐ अल्लाह! ये बुतों का पुजारी है और सारी रात बुत के नाम की तस्बीह करता रहा है। अब नींद के ग़लबे की वजह से इसकी ज़बान से आपका नाम निकल गया है और आपने फ़ौरन मुतवज्जेह होकर फ़रमाया के ऐ मेरे बंदे! तू क्या चाहता है, इसमें क्या राज़ है? अल्लाह तआला ने फ़रमाया, मेरे फ़रिश्तो! वो सारी रात बुतों का पुकारता रहा और बुत ने कोई जवाब न दिया। जब उसकी ज़बान से मेरा नाम निकला अगर मैं भी जवाब न देता तो मुझे में और बुत में क्या फ़र्क़ रह जाता। तो परवरदिगार इतना मेहरबान होकर बंदे की ज़बान से नींद की हालत में भी अगर नाम निकल आए तो परवरदिगार उसको भी क़बूल फ़रमा लेते हैं तो अगर हम होश व हवास में दुआएं मांगेगे तो परवरदिगार हमारी दुआओं को क्यों न क़बूल फ़रमाएंगे। दुआ है के परवरदिगार आलम हमें अपनी सच्ची मुहब्बत अता फ़रमा दे और मौत के वक़्त हमारे पास ईमान की नेमत सलामत रहे और क़ियामत के दिन हम नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे के साए तले हाज़िर हो जाएं।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِىْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ○

इश्क़ व मस्ती का सफ़र

ये बयान 10 जनवरी 2003 को जामा मस्जिद दारुस्सलाम टाउन बाग़ झंग में हुआ। जिसमें सैंकड़ों सालिकीने तरीक़त ने शिर्कत की।

इक़्तिबास

बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने से इंसान का जी नहीं भरता। जो लोग बैतुल्लाह शरीफ़ का दीदार करने की सआदत हासिल कर चुके हैं वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं के जब इंसान बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ नज़र डालता है तो जितनी निगाहें ज़्यादा पड़ती हैं उतना ही उसका हुस्न दोबाला हो जाता है और दिल चाहता है के उसको बैठकर देखते ही रहें। वहाँ नूर ही नूर होता है। वहाँ का मंज़र इतना दिलकश और माहौल इतना पुरसुकून होता है के आदमी वहाँ जाकर पूरी दुनिया को भूल जाता है। वो दुनिया ही कुछ और है। जिस तरह एक शहंशाह का दरबार होता है उसी तरह इस जगह पर अज़मत और शान व शौकत देखने में आती है। हर बंदा देख भी नहीं सकता मगर देखने वाले देखते हैं।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्दज़िल्लुहु

इश्क़ व मस्ती का सफ़र

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَکَفٰی وَ سَلٰمٌ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ○ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

اِنَّ اَوَّلَ بَیْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِیْ بِبَکَّۃَ مُبٰرَکًا وَّھُدًی لِّلْعٰلَمِیْنَ○

فِیْہِ اٰیٰتٌ بَیِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰھِیْمَ وَمَنْ دَخَلَہٗ کَانَ اٰمِنًا وَلِلّٰہِ عَلَی

النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْہِ سَبِیْلًا (ال عمران:۹۶،۹۷)

سُبْحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الْعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَی الْمُرْسَلِیْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ○

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی اٰلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ.

काएनात की इब्तिदा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जब इस काएनात को बनाया तो इब्तिदा में हर तरफ़ हर जगह पानी ही पानी था। उस पानी के ऊपर एक बुलबुला नमूदार हुआ जो फैलता चला गया और यों ज़मीन वजूद में आई। जिस जगह वो बुलबुला उठा वो जगह पूरी दुनिया का मर्कज़ बना। उसे अल्लाह तआला का घर इसलिए कहा जाता है के अल्लाह तआला की ख़ास तजल्लियात हर वक़्त यहाँ उतर रही होती हैं। यों समझें के वो तजल्लियाते ज़ातिया नूर का एक परनाला है जो माफ़ौक़ुल अर्श से आ रहा है। और ज़मीन के

नीचे तहतुस्सरा तक जा रहा है। हम उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होकर अपनी नमाज़ में सज्दा रेज़ होते हैं। हम नमाज़ में यही नीयत को करते हैं :

﴿مُتَوَجِّهًا اِلٰى جِهَتِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيْفَةِ﴾

काबा शरीफ़ा की तरफ़ मुँह किए हुए।

चुनाँचे कोई आदमी हवा के अंदर हवाई जहाज़ में सफ़र कर रहा हो या कोई ख़लाबाज़ ख़ला में हो या कोई समुन्दर में कई किलोमीटर नीचे चला जाए और वो वहाँ नमाज़ पढ़ना चाहे तो वो वहाँ भी नमाज़ पढ़ सकता है। ज़रूरी नहीं के वो कोठा उसके सामने हो बल्के अगर सिम्त वही हुई तो उसकी नमाज़ हो जाएगी। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने बंदों पर मेहरबानी फ़रमा दी के सिम्त तय कर दी है। अगर हमें सिम्त तय किए बग़ैर ही इबादत का हुक्म होता तो हम यक़ीनन परेशान हो जाते। कोई मश्रिक़ की तरफ़ मुँह करके खड़ा होता तो कोई मग़रिब की तरफ़। इस तरह न तो मर्कज़ियत और यकजहती बाक़ी होती और न ही तबियतों को पूरी तरह इत्मिनान होता।

महबूब की निशानियों से सुकून मिलता है

अगर बैतुल्लाह शरीफ़ दुनिया में न होता तो इंसान के लिए मुहब्बते इलाही का जज़्बा पूरा करना मुश्किल बन जाता क्योंके अल्लाह तआला तसव्वुर में आ ही नहीं सकते। जब मुहिब्बि को महबूब नज़र न आए तो वो महबूब की निशानियों से सुकून पाता है। अल्लाह तआला ने इस घर को अपने घर की निस्बत अता फ़रमा दी। लिहाज़ा बंदा जब दुनिया में इस घर का दीदार करता है तो उसे सुकून मिलता है के ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का घर है। मजनूँ के बारे में आता है के वो एक मर्तबा किसी कुत्ते के पाँव

को बोसे दे रहा था। पूछने वाले ने पूछा मजनूँ! ये क्या बात है? वो कहने लगा के ये मेरे महबूब के घर के क़रीब से गुज़र के आया है। इसलिए मैं इसके पाँव को बैठा बोसे दे रहा हूँ। चूँके महबूब से मुहब्बत होती है इसलिए उसके घर और गली कूचों से भी मुहब्बत हो जाती है और मोमिन चूँके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मुहब्बत करता है इसलिए सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी मुहब्बत, कुरआन मजीद से भी मुहब्बत, अहलुल्लाह से भी मुहब्बत और शआइरुल्लाह से मुहब्बत होती है। क्योंके ये सब महबूबे हक़ीक़ी की निशानियाँ होती हैं और मोमिन बंदा इनको देखकर खुश हो जाता है। अब उसके लिए नमाज़ में यकसूई हासिल करना आसान हो जाता है।

मुहब्बत चाहती है के जिससे हम ताल्लुक़ रखते हैं अगर वो महबूब नज़र नहीं आता तो उसके कुछ आसार ही मिल जाएं। इसी बात को अल्लमा इक़बाल रह० ने यों बयान किया—

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तिज़र! नज़र आ लिबासे मजाज़ में
के हज़ारों सज्दे तड़प रहे हैं मेरी जबीं नियाज़ में

वैसे भी हम ख़ाकी हैं और हमारी तबियतें उस वक़्त मुतमइन होती हैं जब हम सामने कुछ देखते हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने बंदों पर ये एहसान फ़रमाया के उसने दुनिया में एक जगह को अपने साथ निस्बत अता फ़रमा दी। लिहाज़ा अब हमारे लिए मुहब्बते इलाही के इस जज़्बे को पूरा करना आसान हो गया है। यही वजह है के जब हम बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं तो यों समझते हैं जैसे हम महबूब के सामने मौजूद हैं।

सितारों का तवाफ़

जिस तरह बैतुल्लाह शरीफ़ हमारा क़िब्ला है इसी तरह

आसमान पर फ़रिश्तों का भी एक क़िब्ला है जिसे बैतुल-मामूर कहते हैं। इंसान बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ करते हैं और फ़रिश्ते बैतुल मामूर का तवाफ़ करते हैं। यहाँ एक मज़े की बात बताता चलूँ। अमरीका में ख़ला से मुताल्लिक़ काम करने वाले शोबे ने सितारों के बारे में एक साइंसी फ़िल्म बनाई है जिसका नाम उन्होंने The Star (सितारा) रखा। जिस बंदे ने आकर हमें इसके बारे में इत्तिला दी उसने कहा के इसमें सितारों के बारे में इतनी अच्छी-अच्छी मालूमात हैं के इंसान हैरान हो जाता है। वहाँ कुछ मुसलमान उलमा मौजूद थे। चुनाँचे इस आजिज़ ने भी नीयत की के चलो सितारों के बारे में मालूमात हासिल करते हैं क्योंके अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया ﴿وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ﴾ (और सितारों से रास्ता पाते हैं) चुनाँचे हम चार पाँच आदमी मिलकर वहाँ गए। वहाँ एक अजीब चीज़ देखी के जिस कमरे में हमें बिठाया गया उसकी छत गोलाई की शक्ल में थी। गोया उन्होंने उस छत को आसमान बनाया हुआ था। उसमें चाँद सितारे नज़र आ रहे थे।

उनके दो बुनियादी मक़सद थे। अगर रात में किसी आदमी को जंगल में ऐसी जगह छोड़ दिया जाए जहाँ उसको न तो वक़्त का पता हो और न ही सिम्त का। तो वो आदमी अपने रास्ते का सिम्त का और वक़्त का ताय्युन किस तरह कर सकता है? उन्होंने बड़े अजीब ग़रीब तरीक़े बताए के अगर कोई आदमी इस तरह खड़ा हो तो उसको सिम्त का पता चल जाएगा के इधर मशरिक़ है, उधर मग़रिब है। इधर शुमाल है और उधर जुनूब है। फिर बताया के अगर ये सितारे यहाँ पर हैं तो आधी रात का वक़्त होता है और अगर ये सितारे यहाँ पर हों तो सुबह सादिक़ का वक़्त होता है। जब घड़ियाँ नहीं होती थीं उस वक़्त हमारे बड़े इसी तरह सितारों की लौ से सुबह का ताय्युन करते थे। उन्होंने

इसी बात को साइन्सी अंदाज़ में समझाया। बहरहाल बड़ी अच्छी मालूमात थीं।

उन्होंने एक अजीब बात बताई के आसमान पर जितने सितारे हैं वे सब के सब हरकत करने वाले हैं। अलबत्ता एक सितारा ऐसा है जो हरकत नहीं करता। उन्होंने कहा के अगर हम इनकी स्पीड को बढ़ाएं तो आपको आसमान यों नज़र आएगा। चुनाँचे जब उन्होंने स्पीड ज़रा बढ़ाई तो हमने देखा के एक सितारा चमक रहा है और अपनी जगह पर ठहरा हुआ है और बाक़ी सब सितारे उसके गिर्द घूम रहे हैं। ये देखकर अचानक मेरे दिल में एक बात आई और मैंने साथ वाले आलिम से कहा :

"भई! अगर ये बात हक़ीक़त है के सारे सितारे इस तरह गर्दिश कर रहे है। तो मुमकिन है के ऊपर बैतुल मामूर हो और नीचे बैतुल्लाह हो और इसके दर्मियान जो अल्लाह तआला की तजल्लियाते ज़ातिया वारिद होती हैं वहाँ आसमानों में ये सितारा दर्मियान में हों। अगर इसी तरह है तो ये कहा जा सकता है के सब सितारे इस सितारे के गिर्द तवाफ़ कर रहे हैं। और ये वाक़ई इसी तरह है। सब उसी शमा के परवाने हैं।

हम हुए तुम हुए के मीर हुए
उसकी ज़ुल्फ़ों के सब असीरं हुए

वो चीज़ें जिनसे दिल नहीं भरता

उलमा ने लिखा है के चंद चीज़ें ऐसी हैं जिनसे इंसान का दिल नहीं भरता। मिसाल के तौर पर :

1. आसमान की तरफ़ देखना

हम आसमान की तरफ़ रोज़ाना देखते हैं। वही बादल, वही

सूरज, वही चाँद सितारे और वही नीला रंग। मगर उसको देखने में ऐसी जाज़्बियत होती है के हर रोज़ नया मज़ा होता है। आपको कभी भी कोई ऐसा बंदा नहीं मिलेगा जो ये कहे के मैं आसमान को देख देख कर तंग आ गया हूँ बल्के हर बंदा झिलमिल करते सितारों के दिलफ़रेब मंज़र को देखकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हम्द में रतबुल्लिसान हो जाता है।

2. पानी पीना

पानी पीने से इंसान का दिल नहीं भरता। सौ साल के बूढ़े के अंदर भी उसकी तलब होती है और वो भी पानी पीता है। आपको कोई भी बंदा ऐसा नहीं मिलेगा जो ये कहे के मैं पानी पी पी कर तंग आ गया हूँ।

3. क़ुरआन मजीद का पढ़ना

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में ऐसी जाज़्बियत रखी है के जिससे इंसान को क़ुरआन मजीद के पढ़ने का लुत्फ़ नसीब हो जाता है उसका दिल क़ुरआन मजीद के पढ़ने से भरता ही नहीं। ये हर एक को हासिल नहीं होता। ये उन लुत्फ़ ख़ुशनसीब लोगों को हासिल होता है जिनके दिल बीमारियों से पाक होते हैं, वे बार-बार पढ़ते हैं। वे जितना पढ़ते हैं उतना और पढ़ने को जी चाहता है। जिस तरह सख़्त गर्मी के मौसम में सेहरा में सफ़र करता हुआ मुसाफ़िर ठंडे पानी के मिल जाने पर बड़ी रग़बत और शौक़ से उसे पी रहा होता है। उसी तरह अल्लाह के नेक बंदे इस क़ुरआन को बहुत रग़बत और शौक़ के साथ पढ़ रहे होते हैं। ये हाफ़िज़ और क़ारी सारी ज़िंदगी क़ुरआन मजीद पढ़ते हैं, पढ़ाते हैं, सुनते हैं, सुनाते हैं और हर रोज़ नया मज़ा पाते हैं। आपको

दुनिया में कोई बंदा ऐसा नहीं मिलेगा जो साहिबे अक़्ल हो और कहे के क़ुरआन मजीद पढ़ पढ़ कर मेरा दिल भर गया है।

4. बैतुल्लाह शरीफ़ को देखना

बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने से इंसान का जी नहीं भरता। जो लोग बैतुल्लाह शरीफ़ का दीदार करने की सआदत हासिल कर चुके हैं वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं के जब इंसान बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ नज़र डालता है तो जितनी निगाहें ज़्यादा पड़ती हैं उतना ही उसका हुस्न दोबाला हो जाता है और दिल चाहता है के उसको बैठकर देखते ही रहें। वहाँ नूर ही नूर है। वहाँ का मंज़र इतना दिलकश और माहौल इतना पुरसुकून होता है के आदमी वहाँ जाकर पूरी दुनिया को भूल जाता है। वो दुनिया ही कुछ और है। जिस तरह एक शहंशाह का दरबार होता है उसी तरह उस जगह पर अज़मत और शान व शौकत देखने मे आती है। हर बंदा देख भी नहीं सकता मगर देखने वाले देखते हैं—

आँख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे
दीदए कोर को क्या आए नज़र क्या देखे

इंसानी दिलों का मक़्नातीस

आपने दुनिया में लोहे का मक़्नातीस देखा होगा। उसकी ख़ूबी ये है के वो जहाँ भी हो लोहे को अपनी तरफ़ खींचता है। लोहा क़रीब होते-होते आख़िर मक़्नातीस से चिमट जाता है। अगर आपने दुनिया में इंसानों के दिलों का मक़्नातीस देखना हो तो बैतुल्लाह शरीफ़ को देख लीजिए। उसको देखने के लिए हर मोमिन का दिल खिंचता है। क्या मर्द और क्या औरत, क्या अमीर और क्या ग़रीब, क्या सेहतमंद और क्या बूढ़ा ज़ईफ़।

जिससे भी पूछ लें उसके पास जाने की गुंजाइश हो या न हो उसके दिल में तड़प ज़रूर होगी। वो तन्हाईयों में रो रो कर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुज़ूर दुआएं मांगेगा के "मौला! कभी मुझे भी तौफ़ीक़ अता फ़रमा के मैं भी तेरे घर का तवाफ़ करूं। वो कितने ख़ुशनसीब लोग होते हैं जो एहराम बांधकर निकलते हैं। लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक पढ़ते हैं। कोई तेरे घर का तवाफ़ करता है, मक़ामे इब्राहीम पर सज्दे करता है, कोई ग़िलाफ़े काबा को पकड़कर दुआएं मांगता है और कोई मुलतज़िम से जाकर लिपट जाता है। ऐ अल्लाह! तू मरे लिए भी असबाब पैदा फ़रमा ताके मैं भी अपनी इस आरज़ू को पूरा कर सकूँ।"

जो ख़ुशनसीब वहाँ जाते हैं वो पीछे नहीं रह सकते। वे मस्जिदे हराम में पहुँचते हैं। मताफ़ में आतो हैं, तवाफ़ करते हैं और तवाफ़ करते करते आख़िर मुलतज़िम से जाकर लिपट जाते हैं। हदीस पाक में आया है के नबी अलैहिस्सलाम मुलतज़िम से ऐसे लिपटते थे जैसे दूध पीता बच्चा अपनी माँ के सीने से लिपट जाता है। बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने से दिल की दुनिया में एक अजीब सी हलचल मच जाती है।

इस्लाम क़बूल करने का एक दिलचस्प वाक़िआ

मुझे अमरीका में एक जगह पर बताया गया के यहाँ एक औरत है जो पहले यहूदी मज़हब से ताल्लुक़ रखती थी और अब मुसलमान हो चुकी है। वो बड़ी पक्की मुसलमान है। उसकी सबसे बड़ी ख़ूबी ये है के वो बहुत ख़ुशू ख़ुज़ू के साथ नमाज़ पढ़ती है। जब वो नमाज़ पढ़ती है तो उसमें डूब जाती है। वो एहतिमाम से वुज़ू करती है, फिर वो अपने ख़ास कपड़े पहनती है जो उसने नमाज़ के लिए बनाए हुए हैं। फिर तअदील अरकान (सकून) के

साथ नमाज़ पढ़ती है। यहाँ तक के मुसलमान औरतें उसको देखकर शर्मा जाती हैं और सही मानो में दीनदार बनने की कोशिश करती हैं। मुझे बताया गया के वो कुछ मसाइल पूछना चाहती हैं। मैंने कहा बहुत अच्छा। चुनाँचे वो पर्दे के पीछे बैठकर इंगलिश में बात करने लगी। वो मसाइल पूछती रही। उसने तक़रीबन दो घंटे इस्लाम के बारे में बहुत अच्छे अच्छे सवाल किए। वाक़ई उसके दिल में इल्म हासिल करने की तलब थी। बातचीत के दौरान मैंने उससे पूछा के वो कौन सा लम्हा था जब आपके दिल की दुनिया बदली और आप मुसलमान बन गयीं?

वो कहने लगी के मेरे ख़ाविन्द की जद्दा में नौकरी थी और मैं भी उसके साथ वहाँ रहती थी। उससे पहले हम दोनों अमरीका में एक दफ़्तर में काम करते थे। दफ़्तर वालों ने कहा के हम ने जद्दा में एक नया दफ़्तर खोला है अगर कोई वहाँ जाना चाहे तो हम तंख़्वाह और सहूलियात भी ज़्यादा देंगे और उन्हें एक और मुल्क देखने का मौक़ा भी मिल जाएगा। हम दोनों मियाँ-बीवी तैयार हो गए तो इस तरह हम जद्दा पहुँच गए। मैं यहूदी मज़हब से ताल्लुक़ रखती थी और वो ईसाई मज़हब से ताल्लुक़ रखता था। वहाँ मैं कुछ लोगों को देखती के वे सफ़ेद लिबास पहनकर कहीं जा रहे होते थे। कभी कारों में, कभी बसों में। मैं हैरान होती के ये लोग कहाँ जाते हैं। मैं उनके बारे में अपने ख़ाविन्द से पूछती। वो कहता के यहाँ मुसलमानों का काबा है, ये वहाँ जाते हैं। एक मर्तबा मेरे दिल में तड़प पैदा हुई के हम मुसलमानों के काबा को जाकर क्यों नहीं देखते। वो कहने लगा के वहाँ ग़ैर-मुस्लिम नहीं जा सकते। मैंने कहा अगर हम नहीं जा सकते तो कम से कम कोशिश तो कर सकते हैं, मुमकिन है के अल्लाह

तआला हमें मौक़ा दे दे। वो कहने लगा अगले दिन मैंने मुसलमान औरतों जैसा एक रूमाल लिया और सर पर बांध लिया और मेरे ख़ाविन्द ने भी सर पर टोपी कर ली और हम भी उसी रास्ते पर चल पड़े। क़ुदरती बात है के वो ऐसा वक़्त था के जब ट्रेफ़िक पुलिस वाले खाना खा रहे थे। उन्होंने एक बंदा चैक करने के लिए खड़ा किया हुआ था। ट्रेफ़िक ज़्यादा थी और चैक करने वाला वो एक आदमी था। वक़्त भी रात का था। लिहाज़ा वो दूर से ही सबको जाने का इशारा कर रहा था। इस तरह हम उस ट्रेफ़िक से आगे निकल गए और मक्का मुकर्रमा पहुँच गए। हम लोगों ने पूछा के मुसलमानों का काबा कहाँ है? उन्होंने काबा की तरफ़ इशारा करते हुए कहा यहाँ है। चुनाँचे हम हरम में दाख़िल हो गए। हम चलते चलते जब मताफ़ में पहुँचे तो हमने बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र डाली। हमें वहाँ इतनी बरकतें इतनी रहमतें और इतने अनवारात नज़र आए के हम दोनों की निगाहें वहाँ टिकी रह गयीं।

मैं भी रोने लगी, मेरा ख़ाविन्द भी रोने लगा। कुछ देर तक हम वहाँ खड़े रोते रहे। दिल की दुनिया बदल चुकी थी। आख़िर हमने एक दूसरे की तरफ़ देखा तो उसने मुझसे पूछा के क्या तुम्हें इस जगह हक़ीक़त मिली और मैंने उससे पूछा के क्या तुम्हें हक़ीक़त मिली है? तो हम दोनों ने कहा, हाँ हक़ीक़त मिली है। चुनाँचे उसी लम्हे हमने कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गए। हमें किसी मुसलमान ने नहीं कहा के तुम मुसलमान हो जाओ बल्के हमें अल्लाह के घर ने मुसलमान बनाया है, सुब्हानअल्लाह। दुनिया में ऐसे लोग भी मौजूद हैं जिनको सिर्फ़ बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने से ईमान की दौलत नसीब हुई।

मुलतज़िम की अज़मत

बैतुल्लाह शरीफ़ के इर्द-गिर्द सत्रह जगहें ऐसी हैं के जहाँ की मांगी हुई दुआएं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़बूल फ़रमाते हैं। उनमें से एक मुलतज़िम भी है। मुलतज़िम से लिपटकर जो दुआ भी की जाए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त क़बूल फ़रमा लेते हैं। मज़े की बात ये है के जो दुआ क़बूल नहीं होनी होती, जब बंदा वहाँ दुआ मांगने के लिए जाता है तो वो दुआ वैसे ही ज़हन से निकल जाती है। इसका कई बार तजरिबा किया है। सोचते हैं के ये भी मांगना है, ये भी मांगना है लेकिन जब वहाँ जाते हैं तो अल्लह तआला वो दुआ ही ज़हन से निकाल देते हैं।

वहाँ हमारे एक दोस्त इंजीनियर थे। उन्होंने वहाँ दुआ मांगी के ऐ अल्लाह! मेरे बेटे को हाफ़िज़ क़ुरआन बना दे। वो फ़रमाते हैं के मैं उमरा करके अपनी रिहाइशगाह पर पहुँचा। जैसे ही मैंने दरवाज़ा खोला तो मैंने देखा के फ़ोन की घंटी बज रही है। मैंने भागकर फ़ोन उ.ाया तो फ़ोन पर मेरी बीवी पाकिस्तान से काल कर रही थी। मैंने पूछा के आपने ये कॉल केसे की? वो कहने लगी, बड़े दिनों से सोच रही थी के मैं अपने बेटे को हाफ़िज़ क़ुरआन बनाऊँ। लिहाज़ा आज मैं इसको मदरसे में क़ारी साहब के पास बिठाकर आई हूँ और अब मैंने आपको ये इत्तिला देने के लिए फ़ोन किया है, सुब्हानअल्लाह उधर दुआ मांगी इधर अल्लाह तआला ने मेहरबानी फ़रमा दी।

शेखुलहदीस हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० ने फ़ज़ाइले हज में लिखा है के मुलतज़िम पर दुआ मांगने की जो हदीस है वो सहाबा किराम से नीचे सनदे मुत्तसिल के साथ चली है। मगर हर एक रावी ने जहाँ पर ये बात नक़ल की है के वहाँ दुआएं क़बूल

होती हैं वहाँ अपना तजरिबा भी बताया के मेरी भी ये दुआएं क़बूल हुईं। पहले अगले रावी ने कहा के मेरी भी दुआएं क़बूल हुईं। तो वो फ़रमाते हैं के जिस तरह इस हदीस पाक की रिवायत में तसलसुल है इसी तरह उन्होंने जो अपनी दुआएं क़बूल होने की तस्दीक़ की उसमें भी तसलसुल है। फिर आख़िर में फ़रमाया के मैं इस किताब में ये हदीस नक़ल कर रहा हूँ और मैं भी तस्दीक़ करता हूँ के मैंने भी वहाँ जो दुआएं मांगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़बूल फ़रमा लीं, अल्लाहु अकबर।

महबूबे हक़ीक़ी की याद में गुनगुनाने का अंदाज़

बैतुल्लाह शरीफ़ के गिर्द तवाफ़ करने का भी अजीब समाँ होता है। जैसे शमा के गिर्द परवाना चक्कर लगाता है उसी तरह रब्बे करीम भी अपने बंदों को ये इबादत बताई के जब तुम मेरे घर के पास आओ तो दीवाने बनकर आओ और इस घर के गिर्द चक्कर लगाने शुरू कर दो। उस महबूबे हक़ीक़ी ने कहा के अब तुम ज़ेब व ज़ीनत के सब कपड़े उतार दो और दो चादरों में लिपट जाओ, जैसे मुर्दा होता है। अब तुम्हें दुनिया से कोई वास्ता नहीं है। जब कोई मुहिब्ब अपने महबूब की तलाश में निकलता है तो आंहें भी भरता है और उसकी ज़बान से महबूब की याद में गुनगुनाने के अंदाज़ में मुहब्बत के कुछ न कुछ कलिमात भी निकलते हैं। इसलिए मोमिन से कहा गया के जब तुम एहराम के कपड़े पहनकर निकलो तो :

﴿لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك لك لبيك ان الحمد و النعمة لك و الملك لا شريك لك﴾ लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बैक इन्नल हम्द, वन्नेअम-त ल-क वल मुल्क, ला शरी-क ल-क, पढ़ते चले जाओ।

इंसानी दिलों की वाशिंग मशीन

एक साबह ने इस आजिज़ से पूछा जी! तवाफ़ के सात चक्करों का क्या मतलब है? मैंने कहा, भाई! ये इबादत है। लेकिन उसे बात समझ में न आई। फिर मेरे ज़हन में एक बात आई लिहाज़ा उसे ज़रा और अंदाज़ से समझाने की कोशिश की। मैंने कहा, क्या आपके घर में वाशिंग मशीन है? वो कहने लगे, जी हाँ। मैंने पूछा के जब कपड़े गंदे हो जाते हैं तो तुम क्या करते हो? वो कहने लगे के गंदे कपड़ों को वाशिंग मशीन में डालते हैं और फिर उसके चंद चक्कर दिलवाते हैं। जब निकालते हैं तो वो कपड़े पाक साफ़ हो चुके होते हैं। मैंने कहा, अल्लाह तआला ने भी इंसानों के दिलों को धोने की वाशिंग मशीन बना दी है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, "ऐ मेरे बंदो! तुम दुनिया में रहकर अपने दिलों को काला कर लेते हो। मख़्लूक़ की मुहब्बत में फंस जाते हो और दुनियादारी में गिरफ़्तार हो जाते हो। तुम वहाँ से छूटकर मैले दिलों के साथ आओ। जब मेरे घर में पहुँचोगे तो बस तुम्हें सात चक्कर लगवाएंगे और तुम्हें भी धोकर निकाल देंगे।"

हज का फ़लसफ़ा

अब ज़रा हज का फ़लसफ़ा भी सुन लीजिए। मोमिन बंदे ने कलिमा पढ़कर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के साथ मुहब्बत का दावा किया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस मोमिन को आज़माना चाहा तो तरीक़ा ये बनाया के पहले उसका माली इम्तिहान लिया जाए ताके पता चले के वो महबूब के कहने पर माल ख़र्च करता है या नहीं। चुनाँचे मोमिन को रजब, शाबान में ज़कात देने का हुक्म दिया गया के जो साहिबे निसाब हैं वे ज़कात अदा करें। जिस किसी बंदे ने ज़कात अदा कर दी गोया वो इस ए पेपर में पास हो गया।

फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनका बी पेपर लिया। वो रमज़ानुल मुबारक है जिसके ज़रिए जिस्मानी इम्तिहान लिया जाता है। गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं के ऐ मेरे बंदे! तुमने ज़कात अदा करके माली इम्तिहान में कामयाबी हासिल कर ली। अब तुम इन अवक़ात में अपना खाना पीना छोड़कर दिखाओ। तो जिस मोमिन बंदे ने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े भी रख लिए वो बी पेपर में भी कामयाब हो गया।

दस्तूर ये है के जब कोई इम्तिहान में कामयाब होता है तो फिर उसको इनाम भी मिलता है। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मोमिन बंदे को इनाम देने के लिए अपने घर की तरफ़ बुलाया। चुनाँचे रमज़ानुल मुबारक के ख़त्म होते ही हज का मौसम शुरू हो जाता है। लिहाज़ा अगर कोई ईद के अगले दिन हज का एहराम बांधना चाहे तो वो बांध सकता है। ये जो दिन गुज़र रहे हैं इनको मौसमे हज कहते हैं। वैसे भी अब तो हाजी जाना शुरू हो गए हैं। अब आशिक़ लोग मुख़्तलिफ़ मुल्कों और मुख़्तलिफ़ शहरों से जा रहे हैं। कोई हवाई जहाज़ के ज़रिए और पानी के जहाज़ के ज़रिए। चूँके साल में ये मौक़ा एक ही बार आता है इसलिए इस मौक़े की मुनासबत से चंद बातें आपकी ख़िदमत में पेश करना चाहता हूँ। तो मोमिन जब हज के सफ़र पर निकला तो अल्लाह तआला ने उसको फ़रमा दिया के अब तुम अपना ज़ेब व ज़ीनत का लिबास उतार दो। ये अमीर व ग़रीब का फ़र्क़ ख़त्म कर दो। बादशाह और भिखारी सब एक बन जाओ। तुम सब हमारे चाहने वाले हो। लिहाज़ा दो चादरों में लिपट जाओ और तलबिया पढ़ते हुए हमारे घर की तरफ़ आओ। चुनाँचे इंसान अल्लाह तआला के घर की तरफ़ जाता है और वहाँ जाकर तवाफ़ करता है, सई करता है और अरकाने हज अदा करता है।

सफ़रे हज की दुश्वारियों की एक झलक

हमारे अकाबिरीन बड़ी मुश्किलों के साथ हज का सफ़र किया करते थे। अब तो बड़ी आसानियाँ हो गयी हैं। जद्दा उतरें तो एयरकंडीशन्ड बसों में सफ़र करके एयरकंडीशन्ड कमरों में पहुँच जाते हैं। फ़क़त सड़कें एयरकंडीशन्ड नहीं हैं बाक़ी सब चीज़ें एयरकंडीशन्ड हैं। मस्जिदें भी एयरकंडीशन्ड हैं।

हमारे हज़रत रह० फ़रमाते थे के जब हम बहरी जहाज़ के ज़रिए हज को जाते थे तो कभी-कभी हमारा जहाज़ लंगर अंदाज़ होने के बाद एक-एक महीना इंतिज़ार में खड़ा रहता था और हम जहाज़ के अंदर होते थे। आज तो जहाज़ उतरने के दो तीन घंटे के अंदर एयरपोर्ट से बाहर होते हैं। फिर जब जद्दा से मक्का मुकर्रमा जाते थे तो फिर ऊँटों पर सफ़र करना पड़ता था। कई मर्तबा ऊँट का किराया ही नहीं होता था। बरहाल हम अपना सामान ऊँट पर रखते और खुद पैदल चलते हुए जद्दा से मक्का मुकर्रमा पहुँचा करते थे। जी हाँ! पहाड़ी पर पैदल चढ़ते और फिर उतरते। आज को पहाड़ियों को काटकर सीधा रसस्ता बना दिया गया है। अब सिर्फ़ एक घंटा लगता है। हज़रत फ़रमाते थे के हमें अपने साथ खाने पीने का सामान भी रखना होता था और वुज़ू व ग़ुस्ल का पानी भी साथ रखना पड़ता था क्योंके रास्ते में पानी नहीं मिलता था। कितनी परेशानी होती होगी। आसानियाँ तो अब हुई हैं। इससे पहले बहुत ज़्यादा दुश्वारियाँ होती थीं।

इस क़द्र ग़रीबी का आलम

उस ज़माने में खुद अरब में रहने वाले लोगों पर बड़ी ग़ुरबत का आलम था। अब तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने वहाँ सोने और तेल के ज़ख़ीरे खोल दिए हैं जिनकी वजह से आसानियाँ हो गयी

हैं। पहले दौर में इतनी मुश्किलें थीं के हमारे पीर व मुर्शिद रह० एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा जा रहे थे। रास्ते में एक जगह पड़ाव डाला तो एक बूढ़ा एराबी कहीं से आया। वो इशारा करने लगा के मैं भूखा हूँ मुझे कुछ खाने को दो। हज़रत रह० ने बीवी से कहा के इनके लिए खाना बना दो। उन्होंने आटा निकाला ताके गूंध कर रोटियाँ पकाएं। जब उस बूढ़े ने कच्चा आटा देखा तो भूख की शिद्दत की वजह से उससे रहा न गया। लिहाज़ा उसने पानी का एक प्यारा भरा और कच्चा आटा मुट्ठी में लेकर उसमें घोलकर पी लिया और कहने लगा के मैं रोटी पकने का इंतिज़ार नहीं कर सकता हूँ।

यही वजह है के उन दिनों जब हाजी फल खाकर छिलके फेंकते तो मक़ामी बच्चे एक दूसरे के साथ उन छिलकों को उठाने के लिए झगड़ा किया करते थे। ये 1960 ई० से पहले की बात है।

एक बच्चे के दिल में बैतुल्लाह शरीफ़ की मुहब्बत

हज़रत मुर्शिद आलम रह० ने एक अजीब वाक़िआ सुनाया। फ़रमाने लगे के हम हरम शरीफ़ में ठहरे हुए थे। एक छोटा सा बच्चा कभी-कभी हमारे ख़ेमे में आता। हम उसे खाने के लिए रोटी दे देते और वो ख़ुशी ख़ुशी चला जाता था। उसके बार-बार आने से हमें उसके साथ मुहब्बत हो गई और वो छोटा सा बच्चा भी हम से मानूस हो गया। जब हमारा क़याम पूरा हो गया और हमें आगे सफ़र पर जाना था तो मेरी बीवी ने बच्चे को बुलाया और कहा अगर तुम हमारे साथ चलो तो हम तुम्हें ले चलते हैं। उसने कहा : "कहाँ?" उन्होंने कहा के अपने मुल्क में। वो कहने लगा, "वहाँ क्या होगा?" उन्होंने कहा वहाँ गर्मी भी कम है, वक़्त पर खाना भी मिल जाता है और पानी भी मिल जाता है। तुम्हें

वहाँ हर तरह की सहूलत मिलेगी। कोई तंगी नहीं होगी। अच्छा लिबास मिलेगा, ग़रज़ हर तरह की नेमत मिलेगी। उन्होंने उसको बड़ी सहूलियतें गिनवायीं। वो बच्चा बड़े ग़ौर से सब बातों को सुनता रहा। जब उन्होंने बात मुकम्मल कर ली तो उस वक़्त बच्चे ने बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ इशारा किया और पूछा, क्या बैतुल्लाह शरीफ़ भी वहाँ पर होगा? उन्होंने जवाब दिया के ये तो वहाँ नहीं होगा। ये सुनकर बच्चा कहने लगा के ये वहाँ नहीं होगा तो मुझे वहाँ जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। मुझे तो सिर्फ़ बैतुल्लाह का पड़ौस चाहिए।

हज मुहब्बत वालों को नसीब होता है

हज का ताल्लुक़ बंदे की मुहब्बत के साथ है। अगर माल व दौलत की बुनियाद पर बंदा हज पर जा सकता होता तो ये दुनिया के सब मालदार हाजी बने होते। अक्सर मालदारों को ये नेमत नसीब ही नहीं होती। बाज़ लोग इतने अमीर होते हैं के अगर वे यहाँ से रोज़ाना टिकट लेकर बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत को जाएं और उमरा करके आएं तो वे रोज़ाना उमरा कर सकते हैं। गोया वे साल के तीन सौ पैंसठ उमरे कर सकते हैं मगर उनको तौफ़ीक़ ही नहीं मिलती। हत्ता के उन्होंने ज़िंदगी में एक उमरा भी नहीं किया होता। इसके ख़िलाफ़ ग़रीबों को देखा के जो पैसे इकठ्ठे कर के दिल की सच्ची तमन्ना की वजह से हज कर आते हैं। और जो ज़्यादा ख़ुलूस के साथ अल्लाह तआला से इस सफ़र की सआदत का सवाल करते हैं अल्लाह तआला उनको बग़ैर असबाब के भी ये सआदत अता फ़रमा देते हैं।

एक ग्वाले का सच्चा जज़्बा

जामिया अशरफ़िया में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं, मौलाना इदरीस

कांधलवी रह०, उन्होंने मआरिफ़ुल क़ुरआन भी लिखी है, एक वाक़िआ सुनाया करते थे। क्योंके वो फ़क़ीह थे इसलिए उनका सुनाया हुआ वाक़िआ सुनाने की हिम्मत कर रहा हूँ।

लाहौर का एक ग्वाला था, गाय भैंस का दूध दूहने वाले को ग्वाला कहते थे। उसके दिल में हज करने की बड़ी तलब थी। चुनाँचे जब लोग हज करके वापस आते तो वो उनसे बड़े शौक़ व मुहब्बत के साथ सफ़रे हज के हालात पूछता। यहाँ तक उसने हज के मौसम में लोगों से पूछना शुरू कर दिया के लोग हज के लिए कैसे जाते हैं? किसी ने उसे बताया के हज के लिए कराची से जाते हैं। चुनाँचे उसने लोगों से पूछना शुरू कर दिया के कराची कैसे जाते हैं? किसी ने कहा स्टेशन से जाते हैं। फिर उसने लोगों से पूछा के स्टेशन कहाँ से जाते हैं? किसी ने उसको स्टेशन पहुँचा दिया। अब वहाँ स्टेशन पर पूछता फिर रहा था के मुझे कराची जाना है। कराची कैसे जाते हैं? वो कई दिनों तक लाहौर स्टेशन पर फिरता रहा। आख़िर ट्रेन के एक कंडेक्टर गार्ड ने सोचा बेचारा कई दिनों से फिर रहा है। लिहाज़ा इसके साथ कुछ तआवुन करना चाहिए। चुनाँचे उसने ग्वाले से कहा के तुम मेरे साथ ट्रेन में बैठ जाओ मैं तुम्हें कराची ले जाता हूँ। इस तरह ट्रेन के ज़रिए कराची पहुँच गया।

कराची रेलवे स्टेशन पर पहुँचकर उसने फिर पूछाना शुरू कर दिया के मुझे हज पर जाना है, कैसे जाऊँ? किसी ने उसे हाजी कैम्प जाने का रास्ता बता दिया और वो हाजी कैम्प चला गया। वहाँ तो पूरा शहर आबाद होता है। लोग रोज़ाना पानी के जहाज़ पर सवार होकर जा रहे होते हैं। जब वो लोगों को सवार होकर जाते देखता तो उसके जज़्बात के समुन्दर में और जोश आ

जाता। अगरचे उसके पास वसाईल नहीं थे, न टिकट था, न पासपोर्ट था और न ही पैसे थे मगर उसके दिल में हज करने का सच्चा जज़्बा मौजूद था। चुनाँचे वो वहाँ भी ये कहता रहा के मुझे हज पर जाना है।

एक दिन उसके दिल में ख़्याल आया के जो हाजियों का सामान जहाज़ पर ले जाने वाले क़ुली हैं उनकी एक ख़ास वर्दी है और उनको ऊपर जाने की इजाज़त है। लिहाज़ा मुझे किसी क़ुली से दोस्ती लगानी चाहिए। चुनाँचे उसने एक क़ुली से दोस्ती लगा ली और उसे कहा, भई! आप अपनी वर्दी मुझे दे दें। मैं भी हाजियों का सामान ऊपर पहुँचाउंगा। जब सामान ख़त्म हो जाएगा तो मैं अपने कपड़े पहनकर आपकी वर्दी वापस भेज दूंगा। मेरा भी काम बन जाएगा और आपकी वर्दी भी वापस आ जाएगी। लिहाज़ा उस क़ुली ने अपनी वर्दी उसे दे दी और वो सामान उठाने के बहाने उस जहाज़ पर आता जाता रहा। जब सारा सामान ख़त्म हो गया तो वो उधर ही कहीं छुप गया और अपने कपड़े पहनकर क़ुली की वर्दी वापस भिजवा दी। अब वो वहीं पर इधर उधर वक़्त गुज़ारता रहा। वहाँ तो एक जहाज़ में हज़ारों लोग होते हैं, क्या पता चले कौन कहाँ है? उसके दिल में अल्लाह तआला की ऐसी मुहब्बत थी के पासपोर्ट और टिकट बग़ैर वो जज़्बात के घोड़े पर सवार होकर अल्लाह का घर देखने जा रहा था। लोग तो अपने कमरों में बिस्तरों पर सोते और वो बेचारा बैठ बैठ कर वक़्त गुज़ार लेता।

उसने जहाज़ में एक आदमी के साथ वाक़्फ़ियत पैदा कर ली और उससे कहा भाई! जब जद्दा आ जाए तो मुझे बता देना। चुनाँचे जब जद्दा शहर की रोशनियाँ सामने नज़र आने लगीं और समुन्दरी जहाज़ साहिल के करीब पहुँच गया तो उस आदमी ने

कहा, वो देखो! जद्दा आ गया। उस आदमी ने देखा के वो नौजवान जहाज़ के अर्शे के ऊपर चढ़ा और उसने खड़े होकर समुन्दर में छलांग लगा दी। उसे तैरना तो आता नहीं था चुनाँचे जब वो नीचे गया तो फिर ऊपर उभर ही न सका। जब उस आदमी ने देखा के ये तो नज़र ही नहीं आ रहा है तो वो समझ गया के वो नौजवान डूब गया और उसने दिल में सोचा के अच्छा, अल्लाह को यही मंज़ूर था।

जब उस आदमी ने हज किया और तवाफ़े ज़ियारत के बाद हरम से बाहर निकल रहा था तो उसने देखा के वो ग्वाला भी हरम शरीफ़ से बाहर निकल रहा है और उसने अरबों जैसे कपड़े पहने हुए हैं। उसने उससे पूछा, क्या आप वही हैं जिसने समुन्दर में छलांग लगाई थी? वो कहने लगा, हाँ मैं वही हूँ। वो वहाँ एक दूसरे को ख़ूब मिले। उसने ग्वाले से पूछा के सुनाओ तुम्हारे साथ कैसी बीती? उसने कहा, मेरे साथ चलो, तुम्हें आगे जाकर बताऊँगा। लिहाज़ा वो आदमी उसके साथ चल पड़ा। जब वो बाहर निकले तो देखा के बिल्कुल नई कार खड़ी है और ड्रावइर इंतिज़ार कर रहा है। ग्वाला कार के अंदर बैठा और साथ उस आदमी को भी बिठा लिया और ड्राइवर उनको एक मकान की तरफ़ ले गया जो बिल्कुल नया बना हुआ था। अंदर जाकर देखा के कोठी सजी हुई है। ग्वाले ने उसे एक जगह जाकर बिठा दिया और नौकर से कहा मेहमान के लिए खाने-पीने की कोई चीज़ ले आओ। चुनाँचे वो शर्बत और फल ले आया। उस आदमी ने हैरान होकर पूछा, भई! मुझे बताओ के क़िस्सा क्या है? वो कहने लगा, मैं तुम्हें क़िस्सा बाद में सुनाऊँगा, पहले ये देखो के ये कार भी मेरी है, ड्राइवर भी मेरा है और मकान भी मेरा है। उसने पूछा, भई! ये सब कुछ तुम्हें कैसे मिला?

वो कहने लगा, है तो ये राज़ की बात लेकिन चूँके तुम मेरे राज़दार हो इसलिए मैं तुम्हें बता देता हूँ। चुनाँचे वो कहने लगा, मेरे दिल में अल्लाह का घर देखने का बहुत शौक़ था और उस शौक़ व मुहब्बत में मैंने ये हुलिया किया। जब मैं जद्दा पहुँचा तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मैं तेरे हवाले करता हूँ। ये कहकर मैंने छलांग लगा दी। मुझे तैरना तो आता नहीं था। बस ऐसे ही हाथ पाँव मारता रहा। नतीजा ये निकला के मुझे लहरें ख़ुद ही धकेल धकेल कर साहिल की तरफ़ ले जाती रहीं। मेरे अंदर भी पानी चला गया था और मेरे होश भी उड़ गए थे। जब मैं साहिल पर पहुँचा तो नीम बेहोशी की हालत में था। मैं बाहर निकला, वहीं लेट गया। जब उठा तो सुबह तहज्जुद का वक़्त था। मैंने इधर उधर देखा तो बाहर जाने के सब रास्ते बंद थे। साहिल के साथ ग्रिल लगी हुई थी और आगे दरवाज़ा बंद था। मैं वहीं ग्रिल के पास बैठ गया। मैंने देखा के उस ग्रिल के दूसरी तरफ़ कोठीनुमा एक घर है और उस घर के सहन में एक गाय बंधी हुई है। दो आदमी उस गाय का दूध निकालने के लिए आए मगर गाय उनसे मानूस नहीं थी जिसकी वजह से क़ाबू में नहीं आ रही थी। जब वे दूध निकालने के लिए बैठे तो गाय ने उन्हें बैठने नहीं दिया। वो बड़ी मुसीबत में गिरफ़्तार थे। एक आदमी गाय को पकड़ता और दूसरा थन को हाथ लगाता तो गाय भागकर दूसरी तरफ़ चली जाती थी। तक़रीबन आधा घंटा उसके साथ कुश्ती करते रहे। मेरा तो काम ही ये था। जब मैंने ये मंज़र देखा तो मैंने उन्हें इशारा किया के अगर कहो तो मैं इसका दूध निकाल देता हूँ। वो अरबी बोलते और समझते थे। इसलिए उनको इशारे से ही दूध निकाल देने की पेशकश की। उन्होंने कहा आ जाओ। मैंने कहा ये बंगला है मैं तो नहीं आ सकता।

अल्लाह की शान के वो कोठी उस सीपोर्ट के डायरेक्टर की थी। उसका एक बेटा था। डाक्टरों ने हिदायत की हुई थी के अपने बेटे को गाय का दूध पिलाया करें। उस ज़माने में फ़ीडर की माँ नहीं होती थी। उसने स्पेशल अपने बेटे के लिए गाय रखी हुई थी। गाय के अंदर दूध तो होता था मगर उसे निकालने नहीं देती थी जिसकी वजह से डायरेक्टर और उसकी बीवी को बड़ी परेशानी होती थी के बच्चे को दूध पूरा नहीं मिलता। अब जब मैंने कहा के मैं दूध निकाल देता हूँ तो उन दोनों ने जाकर डायरेक्टर से कहा के यहाँ जंगले के अंदर मुसाफ़िरों में से एक आदमी कहता है के मैं दूध निकाल देता हूँ। उसने कहा ये चाबी लो और जाकर उसे ले आओ। वे गेट का ताला खोलकर मेरे पास आए और मुझे डायरेक्टर साहब के पास ले गए। जब मैंने गाय को ज़रा हाथ फेरा और उसे प्यार की बात कही तो वो मानूस हो गई। मैंने नीचे बैठकर उनको आठ दस किलो दूध निकालकर दे दिया।

जब डायरेक्टर की बीवी ने देखा तो वो बड़ी ख़ुश हुई और कहने लगी के आज तो मेरा बेटा सारा दिन दूध पिएगा। फिर वो कहने लगी के इस आदमी को नहीं जाने देना। जब डायरेक्टर साहब से मुलाक़ात हुई तो उसने पूछा आप कौन हैं? मैंने कहा मैं तो पाकिस्तान से हज करने आया हूँ। वो कहने लगा के हम तुम्हें वापस नहीं जाने देंगे इसलिए के तुम अच्छा दूध निकालते हो। मैंने कहा के मैं दूध तो निकाल दिया करूंगा लेकिन मैंने हज भी करना है। वो कहने लगा तुम फ़िक्र न करो हम तुम्हें हज भी करवा देंगे। दूसरे दिन उसकी बीवी ने अपने वालिद को फ़ोन किया और सारी तफ़्सील बता दी। उसके वालिद ने दो सौ गाय और भैंसों का बाड़ा बनाया हुआ था। चुनाँचे जब उसने ये बात सुनी तो बहुत ख़ुश हुआ और कहने लगा के हमें तो ख़ुद ऐसे

ट्रेन्ड आदमी की ज़रूरत है। बाद में उसने डायरेक्टर साहब के पास फ़ोन किया और कहा के उस आदमी को मेरे पास भेज दो। उसने कहा, जी बहुत अच्छा, मैं भेज देता हूँ। चुनाँचे डायरेक्टर साहब ने मुझे एक गाड़ी में बिठाया और अपने ससुर के घर पहुँचा दिया। उसके ससुर ने मुझे कहा के मैं तुम्हें यहाँ रखता हूँ। तुम्हारे ज़िम्मे ये काम है के सुबह व शाम मेरी गाए भैंसों को दूध निकाल दिया करोगे। जब दूध दूहने का वक़्त आया तो मैंने उसकी बीस पच्चीस गाए भैंसों का दूध मनों के हिसाब से निकाल दिया। वो बड़ा हैरान हुआ के इतना दूध भी निकल सकता है। वो मुझे कहने लगा के बस अब तुम यहीं रहना और मैंने उसे कहा के मुझे हज पर जाना है। वो थोड़ी-थोड़ी देर के बाद यही कहता के बस अब तुमने यहीं रहना है लेकिन मैं जवाब में यही कहता के मुझे हज पर जाना है। मैं तीन दिन वहाँ रहा और तीनों दिन वो मुझे बार-बार यही कहता के तुम्हें यहीं रहना है और मैं कहता के मुझे हज पर जाना है। तीसरे दिन वो कहने लगा, मियाँ! हम तुझे हज भी करवाएंगे लेकिन तूने रहना यहीं है। मैंने कहा के मैं हज तो करूंगा लेकिन बाक़ी बातें बाद में करेंगे।

उसने मुझे हज भी करवा दिया है। हज करने के बाद मैंने उससे कहा के मेरा हज हो गया है अब मुझे घर वापस जाना है। वो कहने लगा, नहीं तूने यहीं रहना है। मैंने कहा के मेरे तो बीवी बच्चे वहाँ हैं। उसने कहा फ़िक्र न करो। मैंने एक नया घर बनाया है। वो घर मैं तुझे देता हूँ, ये मेरी नई गाड़ी है ये भी तुझे देता हूँ और ये ड्राइवर भी तुझे देता हूँ। अब तुम अपनी बीवी बच्चों के नाम और एड्रेस बता दो, मैं पैग़ाम भेजता हूँ और आने वाले जहाज़ में तुम्हारे बीवी बच्चे भी पहुँच जाएंगे। फिर एक हज क्या हर साल हज करते रहना। अब एक हफ़्ते बाद मेरे बीवी-बच्चे भी

मेरे पास पहुँच जाएंगे। मैंने हज भी कर लिया, अल्लाह ने घर भी दे दिया और गाड़ी भी दे दी है। ये अल्लाह तआला के घर को देखने की बरकत है के अल्लाह तआला ने मुझे दुनिया की नेमतें भी अता कर दीं हैं। अब मैं यहीं रहूँगा। हर साल बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करूंगा। भई! हम से तो वो ग्वाला अच्छा के उसने दूध निकालने की बरकत से बैतुल्लाह शरीफ़ देख लिया। सच है के जब जज़्बा सच्चा हो तो फिर बात भी बन जाती है।

हज़रत मदनी रह० का सच्चा जज़्बा

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह० के बारे में आता है के उनके पास सफ़र हज का ख़र्च नहीं था लेकिन उनका जज़्बा बहुत था के मैं हज को जाऊँ। ज़ुलहिज्जा के दिन शुरू होते तो वो रोज़ाना खाना खाते हुए याद करते के अल्लाह के कुछ बंदे ऐसे भी होंगे जो हज पर जा चुके हैं और मैं यहीं पर हूँ। ये ख़्याल आते ही उनको खाना अच्छा नहीं लगता था, रात को नींद नहीं आती थी। कई मर्तबा आसमान की तरफ़ देखते और आसमान की तरफ़ देखकर कहते, मालूम नहीं उश्शाक़ क्या कर रहे होंगे यानी जो हज पर जा चुके होते उनको वो अल्लाह के आशिक़ कहते थे। वो बार-बार यही कहते :

मालूम नहीं उश्शाक़ क्या कर रहे होंगे? कोई तवाफ़ कर रहा होगा, कोई मक़ामे इब्राहीम पर सज्दे कर रहा होगा, कोई ग़िलाफ़े काबा पकड़कर दुआ मांग रहा होगा, कोई मुलतज़िम से लिपटकर अल्लाह के हुज़ूर अपनी फ़रियाद पेश कर रहा होगा।

उनके लिए ज़ुलहिज्जा के ये दस दिन गुज़ारने मुश्किल हो जाते थे। अल्लाह तआला को उनका ये जज़्बा इतना पसन्द आया के रब्बे करीम ने उनके लिए हरमैन शरीफ़ैन के दरवाज़े खोल दिए

और उन्होंने अठ्ठारह साल मस्जिदे नबवी में बैठकर हदीस पाक का दर्स दिया। कहाँ जाने को तरसते थे और कहाँ मस्जिदे नबवी के मुहद्दिस बने, अल्लाहु अकबर।

मस्जिदे नबवी में दर्स हदीस देने की वजह से अल्लाह तआला ने उनकी ऐसी निस्बत अता फ़रमाई के पैदा हुए इंडिया में, पले बढ़े इंडिया में, तालीम इंडिया में पाई, ख़ानदान क़बीला इंडिया में है, ज़िंदगी इंडिया में गुज़ारी, दफ़न हुए इंडिया में लेकिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हुसेन अहमद के साथ मदनी का लफ़्ज़ लगा दिया। आज अगर कोई नाम ले और फ़क़त ये कह दे के हज़रत मदनी रह० ने ये कहा तो लोग मदनी का लफ़्ज़ से उनकी पहचान कर लेते हैं, सुब्हानअल्लाह।

मुहब्बते बिलाली की ज़रूरत

अगर दिल में तड़प हो तो अल्लाह तआला सब मुश्किलों को आसान कर देते हैं। मुहब्बत के बग़ैर ये काम आगे नहीं बढ़ता और मुहब्बत भी बिलाली चाहिए। सैय्यदना बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को कैसी मुहब्बत थी? जब नबी अलैहिस्सलाम ने पर्दा फ़रमा लिया तो हज़रत बिलाल ने दिल में सोचा के पहले अज़ान देता था तो महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार किया करता था। अब अगर अज़ान दूंगा और दीदार न कर सकूंगा तो फिर मैं तो ज़िंदा ही नहीं रहूंगा। चुनाँचे मदीना तैय्यबा से हिजरत करके शाम चले गए।

नबी अलैहिस्सलाम के पर्दा फ़रमाने के बाद हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो मर्तबा अज़ान दी।

1. एक अज़ान तो उस वक़्त दी जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में बैतुल मुक़द्दस फ़तेह हुआ। उस वक़्त

हज़रत उमर के दिल में ये बात आई के आज सैय्यदना बिलाल की अज़ान इस क़िब्लए अव्वल में सुनें। चुनाँचे उन्होंने फ़रमाइश की बिलाल! आज बैतुल-मुक़द्दस में अज़ान दीजिए। चुनाँचे हज़रत बिलाल ने बैतुल मुक़द्दस में अज़ान दी मगर सहाबा किराम की हालत ये थी के मुर्ग़ नीम बिस्मिल की तरह तड़प रहे थे।

2. एक मर्तबा हज़रत बिलाल को ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हुआ। नबी अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया, "बिलाल! ये कितनी सर्द मुहरी है के तुम हमें मिलने ही नहीं आते।"

ये सुनते है हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की आँख खुल गई। उन्होंने उसी वक़्त अपनी बीवी को जगाया और कहा के मैं बस इसी वक़्त रात को ही सफ़र करना चाहता हूँ। लिहाज़ा अपनी ऊँटनी पर रवाना हुए, मदीने पहुँचे तो सबसे पहले नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर सलाम पेश किया। उसके बाद मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ी। दिन हुआ तो सहाबा किराम के दिल में ख़्याल हुआ के क्यों न आज हम हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़ान सुनें। लिहाज़ा कई सहाबा ने उनके सामने अपनी ख़्वाहिश का इज़्हार किया लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया के मैं नहीं सुना सकता क्योंके मैं बरदाश्त नहीं कर सकूँगा। मगर उनमें से कुछ लोगों ने हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा से कह दिया के आप बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाईश करें। उनका अपना दिल भी चाहता था। चुनाँचे शहज़ादों ने फ़रमाईश की के हमें अपने नाना के ज़माने की अज़ान सुननी है। अब ये फ़रमाईश ऐसी थी के हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए

इन्कार की गुंजाइश बिल्कुल नहीं थी। लिहाज़ा दूसरा मौक़ा था जब हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु अज़ान देने लगे। जब उन्होंने अज़ान देना शुरू किया और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने वो अज़ान सुनी जो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के दौर में सुना करते तो उनके दिल उनके क़ाबू में नहीं रहे। यहाँ तक के घरों में जो औरतें थीं, जब उन्होंने वो आवाज़ सुनी तो वे भी रोती हुई अपने घरों से बाहर निकलीं और मस्जिदे नबवी के बाहर भीड़ लग गई। अजीब बात ये थी के एक औरत ने बच्चे को उठाया हुआ था। वो छोटा सा बच्चा अपनी माँ से पूछने लगा, "अम्मा! बिलाल तो कुछ अरसे के बाद वापस आ गए, ये बताओ के नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कब वापस आएंगे?" इस बात सुनकर सहाबा किराम मछली की तरह तड़प उठे।

ये मुहब्बत थी। जब दिल में बिलाली मुहब्बत हो तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रास्ते हमवार कर दिया करते हैं।

बैतुल्लाह शरीफ़ की बरकत का एक हैरतअंगेज़ वाक़िआ

बैतुल्लाह शरीफ़ की बरकत का एक वाक़िआ अभी याद आया। वो भी आपको सुनाता चलूँ। एक नौजवान किसी फ़ैक्ट्री में हमारे साथ काम करता था। वो इतना ख़ूबसूरत था के उसे देखकर इंसान हैरान हो जाता था। उसके नक़्श व नैन, उसका क़द और उसका डील डौल क़ाबिल दिया था और उसकी छाती ऐसी बाडी बिल्डर्स की तरह थी के उसके सीने पर अगर पानी का गिलास रखा जाए तो वो भी ठहर सकता था। जब वो चलता तो पता चलता के एक नौजवान चलकर आ रहा है। जहाँ उसकी पर्सनेलिटी ख़ूबसूरत थी वहाँ अल्लाह तआला ने उसे माल व दौलत भी बड़ा दिया था। वो कई मरबअ खेती की ज़मीन का वारिस

था। उसका एक भाई और था जो मेजर था। वो नौजवान युनिवर्सिटी के माहौल में जाकर दहरिया बन गया था।

जब हमें पता चला के वो दहरिया है तो हमें फ़िक्र हुई। मैंने अपने साथ वाले इंजीनियर से कह दिया के आप लोगों ने इससे कोई बहस नहीं करनी। अलबत्ता जब कभी कोई बात हुई तो ये आजिज़ फ़क़ीर ही उससे बात करेगा। क्योंके हम दोनों का एक ही ओहदा था इसलिए वो मेरे साथ ज़रा हिसाब से बात करता था।

उसने तरह-तरह बातें करनी शुरू कर दीं, किसी से कहता, यार! जिस तरह तुम अल्लाह से डरते हो मैं नहीं डरता। कभी कुछ कहता और कभी कुछ। कोई मुलाज़िम आकर कहता, जी मुझे छुट्टी चाहिए, वो पूछता क्यों? वो बताता के मुझे जमात के साथ जाना है। वो आगे कहता, अच्छा अच्छा तुम जिहालत फैलाने जा रहे हो। एक दिन उसने आकर इंजीनियरों से कहा, यार! मैं आज जनाज़ा पढ़ने गया था। मैंने कई क़ब्रों को हाथ लगाया लेकिन मुझे तो उनमें से कोई भी गर्म महसूस नहीं हुई। इस तरह टोंट करता था। इन हालात के पेश नज़र हम उसकी हिदायत के लिए दुआ भी करते थे और इस इंतिज़ार में भी थे के किसी मुनासिब वक़्त में उससे बात करेंगे।

एक दिन उसने बताया के मेरी वालिदा ने मेरी शादी का प्रोग्राम बनाया है। हमने कहा बहुत अच्छा। जब उसने ये बात ज़ाहिर की तो इधर उधर से तजवीज़ें आनी शुरू हो गयीं। कभी कर्नल की बेटी के लिए डिमांड आती तो कभी जनर्ल की बेटी के लिए डिमान्ड आती, कभी लेडी डॉक्टर के लिए डिमान्ड आती तो कभी प्रोफ़ेसर की लड़की के लिए। हम हैरान थे के उसके पास

एक महीने में एक सौ नौ रिश्ते आए क्योंके जो आदमी भी उसे देखता उसका जी चाहता के हमारे क़रीब ही कहीं उसका रिश्ता हो जाए। उसने मुझसे मश्वरा किया के अब मैं क्या करूं? मैंने कहा, जी आप सबको पढ़ लें के वे कैसे कैसे लोग हैं। फिर उनमें से जो पाँच दस आपको मुनासिब नज़र आएं उनसे मुलाक़ात कर लें। उसके बाद आपके लिए फ़ैसला करना आसान हो जाएगा। उसने कहा, ठीक है।

इसी बातचीत के दौरान मैंने उसे कहा, जी आप अल्लाह तआला के बारे में ऐसी जुर्रात वाली बातचीत न किया करें क्योंके अल्लाह की लाठी बेआवाज़ है। वो कहने लगा, आप कहते हैं तो आइंदा कोई ऐसी बात नहीं करूंगा। वैसे मैं इतना डरता नहीं हूँ। जब उसने ये बात कही तो मैंने उससे कहा, अच्छा! फिर मेरी बात भी सुन लें के अब आप ज़रा तैयार हो जाएं क्योंके जो अल्लाह तआला पर इतनी जुर्रात करता है के फिर अल्लाह तआला उसे तिगनी का नाच नचा देते हैं। जो बातों से नहीं मानता वो लातों से मानता है और आप तो अब बातों की हद क्रास कर गए हैं। वो कहने लगा, ठीक है। आप भी यहीं हैं और मैं भी यहीं हूँ। मैंने भी कहा :

﴿فانتظروا انی معکم من المنتظرین.﴾

पस तुम इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करने वाला हूँ।

दूसरे तीसरे दिन हमें इत्तिला मिली के वो मोटरसाइकल पर जा रहे थे। उसका अचानक एक्सीडेंट हुआ। उसको चोटें तो आयीं हैं मगर इतनी सीरियस नहीं। इसी वजह से वो आज छुट्टी पर है। हम उसकी तबियत पूछने के लिए उसकी रिहाइशगाह पर गए।

हमने उससे पूछा, जी आपका एक्सीडेंट कैसे हुआ? वो कहने लगा, बस अचानक ही एक्सीडेंट हुआ। सड़क बिल्कुल साफ़ थी। मैं तो आराम से मोटरसाइकल चलाते हुए जा रहा था के आँखों के सामने अचानक अंधेरा सा आ गया और मेरी मोटरसाइकल नीचे गिर गई।

दो चार दिन बाद इत्तिला मिली के वो पैदल चल रहा था के अचानक नीचे गिर गया। उसने लाहौर जाकर अपना चैकअप कराया तो उन्होंने उसका ईलाज शुरू कर दिया। ईलाज करते करते किसी ने बताया के इसके नर्वस सिस्टम में कोई ख़राबी है। लिहाज़ा उसका आप्रेशन करना पड़ेगा। उसके भाई ने नौ ब्रिगेड जर्नल डाक्टरों का एक पैनल बनवाया। वे सबके सब बाहर से पढ़ लिखकर और तजूरिबा करके आए थे। उन्होंने शोहरा में एक फ़ौजी हस्पताल में उसका आप्रेशन किया। आप्रेशन आठ घंटों में पूरा हुआ। जब वो वापस आया तो कुछ दिनों के बाद उसकी तबियत थोड़ी सी ठीक हुई। उसके बाद पता चला के उसको बुख़ार हो गया है। बुख़ार से आराम हुआ तो उसने दफ़्तर आना शुरू कर दिया।

एक दिन उसने मुझे बताया के मुझे तो चीज़ें दो-दो नज़र आ रही हैं यानी वो कह रहा था के मेरी आँखें एक चीज़ नहीं देख रही हैं बल्के उनका फ़ोकस ख़त्म हो चुका है। अब हर आँख अलग-अलग चीज़ें देख रही है। इस तरह उसको एक के बजाए दो बंदे नज़र आने लगे। सलाम उसको करे या उसको करे। ऐसा बंदा कारख़ाने में किस तरह काम कर सकता था। लिहाज़ा वो गोया बैठ ही गया।

अभी दो चार दिन ही गुज़रे थे के उसको हाथों से पसीना

बहना शुरू हो गया। इतना पसीना के अगर वो हाथ का रुख़ नीचे करता तो पानी के क़तरे टपक रहे होते थे। वो तीन-तीन चार-चार तौलिए अपने पास रखता था यहाँ तक के किसी काग़ज़ पर साइन करना मुश्किल हो गया। वो अजीब मुसीबत में मुब्तला था।

हमने उसे कहा के ये खुदा तआला का ग़ैबी निज़ाम है जो हरकत में आ गया है। इसका एक ही हल है के अपने रब को तसलीम करो और माफ़ी मांगो वरना नहीं छूटोगे। वो हंस के टाल देता और कहता के ज़िंदगी में सेहत व बीमारी तो होती ही रहती है।

क्या मुसलमान बीमार नहीं होते?

क्या काफ़िर की सेहत नहीं होती?

हम ने कहा ठीक है और देख लो।

उसके बाद उसे बुख़ार हो गया और लंबी छुट्टी पर घर चला गया। एक महीने बाद हमें इत्तिला मिली के वो तो अपनी ज़िंदगी के बिल्कुल आख़िरी लम्हात में है। हम सरगोधा में उसके घर उसकी अयादत के लिए गए। मैंने उस बंदे को जाकर देखा तो वो हड्डियों का ढांचा बन चुका था। उसका वज़न चालीस किलो के क़रीब रह गया होगा। उसको कमज़ोरी इतनी आ चुकी थी के वो अपनी करवट भी खुद नहीं बदल सकता था। उसकी अम्मी उसको करवट बदलवाती थी। वो अपने हाथ से रोटी भी नहीं खा सकता था। वो अपने कपड़े भी नहीं बदल सकता था। ज़रा सोचिए तो वो कैसा हो गया होगा। उसकी जवानी भी हमने देखी थी और उसका ये हाल भी हमने देखा।

उसकी हालत देखकर मुझे दिल में बहुत ही दुख हुआ। मैंने उससे कहा हम आपके ईलाज की कोई तजवीज़ बनाते हैं। हम

आपको बाहर मुल्क भिजवाएंगे। मुझे अल्लाह तआला से उम्मीद है के आप सेहतमंद हो जाएंगे। क्या आप वापस आते हुए उमरा करके आएंगे? उसने हाँ में सर हिला दिया।

इंडस्ट्री के जो बड़े थे उनके साथ आजिज़ का मुहब्बत का ताल्लुक़ था। चुनाँचे मैंने वापस आकर उन्हें कहा, जी देखें के वो जवान आदमी है, दुनिया में जहाँ कहीं भी इस बीमार का ईलाज हो सकता है आप वहाँ उसको भेजें और उसका ख़र्चा अदा करें। उन्होंने कहा ठीक है। मैं आपके ज़िम्मे कर देता हूँ। आप टिकटें बनवाएं और उनको भेजें। मैं सारी अदाएगी कर दूंगा।

हमने फ़ौरन World Health Organizationआलमी इदारा सेहत को ख़त लिखा के ये बीमारी है। पूरी दुनिया में अगर कहीं इस बीमारी का ईलाज हो सकता है तो हमें बताओ। उन्होंने जवाब दिया के इस बीमारी का ईलाज कनाडा में सिर्फ़ एक डाक्टर के पास है। और उसके पास अब तक नौ मरीज़ ठीक हुए हैं। हमने उससे राब्ता किया। उस डाक्टर ने बताया के मेरी बीवी भी इस मर्ज़ में मुब्तला थी। मैंने दिन रात मेहनत की और वो सेहतमंद हो गई। इस वक़्त तक मेरे पास नौ मरीज़ ठीक हो चुके हैं। अगर आप भी आना चाहते हैं तो आ जाएं। इतना इतना ख़र्चा होगा।

हमने जहाँ उसकी कनाडा के लिए टिकटें बनवायीं वहाँ साथ ही उसके भाई की भी बनवा लीं क्योंके वो खुद तो जा नहीं सकता था। अल्लाह की शान के इस आजिज़ ने उनकी टिकटें बनवायीं तो वापसी सऊदी अरब के ज़रिए बनवायीं। हमने उसके भाई से कह दिया के देखो, उसने उमरा करने के लिए हाँ की हुई है। लिहाज़ा आप वापसी पर खुद भी उमरा करना और इसको भी साथ मे उमरा करवाना। उसने कहा ठीक है।

अल्लाह तआला की शान देखिए के जब वे वापस आया तो हम जैसी उम्मीद कर रहे थे के वो वहाँ ईलाज करवाकर सेहतमंद हो जाएगा। इसी तरह वो काफ़ी सेहतमंद वापस आया और मिला। वो थोड़ी देर बैठा तो कहने लगा, "नमाज़ का वक़्त हो गया है।"

मैंने उसके चेहरे की तरफ़ देखा और कहा, ख़ैर तो है। वो कहने लगा नमाज़ के लिए तैयारी कर लें। हमने कहा के नमाज़ के लिए तो अभी आधा घंटा बाक़ी है। इस वक़्त आप हमें अपने सफ़र के हालात सुना दें। उसके बाद इंशाअल्लाह नमाज़ भी पढ़ेंगे। अब उसने हालात खुद सुनाए :

वो कहने लगा के जब मैं यहाँ से कनाडा गया तो डाक्टर ने मुझे मशीन पर लिटा दिया। मेरे साथ कम्प्यूटर मशीनें जोड़ दीं और लैबोट्री में पता नहीं क्या कुछ था। मेरी हर चीज़ मानीटर हो रही थी। Misthenea Gravousबीमारी निकली। उसने मेरा पूरा ख़ून Centrifugari Machine(सैनेट्री फ़्युजल मशीन) के ज़रिए निकाल कर उसको साफ़ किया और बीमारी का प्लाज़्मा Plazma निकालकर वापस कर दिया। उसने एक दफ़ा ऐसा भी किया और फिर कई दिन बाद दूसरी मर्तबा किया और फिर कई दिन बाद तीसरी मर्तबा किया। जब वो तीन दफ़ा इस तरह कर चुका तो उसने मेरे भाई को बुलाया और कहा, "भई! आपके भाई की ज़िंदगी के कुछ ही दिन हैं। बचने की उम्मीद नहीं है।" भाई ने पूछा वो कैसे? उसने कहा, "मैंने जितने मरीज़ों का ईलाज किया उनके लिए मैंने सिर्फ़ एक-एक मर्तबा ये तरीक़ा अपनाया और वे सब ठीक हो गए। जबके यहाँ तीन दफ़ा ये तरीक़ा इस्तेमाल कर चुका हूँ लेकिन ठीक नहीं हुआ।" मेरे भाई ने कहा, डाक्टर साहब! जब आपकी तरफ़ से जवाब है तो बजाए इसके के

भाई की लाश वापस लेकर जाऊँ, इसे ज़िंदा ही ले जाता हूँ ताके ये अम्मी को एक नज़र देख ले।

उसने कहा, हाँ ले जाओ। इस तरह हम वहाँ से बग़ैर ईलाज के वापस आ गए। जब जद्दा पहुँचे तो वहाँ से अगली फ़्लाइट नहीं मिलती थी। मेरे भाई ने कहा, जी मेरे साथ मरीज़ है। उन्होंने कहा जो मर्ज़ी है, इस वक़्त सारी फ़्लाईटें बुक हैं और आप लोगों को यहाँ दो दिन इंतिज़ार करना पड़ेगा। मेरे भाई ने कहा, मेरे साथ बहुत सीरियस मरीज़ है। उन्होंने कहा, मरीज़ है तो हम क्या करें, हम इतना कर सकते हैं के हम आपको प्राइवेट सवारी दे सकते हैं ताके आप एयरपोर्ट से शहर चले जाएं। और वहाँ दो दिन ठहर कर वापस चले जाएं। वो कहने लगे, इस तरह हम जद्दा शहर में आ गए।

शहर पहुँचकर भाई ने मुझसे पूछा के क्या मैं आपको वहाँ ले जाऊँ जहाँ का आपने वादा किया था? मैंने कहा ठीक है ले जाओ। चुनाँचे भाई मुझे मक्का मुकर्रमा लेकर चले गए और मैंने अपनी ज़िंदगी में पहली मर्तबा बैतुल्लाह शरीफ़ को देखा।

वो कहने लगा, बैतुल्लाह शरीफ़ को देखकर मेरे दिल पर अजीब सा असर हुआ। अब देखिए वो मुसलमान नहीं था बल्के दहरिया था और खुदा के वजूद को नहीं मानता था। उस बंदे की ये हालत थी। उसने कहा के मेरे दिल में कुछ अजीब सी कैफ़ियत बनी और मैंने बैठे बैठे दुआ मांगी। ज़रा तवज्जोह फ़रमाइए।

"अल्लाह अगर तू है तो मुझे सेहत अता फ़रमा ताके मैं कल चलकर तेरे घर का तवाफ़ कर सकूँ।" उसके बाद मेरे दिल में एक अजीब खुशी की सी कैफ़ियत आ गई। मैंने दवाई पीना बंद कर दी। अल्लाह तआला की शान देखें के जब मैं अगले दिन सोकर उठा तो सुबह तर व ताज़ा था। मैं भाई के साथ बैतुल्लाह

शरीफ़ के पास आया, कलिमा पढ़ा और मैंने चलकर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया, अल्लाहु अकबर कबीरा।

मेरे दोस्तो! अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस घर में जाने वाले दहरियों की दुआएं भी क़ुबूल कर लेता है और उनको हिदायत दे देता है और उनकी मुरादें भी पूरी करता है तो जो मोमिन यहाँ से अल्लाह के घर के लिए जाते होंगे वो वहाँ जाकर अल्लाह की रहमतों से कितना हिस्सा पाते होंगे।

एक आम दस्तूर

दुनिया का आम दस्तूर ये है के आदमी जिसको अपना समझता है उसको घर बुलाता है। जिस आदमी से नफ़रत और दुश्मनी होती है उसको तो कोई अपनी गली से भी नहीं गुज़रने देता बल्के वो कहता है के मियाँ! तुम हमारे मौहल्ले में नज़र न आओ। उसे घर बुलाने की तो कोई सोच भी नहीं सकता। इसी तरह अल्लाह तआला भी हज और उमरे की तौफ़ीक़ उसी को अता फ़रमाते हैं जिसको अपना समझते हैं।

हज का ताल्लुक़ आमाल से है

हज का ताल्लुक़ माल के साथ नहीं, आमाल के साथ है। ग़ौर कीजिएगा। इसकी चंद मिसालें देकर अपनी बात मुकम्मल कर दूँगा।

- आप हैरान होंगे के एक आदमी के बारे में किसी ने बताया के वो इतना बड़ा कारोबारी बंदा है के वो अपनी बीवी को हर महीने दस लाख रुपए ख़र्च देता है। एक मुलाक़ात में इस आजिज़ ने उससे पूछा, भई! क्या आपने कभी हज और उमरा भी किया है? वो कहने लगा, नहीं आज तक तौफ़ीक़

नहीं मिली। अगर इसका ताल्लुक़ माल के साथ होता तो वो तो सैंकड़ों दफ़ा उमरे कर चुका होता। यूरोप में दर्जनों चक्कर लगाए और रास्ते में सऊदी अरब पड़ता है मगर कभी तौफ़ीक़ न मिली।

- चंद साल पहले की बात है के पाकिस्तान में ही एक ऐसा मालदार आदमी था अगर वो चाहता तो वो पाकिस्तान से जाकर रोज़ाना उमरा कर सकता था। वो दर्जनों दफ़ा यूरोप और अमरीका तो गया है लेकिन उसे हज की तौफ़ीक़ न मिली। वो मुझे मिला तो मैंने पूछा के आप हज व उमरा से महरूम क्यों हैं? ख़ैर उसने हज करने की आमादगी ज़ाहिर कर दी। जब हज करने का मौक़ा आया तो इन्कम टैक्स में उलझ गया जिसकी वजह से न जा सका। बाद में मिला तो पूछा, भई! हज पर क्यों नहीं गए? वो कहने लगा जी इन्कम टैक्स में उलझ गया था। मैंने कहा कुछ उलझ नहीं गए थे उलझा दिए गए थे, लिहाज़ा तौबा करो।
- एक सिविल इंजीनियर साहब थे। वो रिटायर हुए तो हमने उसे तर्ग़ीब दी के आप पर हज फ़र्ज़ है क्योंके आप हैसियतदार आदमी हैं। लिहाज़ा आप अपना फ़र्ज़ पूरा करें। आप अभी तो बड़ी आसानी से जा सकते हैं क्योंके आपकी उम्र पैंसठ साल है। चुनाँचे उन्होंने हज के लिए दरख़्वास्त दे दी। उसकी दरख़्वास्त मंज़ूर हो गई और उसे ग्रुप लीडर बना दिया गया। इत्तिला आई के फ़लां तारीख़ को आपकी फ़्लाइट है। पासपोर्ट बना, टिकट बनी और पासपोर्ट पर वीज़ा लग गया।

रवानगी से दो दिन पहले उसका बड़ा भाई उससे मिलने आया। उसने मिलकर उससे कोई ऐसी ज़हरीली बात कही के

उस बंदे ने हज पर जाने का इरादा तर्क कर दिया। हमने उसे बड़ा समझा था के भई! चले जाओ। वो कहने लगा के अब तो नहीं जाऊँगा अलबत्ता अगले साल चला जाऊँगा। अल्लाह की शान के उसकी टिकट पर लिखा हुआ था के फ़लां तारीख़ को जाना है और फ़लां तारीख़ को आना है, वो आदमी न गया।

लेकिन जिस तारीख़ को उसे वापस आना था उस तारीख़ के तीन दिन बाद उसको हार्ट अटैक हुआ और वो इस दुनिया से चला गया। अगर वो हज पर चला जाता जैसे हमने उसे सलाह दी थी उसके पिछले गुनाह भी माफ़ हो जाते और हज से वापस आकर तीन दिन बाद तो उसका जाना मुक़द्दर था ही। इस तरह वो गुनाहों से पाक साफ़ होकर दुनिया से रुख़सत हो जाता।

- हमारे दादा पीर हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० को एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलाम की ज़ियारत नसीब हुई। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अब्दुल मालिक! आप हम से मुलाक़ात के लिए नहीं आते। अर्ज़ किया आक़ा! तमन्ना तो बड़ी है मगर वसाइल नहीं हैं। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, "अच्छा हम कह देंगे।"

इसका नतीजा ये निकला के अगले साल उनके ताल्लुक़ वालों में से तीन चार बंदे उनके पास आ गए और अर्ज़ करने लगे, हज़रत! मेरे दिल में आ रहा है के आप मेहरबानी फ़रमाएं और मेरी तरफ़ से हज करें। दूसरे ने भी यही कहा, हत्ताके सबने यही कहा। अब हज़रत रह० ने उनमें से एक की तरफ़ से दावत क़बूल कर ली। लिहाज़ा इंतिज़ाम हो गया। अगले

साल दूसरे की तरफ़ से। हर साल पाँच सात बंदे ऐसे होते थे के जो उन्हें हज के लिए कहते थे। हत्ताके उसके बाद हज़रत रह० सत्ताइस साल ज़िंदा रहे और अल्लाह तआला ने उन्हें सत्ताइस साल ही हज की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई, सुब्हानअल्लाह। महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था के हम कह देंगे। अल्लाह तआला ने इंतिज़ाम फ़रमा दिया। एक फ़क़ीर बंदा अपने ख़र्चे पर हज नहीं कर सकता और अल्लाह तआला ने सत्ताइस साल हज करने की सआदत नसीब फ़रमा दी।

- पिछले साल हज के मौक़े पर सऊदी अरब के अख़बार में एक ख़बर आई। यमन के एक हाजी साहब आए हुए थे। उनकी तस्वीर भी अख़बार में छपी हुई थी। उनकी उम्र एक सौ बीस साल थी। उन्होंने बयान दिया के मैंने पहला हज बीस साल की उम्र में किया सौवाँ हज करने के लिए आया हूँ। उन्होंने ये भी कहा के मैंने बीस हज सवारी पर किए और अस्सी हज पैदल चलकर किए।

- हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० नीशापूर से हज करने चले और ढाई साल में मक्का मुकर्रमा पहुँचे। उन्होंने हर क़दम पर दो रकअत नफ़्ल पढ़ें जब वहाँ पहुँचे तो जाकर दुआ मांगी, ऐ अल्लाह! लोग तो तेरे घर में क़दमों के बल पहुँचते हैं और मैं पलकों के बल चलकर आया हूँ। हज का ताल्लुक़ माल से नहीं, आमाल से है। ये बात याद रखिएगा, इंशाअल्लाह फ़ायदा मिलेगा। महबूबे ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को राज़ी करने वाले आमाल अपनाओ, अल्लाह तआला रास्ता खोल देगा।

- किसी मुल्क में एक डाक्टर साहब मिले। उन्होंने अपना वाक़िआ सुनाया के हम घरवाले उमरा करने के लिए गए। हम अपने बेटे को भी साथ लेकर गए। वो भी डाक्टर था। कई तो पीएचडी डाक्टर होते हैं और कई पीएचडी सिर्फ़ होते हैं। क्या मतलब? 'पी' का मतलब फिरा, 'एच' का मतलब हुआ और 'डी' का मतलब दिमाग़ यानी फिरा हुआ दिमाग़। उन्होंने बताया के हमने एहराम बांधे और मक्का मुकर्रमा पहुँच गए। जब उमरा करने के लिए मस्जिदे हराम के दरवाज़े पर पहुँचे तो हमारा बेटा कहने लगा के मेरे दिल को कुछ हो रहा है, लिहाज़ा मैं अंदर नहीं जाता। हमने उसे समझाया, लेकिन वो कहने लगा नहीं। हमने कहा फिर तुम यहीं बैठ जाओ ताके तुम्हारी तबियत कुछ संभल जाए। हम दोनों मियाँ-बीवी उमरा करके आए तो बेटा वापस कमरे में आया। कपड़े बदले और वहाँ से वापस अपने मुल्क आ गया। अल्लाह तआला ने उसे बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े से वापस धुतकार दिया। बैतुल्लाह शरीफ़ के दरवाज़े तक पहुँच गया लेकिन बैतुल्लाह शरीफ़ को देखने की तौफ़ीक़ नहीं मिली।

हसरत है उस मुसाफ़िरे मुज़तर के हाल पर
जो थक के रह गया हो मंज़िल के सामने

उश्शाक़ का मजमा

पता नहीं के वहाँ कैसे-कैसे अल्लाह तआला के आशिक़ आते हैं। मैं तो हाजियों को उश्शाक़ का मजमा कहता हूँ।

इजाज़त हो तो आकर मैं भी शामिल इनमें हो जाऊँ
सुना है कल तेरे दर पर हुजूमे आशिक़ाँ होगा

ये अल्लाह के दर पर हुजूम आशिक़ाँ होता है, सुब्हानअल्लाह।

कोई अपनी तहज्जुद लेकर आता है, कोई पाकदामनी की ज़िंदगी लेकर आता है, कोई दीन की ख़िदमत लेकर आता है, कोई तक़्वा व परहेज़गारी लेकर आता है, कोई इश्क़ की गुत्थियाँ सुलझा के आता है।

जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं के मैं एक मर्तबा तवाफ़ कर रहा था। मैंने एक जवान लड़की को देखा। वो बड़े आशिक़ाना अश'आर पढ़ रही थी। जैसे कोई अपने महबूब के इश्क़ में डूबा होता है और महबूब की मुलाक़ात के लिए बेक़रार होता है इसी तरह वो भी बेचैनी में आहें भर रही थी और आशिक़ाना अश'आर पढ़ रही थी। मैंने उस लड़की से कहा, ऐ लड़की! तू नौजवान है और तुझे ऐसे खुले खुले आशिक़ाना अश'आर पढ़ना सही मालूम नहीं देता। उसने मेरी तरफ़ देखा तो कहने लगी, जुनैद! मुझे ये बताओ के तुम बैतुर्रब का तवाफ़ कर रहे हो या रब्बुलबैत का का तवाफ़ कर रहे हो यानी क्या तुम घर का तवाफ़ कर रहे हो या घरवाले का तवाफ़ कर रहे हो? मैंने कहा के मैं तो बैत का तवाफ़ कर रहा हूँ। जब मैंने ये कहा तो वो मुस्कराई और कहने लगी, हाँ जिनके दिल पत्थर होते हैं वे पत्थर के घर का तवाफ़ किया करते हैं, अल्लाहु अकबर। कुछ वे लोग होते हैं जो घर को देखकर आते हैं और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो घर वाले की तजल्लियात को देखकर आते हैं। इसीलिए हज के बाद के तवाफ़ का नाम "तवाफ़े ज़ियारत" है। जी हाँ क़िस्मत वालों को ज़ियारत नसीब होती होगी। ये कैसे हो सकता है के कोई घर बुलाए और मुलाक़ात न करे। कोई ख़ुद आए और अगला मुलाक़ात से इंकार कर दे तो और बात होती है। बुलाकर तो कोई भी मुलाक़ात से इंकार नहीं करता। जी हाँ! अल्लाह तआला ने ख़ुद इन अल्फ़ाज़ में हज के लिए बुलाया ﴿واذن في الناس بالحج﴾ और उन लोगों के

दर्मियान हज का ऐलान कर दो। मेरे प्यारे इब्राहीम! दो अज़ान, करो ऐलान के आओ मेरे बंदो हज के लिए। जब उस महबूब ने बुलाया है तो अपना दीदार भी अता करता होगा। वाह मेरे मौला! वो बहुत ही अजीब जगह है। वहाँ पर अल्लाह तआला की तजल्लियात बारिश की तरह छम-छम बरस रही होती हैं।

हाजी की दुआ का मक़ाम

अगर वहाँ जाकर हमारे आमाल की बुनियाद पर मग़फ़िरत होनी होती तो फिर तो पता नहीं के क्या मामला होता। मगर मज़े की बात ये है के अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दुआ ऐसी कर दी के जिसका कोई बदल हो ही नहीं सकता। हदीस पाक में आया है के नबी अलैहिस्सलाम ने अरफ़ात में जाकर दुआ फ़रमाई :

"ऐ अल्लाह! तू हाजी की भी मग़फ़िरत फ़रमा और जिसकी मग़फ़िरत की हाजी दुआ करे तू उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमा।"

क्या रहमतुल्लिल आलमीनी का ज़हूर है। अब जाने वाले हाजी गुनाहगार ही सही। उनके अमलों की वजह से नहीं बल्के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआ की वजह से उसकी मग़फ़िरत होती है। क़ियामत तक आने वाले लोगों के लिए दरवाज़े खोल दिए गए।

दो काम ज़रूर किया करें

जब कोई हाजी हज पर जा रहा हो तो दो काम ज़रूर किया करें। एक काम तो ये के उस खुशनसीब की ख़िदमत में ये अर्ज़ किया जाए के भई आप मेरी मग़फ़िरत के लिए दुआ फ़रमा दीजिएगा। मुलतज़िम से भी लिपटकर दुआ कीजिएगा और

अरफ़ात के मैदान में भी दुआ कीजिएगा। और दूसरा काम ये के उससे ये कहें के आप मेरी तरफ़ से अल्लाह के महबूब की ख़िदमत में सलात व सलाम ज़रूर पेश फ़रमा दीजिएगा। आजकल ये अजीब सर्द मुहरी देखने में आती है के हाजी लोग हज पर जा रहे होते हैं लेकिन लोग उनके ज़रिए अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में सलात व सलाम का तोहफ़ा नहीं भेजते। इसका ज़रूर एहतिमाम किया करें।

सच्चे जज़्बे से हज की सआदत मांगिए

ये तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का करम होता है। ये मांगने का वक़्त है लिहाज़ा इन दिनों में अल्लाह से मांगिए। इसलिए के जब किसी काम का माहौल होता है तो फिर उसके मुताबिक़ दुआएं भी जल्दी क़बूल हो जाती है। ये उनवान भी आज इसीलिए छेड़ा है के आजकल के चाहने वो अल्लाह के घर का दीदार करने के लिए सफ़र पर जा रहे हैं। रोज़ ख़बरें आती हैं के आज इतने हाजी चले गए, आज इतने हाजी चले गए। हम भी इस बात का एहसास करें और अल्लाह तआला से तन्हाइयों में दिनों में, रातों में, अकेले में और मज्लिसों में दुआएं मांगें। अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रास्ता खोल देंगे तो हमारे लिए जाना आसान हो जाएगा। इसका ताल्लुक़ माल व दौलत से नहीं बल्के इसका ताल्लुक़ जज़्बों की सच्चाई के साथ है। अल्लाह तआला हमें भी वो सच्चाई अता फ़रमा दे और हमें भी अपनी ज़िंदगी में अपने घर बार-बार दीदार अता फ़रमा दे। हदीस पाक का मफ़हूम है के जब बंदा हज करके वापस लौटता है तो वो गुनाहों से इस तरह पाक होकर आता है जिस तरह उस दिन पाक था जब उसकी माँ ने उसको जन्म दिया था। जब ये सआदत मिलती है तो क्यों न हम

भी इस सफ़र पर जाएं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगें। जो हज़रात जा चुके हैं वे बार-बार जाने की दिल में तमन्ना करें और जो नहीं जा सके वे दिल में तमन्ना करें के ऐ परवरदिगार आप हमारे लिए आसान फ़रमा दीजिए। शर्त ये है के उनके दिल में सच्ची तड़प होनी चाहिए के ऐ अल्लाह! हम आपका घर देखना चाहते हैं क्योंकि–

به مکه بینی از توحید نورے
بیثرب از حبیب اللہ ظہورے
گر ایں دو شہر مارا تو نہ دیدے
چہ دیدی گر دریں دنیا رسیدے

मक्का में तौहीद का नूर देख और यसरिब में अल्लाह के हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़हूर देख। अगर हम ने दुनिया में आकर इन दो शहरों को नहीं देखा तो फिर दुनिया में हमने देखा ही क्या है।

ये बात ज़हन में रखना के अगर जज़्बा सच्चा हो तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इसी दुनिया में हज पर जाने का दरवाज़ा खोल देंगे और अगर दुनिया में दरवाज़ा न भी खुला तो अल्लाह तआला उसे क़ियामत के दिन हुज्जाज में ज़रूर शामिल फ़रमा देंगे। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम आजिज़ मिस्कीनों को बार-बार सफ़रे हज की सआदत नसीब फ़रमा दे, आमीन सुम्मा आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

بسم اللہ الرحمن الرحیم

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ۝ (سورۃ یوسف:۴۰)

हुक्मे ख़ुदा की अहमियत

बयान हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्देज़िल्लुहु

इक़्तिबास

हुक्मे खुदा हिक्मे खुदा है। आज के फ़सादात के ज़माने में से एक फ़साद ये भी है के अहकामे इलाही की अज़्मत दिल से निकलती जा रही है। शरिअत के अहकाम जब किसी के सामने आते हैं और वे उनकी मंशा के ख़िलाफ़ होते हैं तो उनके नुफ़ूस(तबियतें) तावीलात (गुंजाइशें) निकालनी शुरू कर देते हैं। फ़रार की राहें अख़्तियार करते हैं और सवालात पूछते हैं के शरिअत में ऐसा क्यों है? याद रखिए के जिस बंदे ने कलिमा पढ़ लिया और कह दिया के ﴿قَبِلْتُ جَمِيْعَ اَحْكَامِهٖ﴾ क़बिलतु जमि-अ अह्कामिही तो अब उसके पास सवाल करने का अख़्तियार नहीं रहा। अब वो ये नहीं पूछ सकता के शरिअत में ऐसा क्यों है? जब अहकाम क़बूल कर लिए तो अब फ़क़त अहकाम पर अमल करना बाक़ी रह गया।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिदी मद्देज़िल्लहु

हुक्मे ख़ुदा की अहमियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ (سورة يوسف:٤٠)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

आजिज़ी का दरवाज़ा

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अज़मत और किबरियाई वाले हैं। वो इस काएनात के ख़ालिक़ और मालिक हैं। ज़मीन और आसमान में उसी परवरदिगार का हुक्म चलता है और उनके दर्मियान उसी की बादशाही कारफ़रमा है। सब शान और बुलन्दी उसी को ज़ेबा है। इसीलिए हदीसे क़ुदसी में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का इर्शाद है :

﴿اَلْكِبْرُ رِدَائِى﴾ बुलन्दी और बड़ाई मेरी चादर है।

बिला शुब्ह ये चादर परवरदिगारे आलम को ही सजती है। इसलिए बंदे को चाहिए के वो आजिज़ी अख़्तियार करे। आजिज़ी वो नेमत है के जिसको अख़्तियार किए बग़ैर किसी भी इंसान को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मारिफ़त नसीब नहीं हो सकती। जो

इंसान भी अल्लाह के दर तक पहुँचा, उसे आजिज़ी के दरवाज़े से गुज़रना पड़ा। इस दरवाज़े में से गुज़रे बग़ैर कोई बंदा भी अल्लाह तआला से वासिल नहीं हुआ। इस आजिज़ी को पैदा करने के लिए मशाइख़ उज़्ज़ाम मुजाहिदे करवाते हैं। परवरदिगार के दर पर झुकना और उसकी मानना सिखाते हैं और उसके अहकाम की अज़मत दिल में पैदा करते हैं।

हुक्मे ख़ुदा की अहमियत

हुक्मे ख़ुदा हुक्मे ख़ुदा है। आज के ज़माने के फ़सादात में से एक फ़साद ये भी है के अहकामे इलाही की अज़मत दिल से निकलती जा रही है। शरिअत के अहकाम जब किसी के सामने आते हैं और वे उनकी मंशा के ख़िलाफ़ होते हैं तो उनके नुफ़ूस (तबियतें) तावीलात (गुंजाइशें) निकालना शुरू कर देते हैं। फ़रार की राहें अख़्तियार करते हैं और सवालात पूछते हैं के शरिअत में ऐसा क्यों है? याद रखिए के जिस बंदे ने कलिमा पढ़ लिया और कह दिया के ﴿قبلت جميع احكامه﴾ क़बिलतु जमिअ अह्कामिहि तो अब उसके पास सवाल करने का अख़्तियार नहीं रहा। अब वो ये नहीं पूछ सकता के शरिअत में ऐसा क्यों है? जब अहकाम क़बूल कर लिए तो अब फ़क़त अहकाम पर अमल करना बाक़ी रह गया।

जानवरों की फ़रमांबरदारी

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने जानवरों को इंसान के ताबे बना दिया। मिसाल

1. ऊँट इतना बड़ा जानवर है के अगर एक लात मार दे तो बंदे की जान ही निकल जाए। लेकिन छूटे से बच्चे के हाथ में

उसकी नकेल दे दी जाए तो ऊँट उसके पीछे चलना शुरू कर देता है हालाँके ये आठ दस साल का बच्चा है। मगर ऊँट को उसका ताबेदार बना दिया गया। उसने अपने मालिक से कभी झगड़ा नहीं किया मेरी कमर पर बोझ न लादो। ऊँट का जिस्म देखें और छोटे बच्चे का मामला देखें, क्या कोई तुक बनता है? मगर नहीं परवरदिगार ने उसे ताबेदार बना दिया। इसलिए सर झुकाए पीछे पीछे चल रहा होता है। उसका मालिक उसको जहाँ चाहे ले जाए वो बग़ैर किसी हील व हुज्जत के पीछे चलता रहता है हत्ताके सैंकड़ों मील का सफ़र तय कर लेता है।

2. अल्लाह तआला ने घोड़े को इंसान के मातहत बना दिया और वो इंसान की फ़रमांबरदारी करता है। फिर अल्लाह तआला ने घोड़े से बोलने का अख़्तियार भी छीन लिया है। अगर फ़र्ज़ करो घोड़े को बोलने की क़ुव्वत मिल जाती और वो क़दम क़दम पर कहता के आपने मुझे दाना नहीं दिया या चारा नहीं दिया या मुझे बीमारी की छुट्टी चाहिए क्योंके आज मेरी तबियत ठीक नहीं है तो हमारे लिए मुसीबत खड़ी हो जाती। इंसान का हाल देखो के वो सारा दिन घोड़े से काम लेता है और शाम को उसे दाना डालना भी भूल जाता है। घास थोड़ा था तो जितना था वही डाल दिया। उसका पेट भरे या न भरे वो सब्र व शुक्र के साथ उसको खा के खड़ा हो जाता है। सर्दियों की रात में मालिक खुद तो बिस्तर में रज़ाई ओढ़कर सो गया जबके वो कभी-कभी घोड़े को कमरे में बांधना भी भूल जाता है। यों घोड़ा सारी रात सर्दी के अंदर खड़ा रहता है। उसके लिए पलंग, बिस्तर और रज़ाई भी नहीं होती। उसे सर्दी में नींद भी नहीं आती और वो लेट भी नहीं सकता बल्के खड़े-खड़े सो जाता है। वो सारी रात इसी तरह गुज़ार देता है। अगले दिन उसके लिए बीमारी की छुट्टी भी नहीं होती।

वो मालिक को ये नहीं कह सकता के आज में काम पर नहीं जा सकता क्योंके आज मेरी तबियत ठीक नहीं है और रात को मेरी नींद भी पूरी नहीं हुई। मालिक उसे दूसरे दिन भी तांगे में जोत देता है और फिर सारा दिन भागता रहता है।

कई मर्तबा हमने देखा के मालिक ने अपने घोड़े को पानी भी नहीं पिलाया और कहीं आकर खड़ा किया तो क़रीब ही गंदी नाली से घोड़े ने पानी पीना शुरू कर दिया। वो अपने मालिक का शिकवा भी नहीं कर सकता के आपके लिए तो पेप्सी और कोक है और मेरे लिए पानी भी नहीं है। और ये भी देखने में आया है के सारा दिन भागने की वजह से घोड़ा थक चुका होता है और उसी दौरान मालिक को स्टेशन जाने वाली सवारियाँ मिल जाती हैं। सवारियाँ उसे कहती हैं के हम आपको पाँच रुपए ज़्यादा देंगे, घोड़े को ज़रा जल्दी दौड़ाएं क्योंके हमारी गाड़ी निकल रही है। घोड़ा सारा दिन का थका हुआ होता है मगर मालिक उसे चाबुक मारना शुरू कर देता है। वो मालिक को ये नहीं कह सकता के में तो सारा दिन भागता रहा हूँ, अब पाँच रुपए की ख़ातिर मुझ पर इतना ज़ुल्म कर रहे हो। वो बेचारा चाबुक भी खा रहा होता है और भाग भी रहा होता है। यही नहीं बल्के उसकी मजबूरी देखिए के इस भागने के दौरान अगर उसको लीद करने की ज़रूरत पेश आती है तो उसको इस ज़रूरत के लिए भी खड़ा होने की फ़ुर्सत नहीं होती। लिहाज़ा वो भाग भी रहा होता है और लीद भी कर रहा होता है। आपने कभी किसी को इतना मजबूर देखा है के इस तबई ज़रूरत के लिए भी उसको खड़ा होने की फ़ुर्सत नहीं दी जा रही है। घोड़ा लीद भी फेंकता जा रहा होता है और वो अपना सफ़र भी करता जा रहा होता है। अगर उसके जिस्म पर ज़ख़्म हो और मालिक उस पर कुछ न लगाए तो मक्खियाँ उस पर बैठकर

उसको तंग करती हैं लेकिन वो अपने मालिक को बता नहीं सकता के जनाब! कुछ इस पर भी लगा दीजिए। मालिक अगले दिन फिर उस पर ज़ीन डाल देता है जिससे उसका पुराना ज़ख़्म फिर ताज़ा हो जाता है। मगर उसको बताने की इजाज़त नहीं होती। आप सोचिए तो सही के घोड़ा अपने मालिक का कितना फ़रमांबरदार है के हर काम में आमीन ही कह रहा होता है। उस को आगे से बोलने या नाफ़रमानी करने की इजाज़त नहीं होती।

3. लोग हिफ़ाज़त के लिए अपने घरों में कुत्ते पालते हैं। कुत्ते को जब भूख लगती है तो वो आकर जूतों में बैठता है। कभी किसी कुत्ते को ये हिम्मत नहीं हुई के वो दस्तरख़ान पर पड़े हुए खाने में से कोई बोटी उठाकर ले जाए हालाँके उसमें इतनी ताक़त होती है के अगर वो झपट पड़े तो दस्तरख़ान पर बैठकर लोगों से रोटी भी छीनकर ले जाए मगर वो ऐसा नहीं करता। उसके बैठने की जगह क़ालीन नहीं होती बल्के उसके बैठने की जगह जूतों में होती है। वो समझता है के मैं मातहत हूँ और मेरी जगह यही है। तो आप अंदाज़ा लगाइए के कुत्ता अपने मालिक के जूतों में बैठता है और जूतों से आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं करता, क्यों? इसलिए के अल्लाह तआला ने उसको मातहत बना दिया है। वो सारी रात जागकर मालिक के घर पर पहरा देता है और सुबह उसके लिए कोई बिस्तर ही नहीं होता। कुत्ते का कोई घर ही नहीं होता। कभी उस दीवार के नीचे और कभी उस दरख़्त के नीचे, इस तरह वो अपनी ज़िंदगी गुज़ार देता है। अगर मालिक जूते और डंडे भी मारे तो कुत्ते की ये आदत होती है के वो थोड़ी देर के लिए कहीं ओझल हो जाता है और फिर उसी मालिक के दरवाज़े पर बैठा होता है। वो कितना वफ़ादार जानवर है के जूते खाकर भी अपने

मालिक का घर नहीं छोड़ता और हमारी ये हालत है के हम नेमतें खाते हुए भी अपने मालिक का दर याद नहीं आता।

कुत्ते की वफ़ादारी

कुत्ते की वफ़ादारी के बीसियों वाक़िआत किताबों में मिलते हैं मिसाल के तौर पर :

1. हयातुल हैवान के अंदर लिखा है एक आदमी सफ़र पर निकला। रास्ते में उसने किसी जगह एक ख़ूबसूरत क़ुब्बा बना हुआ देखा। उसे देखकर अंदाज़ा होता था के इसकी तामीर पर ख़ूब ख़र्च किया गया है। उस क़ुब्बे पर लिखा हुआ था के जो आदमी इस क़ुब्बे की तामीर की वजह मालूम करना चाहे वो इस गाँव में जाकर मालूम करे।

उस आदमी के दिल में चसक पैदा हुई के गाँव में जाकर इस क़ुब्बे की तामीर की वजह मालूम करनी चाहिए। वो उस गाँव में गया और लोगों से पूछना शुरू कर दिया। वो जिससे भी पूछता वो लाइल्मी ज़ाहिर करता। आख़िर पता करते-करते उसे एक ऐसे आदमी का इल्म हुआ जिसकी उम्र दो सौ बरस थी। वो आदमी उनके पास गया और उनसे क़ुब्बे के बारे में सवाल किया। उस बूढ़े आदमी ने बताया के मैं अपने वालिद से सुना करता था के इस गाँव में एक ज़मींदार रहता था। उसके पास एक कुत्ता था जो हर वक़्त उसके साथ रहता था और किसी वक़्त भी उससे अलग नहीं होता था। एक दिन वो ज़मींदार कहीं सैर करने गया और अपने कुत्ते को घर पर ही बांध गया ताके वो उसके साथ न जा सके। और चलते वक़्त अपने बावर्ची को बुलाकर हिदायत की के मेरे लिए दुध का खाना तैयार करके रखे। ज़मींदार वो खाना बड़े शौक़ से खाता था। ज़मींदार के घर में एक गूंगी लड़की भी थी।

जब ज़मींदार बाहर गया तो वो लौंडी उस बंधे हुए कुत्ते के क़रीब जाकर बैठ गई। कुछ देर बाद ज़मींदार के बावर्ची ने उसके लिए दूध का खाना तैयार किया और उसको एक बड़े प्याले में रखकर उस गूंगी लड़की और कुत्ते के क़रीब लाकर ऊँची जगह पर रख दिया ताके जब ज़मींदार वापस आए तो उसको आसानी से खाना मिल जाए।

जब बावर्ची खाना रखकर चला गया तो एक काला नाग उस जगह पर आया और उस ऊँची जगह पर चढ़कर उस प्याले में से दूध पीकर चलता बना। कुछ देर के बाद जब ज़मींदार वापस आया और उसने अपना पसन्दीदा खाना तैयार रखा हुआ देखा तो प्याला उठा लिया और जैसे ही उसको खाने का इरादा किया तो गूंगी लड़की ने बड़े ज़ोर से ताली बजाई और साथ-साथ ज़मींदार को हाथ के इशारे से भी कहा के वो इस खाने को न खाए। मगर ज़मींदार गूंगी की बात न समझ सका। और एक नज़र गूंगी को देखकर फिर प्याले की तरफ़ मुवज्जेह हुआ। अभी उसने खाने के लिए हाथ डाला ही था के इतने में कुत्ता बहुत ज़ोर से भौंका और लगातार भौंकता रहा। यहाँ तक के जोश में आकर अपनी ज़ंजीर तोड़ने की कोशिश की। ज़मींदार को उन दोनों की हरकतों पर ताज्जुब हुआ और वो सोचने लगा के आख़िर ये मामला क्या है? वो उठा और प्याले को रखकर कुत्ते के पास गया और उसको खोल दिया। कुत्ते ने ज़ंजीर से आज़ादी पाते ही उस प्याले की तरफ़ छलांग लगाई और झपटा मारकर उस प्याले को नीचे गिरा दिया। ज़मींदार समझा के कुत्ता खाने की वजह से बेताब था। उसने अपना पसन्दीदा खाना गिराने पर ग़ुस्से में आकर कुत्ते को कोई चीज़ उठाकर मार दी। लेकिन कुत्ते ने अब भी प्याले में कुछ दूध बचा हुआ देखा तो उसने फ़ौरन अपना

प्याले में डाल दिया और बच्चा हुआ दूध पी गया। दूध कुत्ते के हलक़ से नीचे उतरना था के वो ज़मीन पर गिरकर तड़पने लगा और कुछ देर बाद मर गया। अब ज़मींदार को और भी हैरानी हुई और उसने गूंगी लड़की से पूछा के आख़िर इस दूध में क्या बात थी के कुत्ता पीते ही मर गया? उस वक़्त गूंगी ने इशारों से ज़मींदार को समझाया के इस दूध में से काला नाग कुछ दूध पी गया था जिसके ज़हर की वजह से कुत्ता मर चुका है और वो खुद और कुत्ता इसी वजह से तुमको पीने से रोक रहे थे। जब ज़मींदार के समझ में सारी बात आ गई तो उसने बावर्ची को बुलाया और उसने बावर्ची को डांट लगाई के उसने खाना खुला हुआ क्यों रखा था। उसके बाद ज़मींदार ने उस कुत्ते को दफ़ना कर उसके ऊपर ये क़ुब्बा बना दिया।

ज़रा सोचिए के कुत्ते के अंदर कितनी वफ़ादारी होती है के उसने अपनी जान देकर अपने मालिक की जान बचाई।

2. अजाइबुल मख़्लूक़ात में एक वाक़िआ लिखा है के एक आदमी ने किसी को क़त्ल करके उसकी लाश किसी कुँए में डाल दी। मक़्तूल का कुत्ता वारदात के वक़्त उसके साथ था। वो कुत्ता रोज़ाना उस कुँए पर आता और अपने पंजों से उसकी मिट्टी हटाता और इशारों से बताता के उसका मक़्तूल मालिक यहाँ है और जब कभी क़ातिल उसके सामने आता तो वो उसे देखकर भौंकने लगता। लोगों ने जब बार-बार इस बात को देखा तो उन्होंने उस जगह को खुदवाया। लिहाज़ा वहाँ से मक़्तूल की लाश बरामद हुई और उस क़ातिल को सज़ाए मौत दी गई।

एक नाज़ुक मसअला

जिस तरह हैवानों को अल्लाह तआला ने इंसान का

फ़रमांबरदार और मातहत बना दिया है और वो उसके सामने अपना सर झुका देते हैं इसी तरह अल्लाह तआला ने इंसानों को अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मातहत बना दिया है। लिहाज़ा जितने भी इंसान हैं उनको चाहिए के वे नबी अलैहिस्सलाम के हुक्म पर हर वक़्त लब्बैक और आमीन कहा करें। न कोई इंकार की गुंजाइश है और न ही नबी अलैहिस्सलाम की किसी सुन्नत पर एतिराज़ की कोई गुंजाइश है। कलिमा पढ़कर हमने अहद किया है के ऐ अल्लाह! जिस तरह हमारे जानवर हमारे मातहत हैं उसी तरह हम आपके और आपके महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मातहत हैं। ऐ अल्लाह अगर हम जानवरों के मालिक हैं और वे हमारी इतनी फ़रमांबरदारी करते हैं तो हमारे असल मालिक तो आप हैं, हमें भी आपकी फ़रमांबरदारी करनी चाहिए। इसीलिए अल्लाह तआला के अहकाम में नुक्ताचीनी करना और नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नतों पर एतिराज़ करना ईमान से महरूमी का सबब बन जाता है। लिहाज़ा आज के दौर का ये बहुत बड़ा फ़ितना है। आजकल कालिजों और युनिवर्सिटियों के लड़के आपस में बैठकर ये मौज़ू छेड़ लेते हैं के जी शरिअत में ये क्यों है, ये क्यों है और ईमान जैसी दौलत से महरूम रह जाते हैं। ये मसअला बहुत नाज़ुक है।

क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० ने ﴿مالا بدمنه﴾ में ये मसअला लिखा है के अगर दो बंदों में गुफ़्तगू हो रही हो और उनमें से एक ये कह दे के यार! ये तो शरिअत की बात है और सुनने वाला जवाब में कह दे के "रख परे शरिअत को" तो ﴿فقد كفر﴾ यानी इन लफ़्ज़ों के कहने से वो बंदा काफ़िर बन जाता है। ये कोई छोटी सी बात है के एक बंदा शरिअत की बात कहे और दूसरा कहे के "रख परे शरिअत को।"

याद रखें के जहाँ भी सुन्नत को हल्का कहा जाएगा वहाँ इंसान महरूम हो जाएगा। अपनी सुस्ती और ग़फ़लत की वजह से सुन्नत पर अमल न करना अलग मसअला है, इससे इंसान गुनाहगार तो ज़रूर होता है मगर इससे काफ़िर नहीं होता। लेकिन अगर कोई बंदा सुन्नत पर एतिराज़ कर दे या सुन्नत का मज़ाक़ उड़ाए या कोई ऐसी बात कर दे जिससे सुन्नत हल्की और बेवज़न नज़र आए तो उससे इंसान ईमान से महरूम हो जाता है। यहाँ समझने वाली बात ये है के अपने दिल में हुक्मे ख़ुदा की अज़मत बिठाइए। याद रखें के जब तक सालिक के दिल में हुक्मे ख़ुदा की अज़मत पैदा नहीं होगी उस वक़्त तक नफ़्स को लगाम नहीं पड़ेगी। नफ़्स हमेशा शरिअत के अंदर अपनी मंशा तलाश करेगा हत्ताके आलिम भी जब क़ुरआन पढ़ेगा तो उसमें से मंशाए ख़ुदावंदी तलाश करने के बजाए अपनी मंशा तलाश करेगा। हमें चाहिए के हम क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मंशा तलाश करें और ये तब होता है जब नफ़्स के घोड़े को लगाम दे दी जाए और हुक्मे ख़ुदा की अज़मत दिल में आ जाए।

अयाज़ के दिल में हुक्मे शाही की क़द्र

सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रह० एक बड़ा नेक मुसलमान था और बादशाह गुज़रा है। उसके पास एक ग़ुलाम था जिसका नाम अयाज़ था। वो एक देहाती आदमी था लेकिन जब वो बादशाह के पास आया तो एक अच्छा ख़िदमतगार साबित हुआ। बादशाह को उसकी ख़िदमत पसन्द आ गई। इसलिए बादशाह ने उसे अपने साथियों में शामिल फ़रमा लिया। अब दूसरे लोगों के दिलों में हसद पैदा हुआ के इसकी इतनी हिम्मत अफ़ज़ाई क्यों होती है? अब वो हासिदों ने आपस में मशवरा करते रहते के हम इसको

कैसे बादशाह की नज़र से गिराएं ताके ये यहाँ से दफ़ा हो जाए और दूर हो जाए। चुनाँचे वो मौक़ा की तलाश में रहते थे। हसद की आँखें नहीं होतीं मगर उसके कान बहुत बड़े होते हैं। इसलिए हासिद लोग छोटी-छोटी बातें सुनकर बतंगड़ बनाने की कोशिश करते हैं। एक दिन उन लोगों ने मिलकर बादशाह से कहा के बादशाह सलामत! हम आपके क़रीबी हैं। पढ़े लिखें हैं, ख़ानदानी लोग हैं और अमीरों में भी हैं लेकिन आपकी मुहब्बत की नज़र जो अयाज़ पर है वो और किसी पर नहीं है। बादशाह ने कहा ठीक है मैं आपको कभी इसका जवाब दूंगा।

एक दिन बादशाह ने एक फल मंगवाया जो बहुत की कढ़वा था। उसने उसकी फ़ांके बनवायीं और एक-एक फांक अपने साथियों में बांट दी। एक फांक अयाज़ को भी दी। अब जिसने भी वो फल खाया उसे बहुत कढ़वा लगा। हर एक ने कहा के बादशाह सलामत! ये फल तो बहुत कढ़वा है। लेकिन जब बादशाह ने अयाज़ को देखा तो वो मज़े से फल खा रहा था। बादशाह ने पूछा, अयाज़! आपको फल कढ़वा नहीं लग रहा है? अर्ज़ किया, बादशाह सलामत! कढ़वा तो बहुत है। बादशाह ने कहा, आप तो बड़े आराम से खा रहे हैं। कहने लगा, मुझे ख़्याल आया के आपके जिन हाथों से मैं ज़िंदगी में सैंकड़ों मीठी चीज़ें लेकर खा चुका हूँ अगर इन हाथों से आज कढ़वी चीज़ भी मिल गई तो मैं उसको कैसे वापस करूं? लिहाज़ा मुझे वापस करते हुए शर्म महसूस हुई और मैंने कढ़वी चीज़ भी खा ली।

मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं के काश! हमारे अंदर भी ये ख़ूबी पैदा हो जाए के हम हर हाल में अल्लाह तआला की नेमतों का इस्तेमाल करते हुए उसकी शुक्रगुज़ारी बजा लाएं। जिस

परवरदिगार ने हमें हज़ारों ख़ुशियाँ अता फ़रमायीं अगर कभी कोई ग़म और तकलीफ़ की बात पेश आ जाए तो हमें चाहिए के हम न तो अल्लाह तआला की शिकायत करें और न ही उसका दर छोड़ें। आज तो अल्लाह तआला की नेमतों की इंतिहा नहीं। उसके बावजूद हमें शुक्र करने का पता ही नहीं।

एक दूसरा वाक़िआ लिखा के सुलतान महमूद ग़ज़नवी रह० के साथियों ने उन्हें ये शिकायत लगाई के बादशाह सलामत अयाज़ की एक अलमारी है। ये उस अलमारी में ताला लगाकर रखता है। वो रोज़ाना आलमारी को खोलकर देखता है और किसी दूसरे आदमी को देखने नहीं देता। हमारा ख़्याल है के उसने आपके ख़ज़ाने के क़ीमती हीरे और मोती उसके अंदर छिपा रखे हुए हैं। आप ज़रा इसकी तलाशी लीजिए। जब बादशाह को ये शिकायत लगाई गई तो बादशाह सलामत ने उसी वक़्त अयाज़ को बुलवाया और कहा, अयाज़! क्या तुम्हारी कोई अलमारी है। उसने कहा, जी हाँ है। पूछा उसे ताला लगाकर रखते हो? उसने कहा, जी हाँ। पूछा, किसी और को देखने देते हो? अर्ज़ किया, जी नहीं। फिर पूछा, तुम ख़ुद रोज़ाना उसे देखते हो? अर्ज़ किया, जी हाँ। फिर बादशाह सलामत ने फ़रमाया, चाबी लाओ। अयाज़ ने चाबी दे दी। बादशाह ने किसी बंदे को भेजा के जाओ और उस अलमारी में जो कुछ मौजूद है वो सब कुछ लाकर सबके सामने पेश कर दो। वो हसद करने वाले बड़े ख़ुश हुए के देखो अब इसकी हक़ीक़त खुल जाएगी। जब इसकी चोरी का सामान सामने आएगा तो बादशाह अभी इसको धक्के देकर निकाल देगा।

अल्लाह की शान के जब वो बंदा वापस आया तो उसने आकर बादशाह के सामने तीन चीज़ें रख दीं। एक पुराना जूता था, एक पुराना तहबंद और एक पुराना कुर्ता। बादशाह ने पूछा

उसमें कुछ और नहीं था? उसने कहा जी नहीं। फिर बादशाह ने अयाज की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पूछा, अयाज़! क्या उसमें कुछ और नहीं? उसने कहा, जी नहीं, यही कुछ था। बादशाह ने कहा, अयाज़! इसमें तो कोई ऐसी क़ीमती चीज़ नहीं है? उसने कहा जी नहीं है जिसे तुम ताले में बंद करके रखो और किसी दूसरे को देखने भी न दो और कोई ऐसी चीज़ भी नहीं जिसे तुम रोज़ाना आकर चैक करो। ठीक है या नहीं? उसने कहा बादशाह सलामत! बात ये है के मेरे नज़दीक ये बहुत क़ीमती है। बादशाह ने पूछा! भई वो कैसे? उसने कहा, बादशाह सलामत! वो इसलिए के जब मैं आपके दरबार में पहली बार आया था तो ये जूते पहने हुए था, ये तहबंद बांधे हुआ था और ये कुर्ता पहने हुए था। मैंने इन तीनों चीज़ों को महफ़ूज़ कर लिया था। अब मैं रोज़ाना अलमारी खोलकर इनको देखता हूँ और अपने नफ़्स को समझाता हूँ के अयाज़! तुम्हारी अवक़ात यही थी। तुम अपनी अवक़ात न भूलना। अब तुम्हें जो कुछ मिला है ये सब तुम्हारे बादशाह का तुम पर एहसान है। लिहाज़ा तुम अपने बादशाह का एहसान सामने रखना। बादशाह सलामत! इस तरह मुझे अपनी अवक़ात याद रहती है के मैं क्या था और मुझे बादशाह के कुर्ब ने क्या-क्या इज़्ज़तें बख़्शीं। काश! हमारी भी यही कैफ़ियत हो जाती के हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नेमतों को ध्यान में रखते और अपनी अवक़ात को याद रखते। हमें तो ज़रा सा कुछ मिल जाता है तो सब से पहले अपनी अवक़ात को भूलते हैं।

एक दिन बादशाह ने अपने ख़ज़ाने से एक क़ीमती हीरा मंगवाया। फिर एक हथौड़ी मंगवाई और दरबारियों से कहा के आज तुम्हारी ज़हानत का इम्तिहान लेता हूँ। उन्होंने कहा जी बहुत

अच्छा। अब उस बादशाह ने अपने एक दरबारी को हीरा दिया और साथ ही हथौड़ा भी पकड़ा दिया। फिर उसे कहा के इसे तोड़ो। वो समझता था के ये तो हमारी अक़्ल का इम्तिहान है। चुनाँचे वो कहने लगा, बादशाह सलामत! ये हीरा तो बड़ा क़ीमती है। ये तो आपके ख़ज़ाने में ही सजता है। लिहाज़ा इसे नहीं तोड़ना चाहिए। बादशाह ने ख़ुश होकर कहा, बहुत अच्छा। वो समझा के जवाब बिल्कुल ठीक है। फिर बादशाह ने वो हीरा दूसरे दरबारी को दिया। उसने भी तोड़ने से माज़रत कर ली। उसके अलफ़ाज़ अलग थे मगर मतलब एक ही था। फिर तीसरे को दिया तो उसने भी माज़रत पेश कर दी। फिर चौथे ने भी उज़्र कर दिया हत्ताके भरे दरबार में जिसको भी हीरा दिया सबने हीरे को बड़ा क़ीमती समझा और उसको तोड़ने से सबने माज़रत कर ली। आख़िर पर अयाज़ बैठे थे। अब बादशाह ने हीरा उसे पकड़ा दिया और साथ ही हथौड़ा भी दे दिया और कहा अयाज़! इसको तोड़ दो। अयाज़ ने उसे ज़मीन पर रखा और हथौड़ा मार के उस हीरे के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। जब लोगों ने देखा तो वो कहने लगे के ये इतना बेवक़ूफ़ और कमअक़्ल है के उसने शाही ख़ज़ाने का इतना बड़ा नुक़सान कर दिया। आज तो बादशाह इसको ज़रूर निकाल देगा।

जब बादशाह ने हीरा टूआ हुआ देखा तो पूछा, "अयाज़! तुमने हीरे को तोड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया?"

अयाज़ ने जवाब दिया, "बादशाह सलामत! मेरे सामने दो सूरतें थीं। या तो मैं आपका हुक्म मानकर हीरे को तोड़ देता या फिर हीरे को बचाकर आपका हुक्म तोड़ देता। मेरी नज़र में आपका हुक्म ऐसे हज़ारों हीरों से ज़्यादा क़ीमती है। इसलिए मैंने

हीरे को तोड़कर रेज़ा-रेज़ा कर दिया मगर मैंने आपका हुक्म नहीं तोड़ा।"

मौलाना रोम रह० फ़रमाते हैं के जैसी अयाज़ के दिल में बादशाह के हुक्म की क़द्र व क़ीमत थी, काश के हुक्मे ख़ुदा की वो अज़मत हमारे दिल में भी आ जाती।

मैं किसका हुक्म तोड़ रहा हूँ?

मोहतरम जमाअत! अगर बंदा अल्लाह तआला के किसी हुक्म को तोड़ने लगे तो सत्तर दफ़ा सोचे के मैं किसका हुक्म तोड़ रहा हूँ। इसलिए के जब बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म को और उसकी हदों को तोड़ता है तो परवरदिगार को उस पर इस तरह जलाल आता है के जैसे शेर को अपना शिकार देखकर जलाल आता है। अगर हम अल्लाह तआला को जलाल में देखेंगे तो फिर हमारा क्या बनेगा? इसीलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में जगह-जगह इर्शाद फ़रमाया है :

﴿تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا. (سورة البقرة:١٨٧)﴾

ये अल्लाह तआला की बनाई हुई हुदूद हैं तुम इनके क़रीब भी न जाओ।

लिहाज़ा सालिकीन को चाहिए के वो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्म की अज़मत अपने दिल में पैदा करें और उनको ये एहसास रहे के जो कु भी हो हमने अल्लाह तआला का हुक्म नहीं तोड़ना ये तसव्वुफ़ का पहला क़दम है।

एक शैतानी अमल

आज चूँके इंसान मनपसन्द की नेमतें खाता पीता है इसलिए पेट भरा बना फिरता है और उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

की नेमतों की क़द्र व क़ीमत नहीं है। इसी वजह से उसकी तबियत के अंदर ज़िद, इनाद और हठधर्मी है। हठधर्मी क्या होती है? हठधमी ये है के बात भी ग़लत करना और उसके ऊपर डट भी जाना। बजाए शर्मिन्दा होने के गुंजाइशें निकालना और अपने को सच्चा साबित करने की कोशिश करना। याद रखें के हठधर्मी एक शैतानी अमल है। इसलिए दुनिया में सबसे पहले हठधर्मी शैतान ने की थी। आज ये हठधर्मी इतनी आम हो चुकी है के शायद सौ में से नब्वे से ज़्यादा बंदे आपको इसके मरीज़ नज़र आएंगे। घरों में देखो के बीवी बात करती है तो कहती है के बस अब तो मैंने बात कर दी है। ख़ाविन्द से लड़ाई झगड़ा हो जाता है तो डटी रहती है। वो दिल में समझती भी है के मैं ग़लत कर रही हूँ लेकिन फिर भी बात नहीं मानती। इसी तरह ख़ाविन्द भी समझ रहा होता है के मैं बीवी पर ज़ुल्म कर रहा हूँ और शरिअत के हुक्मों को तोड़ रहा हूँ लेकिन फिर भी अपनी ज़िद पर डटा रहता है। इसी तरह दो भाईयों में कोई छोटी सी बात भी हो जाए तो वे अपनी अपनी बात पर डट जाते हैं। वे एक दूसरे पर मुक़दमे चलाना शुरू कर देते हैं। इस तरह उनके लाखों रुपए लग जाते हैं लेकिन वे अपनी-अपनी बात पर डटे हुए होते हैं और उनमें से कोई भी अपनी ग़लती मानने के लिए तैयार नहीं होता।

माफ़ी मांगने में अज़मत है

मेरे दोस्तो! एक जुमला बहुत ख़ूबसूरत और प्यारा है। कौन सा जुमला है? वो जुमला ये है के "ग़लती हो गई, माफ़ कर दीजिए।" अगर हम ये कहना सीख लें तो हमारे कई झगड़े ख़त्म हो सकते हैं। अगर किसी मौक़े पर ख़ाविन्द अपनी बीवी से नाराज़ हो जाए और बीवी ये कह दे के ग़लती हो गई है, माफ़

कर दीजिए तो ख़ाविन्द माफ़ कर देगा। अगर बेटे से बाप नाराज़ हो जाए और बेटा आगे से कह दे अब्बू! ग़लती हो गई है माफ़ कर दीजिए तो बाप नाराज़ होने की बजाए ख़ुश हो जाएगा। दोस्त, दोस्त के दर्मियान झगड़ा हो गया। अगर उनमें से एक कहता है के भई! ग़लती हो गई, माफ़ कर दीजिए तो बड़े-बड़े झगड़े ख़त्म हो जाएंगे मगर हमें ये अल्फ़ाज़ आज तक किसी ने सिखाए ही नहीं। ये पीर व मुर्शिद का काम होता है। याद रखें के आज ग़ल्तियों की माफ़ी एक दूसरे से मांग लेना बहुत आसान है लेकिन क़ियामत के दिन इन फ़ैसलों को निपटाना बहुत मुश्किल होगा। क़ियामत के दिन जिसको खड़ा किया गया के तुम ज़रा बताओ के तुमने फ़लाँ को कमीना क्यों कहा था? फ़लाँ को ज़लील क्यों कहा था? फ़लाँ को बेईमान क्यों कहा था? अगर वहाँ साबित न कर सके तो फिर हमारी क्या दुर्गत बनेगी। इसीलिए आज एक दूसरे से माफ़ी मांगने की आदत डाल लें। ये बहुत अच्छी आदत है। ये हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सिफ़्त है और इसी में अज़्मत है। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने गेहूँ का गुच्छा खाया तो उन पर परवरदिगारे आलम का इताब नाज़िल हुआ। चुनाँचे परवरदिगार आलम ने फ़रमाया के क्या हमने तुम्हें इसके खाने से मना नहीं किया था यानी जब मना किया था तो फिर तुमने क्यों खाया? आगे हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने ये नहीं कहा के "मुझसे भूल हो गई थी, मैं समझा था के वो ममनूआ (मना किया हुआ) दरख़्त और होगा, मैंने इरादे से ये काम नहीं किया बल्के फ़क़त एक सीधी सी बात की :

﴿رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝ (الاعراف:٢٣)﴾

ऐ हमारे रब! हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया और अगर आप

हमारी मग़फ़िरत न करें और रहमत न फ़रमाएं तो हम ख़सारा पाने वालों में से हो जाएंगे।

तो पता चला के ग़लती को मान लेना हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की सिफ़्त है। लिहाज़ा मोमिन बंदा वो होता है जो अपनी ग़लती को जल्दी तसलीम कर ले। आजकल तो ग़लती तसलीम करने की बजाए अक्सर झूठ बोलते हैं। सर्विस में देख लीजिए। दफ़्तर का कलर्क अपनी ग़ल्तियों को छुपाने के लिए अफ़सर के सामने झूठ बोलता है बल्के पता नहीं के झूठ की एक सीरीज़ ही चल पड़ती है। क्या ये सबसे आसान नहीं है के ग़लती को तसलीम ही कर लिया जाए। अगर अफ़सर कहे के आपने ये काम ग़लत किया है तो वो कहे, जी मुझसे ग़लती हो गई है। मैं आइन्दा ऐसा नहीं करूंगा। इस तरह वो अफ़सर नाराज़ होने के बजाए उल्टा उससे राज़ी हो जाएगा।

इसके ख़िलाफ़ देखें के शैतान ने भी ग़लती की थी। जब परवरदिगारे आलम के हुक्म के बावजूद भी इब्लीस ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को सज्दा न किया तो अल्लाह तआला ने इब्लीस से पूछा, ऐ इब्लीस! तुमने सज्दा क्यों न किया? तो बजाए इसके के वो अपनी ग़लती तसलीम कर लेता, उल्टा उसकी वजह बताने लगा के मैं इस पर फ़ज़ीलत रखता हूँ क्योंके ﴿خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِن طِينٍ. (ص:٧٦)﴾ (परवरदिगार! मुझे आपने आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया।)

जब इब्लीस ने अपनी ग़लती के बावजूद हठधर्मी का इज़्हार किया तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़रमाया :

﴿فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ. (ص:٧٧)﴾

पस तू निकल जा मेरे दरबार से, तू मरदूद है।

देखा, जो बंदा ख़ुदा तआला के हुक्म को तोड़ता है फिर परवरदिगार आलम उसका कैसा हशर फ़रमाते हैं। न सिर्फ़ यही के दरबार से निकाल दिया बल्के फ़रमाया :

﴿وَإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ. (ص:٧٨)﴾

बेशक तेरे ऊपर क़ियामत तक मेरी लानतें बरसेंगी।

तो जो बंदा भी ग़लती करेगा और उल्टा हठधर्मी दिखाएगा तो फिर अल्लाह तआला उसके साथ वही मामला फ़रमाएंगे जो शैतान के साथ किया था। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को अदब व एहतिराम से याद किया जाता है जबके शैतान मरदूद से पनाह मांगने का हुक्म दिया गया है।

जैसी करनी वैसी भरनी न माने तो करके देख
जन्नत भी है दोज़ख़ भी है न माने तो मर के देख

यहूदियों का एक बड़ा जुर्म

आज हठधर्मी हद से बढ़ गई है। छोटा भाई बड़े की बात नहीं मानता। वो आगे से दलीले पेश कर देता है। बेटा माँ की बात नहीं मानता और आगे से दलीले पेश कर देता है। इस हठधर्मी के गुनाह से कोई भी तौबा नहीं करता हत्ताके अगर कोई साहिबे इल्म ग़लत मसअला बयान कर बैठे तो फिर वो हार नहीं मानता बल्के किताबें तलाश करता है के मुझे अपनी इस बात की कहीं से कोई ताइद मिल जाए। अब वो क़ुरआन व हदीस में रब की मंशा तलाश करने के बजाए अपनी मंशा को ढूंढेगा। याद रखें के इससे गुमराही बढ़ती है। यहूदियों का भी यही बड़ा जुर्म था के वो एक बात कर देते थे और फिर अल्लाह की किताब तौरात में से अपनी मंशा को तलाश करते थे के कहीं से हमारी बात की सपोर्ट में

कोई आयत मिल जाए। इससे उनको फटकार दिया गया।

हुक़ूक़ुल इबाद माफ़ करवाने की ज़रूरत

याद रखें के अगर अपनी ग़लती को तसलीम करके जल्दी माफ़ी मांग ली जाए तो बंदे के बड़े-बड़े मसअले मिनटों में हल हो जाएंगे। अगर हम ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक़ूक़ ज़ाए कें तो अल्लाह तआला जल्दी माफ़ फ़रमा देंगे मगर हुक़ूक़ुल इबाद अल्लाह के बंदों से माफ़ करवाने पड़ेंगे। सोचो तो सही हमने :

कितनों की ग़ीबत की, कितनों पर बोहतान बांधे, कितनों से हसद किया, कितनों का दिल दुखाया, कितनों से बदगुमानी की, कितनों से बदज़ुबानी की, कितनों को हाथों से तकलीफ़ पहुँचाई, कितने रिश्तों को ज़बान की तलवार से काटा।

लेकिन क्या हमने कभी किसी से माफ़ी भी मांगी? देखने में तो सूफ़ी बने फिरते हैं लेकिन याद रखना के ये विर्द व वज़ीफ़े किसी काम नहीं आएंगे। जहाँ हुक़ूक़ुल इबाद का मामला आ जाएगा वहाँ माफ़ी मांगनी पड़ेगी। लिहाज़ा आज ही इसको आदत बना लीजिए। दुनिया में माफ़ी मांगना आसान है और क़ियामत के दिन इसका जवाब देना मुश्किल काम है।

गाय का फ़ैसला

मुहम्मद शाह मकरान एक बादशाह गुज़रा है। एक बार वो सिपाहियों के साथ शिकार को निकला। बादशाह सलामत शिकार खेल रहे थे। सिपाहियों के हाथ एक बूढ़ी औरत की गाय आ गई। उन्होंने उसे ज़िब्ह करके उसका गोश्त भूनकर खा लिया। बुढ़िया ने कहा के मुझे पैसे दे दो ताके मैं कोई और गाय ख़रीद लूं। उन्होंने पैसे देने से इंकार कर दिया। अब वो बड़ी परेशान हुई।

उसने किसी आलिम को बताया के मेरी तो रोज़ी का सहारा इसी गाय पर था। ये सिपाही उसको भी खा गए हैं और अब पैसे भी नहीं देते। अब मैं क्या करूं? उन्होंने कहा के बादशाह नेक आदमी है। लिहाज़ा तुम सीधे बादशाह से बात करो। उसने कहा के मुझे ये सिपाही आगे जाने नहीं देते। उन्होंने कहा के मैं तुझे एक तरीक़ा बता देता हूँ के बादशाह को परसों अपने घर जाना है। उसके घर के रास्ते में एक दरिया है और उसका एक ही पुल है। वो इस पर से ज़रूर गुज़रेगा। तुम उस पुल पर पहुँच जाना और जब बादशाह की सवारी वहाँ से गुज़रने लगे तो उसकी सवारी को ठहराकर तुम अपनी बात बयान कर देना। चुनाँचे तीसरे दिन बुढ़िया वहाँ पहुँच गई।

बादशाह की सवारी पुल पर पहुँची, बुढ़िया तो पहले ही इंतिज़ार में थी। उसने खड़े होकर बादशाह की सवारी रोक ली। बादशाह ने कहा, अम्मा! आपने मेरी सवारी को क्यों रोका है? बुढ़िया कहने लगी, मुहम्मद शाह! मेरा और तेरा एक मामला है। इतना पूछती हूँ के तू वो मामला इस पुल पर हल करना चाहता है या क़ियामत के दिन पुलसिरात पर हल करना चाहता है? पुलसिरात का नाम सुनते ही बादशाह की आँखों में आँसू आ गए। वो नीचे उतरा और कहने लगा, "अम्मा मैं अपनी पगड़ी आपके पाँव प रखने को तैयार हूँ। आप बताए के आपको क्या तकलीफ़ पहुँची है? मुझे माफ़ी दे दो। मैं क़ियामत के दिन पुलसिरात पर किसी झगड़े का सामना करने के क़ाबिल नहीं हूँ। चुनाँचे उस बुढ़िया ने अपनी बात बता दी। बादशाह ने उसे सत्तर गायों के बराबर क़ीमत दे दी और माफ़ी मांगकर बुढ़िया को राज़ी किया ताके क़ियामत के दिन पुलसिरात पर उसका दामन न पकड़े।

मुजाहिदीन का माफ़ी मांगना

हमारा तो ये हाल है के ग़ल्ती भी करते हैं और फिर माफ़ी भी नहीं मांगते और अल्लाह वालों का मामला ये है के वे नेकियाँ भी कर रहे होते हैं और फिर अल्लाह तआला से माफ़ी भी रहे होते हैं के ऐ अल्लाह! जैसे नेकी करने का हक़ था हम वो हक़ अदा नहीं कर सके। क़ुरआन अज़ीमुश्शान से इसकी दलील मिलती है। जो लोग कलिमे को बुलन्द करने के लिए अपने घरों से निकलते हैं और जिहाद करते हैं उनके बारे में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ فَمَا وَهَنُوْا لِمَا اَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ○ (آل عمران:١٤٦)

और बहुत से नबी गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत से अललाह वाले लड़े। न तो उन्होंने हिम्मत हारी उन मसाइब की वजह से जो उन पर अल्लाह की राह में आए और न वे कमज़ोर पड़े और न वो दबे। अल्लाह तआला को ऐसे मुस्तकिल मिज़ाज़ों से मुहब्बत है।

जो इतनी इस्तिक़ामत के साथ अपनी जानों के नज़राने पेश कर रहे थे वे अपने इस अमल को पेश करके एहसान नहीं जतला रहे थे बल्के वो कह रहे थे :

﴿رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا فِيْۤ اَمْرِنَا. (آل عمران:١٤٧)﴾

ऐ हमारे रब हमारे गुनाहों को और हमारे हद से निकल जाने को माफ़ फ़रमा दीजिए।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम का माफ़ी मांगना

इससे ज़रा ऊँची बात सुन लीजिए। सैय्यदना नूह

अलैहिस्सलाम को हुक्म हुआ के आपकी क़ौम ने आपकी बहुत नाफ़रमानी की है। अब हम आपको और आपके घरवालों को बचा लेंगे और इन सबको नेस्त व नाबूद कर देंगे। चुनाँचे आप हमारी "वही" के मुताबिक़ एक किश्ती बना लीजिए। और ज़ालिमों के बारे में सिफ़ारिश न कीजिए।

जब तूफ़ान आया और ईमान वाले किश्ती पर सवार हो गए तो सैय्यदना नूह अलैहिस्सलाम ने अपने बेटे को जिसके अमल अच्छे नहीं थे, फ़रमाया ﴿يٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا. (هود:٤٢)﴾ ऐ मेरे बेटे! हमारे साथ किश्ती में सवार हो जा।

मगर बेटा कहने लगा के मैं इस पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाऊँगा और ये मुझे पानी से बचा देगी। अभी बातचीत हो ही रही थी के उसी दौरान एक मौज आई और बेटा बाप की आँखों के सामने पानी में ग़र्क़ हो गया।

चूँके अल्लाह तआला ने उनसे वादा किया था के आपके घरवालों को बचा लूँगा। इसलिए बाप वाली शफ़क़त ने जोश मारा और उन्होंने परवरदिगारे आलम से दुआ की :

﴿إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ. (هود:٤٥)﴾

ऐ परवरदिगार! मेरा बेटा मेरे अहल में से था और आपका वादा सच्चा है और आप सबसे बड़े हाकिम हैं।

बस इतनी सी बात कहनी थी के परवरदिगार की तरफ़ से जलाल भरा ख़िताब आया :

﴿إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ. (هود:٤٦)﴾

ऐ नूह! ये आपके अहल में से नहीं था। इसके अमल अच्छे नहीं थे।

और आगे परवरदिगार ने और भी बात कह दी। ज़रा दिल थामकर सुन लीजिए। फ़रमाया :

﴿فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ط اِنِّیْ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ. (هود:٤٦)﴾

ऐ नूह! आप मुझसे वो मत पूछिए जिसका इल्म नहीं। मैं आपको नसीहत करता हूँ। ऐसा न हो के आप कहीं जाहिलों में से हो जाएं।

अल्लाह तआला का ये जलाल भरा ख़िताब सुनकर सैय्यदना नूह अलैहिस्सलाम ने न कोई उज़्र पेश किया और न ही कोई दलील पेश की बल्के माफ़ी मांगते हुए फ़ौरन अर्ज़ किया :

رَبِّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ مَا لَيْسَ لِیْ بِهٖ عِلْمٌ ط وَاِلَّا تَغْفِرْلِیْ وَتَرْحَمْنِیْ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ. (هود:٤٧)

ऐ रब! मैं आपसे पनाह मांगता हूँ उस बात से के मैं आइन्दा आपसे ऐसी बात का सवाल करूँ जिसके बारे में नहीं जानता। और अगर आप मेरी मग़फ़िरत नहीं फ़रमाएंगे और मुझ पर रहम न फ़रमाएंगे तो मैं तबाह हो जाऊँगा।

रब्बे करीम हमें भी समझ अता फ़रमाए और हमें भी इसी दुनिया में अपनी ग़लतियों की माफ़ी मांगने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन सुम्मा आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ.﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍO (سورة)

मेहनत व रियाज़त

ये बयान 29 जून 2002 ई० मुताबिक़ 22 रबिउस्सानी 1423 हि० बाद नमाज़ फ़ज्र मस्जिद नूर लोसाका (ज़ाम्बिया) में हुआ जिसमें बड़ी तादा में आम लोगों ने शिरकत की।

इक़्तिबास

जब बंदा दीन की मेहनत करके थक जाए तो उसे ख़ुश होना चाहिए। जिस दिन जिस्म ज़्यादा थके उस दिन ज़्यादा ख़ुश हो। हमारे हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे के तुम इतनी इबादत करो इतनी इबादत करो के ख़ालिक़ और मख़्लूक़ दोनों को तुम पर तरस आने लग जाए। दस्तूर भी यही है के इंसान उधार की चीज़ से थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम निकालता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी औरत की अस्तरी ख़राब हो जाए तो वो अपनी पड़ोसन से मंगवाती है। जब उसे अस्तरी मिलती है तो वो उससे सिर्फ़ अपने मियाँ के कपड़े प्रेस नहीं करती बल्के वो उसी वक़्त अपने भी, बच्चे के भी और बच्ची के भी कपड़े प्रेस कर लेगी। इसी तरह ये जिस्म हमारे पास उधार का माल है। ये अल्लाह तआला की मिल्कियत है और हमारे पास थोड़े वक़्त के लिए इसका कंट्रोल है। अब हम जितना चाहें इसको इस्तेमाल कर सकते हैं।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिदी मद्दज़िल्लहु

मेहनत व रियाज़त

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ (سورة البلد:٤)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

मेहनत में अज़मत

मक़सदे ज़िंदगी काम है आराम नहीं। आराम के लिए अल्लाह तआला ने जन्नत को बनाया है। इस दुनिया में दीनी एतिबार से जिस बंदे ने भी इज़्ज़तें पायीं वो मेहनत से ही पायीं। चूँके मेहनत में अज़मत है इसलिए नौजवानों को चाहिए के वो मेहनत को अच्छा समझें। मेहनत से जान छुड़ाना और जी चुराना पसन्दीदा बात नहीं है। आराम तलबी और तन आसानी जैसी चीज़ें मोमिन की ज़िंदगी में नहीं होतीं बल्के उसकी ज़िंदगी का मेहनत, मशक़्क़त और मुजाहिदा होता है। तो ये नोट कर लें के मक़सदे ज़िंदगी काम, काम और बस थोड़ा सा आराम। और आराम भी इसलिए करना है के फिर काम करना है। जो काम करने वालो

लोग होते हैं अल्लाह तआला उनको आरम करने पर भी अज्र अता फ़रमाते हैं। इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया है ﴿نوم العلماء عبادة﴾ यानी उलमा की नींद इबादत है।

यानी जो उलमा दीन का काम करते हैं और फिर वे अपने जिस्म को आराम देते हैं ताके फिर काम कर सकें, अल्लाह तआला उनके इस आराम के वक़्त को भी काम में शामिल फ़रमा देते हैं।

उधार की चीज़ की क़द्र

जब बंदा दीन की मेहनत करके थक जाए तो उसे ख़ुश होना चाहिए। जिस दिन जिस्म ज़्यादा थके उस दिन ज़्यादा ख़ुश हो। हमारे हज़रत रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाया करते थे के तुम इतनी इबादत करो इतनी इबादत करो के ख़ालिक़ और मख़्लूक़ दोनों को तुम पर तरस आने लग जाए। दस्तूर भी यही है के इंसान उधार की चीज़ से थोड़े वक़्त में ज़्यादा काम निकालता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी औरत की अस्तरी ख़राब हो जाए तो वो अपनी पड़ौसन से मंगवाती है। जब उसे अस्तरी मिलती है तो वो उससे सिर्फ़ अपने मियाँ के कपड़े प्रेस नहीं करती बल्के वो उसी वक़्त अपने भी, बच्चे के भी और बच्ची के भी कपड़े प्रेस कर लेगी। इसी तरह ये जिस्म हमारे पास उधार का माल है। ये अल्लाह तआला की मिल्कियत है और हमारे पास थोड़े वक़्त के लिए इसका कंट्रोल है। अब हम जितना चाहें इसको इस्तेमाल कर सकते हैं। जब कोई आदमी मशीन लगाता है तो वो आठ घंटे काम करके सोलह घंटे काम बंद नहीं करता बल्के वो तीन शिफ़्टें लगाता है। वो कहता है के बंदे तो बदलते रहें लेकिन मशीन से काम होता रहे। बिल्कुल इसी तरह अल्लाह वालों का भी यही

हाल है के वो इस उधार की मशीन से दिन व रात इबादत करके ख़ूब काम निकालते हैं।

क़ाबिले रश्क ज़ौक़े इबादत

हमारे मशाइख़ के दिलों में इबादत करने का बहुत शौक़ होता था। एक बुज़ुर्ग की उम्र सत्तर साल थी। वो सत्तर साल की उम्र में रोज़ाना सत्तर तवाफ़ किया करते थे। हमने ज़्यादा से ज़्यादा एक वक़्त में पाँच तवाफ़ कर लिए होंगे। एक तवाफ़ के सात चक्कर होते हैं। इस हिसाब से हमने एक वक़्त में पैंतीस चक्कर लगाए होंगे। वो सत्तर तवाफ़ में चार सौ नव्वे चक्कर लगाते थे और तवाफ़ के बाद दो नफ़्ल पढ़ते थे। इस हिसाब से एक सौ चालीस नफ़्ल भी बन गए। अब ज़रा सोचें के अगर हम अपनी ज़िंदगी में कभी पचास रकअतें पढ़ लें तो हमारा क्या हाल होगा। आख़िरी रकअत में "समिअल्लाह" की जगह "उई अल्लाह" निकल रहा होगा। तवाफ़ के चार सौ नव्वे चक्करों के अलावा एक सौ चालीसनफ़्ल पढ़ना उनका एक अमल है और बाक़ी इबादत मसलना तिलावत और तस्बीहात वग़ैरह इसके अलावा। गोया के ये कहना बेजा न होगा के हमारे मशाइख़ ने इतनी इबादतें की हैं के उन्होंने अपनी ज़िंदगी के एक-एक मिनट को भी सही इस्तेमाल किया है।

हज़रत जरजानी रह० का मामूल

एक दफ़ा सिर्री सक़्ती रह० ने जरजानी रह० को सत्तू फांकते हुए देखा। उन्होंने पूछा अकेले सत्तू फ़ांक रहे हैं रोटी ही पका लेते। उन्होंने कहा मैंने रोटी चबाने और सत्तू फांकने का हिसाब लगाया है तो रोटी चबाने में इतना वक़्त ज़्यादा ख़र्च होता है के

आदमी सत्तर बार सुब्हानअल्लाह कह सकता है। इसलिए पिछले चालीस साल से रोटी खाना छोड़ दी और सिर्फ़ सत्तू फांककर गुज़ारा करता हूँ। गोया सलफ़ सालिहीन अपनी ज़रूरतों के वक़्त को भी कम करके इबादतों में लगाया करते थे।

शागिर्द हों तो ऐसे

इमाम शाफ़ई रह० इमाम मुहम्मद रह० के शागिर्द थे। इमाम मुहम्मद रह० एक जगह दर्स देते थे और फ़ारिग़ होकरर दूसरी जगह भी दर्स देते थे। उनको फ़ुर्सत नहीं होती थी और इमाम शाफ़ई रह० के दिल में शौक़ होता था के फ़लाँ किताब भी हज़रत से पढ़ लूँ। जब उन्होंने अपने शौक़ का इज़्हार किया तो इमाम मुहम्मद रह० ने फ़रमाया के वक़्त की सूरतेहाल तो आपके सामने है बल्के दर्स करवाने वाले हज़रात ने मुझे सवारी का इंतिज़ाम करके दिया हुआ है चुनाँचे मैं घोड़े पर सवार होकर दूसरी जगह पहुँचता हूँ। इमाम शाफ़ई रह० ने अर्ज़ किया, हज़रत! जब आप घोड़े पर सफ़र कर रहे होंगे मैं उस दौरान आपके घोड़े के साथ दौड़ता हुआ जाऊँगा। आप घोड़े पर बैठकर दर्स देते रहना। मैं इस हालत में भी आपसे दर्से हदीस हासिल करूंगा।

एक हदीस से चालीस मसाइल का जवाब

एक बार इमाम शाफ़ई रह०, इमाम मालिक रह० के पास पहुँचे। उन्होंने वहाँ रात जागते हुए गुज़ार दी। इमाम मालिक रह० ने पूछा, आप रात को क्यों नहीं सोए? फ़रमाने लगे के मेरे सामने एक हदीस पाक आ गई थी के एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने छोटे से बच्चे को जो अनस रज़ियल्लाहु अन्हु का भाई था, फ़रमाया :

﴿يا ابا عمير مافعل النغير﴾ ऐ अबू उमैर! तेरे परिन्दे ने क्या किया।

उसने एक परिन्दा पाला था मगर वो मर गया। तो जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उससे मिलते तो उससे ख़ुश तबई फ़रमाते के तेरे परिन्दे ने तेरे साथ क्या किया यानी मर गया और तुझे छोड़ गया। तो मैं इन अल्फ़ाज़ पर ग़ौर करता रहा और हदीस पाक के इतने से टुकड़े से मैंने फ़िक़्ह के चालीस मसाइल का जवाब निकाल लिया। जैसे छोटे बच्चे को तसग़ीर के साथ बुला सकते हैं, कुन्नियत से कैसे पुकारा जा सकता है।

सुब्हानअल्लाह, सुब्हानअल्लाह इसीलिए इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाया करते थे के ऐ अल्लाह! दिन अच्छा नहीं लगता मगर तेरी याद के साथ और रात अच्छी नहीं लगती मगर तुझसे राज़ व नियाज़ के साथ।

क़ुर्ब सज्दे से मिलता है

हदीस पाक में आया है ﴿يتقرب الى عبدى بالنوافل﴾ (मेरा बंदा नवाफिल के ज़रिए मेरा क़ुर्ब हासिल करता है) और क़ुरआन मजीद की एक आयत है ﴿واسْجُدْ وَاقْتَرِبْ. (العلق:١٩)﴾ और सज्दा कर और क़ुर्ब हासिल कर।

चूँके नवाफ़िल में भी सज्दा होता है इसलिए हदीस पाक भी बतलाती है के क़ुर्ब सज्दे से मिलता है। और क़ुरआन मजीद की आयत भी बतलाती है के क़ुर्ब सज्दे से मिलता है। मगर हम सज्दे से घबराते हैं। हमें तो नफ़्लों की तौफ़ीक़ ही नहीं मिलती। हम तो फ़र्ज़ों के साथ वाले नवाफ़िल भी बड़ी मुश्किल से पढ़ते हैं बाक़ी नफ़्लें क्या पढ़ेंगे। जब नफ़्ल ही नहीं पढ़ते तो फिर क़ुर्ब क्या मिलेगा। न तो क़ुरआन पाक की आयत ग़लत हो सकती है और न ही अल्लाह के महबूब का फ़रमान ग़लत हो सकता है। दोनों तरफ़ से सबूत मिल रहा है के क़ुर्ब नफ़्लों से मिलेगा। इसके सिवा

कोई चारा नहीं। यही वजह है के इमाम आज़म रहमतुल्लाहि अलैहि इशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा करते थे।

हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का ज़ौक़े इबादत

एक हदीस पाक में आया है के एक मर्तबा नबी अलैहिस्सलाम ने तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी और उसके बाद जब फ़ज्र का वक़्त हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ ले गए। जब मस्जिद में तशरीफ़ ले जाने लगे तो आप की अहलिया मोहतरमा हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा मुसल्ले पर बैठकर अल्लाह तआला का ज़िक्र कर रही थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मस्जिद में आकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। आपकी आदत मुबारक थी के आप फ़ज्र की क़िराअत लंबी फ़रमाया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ाने के बाद मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा हुए। सहाबा किराम इर्द गिर्द बैठ गए। वो महफ़िल काफ़ी देर लगी रही यहाँ तक के चाश्त का वक़्त हो गया। यों समझिए के आजकल के मुताबिक़ दिन के नौ बजे का वक़्त हो गया। फिर उसके बाद आप घर तशरीफ़ लाए। जब आप घर तशरीफ़ लाए तो आपने देखा हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा उसी हालत में मुसल्ले पर बैठी ज़िक्र कर रही हैं।

नबी अलैहिस्सलाम ने पूछा जुवेरिया! जब मैं तुम्हें छोड़कर गया था तो उस वक़्त से आप बैठी ज़िक्र कर ही थीं, क्या आप उस वक़्त से लेकर अब तक ज़िक्र में लगी हुई हैं? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! मैंने फ़ज्र की नमाज़ अदा की और मैं उस वक़्त से लेकर अल्लाह तआला की याद में बैठी हुई हूँ। इससे मालूम हुआ के उम्महातुल-मोमिनीन की आदते मुबारका ये थी के वे घंटों मुसल्ले पर गुज़ारा करती थीं और यही आदत उम्मत की नेक

बीबियों की रही है। उनके दिलों में इबादत का शौक़ था और उन्हें मुसल्ले के साथ मुहब्बत होती थी। याद रखें के जो इंसान ये देखना चाहे के मेरे दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत कितनी शदीद है वो ये देखे के उसको मुसल्ले पर बैठकर कितना सुकून मिलता है। अगर मुहब्बत में शिद्दत होगी तो उसे मुसल्ले पर बैठकर ऐसे ही सुकून मिलेगा जैसे बच्चे को माँ की गोद में बैठकर सुकून मिलता है।

तो नबी अलैहिस्सलाम ने हज़रत जुवेरिया रज़ियल्लाहु अन्हा का जवाब सुनकर फ़रमाया, जुवेरिया! मैं तुम्हें ऐसे कलिमात सिखाता हूँ के अगर तुम इनको तीन मर्तबा सुबह व शाम पढ़ लोगी तो तुम्हें इतना अज्र मिलेगा के तुमने तहज्जुद से लेकर अब तो जितनी इबादत की है उससे भी ज़्यादा अज्र मिलेगा। जब नबी अलैहिस्सलाम ने ये फ़रमाया तो उम्मुल मोमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा तो बड़ी खुश हुईं और अर्ज़ करने लगीं के ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ज़रूर बता दीजिए। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया के वे कलिमात ये हैं :

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ وَرِضٰى نَفْسِهٖ وَزِنَةَ عَرْشِهٖ وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ.

अल्लाह की पाकी (पाकीज़गी) बयान करता हूँ और उसकी तारीफ़ उसकी मख़्लूक़ के बराबर और उसकी ज़ात की रज़ा के मुवाफ़िक़ और उसके अर्श के हम वज़न और उसके कलिमात की स्याही की मिक़्दार के बराबर।

नबुव्वत की सोच और उसकी परवाज़

नबी अलैहिस्सलाम की इस दुआ में कितनी गहराई है इसका अंदाज़ा उसके मफ़हूम से ही लगाया जा सकता है।

﴿سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ﴾ सुब्हानल्लाहि व-बि हम्दिहि यानी अल्लाह

की पाकी बयान करती हूँ और अल्लाह तआला की तारीफ़ें करती हूँ। ﴿عَدَدَ خَلْقِهٖ﴾ अ-द-द ख़ल्क़िहि इसका मतलब ये है के मैं अल्लाह तआला की इतनी हम्द बयान करती हूँ जितनी अल्लाह तआला की मख़्लूक़ है। सुब्हानअल्लाह अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये कैसा नौबल आइडिया पेश फ़रमा दिया। वाक़ई अगर नबी अलैहिस्सलाम उम्मत को ये तालीम न देते तो उम्मतियों के दिमाग़ की परवाज़ ही इतनी नहीं थी के वो ऐसी दुआएं अपनी अक़्ल के बल बूते पर मांग सकते। ये तो मोहसिने इंसानियत का उम्मत पर एहसान है के उन्होंने ऐसी प्यारी प्यारी तालीमात दीं के हम थोड़े वक़्त में ज़्यादा से ज़्यादा नेकियाँ कमा सकते हैं।

अब सवाल ये पैदा होता है के अल्लाह तआला की मख़्लूक़ कितनी है? इस वक़्त पूरी दुनिया में बिलिन इंसान होंगे, जो अब तक गुज़र चुके हैं वे टिरिलियन होंगे और जो क़ियामत तक आएंगे वे टिरिलियन होंगे। इतनी मख़्लूक़ तो इंसानों में है। फिर पूरी दुनिया में जानवर कितने होंगे, परिन्दे कितने होंगे, फ़िर समुन्दर और दरियाओं में मछलियाँ और दूसरी पानी की मख़्लूक़ कितनी होगी। कीड़े मकौड़े कितने होंगे, मक्खियाँ कितनी होंगी और मच्छर कितने होंगे, और ज़रा नीचे चले जाएं। पूरी दुनिया में जरासीम कितने होंगे। कहते हैं के दुनिया में एक मिट्टी उठाई जाए तो उसमें कई मिलियन जरासीम मौजूद होते हैं। बैक्टीरिया कितने होंगे, हम जो साँस लेते हैं एक मर्तबा साँस लेने में कई मिलियन बैक्टीरिया हमारे अंदर चले जाते हैं और इसी तरह बाहर निकलते हैं। अगर साँस के अंदर कई मिलियन बैक्टीरिया हैं तो पूरी दुनिया में कितने बैक्टीरिया होंगे। फिर हमारे अपने जिस्म के अंदर कितने बैक्टीरिया हैं। अल्लाहु अकबर अगर इन सबको हम शुमार करना

चाहें तो हम तो उसको शुमार भी नहीं कर सकते। फिर जिन भी अल्लाह की मख़्लूक़ हैं, फ़रिश्ते भी अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। जन्नत में हूर व ग़िलमान हैं ये तो रूह रखने वाली मख़्लूक़ात हैं, पानी के क़तरे भी अल्लाह की मख़्लूक़ हैं। अगर हम इन सबको गिनना चाहें तो क्या हम गिन सकते हैं? अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया :

﴿وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ. (المائده:٣١)﴾

और अल्लाह के लश्करों को उसके सिवा कोई नहीं जानता।

तो जब अल्लाह तआला की इतनी मख़्लूक़ है के अल्लाह के लश्करों के सिवा कोई नहीं जानता तो देखो के नबी अलैहिस्सलाम ने कितनी प्यारी और जामे दुआ तालीम फ़रमाई, अल्लाहु अकबर कबीरा। बात छोटी सी है लेकिन इसमें अल्लाह तआला की कितनी हम्द बयान हुई है।

﴿وَرِضَى نَفْسِهِ﴾ व-रिज़ा नफ़्सिहि यानी ऐ अल्लाह! मैं तेरी इतनी तारीफ़ करता हूँ के जिस तारीफ़ से आप ख़ुश हो जाएं। अल्लाह तआला कितनी तारीफ़ से ख़ुश होते हैं ये तो अल्लाह ही को मालूम है। ये तो हमारे वहम व गुमान से भी बड़ी बात है।

﴿وَزِنَةَ عَرْشِهِ﴾ व-ज़ि-न-त अर्शिहि और ऐ अल्लाह जितना आपके अर्श का वज़न है, उस वज़न के बराबर तेरी तारीफ़ बयान करता हूँ। अब अल्लाह तआला ही जानते हैं के उसके अर्श का वज़न कितना है।

﴿وَمِدَادَ كَلِمَاتِهِ﴾ व-मिदादा कलिमातिहि और ऐ अल्लाह! जितने आपके कलिमात हैं, उन कलिमात के बक़द्र मैं आपकी तारीफ़ें करता हूँ। अब अल्लाह तआला की सिफ़ात कितनी हैं। आइए!

क़ुरआन पाक में देखिए। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا. (الكهف:١٠٩)﴾

ऐ महबूब! आप फ़रमाया दीजिए के अगर सारी दुनिया के समन्दरों का पानी स्याही बना दिया जाता और उस स्याही से तेरे रब की तारीफ़ें लिखनी शुरू की जातीं तो एक वक़्त आता के ये स्याही ख़त्म हो जाती मगर तेरे रब की तारीफ़ें कभी ख़त्म न होतीं।

फिर इससे आगे बढ़कर बात कही। फ़रमाया के अगर सारी दुनिया के दरख़्तों की क़लमें बना दी जातीं और सारी दुनिया के समन्दरों का जितना पानी है उतने सात समन्दर और होते और ये सब पानी स्याही बन जाता और ये सब पानी स्याही बन जाता और ये सब दरख़्त क़लमें बन जाते, फिर इन क़लमों और स्याही से तेरे रब की तारीफ़ें लिखनी शुरू की जातीं तो एक वक़्त आता के ये क़लमें टूट जातीं और ये स्याही ख़ुश्क हो जाती मगर तेरे रब की तारीफ़ें कभी ख़त्म न होतीं। सुब्हानअल्लाह नबी अलैहिस्सलाम की सोच का हुस्न और परवाज़ देखिए। वाक़ई नबुव्वत की ये सोच है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तारीफ़ इतने प्यारे अंदाज़ में करती है।

अब देखिए के ये एक छोटी सी दुआ है जिस हर बच्चा याद कर सकता है, हर औरत याद कर सकती है, जवान भी और बूढ़े भी हत्ताके नव्वे साल की उम्र को पहुँच चुकी हो तो वो भी याद कर सकती है। अगर हमें इल्म हो तो फिर हम इसे सुबह व शाम पढ़कर अज्र कमा सकते हैं। मगर आज कितने लोग हैं जो इस दुआ को रोज़ाना पढ़ते हैं। ये सवाल अपने आप से पूछकर देखिए। जवाब मिलेगा के अक्सरियत इस दुआ को पढ़ने से

ग़फ़लत कर जाती है। याद रखें के हम अपने फ़ारिग़ अवक़ात को सिर्फ़ नेकी ही में न लगाएं बल्के नेकियाँ भी वे करें जिनकी वजह से हम थोड़े वक़्त में ज़्यादा अज्र कमा सकें ताके अल्लाह तआला का ज़्यादा क़ुर्ब हासिल कर सकें। आज कितने लोग हैं जो दिल में ये तमन्ना रखते हों के तहज्जुद के वक़्त अपने परवरदिगार के दरबार में हाज़िरी लगावाएं। याद रखिए तहज्जुद के वक़्त अल्लाह तआला अपने चाहने वालों की हाज़िरी लगवाते हैं। फ़रिश्ते तहज्जुद में उठने वाले लोगों के नाम लिखते हैं। यों समझिए के रात के आख़िरी पहर में अल्लाह तआला के चाहने वालों के नामों की फ़हरिस्त बनती है और अल्लाह तआला के हुज़ूर पेश की जाती है। हमारे दिल में ये तमन्ना होनी चाहिए के काश मेरा नाम भी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के चाहने वालों की फ़हरिस्त में शामिल हो जाए।

अब तुझे नींद कहाँ आए

ज़िक्र की लाइन में लगकर और ख़ासतौर से अल्लाह वालों की सोहबत में रहकर इबादत का ज़ौक़ इतना बढ़ जाता है के नींदे उड़ जाती हैं। हम लोग अपने शेख़ की सोहबत में कभी तीन दिन के लिए और कभी पाँच दिन के लिए हाज़िर होते थे। उस वक़्त ख़ानक़ाह में इतना फ़ैज़ होता था के हमें नींद ही नहीं आती थी। ये एक दो दफ़ा की बात नहीं बल्के हमने इसे बीसियों दफ़ा आज़माया। न दिन में नींद आती है न रात को हत्ताके चौथे पाँचवें दिन बदन थक जाता था मगर ज़िक्र की वजह से रूह के मज़े होते थे। जब जिस्म थक जाता तो हम इशा की नमाज़ के बाद दो नफ़्ल पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ मांगते थे के ऐ अल्लाह! आज मुझे सुकून की नींद अता फ़रमा दे मगर नींद भी फिर नहीं

आती थी। चुनाँचे एक मर्तबा मैंने अपने शेख़ की ख़िदमत में अर्ज़ किया, हज़रत! पता नहीं क्या मामला है के जब भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर होता हूँ दिन व रात में किसी वक़्त भी नींद नहीं आती। हज़रत रह० मुस्कराकर फ़रमाने लगे, "हाँ मुझे मेरे शेख़ ने जगाया था और तुझे मैंने जगाया है, अब तुझे नींद कहाँ आए।"

मौत के बाद है बेदार दिलों को आराम
नींद भर के वही सोया जो के जागा होगा

जो दुनिया में जागेगा वो क़ब्र में मीठी नींद सोएगा। इसलिए हमें अपने अंदर इबादत करने का शौक़ पैदा करना चाहिए। उलमा और तलबा ख़ासतौर से इस तरफ़ मुतवज्जेह हों। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ. (الحجر:٩٩)﴾

अपने रब की इबादत करो हत्ताके तुम्हें मौत आ जाए।

रमी जमार का मसअला और शैतान से निजात

जब इमाम यूसुफ़ रह० पर मौत की कैफ़ियत तारी थी। उस वक़्त उन्होंने एक शागिर्द से मस्अला पूछा, ﴿رمی جمار﴾ (शैतान को कंकरी मारना) ﴿راكبا﴾ (सवार) होकर अफ़ज़ल है या ﴿ماشيا﴾ (पैदल) अफ़ज़ल है? उसने कहा राकिबा। फ़रमाया, "ला।" उसने कहा, "माशिया।" आपने फ़रमाया, "ला।" फिर बताया के राकिबा कब अफ़ज़ल है और माशिया कब अफ़ज़ल है। अभी ये मस्अला बता रहे थे के इस दौरान उनकी वफ़ात हो गई।

उलमा ने लिखा है के आख़िर उन्होंने ये मस्अला क्यों पूछा? उन्होंने इसका जवाब भी लिखा है के मौत के आख़िरी लम्हात में

शैतान बंदे के पास आता है। मुमकिन है उस वक़्त शैतान आया हो और इमाम साहब ने जैसे ही शैतान को देखा हो, उन्होंने उस वक़्त रमी जमार का मस्अला छेड़ दिया और उसी रमी जमार के मस्अले के बीच अल्लाह तआला ने उनको शैतान से निजात अता फ़रमा दी।

फ़तवा पढ़ते-पढ़ते अल्लाह को प्यारे हो गए

दारुल-उलूम के देवबंद के एक मुफ़्ती साहब के हालाते ज़िंदगी में लिखा है के जब उनकी वफ़ात हुई तो एक फ़तवा उनके सीने पर पड़ा हुआ था। वो इस तरह के उन्होंने फ़तवा पढ़ना शुरू किया और पढ़ते-पढ़ते वो फ़तवा हाथ से गिर गया और इसी हालत में अल्लाह को प्यारे हो गए। हमारे मशाइख़ ने अपने अवक़ात को इस तरह ग़नीमत समझा और इबादत में अपना वक़्त गुज़ारा।

राबिया बसरिया रह० का क़ाबिले रश्क मामूल

राबिया बसरिया रह० के पास एक आदमी दुआओं के लिए हाज़िर हुआ। वो उस वक़्त ज़ोहर की नमाज़ पढ़ रही थीं। उसने सोचा के अच्छा मैं बाद में आऊँगा। जब वो बाद में आया तो वो नफ़्लें पढ़ रही थीं। फिर आया तो अस्र की नमाज़ पढ़ रही थीं। अस्र के बाद आया तो वो ज़िक्र व अज़्कार में मशग़ूल थीं। फिर आया तो मग़रिब की नमाज़ पढ़ रही थीं। फिर आया तो अव्वाबीन पढ़ रही थीं। फिर आया तो वो इशा पढ़ रही थीं। जब इशा के बाद आया तो देखा के लंबी रकअत की नीयत बांधे हुए थीं। सलाम ही नहीं फेर रही थीं। वो बैठा रहा, बैठा रहा। जब बहुत थक गया तो कहने लगा, अच्छा सो जाता हूँ और फ़ज्र के बाद मिल लूंगा। फिर फ़ज्र का वक़्त आया तो वो फ़ज्र की नमाज़

पढ़ रही थीं। उसके बाद वो इश्राक़ पढ़कर थोड़ी देर के लिए लेटीं तो वो आदमी फिर आया। किसी ने बताया के वो इश्राक़ की नफ़्लें पढ़कर अभी लेटी हैं। वो कहता है के मैं बस थोड़ी देर बैठा था के वो घबराकर उठीं और आँखें मलकर कहने लगीं,

﴿اللهم انی اعوذبك من عين لا تشبع من النوم.﴾

ऐ अल्लाह में ऐसी आँखों से पनाह मांगती हूँ जो नींद से पुर नहीं होतीं।

ये कहकर उठ बैठीं और अल्लाह तआला की इबादत में मशग़ूल हो गयीं।

इसी तरह इमाम आज़म अबूहनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि भी दोपहर के वक़्त कैलूला की नीयत से सो जाते थे और बाक़ी पूरा वक़्त इबादत में गुज़ारते थे। ये बात पहले समझ में नहीं आती थी। लेकिन ज़िक्र की लाइन में लगने के बाद आख़िर समझ में आ गई के हमारे मशाइख़ को सारी-सारी ज़िंदगी इबादत की तौफ़ीक़ कैसे मिल जाती थी। अल्लाह तआला उनको नींद के वक़्त बरकत दे देते हैं। चुनाँचे थोड़ी देर की नींद उनके जिस्म को सुकून दे देती है। उनके नज़दीक सोना बराए सोना तो होता नहीं। नींद का मक़सद तो जिस्म को राहत देना होता है के जिस्म ताज़ा दम हो जाए और फिर काम में लग जाए। इसीलिए मुर्शिदे आलम रह० अपने आख़िरी दिनों में फ़रमाया करते थे, "अब मेरे लिए दिन व रात का फ़र्क़ ख़त्म हो गया है।"

मेहनत की चक्की

याद रखें के इबादत के शौक़ में मुजाहिदे से नहीं घबराना चाहिए बल्के ख़ुश होना चाहिए के ये जिस्म दुनिया के लिए तो

हज़ारों मर्तबा थका। शुक्र है के ये आज अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए भी थका है। हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया, "ख़ुदा तलबी बिला तलबी" यानी अल्लाह को तलब करना और फिर दिल में तलब भी न हो ये नहीं हो सकता बल्के यों समझो के "ख़ुदा तलबी बला तलबी" है।

यानी अल्लाह तआला को तलब करना बलाओं को दावत देना है। क्या मतलब? मतलब ये है के मुजाहिदा करना पड़ता है बल्के दिल की बात कहूँ के इस दुनिया में इंसान को चक्की पीसनी पड़ती है या तो वो दीन के लिए पीस ले या फिर अल्लाह दुनिया के लिए पिसवाएंगे। पैसे बग़ैर गुज़रा नहीं होगा। परवरदिगार आलम ने फ़रमाया ﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ فِي كَبَدٍ (البلد:٤)﴾ बेशक हमने इंसान को चक्की पीसने के लिए पैदा किया है।

ये चक्की अंबिया किराम ने भी पीसी, फिर सहाबा किराम ने पीसी और फिर औलियाए उम्मत को ये चक्की पीसनी पड़ी। याद रखना के अगर कोई दीन से हटेगा तो अल्लाह तआला उसे दफ़्तर में लगा देंगे और वहाँ गधे की तरह काम कर रहा होगा। दफ़्तर वाले भी माशाअल्लाह ओवर टाइम में काम करवा रहे होंगे और फिर भी ख़ुश नहीं होंगे। सूली पर जान लटकी हुई होगी के आज तो बॉस नाराज़ है। जी हाँ जिसे ख़ुदा को राज़ी करने की फ़िक्र नहीं होती उसे अल्लाह तआला बॉस को राज़ी करने की फ़िक्र में डाल देते हैं। जब चक्की हर एक को पीसनी है तो बेहतर है के दीन की चक्की पीसी जाए ताके सही मानों में इंसानियत की मैराज नसीब हो सके।

फ़रिश्तों से बेहतर है इंसान बनना
मगर इसमें लगती है मेहनत ज़्यादा

हज़रत शिबली रह० के अज़ीम मुजाहिदे की दास्तान

वलीद बिन अब्दुलमलिक का ज़माना था। उस वक़्त मुसलमानों की हुकूमत दुनिया के ज़्यादातर मुल्कों में फैली हुई थी। उन्होंने हर-हर इलाक़े के गर्वनर मुक़र्रर किए हुए थे। इस दौरान आने जाने का सिलसिला इतना तेज़ नहीं था। मुख़्तलिफ़ जगहों से छः छः महीनों के बाद इत्तिलाएं आती थीं। कहीं से इत्तिला मिलती के यहाँ के गवर्नर का इंतिज़ाम बहुत अच्छा है और कहीं से इत्तिला मिलती के गवर्नर साहब ने लोगों की नाक में दम कर रखा है। वलीद बहुत परेशान हुआ के इतना फैला हुआ काम है, मैं क्या करूँ। उनका वज़ीर समझदार था। उसने मशवरा दिया के बादशाह सलामत! आप सब गवर्नरों को एक दफ़ा बुला लें और उनमें से जो अच्छा काम करने वाले हैं उनको इनाम दे दें और दूसरे भी समझदार हैं। वे ये सब कुछ देखकर समझ जाएंगे के हमें भी इनाम का मुस्तहिक़ बनना चाहिए। बादशाह को ये मशवरा पसन्द आया और उसने गवर्नरों को इत्तिलाएं रवाना कर दीं के तमाम गवर्नर फ़लाँ तारीख़ को मेरे दरबार में पहुँच जाएं। बादशाह के महल के साथ बहुत ग्राउन्ड था। उसने कहा के जो मेहमान आएं हैं वे यहाँ ठहर सकते हैं। उसकी वजह ये थी के सफ़र करना मुश्किल होता था। अब जिस बंदे ने एक हज़ार किलोमीटर से चलना है और रास्ते में देहात हैं, जंगल हैं, दरिया हैं तो उसे एक हज़ार किलोमीटर का सफ़र तय करने में एक महीने चाहिए होता था। एक महीना आने में लगेगा और एक महीना जाने में लगेगा। दो महीने का यही सफ़र बन गया और वहाँ ठहरना भी होता है। इस तरह एक हज़ार किलोमीटर का सफ़र तय करने में तीन महीने लग जाते थे। जब वो चलते तो फ़ैमली को भी साथ लेकर चलते थे। जब बीवी बच्चे भी साथ होते थे तो साफ़ ज़ाहिर है के

ख़िदमत के लिए भी लोग दरकार होते थे। फिर इन तीन महीने का राशन भी साथ लेकर चलते थे। आजकल तो अगर गाड़ी में डीज़ल पड़े तो बच्चे कोई ऐसी जगह देखते हैं जहाँ आइसक्रीम भी मिल सके। जब इतने बंदे होते थे तो उनकी हिफ़ाज़त के लिए भी इंतिज़ाम किया जाता था। इसकी तर्तीब ये होती थी के कुछ लोग जंगल में ऊँटों से भी आगे पैदल चल रहे होते थे ताके कोई दुश्मन या जानवर रास्ते में छुपा हुआ हो तो उसको हटा सकें। उनके पीछे वे जानवर होते थे जिन पर माल लदा हुआ होता था। फिर उसके बाद मेहमान खुसूसी और उसकी बेगमात और बच्चे होते थे। उनके पीछे फिर माल वाले जानवर होते थे। फिर उनके पीछे पैदल चलने वाले लोग होते थे। इस तरह सौ ऊँटों का क़ाफ़िला बन जाता था। अब जहाँ सौ ऊँटों ने आकर मेहमान बनना होता था तो वहाँ कमरे तो नहीं बना सकते थे। खुले मैदान में ही ऐसा मुमकिन था। चुनाँचे उन्होंने कहा के जो भी मेहमान आता जाए वो इस ग्राउन्ड में अपने ख़ेमे लगाता जाए।

मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के गवर्नर साहिबान पहुँचना शुरू हो गए। हर इलाक़े की लिबास पहनने की अलग आदत होती हैं। कहीं कोई रंग कहीं कोई रंग। लिहाज़ा जब वो मुक़र्रर दिन आया तो पूरे इलाक़े में ख़ेमे भी मुख़्तलिफ़ रंगों के लगे हुए थे और लिबास भी मुख़्तलिफ़ रंगों और डिज़ाइनों के थे। ऐसा लगता था जैसे गुलशन सजा हुआ हो।

जब सब लोग आ गए तो बादशाह ने सब गवर्नरों को अपने दरबार में बुलाया। जो अच्छा करने वाले थे उनको इनाम दिया और जो ढीले थे उनको अपने आप तंबीह भी हो गई के उन्हें भी अच्छा करना चाहिए। जब महफ़िल बर्ख़ास्त हो गई तो बादशाह ने हर गवर्नर को एक-एक पोशाक हदिया की। जिस आदमी को

बादशाह पोशाक देता था उसको बादशाह के दरबार में आने जाने के लिए इजाज़ की ज़रूरत नहीं होती थी। गोया वो उस वक़्त का ग्रीन कार्ड था। उसे कोई दरबान नहीं रोक सकता था। वो जब चाहता पोशाक पहनकर बादशाह के साथ पर्सनल मीटिंग कर लेता था। वो उस वक़्त की बहुत बड़ी नेमत होती थी।

बादशाह ने पोशाकें देकर कहा कल मैं आपकी इस पोशाक देने की ख़ुशी में दावत करूंगा। चुनाँचे सब गवर्नर पोशाक पहनकर दावत के लिए आए। दावत खाने के बाद फिर महफ़िल लगी। बादशाह अपने तख़्त पर बैठा और हालाते हाज़िरा पर तबादला ख़्यालात होने लगा। इस महफ़िल के दौरान एक गवर्नर को छींक आना चाही। अब नतो वो साइंस का ज़माना था और न ही अमरीकन छींक आती थी। अमरीकी लोग छींकने में बड़े माहिर हैं, बेशक आप ग़ौर करके देख लें। उनको महफ़िल में छींक आती है मगर पता ही चलने नहीं देते। हमें आज तक इसकी समझ नहीं आई। ये ऐसी चीज़ है जो मैं सीखना चाहता हूँ मगर अभी तक इसको सीख नहीं सका। मैं मानता हूँ के वाक़ई वो इसमें कमाल रखते हैं। वो गवर्नर साहब जितना छींक को रोकते के न आए उतना छींक और आती। वो बेचारा अंदर ही अंदर अपनी छींक के साथ लड़ रहा था। आख़िर उसको दो तीन मर्तबा एकदम छींकें आयीं। छींक है तो एक क़ुदरती सी चीज़ मगर बंदे को इससे सुबकी हो जाती है और हर बंदा उसकी तरफ़ देखने लगता है। अब जब उसको छींके आयीं तो उसने अपना सर नीचे कर लिया। अब लोगों ने उसकी तरफ़ देखा और फिर बादशाह की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए। अल्लाह की शान के जब छींक आती है तो कई मर्तबा नाक में से पानी भी आ जाता है। उसकी नाक से भी पानी निकल आया। न तो उसके पास हमारी तरह रुमाल था और

न कोई और इंतिज़ाम, जिससे नाक साफ़ करता। वो बड़ा परेशान हुआ। थोड़ी देर के बाद उसने सोचा के अब तो सब बंदों ने तवज्जेह हटा ली होगी। उस वक़्त उसने पोशाक के ऊपर वाले कपड़े के साथ अपनी नाक साफ़ कर ली। जब उसने पोशाक के साथ अपनी नाक साफ़ की तो ठीक उसी लम्हे बादशाह ने उसकी तरफ़ देख लिया। बादशाह को बड़ा ग़ुस्सा आया और वो कहने लगा के मेरी दी हुई पोशाक की इतनी नाक़द्री के इसके साथ तूने नाक साफ़ की है। चुनाँचे उसने अपने आदमियों को बुलाया और उनसे कहा के इससे पोशाक छीन लो और भरे दरबार से इसको धक्का दे दो। कारिन्दों ने उससे पोशाक छीन ली और दरबार से बाहर निकाल दिया। उसके बाद बादशाह भी संजीदा हो गया और बाक़ी लोग भी ख़ामोश हो गए। समझदार वज़ीर ने कहा के बादशाह सलामत! महफ़िल बर्ख़ास्त कर दें। चुनाँचे बादशाह ने महफ़िल बर्ख़ास्त करने का ऐलान कर दिया। सब लोग उठकर चले गए। अब दरबार में बादशाह और उसका वज़ीर रह गए।

बादशाह ग़ुस्से की वजह से ख़ामोश था और वज़ीर ये सोच रहा था के कोई ऐसी बात कहूँ के जिसकी वजह से बादशाह का ग़ुस्सा कम हो जाए। अभी समझदार वज़ीर कोई बात करना ही चाहता था के इतने में बाहर से दरबान ने आकर कहा, बादशाह सलामत! नहावन्द के इलाक़े के गवर्नर मुलाक़ात करना चाहते हैं। बादशाह ने कहा, पेश करो। चुनाँचे नहावन्द के इलाक़े का गवर्नर भी आ गया। बादशाह ने पूछा कैसे आए? कहने लगा, बादशाह सलामत! मैं सिर्फ़ ये पूछना चाहता हूँ के क्या छींक बंदे के अख़्तियार में है या अख़्तियार में नहीं है? उसने कहा मुझसे ऐसा बेवक़ूफ़ी का सवाल करते हो? उसने कहा बादशाह सलामत! मेरा दूसरा सवाल ये है के उस गवर्नर साहब ने जो आपकी दी हुई

पोशाक से अपनी नाक साफ़ की, क्या ये ज़रूरी था के उसको भरी महफ़िल में रुसवा किया जाता या उसको अलैहिदगी में तंबीह करके उससे पोशाक ली जा सकती थी? क्या उसकी अमूमी रुसवाई ज़रूरी थी? ये सुनकर बादशाह आग बगूला हो गया। फिर कहने लगा, ख़बरदार! तुम्हारे इस सवाल से मुहासबे की बू आती है। अगर तुमने और ज़बान खोली तो मैं तुम्हारा भी वही हशर करूंगा। उसने कहा बादशाह सलामत! आपको हशर करने की ज़रूरत नहीं है। मुझे खुद ही बात समझ में आ गई है। कहने लगा, तुम्हें कौन सी बात समझ में आ गई? गवर्नर कहने लगा के आपने भरे दरबार में उसे रुसवा भी किया और धक्के दिलवाकर बाहर भी निकाल दिया। मुझे ये बात समझ में आई के मेरे परवरदिगार ने मुझे इंसानियत की पौशाक पहनाकर इस दुनिया में भेजा है। अगर मैं इस इंसानियत की पौशाक की क़द्र नहीं करूंगा तो अल्लाह तआला भी क़ियामत के दिन भरे मजमे में मुझे जत्लील करके बाहर निकलवा देंगे। बादशाह सलामत! मैं पहले इस पौशाक की क़द्र कर लूँ। मुझे आपकी दी हुई पौशाक की ज़रूरत नहीं है। ये कहकर उसने वो पौशाक उतारी और बादशाह सलामत की तरफ़ फेंक मारी और ये कहकर निकल गया के अपनी गवर्नरी अपने पास ही रखो, मैं जा रहा हूँ। इस तरह उसी वक़्त उसके हाथ से गवर्नरी का ओहदा निकल गया। बाहर निकलकर उसने साथ आने वाले लोगों से कहा के उसके घरवालों को घर पहुँचा दें और इधर घरवालों को भी पैग़ाम पहुँचा दिया के मैं अब उस-मक़सदे ज़िंदगी को समझने के लिए जा रहा हूँ जिसको मैं अब तक भूला हुआ था।

उस ज़माने में हज़रत सिराज रह० एक मशहूर बुज़ुर्ग थे। उसने सोचा के मैं उनके पास जाता हूँ। चुनाँचे वो सीधा उनके

पास चला गया। वहाँ पहुँचकर हज़रत से कहने लगा, हज़रत! मैं इंसान बनना चाहता हूँ, इसलिए आप मुझे इंसानियत सिखा दीजिए। उन्होंने फ़रमाया, ठीक है, हमारे पास रहो, तुम्हें अपना मक़सद हासिल हो जाएगा। चूँके वो गवर्नर रहा था और अभी तक इस्लाहे नफ़्स नहीं हुई थी इसलिए उसके कामों में और बातों में तेज़ी थी। चुनाँचे उन्होंने ज़रा-ज़रा सी बात पर तेज़ी देखकर सोचा के इस बंदे को संभालना आसान काम नहीं है। लिहाज़ा उन्होंने चंद दिनों के बाद फ़रमाया, भाई! ख़िलअत तुम्हें बग़दाद से मिलेगी। वहाँ पर हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के नाम से एक बुज़ुर्ग हैं तुम उनके पास चले जाओ। उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनाँचे उस बंदे ने सफ़र किया और हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के पास पहुँच गया। वहाँ जाकर उसने हज़रत रह० से कहा जी आप के पास एक नेमत है। मैं उसको लेने के लिए हाज़िर हुआ हूँ। अगर आप चाहें तो में इस नेमत की क़ीमत अदा कर दूँगा। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया के पहली बात तो ये है के अगर हम क़ीमत लें तो आप दे नहीं सकते यानी अगर मेहनत करवाएं तो तुम मेहनत नहीं कर सकते और बग़ैर क़ीमत के तुम्हें दे दें तो तुम्हें उसकी क़द्र नहीं होगी। उसने अर्ज़ किया हज़रत! फिर क्या सूरत बनेगी? हज़रत रह० ने फ़रमाया के यहीं रहो। देखें के अल्लाह तआला क्या सूरत पैदा करते हैं। चुनाँचे उन्होंने वहीं रहना शुरू कर दिया।

कुछ अरसे के बाद एक दिन हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने उसको बुलाया और पूछा के तुम क्या करते थे? उसने अर्ज़ किया हज़रत मैं नहाविन्द के इलाक़े का गवर्नर था। हज़रत रह० ने फ़रमाया, अच्छा। अब वो समझ गए के गवर्नर के दिमाग़ में से "मैं" पड़ेगी क्योंके ये गवर्नर भी छोटे से ख़ुदा बने होते हैं। चुनाँचे

उन्होंने फ़रमाया के बग़दाद के बाज़ार में जाकर गंधक की दुकान बना लो। अब कहाँ गवर्नर और कहाँ गंधक की दुकान। गंधक की दुकान में अजीब तरह की बू आती है और उसे ख़रीदने वाले लोग भी इतने पढ़े लिखे नहीं होते। उनका मामला भी बहुत गंवार किस्म का होता है। ये ऐसा ही था के जैसे किसी मुल्क के सदर से कहा जाए के तुम किराने की दुकान बना लो। उस ज़माने में गंधक का इस्तेमाल ज़्यादा था। यहाँ तक के कपड़े धोने में भी इस्तेमाल होती थी। जब हज़रत रह० ने उसे गंधक की दुकान के बारे में कहा तो उसे बहुत ही अजीब लगा। लेकिन चूँके शेख़ ने फ़रमाया था इसलिए कहने लगे के हज़रत ठीक है, मैं गंधक की दुकान खोलता हूँ। चुनाँचे उन्होंने एक साल तक गंधक की दुकान चलाई। वो बेचारे गिनते रहे के कब दिन पूरे होते हैं।

जब एक साल पूरा हुआ तो कहने लगे, हज़रत! आपने फ़रमाया था के एक साल गंधक की दुकान चलाओ। वो एक साल पूरा हो गया है। हज़रत रह० ने फ़रमाया, अच्छा तुम दिन गिनते रहे हो। चलो एक साल और यही दुकान चलाओ। चुनाँचे जब इस दफ़ा गए तो दिन गिनना छोड़ दिए।

दूसरा साल गुज़रने के बाद हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने उनसे फ़रमाया, भई अब तो एक साल से ज़्यादा का अरसा हो गया है। लगता है तुमने दिन गिनना छोड़ दिए हैं। चुनाँचे उन्होंने वापस आकर अर्ज़ किया, हज़रत! अब मेरे लिए क्या हुक्म है? हज़रत रह० ने उन्हें एक प्याला पकड़ाया और फ़रमाया के बग़दाद के शहर में जाकर भीख मांगो और जो कुछ तुम्हें मिले वो ख़ानक़ाह में फ़क़ीरों को लाकर खिला देना, तुमने ख़ुद नहीं खाना। ख़ुद रोज़े रखो और भीख मांगो, अल्लाहु अकबर।

अब एक इलाक़े का गवर्नर भीख मांगने के लिए कैसे तैयार होगा। वो शक्ल व सूरत से तो बड़े पढ़े लिखे और सेहतमंद लगते थे। लिहाज़ा सोच में पड़ गए। हज़रत रह० ने फ़रमाया, अगर तुम्हारे दिल में इस नेमत की तलब है तो जो काम कह दिया है करो वरना यहाँ से चले जाओ।

उन्होंने हाथ में प्याला पकड़ा और बाज़ार जाकर सदा लगाई के अल्लाह के नाम पर कुछ दे दो। अब जिससे वो भीख देने की दरख़ास्त करते, उसे वो अच्छे ख़ासे सेहतमंद लगते थे। चुनाँचे वो कहता कि, "शर्म नहीं आती, अच्छे भले लगते हो और मांगने आ जाते हो, काम चोर कहीं के, चलो मियाँ यहाँ से चले जाओ।" जब एक डांट पिलाता तो दूसरे के पास चले जाते। वो भी डांट पिला देता। शेख़ का असल मक़सद भी यही था के जब मख़्लूक़ की डांट डपट सुनेंगे तो उनको अपनी अवक़ात का पता चल जाएगा के मैं क्या हूँ। वो जिससे भी भीख मांगते थे वही आगे से खरी खरी सुनाता जिसकी वजह से उनकी ख़ूब रुसवाई होती थी। इसी तरह उन्हें रोज़ाना धुतकारा जाता और कोई भी उनको कुछ न देता था। कुछ दिनों के बाद लोगों को भी पहचान हो गई के ये फिरता रहता है। चुनाँचे दूर से देखते ही उन्हें कोसना शुरू कर देते। अब उनके लिए उन लोगों के सामने जाना भी मुश्किल हो गया था।

एक साल भीख मांगने की वजह से उनका "मन" इतना साफ़ हो गया के उन्हें मख़्लूक़ के ताल्लुक़ से निजात मिल गई। अगर शेख़ किसी को तन्हाई अख़्तियार करने को कहें या किसी को कहें के तुम फ़लाँ शख़्स से न मिलो तो उससे उनकी नज़र में असल मक़सद मख़्लूक़ का काटना होता है। और ये क़ुरआनी फ़ैसला है।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا﴾ (المزمل:٨)

और ज़िक्र कर अपने रब के नाम का सबसे हटकट कर।

एक दिन हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने बुलाकर कहा, गवर्नर साहब! आपका नाम क्या है? अर्ज़ किया, अबूबक्र शिबली। फ़रमाया, अच्छा अब आप हमारी महफ़िल में बैठा करें। गोया तीन साल के मुजाहिदे के बाद अपनी मज्लिस में बैठने की इजाज़त दी। चूँके शिबली रह० का दिल पहले ही साफ़ हो चुका था। इसलिए अब हज़रत की एक-एक बात से सीने में नूर भरता गया और आँखें बसीरत से माला माल हो गयीं। चंद माह के अंदर अहवाल और कैफ़ियात में ऐसी तब्दीली आई के दिल मुहब्बते इलाही से लबरेज़ हो गया।

आख़िर हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने एक दिन बुलाया और फ़रमाया, शिबली! आप नहाविन्द के इलाक़े के गवर्नर हैं। आपने किसी से ज़्यादती की होगी और किसी का हक़ दबाया होगा। लिहाज़ा आप एक फ़हरिस्त बनाइए के आपने किस-किस का हक़ पामाल किया है। आपने फ़हरिस्त बनाना शुरू कर दी। साथ ही हज़रत की तवज्जोहात भी थीं। चुनाँचे तीन दिन में कई सफ़्हात की फ़हरिस्त तैयार हो गई। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने फ़रमाया के बातिन की निस्बत उस वक़्त तक नसीब नहीं होती जब तक के मामलात की सफ़ाई न हो। लिहाज़ा जाओ, उन लोगों से हक़ माफ़ करवा के आओ। चुनाँचे आप नहाविन्द तशरीफ़ ले गए और एक-एक आदमी से माफ़ी मांगी। बाज़ ने तो जल्दी माफ़ कर दिया, बाज़ ने कहा तुमने हमें बहुत ज़लील किया था। लिहाज़ा हम उस वक़्त तक माफ़ नहीं करेंगे जब तक हमारे मकान की

तामीर में मज़दूर बनकर काम न करो। आप हर आदमी की ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसकी शर्त पूरी करते और उनसे हक़ बख़्शवाते रहे। यहाँ तक के दो साल के बाद वापस बग़दाद पहुँचे।

अब आपको ख़ानक़ाह आए हुए पाँच साल का अरसा गुज़र गया था। मुजाहिदे और रियाज़त की चक्की में पिस पिस कर नफ़्स मर चुका था। बातिन में तू ही तू के नारे थे। पस रहमते इलाही ने जोश मारा और एक दिन हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने उन्हें बातिनी निस्बत से माला माल कर दिया। बस फिर क्या था, आँखों का देखना बदल गया, पाँव का चलना बदल गया, दिल व दिमाग़ की सोच बदल गई, ग़फ़लत के तार पौद बिखर गए, मारिफ़ते इलाही से सीना पुरनूर होकर ख़ज़ीना बन गया और आप आरिफ़ बिल्लाह बन गए।

वाक़ई जो बंदा अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए मुशक़्क़तें बर्दाश्त करता है अल्लाह तआला उसकी ऐसी रहनुमाई फ़रमाते हैं के वो अपनी मंज़िल पा लेता है। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا. (العنكبوت:٦٩)﴾

और जो बंदे हमारे रास्ते में मुजाहिदा करते हैं हम उनको नई-नई राहें सुझाते रहते हैं।

वैसे भी अल्लाह तआला का क़ुरआनी फ़ैसला है :

﴿لَيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى. (النجم:٣٩)﴾

इंसान के लिए वही कुछ है जिस के लिए वो कोशिश करता है।

इस अज़ीम मुजाहिदे की वजह से हज़रत शिबली रह० पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से इनामात की ख़ूब बारिश हुई।

उनके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ऐसी मुहब्बत पेदा हुई के जो शख़्स भी आपके सामने अल्लाह तआला का नाम लेता था आप उसके मुँह में शीरनी डाल देते थे। एक शख़्स ने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया के जो शख़्स मेरे महबूब का नाम ले मैं उसके मुँह को शीरनी से न भर दूँ तो और क्या करूँ। जी हाँ जिन लोगों ने अपने नफ़्स को रियाज़त की भठ्ठी में डालकर कुँदन बनाया होता है उनके दिलों में अल्लाह तआसला की मुहब्बत का समन्दर ठाठें मारने लगता है।

मुजाहिदा किसे कहते हैं

याद रखें के दुनिया दारुल मुजाहिदा है और आख़िरत दारुल मुशाहिदा है। मुजाहिदा किसे कहते हैं? अल्लाह तआला का हुक्म पूरा करने के लिए अपने नफ़्स की मुख़ालिफ़त करने, अपनी चाहतों को छोड़ने और अपनी ख़्वाहिशात को क़ुर्बान करने के लिए बंदे को जो तकलीफ़ और मशक़्क़त उठानी पड़ती है उसे मुजाहिदा कहते हैं। इस हक़ीक़त से पर्दा उठाते हुए अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿المجاهد من جاهد نفسه في اطاعة الله.﴾ मुजाहिद वो है जो अपने नफ़्स के साथ अल्लाह तआला का हुकम पूरा करने के लिए मुजाहिदा करता है।

नफ़्स को पालने वाले

नफ़्स को लगाम देना एक मुस्तक़िल काम है। आजकल अक्सर लोग नफ़्स को लगाम देने की बजाए नफ़्स को पालते हैं जैसे लोग घोड़े को पालते हैं। ये बात ज़हन नशीन कर लीजिए के लोगों से अपनी तारीफ़ करवाने से, अपनी तारीफ़ से ख़ुश होने से, उनके सामने अपने ख़्वाब बयान करने से, अपने दर्जात और कैफ़ियात बताने से, मनपसन्द खाना खाने से और दिल में पैदा

होने वाली हर चाहत को पूरा करने से नफ़्स मोटा होता है। जब ये नफ़्स अड़ियल टट्टू बन जाता है तो फिर बंदा कहता है के अब मेरा शरिअत पर अमल करने को दिल नहीं करता। असल में नफ़्स शरिअत पर अमल करने के लिए आमादा ही नहीं हो रहा होता है। एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे, ऐ दोस्त! तू नफ़्स को पालने में मशग़ूल है और नफ़्स तुझे जहन्नम में धकेलने में मशग़ूल है। तू इसे पालेगा और ये तुझे कंधे पर उठाकर जहन्नम में धक्का दे देगा।

इत्तिबाए सुन्नत से नफ़्स दबता है

इस नफ़्स को किस तरीक़े से क़ाबू किया जाए?

इसका एक तरीक़ा तो ये है के हर काम को सुन्नत के मुताबिक़ किया जाए। इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़सानी रह० ने ये लिखा है के मनगढ़त यानी अपने बनाए हुए नफ़्ली मुजाहिदे करना नफ़्स के लिए आसान होता है लेकिन हर काम सुन्नत के मुताबिक़ करना इस पर बड़ा भारी होता है।

सन् 1973 ई० की बात है के एक आदमी इस आजिज़ से मिलने आया। वो सोलह साल से लगातार रोज़े रख रहा था। मेरे दोस्त बड़े हैरान हुए के ये सोलह साल से लगातार रोज़े रख रहा है। मैंने कहा ये काम इतना मुश्किल नहीं है। वो कहने लगे कैसे मुश्किल नहीं है, सर्दी, गर्मी, सेहत, बीमारी, सफ़र, हज़र हर वक़्त रोज़े से रहना बहुत मुश्किल है। मैंने कहा अच्छा उससे पूछ लें। चुनाँचे उन्होंने उस आदमी से पूछा के क्या आपको रोज़ा रखने में कोई दिक़्क़त पेश आती है? वो कहने लगे नहीं। फिर वो मुझे कहने लगे के ये क्या मामला है? मैंने कहा ये इसकी आदत बन गई है। कुछ लोग दिन में तीन दफ़ा खाना खाते हैं और कुछ लोग

सुबह व शाम दो दफ़ा खाते हैं। इसी तरह आप यूँ समझें के ये भी दिन में दो दफ़ा खाते हैं। एक दफ़ा सहरी में के वक़्त और एक दफ़ा इफ़्तिारी के वक़्त। लिहाज़ा इनकी ये आदत बन गई है। मैंने कहा के उनसे कहें के आप सौमे दाऊदी रखें यानी एक दिन रोज़ा रखें और दूसरे दिन नाग़ा करें। चुनाँचे उन्होंने उनसे पूछा के क्या आप सौमे दाऊदी रख सकते हैं? तो उन्होंने कहा के नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन्होंने पूछा वो क्यों? वो कहने लगे इसलिए के ये तो मेरी आदत बन गई है और दिन के वक़्त अब मेरा कुछ खाने को दिल ही नहीं करता। अगर मैं एक दिन खाऊँ और एक दिन रोज़ा रखूँ तो इसमें मेरे नफ़्स पर ज़्यादा बोझ होगा जो के मेरे लिए बहुत मुश्किल है। मैंने कहा देखो ये जो अपनी मर्ज़ी से मुजाहिदा करते हैं वो काम आसान है लेकिन हदीस में जो तरीक़ा आया है उसके मुताबिक़ काम करना इसलिए बहुत मुश्किल है।

हमें चाहिए के हम ढूँढ-ढूँढ कर सुन्नतों पर अमल करें। खाने की सुन्नत, पीने की सुन्नत, सोने की सुन्नत, जागने और लिबास पहनने की सुन्नतें अपनाएं। हमने "बा अदब बा नसीब" किताब में अहादीस का ज़ख़ीरे में सुन्नतों को दर्ज किया। इसलिए जो बंदा चाहे के मेरी ज़िंदगी बिल्कुल सुन्नत के मुताबिक़ बन जाए वो "बा अदब बा नसीब" किताब को पढ़ना शुरू कर दे। और अपनी हर आदत को उसके मुताबिक़ ढालता चला जाए। इस तरह उसकी ज़िंदगी बिल्कुल सुन्नत का नमूना बन जाएगी।

जब अल्लाह तआला बंदे से खुश होते हैं तो उसे सुन्नत पर अमल करना बेसाख़्तगी के साथ नसीब हो जाता है। उसके लिए कोई कोई रुकावट नहीं होती। उसका हर काम अपने आप सुन्नत के मुताबिक़ होता चला जाता है। एक शख़्स हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के पास नौ साल तक रहा। एक दिन वो कहने लगा, हज़रत

मुझे इजाज़त दें, मैं किसी और शेख़ के पास जाता हूँ। उन्होंने पूछा ख़ैर तो है? वो कहने लगा, हज़रत! नौ साल तक आपकी ख़िदमत में रहा और मैंने आपकी कोई करामत नहीं देखी। हज़रत रह० ने फ़रमाया, आप मुझे ये बताएं के इन नौ सालों में मुझे कोई काम ख़िलाफ़े सुन्नत करते हुए देखा है? वो कहने लगा नहीं। फ़रमाने लगे, इससे बड़ी और क्या करामत हो सकती है के नौ साल में एक काम भी नबी अलैहिस्सलाम की सुन्नत के ख़िलाफ़ नहीं किया। गोया ये सब करामतों से बड़ी कराम है।

सुन्नत की महबूबियत

इमाम रब्बानी मुजदिदद अलफ़सानी रह० फ़रमाते हैं के अगर सारी दुनिया की करामतें हम से छीन लें और इत्तिबाए सुन्नत हमें दे दें तो ख़ुशनसीबी के सिवा कुछ नहीं है और अगर सारी दुनिया की करामतें दे दें और इत्तिबाए सुन्नत छीन लें तो सारी दुनिया की बदबख़्ती के सिवा कुछ नहीं है। इसीलिए हमारे अकाबिरीन को अल्लाह तआला ने सुन्नत वाली ज़िंदगी दी। उनका उठना, बैठना, बोल-चाल, रफ़्तार, गुफ़्तार और सब तौर तरीक़े सुन्नत के मुताबिक़ थे। नबी अलैहिस्सलाम हर एक के लिए सरापा रहमत थे और हमारे अकाबिरीन भी सरापा रहमत थे। नबी अलैहिस्सलाम का दिल दूसरों की तकलीफ़ पर दुखता था और इन अल्लाह वालों का दिल भी दुखता है। नबी अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की याद से कभी ग़ाफ़िल नहीं रहते थे और इन अल्लाह वालों के दिल भी हर वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से वासिल रहते हैं। नबी अलैहिस्सलाम ने दीन के लिए दिन रात एक कर दिया था। अल्लाह वाले भी दीन के लिए हर वक़्त अपनी तवानाइयाँ सर्फ़ कर रहे होते हैं।

तकबीरे ऊला का एहतिमाम

एक मर्तबा हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रहमतुल्लाहि अलैहि दारुल-उलूम के सालाना जलसे में तशरीफ़ लाए। आपने बयान फ़रमाया। बयान के बाद दुआ हो गई और साथ नमाज़ के लिए अजत्रन हो गई। हज़रत बावुज़ू थे। आप स्टेज से उठे ताके नमाज़ के लिए मस्जिद में जाएं। आगे सलाम करने वालों का इतना मजमा था के उन्होंने आपको घेर लिया। अब मजमे में कभी-कभी बंदा ऐसा घिर जाता है के उसी को पता होता है, दूसरे को पता नहीं होता। बंदा सोचता है के अब मैं क्या करूँ। अब हज़रत चाहते थे के लोग हटें और मैं मस्जिद में पहुँचूँ यहाँ तक के जब मजमे को हटाते हुए बड़ी मुश्किल से मस्जिद में पहुँचे तो जमाअत खड़ी हो चुकी थी और इमाम ने एक रकअत पढ़ा ली थी। हज़रत ने जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ी और फिर बड़ी हसरत के साथ फ़रमाया :

"आज तेईस साल के बाद तकबीरे ऊला क़ज़ा हो गई।"

अब इस क़ज़ा होने में आपका क़सूर नहीं था। जलसागाह के साथ ही मस्जिद थी। वो वक़्त से पहले नमाज़ के लिए तैयार भी थे और बावुज़ू भी थे। जा रहे थे मगर अल्लाह के बंदे दर्मियान में आ गए। वे जाने ही नहीं दे रहे थे।

अल्लाहु अकबर तेईस-तेईस साल तक तक्बीरे ऊला के साथ नमाज़ अदा की। असल बात ये है के जिन्होंने दुनिया में दर्जे पाए होते हैं, उन्होंने मुजाहिदे किए होते हैं।

हज़रत क़ारी रहीमबख़्श पानीपती रह० का मुजाहिदा

अल्लाह तआला ने हज़रत क़ारी रहीमबख़्श पानीपती रह० का इल्मी फ़ैज़ ऐसा फैलाया के पूरे मुल्क में जहाँ जाएं उनके शागिर्दों

के मदरसे नज़र आते हैं। उन्होंने क़ुरआन मजीद की ख़िदमत के बाग़ लगाए हुए हैं। वो फ़रमाते हैं के एक दफ़ा मैं उमरे पर गया तो मैं जितने दिन भी हरम शरीफ़ में रहा, मेरी हर नमाज़ तक्बीरे ऊला के साथ, पहली सफ़ के अंदर और इमाम के बिल्कुल पीछे अदा होती थी। हमारे लिए तो ये नामुमकिन बात है। हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। हमने वहाँ एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़ारा। वहाँ इतना मजमा होता है के हर नमाज़ पहली सफ़ में पढ़ना मुश्किल होती है। अगर आदमी उसके लिए आगे जाना भी चाहे तो नहीं जा सकता। फिर हर नमाज़ पहली सफ़ में पढ़ना और वो भी तक्बीरे ऊला के साथ और फिर इमाम के पीछे पढ़ना कितना दुश्वार होगा। इसका मतलब ये है के वो मस्जिद में ही रहे होंगे। मेरा ख़्याल है के वो वुज़ू करके मस्जिद में फ़ज्र की नमाज़ पढ़ते होंगे और इशा की नमाज़ पढ़कर मस्जिद से बाहर आते होंगे, अल्लाहु अकबर। जब हमारे बुज़ुर्ग ऐसे-ऐसे मुजाहिदे करते थे तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से इनाम भी पाते थे।

ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० का मुजाहिदा

एक मर्तबा हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० हज पर तशरीफ़ ले गए। आप आलिम थे। जवानी की उम्र थी। आप मक्का मुकर्रमा में तेरह दिन रहे और इन तेरह दिनों में कुछ न खाया न पिया। हमारे हज़रत रह० फ़रमाते थे के न आपको पेशाब आता था ओर न ही पाख़ाना आता था। लोगों ने पूछा, हज़रत ये क्या? हज़रत रह० फ़रमाते थे :

"मैं काला कुत्ता, इस पाक देस को कैसे नापाक करूँ।"

आप तेरह दिनों में हज करके वहाँ से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए। ये उनकी करामत थी। मगर ऐसी करामत भी उन्हीं को

मिलती है जिन्होंने मुजाहिदे किए होते हैं। ज़रा सोचें के हम एक दिन में कितनी मर्तबा बैतुलख़ला में चले जाते हैं।

मुख़ालिफ़ते नफ़्स के मुजाहिदे

हमारे बुज़ुर्गों ने फ़रमाया के मुख़ालिफ़ते नफ़्स के लिए चार मुजाहिदे हैं :

1. क़िल्लते तआम (थोड़ा खाना),
2. क़िल्लते मनाम (थोड़ा सोना),
3. क़िल्लते कलाम (थोड़ा बोलना),
4. क़िल्लते इख़्तिलात मअ-अल-अनाम (लोगों से थोड़ा मेलजोल रखना)

दो मुजाहिदों में छूट

चूँके हम कमज़ोर हैं। इसलिए आज के दौर में दो मुजाहिदे बाक़ी हैं और दो मुजाहिदों में छूट दे दी गई है। क़िल्लते तआम और क़िल्लते मनाम में आसानी दे दी गई है।

हमारे मशाइख़ ने फ़रमाया के जितनी भूख हो उतना खा लो। इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। हज़रत बहाउद्दीन नक़्शबंद बुख़ारी रह० से किसी ने पूछा, हज़रत! कितना खाना खाया करूँ? उन्होंने फ़रमाया, अच्छा खा और काम अच्छी तरह कर। ये एक हक़ीक़त है के जिस बैल को मालिक ख़ूब खिलाए और वो बैल काम भी ख़ूब करे तो मालिक को ख़ुशी होती है और उसको खिलाना बुरा नहीं लगता। हमारी गाय यहाँ दूध देती है तो दिल करता है के उनके मुँह में लुक़्मे डाले जाएं। इसी तरह जो बंदा अल्लाह तआला की इताअत करता है तो उस बंदे का खाना अल्लाह तआला को भी बुरा नहीं लगता। हाँ जिसका खाइए उसके गीत गाइए।

अल्लाह का दिया खाते हैं और अब इताअत भी उसी की करें।

पहले ज़माने के बुज़ुर्ग लगातार एक-एक महीने तक पानी के साथ रोज़े रखते थे। अब इतने मुजाहिदे करने की ज़रूरत नहीं है। इसलिए के आज के दौर में क़ुवा पहले ही ज़ईफ़ हैं। जो इस तरह के मुजाहिदे करेगा तो हड्डी बन जाएगा और बीमारियाँ उस पर हमला कर देंगी जिसकी वजह से वो इबादत करने के क़ाबिल भी नहीं रहेगा। आज के दौर में इबादत वही कर सकता है जिसके जिस्म में ताक़त है। अब मैं दो दिन भूखा रहूँ तो क्या ख़्याल है के तीसरे दिन मेरी आवाज़ मजमे तक पहुँच जाएगी? नहीं बल्के आवाज़ भी नहीं निकलेगी, आ... आ... आ... कर रहा हूँगा।

अल्लाह वाले कहते हैं के ज़रूरत के मुाबिक़ खाओ। ये भी नहीं कहते के दिन में पाँच मर्तबा खाना खाओ और ये भी नहीं कहते के दिन में सिर्फ़ एक लुक़्मा खाओ। हाँ अगर महसूस करें के नफ़्स के अंदर सरकशी ज़्यादा है और दिमाग़ में हर वक़्त नफ़्सानी, शैतानी और शहवानी ख़्यालात भरे रहते हैं और तबियत पर शहवत का ग़लबा रहता है ज़िंदगी भी ऐसी है के निकाह की सूरतेहाल नहीं है तो अब इसको भूखा रखो। हदीस पाक में आया हे के ऐसी सूरतेहाल में रोज़े रखो। फिर दो चार रोज़ों से काम नहीं बनता बल्के डटकर रोज़े रखने पड़ते हैं। एक दिन रोज़ा रखें और दूसरे दिन इफ़्तार करें। रोज़े वालेदिन तो पक्का रोज़ा हो और इफ़्तार वाले दिन तो भी इतना खाएं के नाम तो इफ़्तार का हो लेकिन हक़ीक़त में वो भी रोज़े की तरह हो।

जब नफ़्स को इस तरह लंबे अरसे तक भूख दी जाती है तो फिर ये सीधा हो जाता है क्योंके ये सब मस्तियाँ पेट भरे की मस्तियाँ होती हैं। एक मर्तबा बायज़ीद बुस्तामी रह० फ़ाक़े के फ़जाइल बयान कर रहे थे। किसी ने कहा, हज़रत! फ़ाक़ा भी

कोई ऐसी चीज़ है जिसकी फ़ज़ीलत बयान की जाए? फ़रमाया, हाँ ये फ़ज़ीलत बताने वाली चीज़ है। अगर फ़िरऔन की ज़िंदगी फ़ाक़े में आए होते तो वो कभी ख़ुदाई के दावे न करता। वो तो बादशाह था, उसे फ़ाक़े का क्या पता। अंग्रेज़ों में मशहूर है के किसी मुल्क के लोगों ने महंगाई और भूख के ख़िलाफ़ हड़ताल की और जुलूस निकाला। बादशाह और उसकी मलिका दोनों ने जुलूस देखा। मलिका ने बादशाह से पूछा के लोग नारे क्यों लगा रहे हैं? उसने कहा ये इस लिए नारे लगा रहे हैं के रोटी खाने को नहीं मिलती। वो कहने लगी, अच्छा अगर रोटी नहीं मिलती तो उनसे कहें के वे डबल रोटी खा लिया करें। उस बेचारी की ज़िंदगी महल में गुज़री थी उसे क्या पता के भूख क्या चीज़ होती है।

औरतों ने ख़ुदाई का दावा क्यों नहीं किया?

एक नुक्ते की बात सुनिए। जो बंदा अपने आपको दूसरों से छोटा समझेगा वो कभी ख़ुदाई का दावा नहीं कर सकता। ये पक्की बात है के ख़ुदाई का दावा वही करेगा जो अपने आपको बड़ा समझेगा। ये वजह है के तारीख़ इंसानियत में कभी किसी औरत ने ख़ुदाई का दावा नहीं किया। इसलिए के औरत हमेशा अपने आपको मर्द का मातहत समझती है। और मर्द को अपने आप पर फ़ौक़ियत (अहमियत) देती है चूँके उसके ज़हन में होता है के कोई न कोई मर्द मेरा बड़ा है। मसलन ये मेरा बाप है, ये मेरा ख़ाविन्द है, ये मेरा भाई है। लिहाज़ा कभी किसी औरत ने ख़ुदाई का दावा नहीं किया।

ज़्यादा खाने की क़बाहत

हदीसों में कम खाने के फ़ज़ाइल और ज़्यादा खाने की बुराई बयान की गई है। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया,

"तफ़क्कुर (फ़िक्र) करना आधी इबादत है और कम खाना पूरी इबादत है।" और एक जगह पर फ़रमाया, "अल्लाह तआला के नज़दीक सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल वो है जो बहुत तफ़क्कुर करे और बहुत भूखा रहे और अल्लाह तआला का सबसे बड़ा दुश्मन वो है जो बहुत खाए और बहुत ज़्यादा सोए।" ये भी फ़रमाया, "जो शख़्स पेट भर लेता है उसे आसमान की बुलन्दी की तरफ़ रास्ता नसीब नहीं होता। बल्के यहाँ तक फ़रमाया के ज़्यादा खा पीकर अपने दिल को मुर्दा न बनाओ इसलिए दिल खेत की मानिन्द है और ज़्यादा पानी से भी खेत मुर्झा जाता है। इन हदीसों से पता चलता है के अल्लाह तआला के हाँ कम खाना ज़्यादा पसन्दीदा है। मगर इसके बावजूद कुछ लोग पेट भरने के इतने आदी होते हैं के खुदा की पनाह।

बसियार ख़ोरी के वाक़िआत

1974 ई० में मुफ़्ती महमूद रह० ने ज़ुलफ़क़ार अली भुट्टो के दौर में जेल भरो तहरीक चलाई थी। जिसके नतीजे में हुकूमत ने मिर्ज़ाइयों को काफ़िर क़रार दिया था। लोग ख़ुद गिरफ़्तारियाँ पेश करते थे। मस्जिदों में बरेलवियों, देबन्दियों, अहले हदीस औ शिया हज़रात इकठ्ठे हो जाते थे। सब उलमा ख़त्मे नबुव्वत के उनवान पर तक़रीरें करते थे। तक़रीरें करने के बाद पंद्रह बीस नौजवान जो गिरफ़्तारियाँ पेश करने के लिए तैयार हो जाते थे। वो गले में फूलों के हार डाल लेते, जुलूस निकाला जाता और वो नौजवान जुलूस के आगे आगे होते और ख़ूब नारे लगते थे और पुलिस उस जुलूस के आगे-आगे चल रही होती थी। जहाँ जुलूस ख़त्म होता वहाँ पुलिस हार पहनने वाले लोगों को गाड़ी में बिठाकर जेल ले जाती थी और बाक़ी लोग घरों को चले जाते थे। ये रोज़ का मामूल था।

ये लोग अख़्लाक़ी मुजरिम तो थे नहीं। ये तो शरीफ़ लोग थे।

इन में जहाँ उलमा, हाफ़िज़ और क़ारी हज़रात होते थे वहाँ दुनिया के पढ़े लिखे नवजवान भी ख़त्मे नबुव्वत के जज़्बे में डूबे हुए गिरफ़्तारियाँ पेश करते थे। ये बात पुलिस भी जानती थी। इसलिए वो इनके साथ बदतमीज़ी नहीं करती थी। वो इनको गाड़ियों में बिठाकर ले जाती और उनको जेल में ले जाकर छोड़ देती थी। बस फ़र्क़ इतना था के वो बाहर की बजाए जेल के गेट के अंदर होते थे। जेल के अंदर मस्जिद बनी हुई थी। वे मस्जिद में नमाज़ भी पढ़ते और इधर-उधर घूमते फिरते थे।

इसी दौरान हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के बड़े बेटे हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान क़ासमी रह० के दिल में ख़्याल आया के मैं भी गिरफ़्तारी पेश करूं। हज़रत साहबज़ादे साहब बहुत ही दिलेर और जीदार बंदे थे। अल्लाह ऐसा नेक बेटा हर एक को दे। एक दिन हज़रत ने भी गिरफ़्तारी पेश कर दी। पुलिस ने उनको जेल में पहुँचा दिया। गिरफ़्तारियाँ पेश करने वाले जो नुमायां और ख़ास बंदे होते थे उनको पुलिस उसी शहर में नहीं रखती थी बल्के उन्हें किसी दूसरे शहर में भेज देती थी। लिहाज़ा पुलिस ने उन्हें चकवाल जेल में रखने के बजाए झेलम भेज दिया। उस वक़्त वो ज़िले का सदर मुक़ाम था।

अल्लाह तआला की शान के रावलपिंडी से एक और बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना गुलामुल्लाह ख़ाँ रह० भी गिरफ़्तार होकर झेलम आए हुए थे। वो शैख़ुल क़ुरआन के नाम से मशहूर थे। जेल सुपरिन्टेंडन्ट ने सोचा के मौलाना साहब आलिम हैं और इनके हज़ारों शागिर्द हैं और साहबज़ादे साहब पीर के बेटे हैं और उनके भी हज़ारें मुरीद हैं। इसलिए इन दोनों को एक ही कमरे में रखना चाहिए। लिहाज़ा उसने इन दोनों हज़रात के लिए एक कमरा ख़ास कर दिया।

दिन में सैंकड़ों की तादाद में लोग उनकी मुलाक़ात के लिए रोज़ाना पहुँचे होते थे। मज़े की बात ये के जो भी मुलाक़ात के लिए आता तो कोई मिठाई का डिब्बा लाता, कोई बिस्कुट लाता और कोई खाने की और कोई चीज़ लाता। इन दोनों के पास खाने पीने की चीज़ों का ढेर लग जाता था। उन्होंने प्रोग्राम बनाया के यहाँ इतने लोग आए हुए हैं। अगर हम रोज़ाना चाय बना लिया करें तो और ये मिठाई और बिस्कुट वग़ैर से उनको नाश्ता करवा दिया करें तो रोज़ाना निकलता भी रहेगा और मेहमान नवाज़ी भी होती रहेगी। इस तरह रोज़ाना का मामूल बन गया।

हज़रत क़ासिम साहब रह० ने फ़रमाया, एक दिन हम आकर बैठे तो बातचीत की के हम ने कल के लिए फ़लां बंदे को भी दावत दी है और फ़लां को भी, चकवाल का एक आदमी था। उसका नाम मौलाबख़्श था। वो भी ख़त्मे नबुव्वत के शौक़ में जेल आया हुआ था। मौलाना ग़ुलामुल्लाह ख़ाँ ने फ़रमाया के मैंने मौलाबख़्श को भी दावत दी है। हज़रत क़ासमी साहब रह० ने फ़रमाया के जब मैंने सुना के मौलाबख़्श को भी दावत दे दी है तो मैं बहुत ही परेशान हुआ। मौलाना साहब ने फ़रमाया, तुझे क्या हुआ। मैंने कहा, आपने सचमुच मौलाबख़्श को दावत दी है? फ़रमाया के हाँ, मैंने उसको भी दावत दे दी है। मैंने कहा फिर तो दूसरों के लिए खाना कम पड़ जाएगा।

उन्होंने फ़रमाया, हम फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर मौलाबख़्श को बुला लेंगे और सब कुछ उसके सामने रख देंगे। वो जितना चाहेगा खालेगा और जो बचेगा, उसके हिसाब से और मेहमानों को बुला लेंगे। मैंने कहा के हाँ ये राय ठीक है।

हज़रत क़ासमी रह० फ़रमाते हैं के जब मैंने हिसाब लगाया तो

मेरे पास दस किलो मिठाई पड़ी थी। मैंने दिल में सोचा के अगर कोई एक पाव मिठाई खाए तो मुश्किल से खाई जाती है। फ़रमाते हैं के हमारे पास फ़ौजियों वाले बड़े-बड़े मग थे जिनमें तीन कप चाय आ सकती थी। मैंने पानी के चालीस मग डाले और ऊपर से दूध डाला और चाय बनाई। अंदाज़ा था के हर आदमी एक मग चाय पिएगा और एक पाव मिठाई खाएगा। फ़रमाते हैं के मैंने तहज्जुद के बाद इंतिज़ाम कर दिया था और उसके बाद नमाज़ पढ़ने चला गया।

नमाज़ फ़ज्र के बाद दर्से क़ुरआन हुआ और दर्से क़ुरआन के बाद मौलाबख़्श आ गया। हमने उसको दस्तरख़्वान पर बिठाया। कहते हैं के हम उसके सामने मिठाई का एक-एक डिब्बा खोलकर दस्तरख़्वान पर रखते रहे और फ़ौजियों वाला मग भी चाय से भर-भर कर देते रहे। वे बातें भी करता रहा और इधर से मिठाई खाता रहा और चाय भी पीता रहा। हज़रत क़ासमी रह० साहब फ़रमाते हैं के अल्लाह तआला की शान देखो के अल्लाह के उस बंदे ने दस किलो मिठाई खाई और चालीस मग चाय पी।

जब उसने सब कुछ खा पी लिया तो फिर उसने इधर उधर देखा। वो इधर-उधर इसलिए देख रहे रहा था के सब कुछ ख़ैर-ख़ैरियत से सिमट गया है या नहीं। जब उसको यक़ीन हो गया के यहाँ सब कुछ सिमट गया है तो वो मौलाना साहब से कहने लगा, अच्छा! मौलाना अब आप मुझे इजाज़त दीजिए मैं अब यहाँ से जाता हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, भई! आप बैठें और हमारे साथ बातें करें। वो कहने लगा, नहीं हज़रत! अब आप इजाज़त दें। जब उसने वापसी की ज़िद की तो मौलाना गुलामुल्लाह ख़ाँ साहब समझे के अब इसके पेट में मरोड़ हो रहा है। इसलिए अब ये भागना चाहता है। चुनाँचे मौलाना साहब ने

उसे कहा, भाई! तुम्हें क्या जल्दी है। इतना जल्द क्यों जाना चाहते हो? वो कहने लगा, "मौलाना असल वजह ये है के मेरा नाश्ता चौधरी ज़हूर इलाही की तरफ़ है।"

एक दफ़ा वो हमारे हज़रत मुर्शिदे आलम रह० के सामने आया तो हज़रत ने उसको डांटते हुए कहा, "ओ मौलाबख़्शा! रोट्टी ताँ नई खान्दा, रोट्टी ताँ पई खांदी ऐ।" (ऐ मौलाबख़्श! तू रोटी नहीं खा रहा है बल्के रोटी तुझे खा रही है।)

ये बात बताने का मक़सद ये है के कुछ लोग बहुत ज़्यादा खाते हैं हालाँके इतनी ज़रूरत नहीं होती।

2. हज़रत ख़्वाजा सिराजुद्दीन रह० के पास एक मौलाना साहब तशरीफ़ लाए जो एक वक़्त में सिर्फ़ एक बकरा और उसके साथ रोटियों के दो तीन बंडल खाया करते थे। जब वो आए तो उन्होंने हज़रत रह० से कह दिया के हज़रत! मैं आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूँ और मेरे खाने का मामूल ये है। उनके कहने का मक़सद ये था के यहाँ कहीं भूखा ही न रहूँ। लेकिन इतना खाने के बाद एक पक्के सालिक थे। वो हाफ़िज़े क़ुरआन थे और एक बकरा और रोटियों के दो तीन बंडल खाकर नफ़्लों की नीयत बाँध लेते थे और पूरी रात नफ़्लों में गुज़ार देते थे। वो वाक़ई अल्लाह वाले बंदे थे लेकिन उनकी ज़्यादा खाने की आदत बनी हुई थी।

जब खाना खाने का वक़्त आया तो सब मेहमानों के लिए एक देग से कम खाना था। उन मौलाना साहब को परेशानी महसूस हुई के अब मेरा क्या बनेगा। हज़रत ने लंगर वाले ख़ादिम को बुलाकर फ़रमाया के इनको भी दो चपातियाँ और शोरबे में एक बोटी डालकर देना। मौलाना साहब हैरान व परेशान थे के मेरा क्या बनेगा लेकिन अल्लाह तआला की शान देखिए के वो मौलाना साहब दस्तरख़्वान पर रोटी और सालन खाते रहे यहाँ तक के पेट

भर गया लेकिन उनसे वे रोटियाँ और सालन ख़त्म न हुआ। ये हज़रत का करामत थी। अल्लाह तआला ने उस खाने में इतनी बरकत दी के मौलाना साहब खा खा कर थक गए लेकिन खाना ख़त्म न हुआ।

बरकात का ज़हूर

हदीस पाक में भी इस तरह के वाक़िआत मिलते हैं :

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं। उनकी बीवी के पास बकरी का एक छोटा सा बच्चा था। ख़न्दक़ खोदी जा रही थी। उनके दिल में ख़्याल आया के नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम कई दिनों से ख़न्दक़ खोद रहे हैं, पता नहीं के खाना भी मिला है या नहीं। लिहाज़ा मैं अपने घर खाना बना देती हूँ। अल्लाह के महबूब तशरीफ़ ले आएं और मेरे घर में खाना खा लें और आराम फ़रमा लें। इसलिए उसने अपने शौहर को भेजा के जाएं और अल्लाह के महबूब को दावत दें के हज़रत! आप ख़ुद तशरीफ़ लाएं और अपने साथ दो तीन हज़रात को भी ले आएं। हमारे पास तीन चार बंदों का खाना है। हम चाहते हैं के आप तशरीफ़ लाएं और खाना खा लें। हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दावत दी। दावत का पैग़ाम सुनकर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने पूरी फ़ौज में ऐलान करवा दिया के जी आज जाबिर बिन अब्दुल्लाह के घर में दावत है और सब मुजाहिदीन खाना खाने के लिए उनके घर चलें। जब हज़रत जाबिर ने ये सुना तो तेज़ी से घर की तरफ़ चले ताके जाकर बताऊँ के ये मसुअला बन गया है। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमायाः

जाबिर! हमारे आने का इंतिज़ार करना। हंडिया चूल्हे पर रहे

और रोटियाँ चादर के अंदर छुपी रहें। मैं ख़ुद आकर शुरू कराऊँगा। उन्होंने घर जाकर बीवी से कहा अब नौ सौ आदमी आ रहे हैं। उनकी बीवी बड़ी समझदार थी। उसने कहा अच्छा मुझे एक बात बताओ के उन नौ सौ आदमियों को दावत आपने दी या नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ऐलान करवाया है। वो कहने लगे के मैंने तो सिर्फ़ नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दावत दी थी। आगे नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने ऐलान करवाया है। ये सुनकर कहने लगी, अब फ़िक्र की कोई बात नहीं है। जब खाना तैयार हुआ तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ ले गए। सहाबा किराम भी पहुँच गए। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम खुद तक़्सीम करने बैठ गए। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रोटियाँ निकाल निकालकर देते रहे और सालन भर भरकर देते रहे यहाँ तक के नौ सो आदमियों ने पेट भरकर खाना खाया और पूरा लश्कर पेट भरकर वापस आ गया। बाद में जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा तो सालन भी उतना ही था और रोटियाँ भी उतनी ही थीं। सुब्हानअल्लाह।

हज़रत अबूहुरैरह रज़ियल्लाह अन्हु कई कई दिनों तक भूखे रहते थे। वो फ़रमाते हैं के एक दिन मुझे भूख लगी हुई थी। मैं भूख की वजह से इतना तंग था। मैंने सोचा के नमाज़े इशा पढ़ कर मस्जिदे नबवी में बैठ जाऊँगा और कोई भी अपने घर ले जा कर खाना खिला देगा। इन हज़रात को मेहमान नवाज़ी की आदत थी। कहने लगे मैं बेठा था हज़रत अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाए। उन्होंने सलाम तो किया लेकिन खाने की दावत नहीं दी हालाँके उनकी आदत ऐसी नहीं थी। मैं समझ गया के आज उनके घर भी कुछ नहीं है वरना मुझे दावत ज़रूर देते, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आए। उन्होंने भी सलाम किया और

चले गए। मैं समझ गया के आज उनके घर में भी फ़ाक़ा है। उनके बाद नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम तशरीफ़ लाए। मुझे देखकर पहचान गए और मुस्कराकर फ़रमाया अबू हुरैरह! आओ। तुझे कुछ खिलाते हैं। मैं कई दिनों से भूखा था लिहाज़ा ख़ुशी ख़ुशी अल्लाह के महबूब के साथ चलने लगा। नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने घर में पैग़ाम भिजवाया के घर में कुछ खाने को है तो दो। उम्मुल मुमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने जवाब दिया के खाने को तो कुछ नहीं हाँ पीने के लिए दूध का प्याला पड़ा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, चलो वही दे दो। अबूहुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं के जब मैंने सुना के खाने को कुछ नहीं सिर्फ़ दूध का प्याला है तो मुझे महसूस हुआ के इधर भी फ़ाक़ा है। फिर मैंने सोचा के चलो दूध का प्याला तो पीते हैं। अल्लाह की शान के जब वो दूध का प्याला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथों में आया तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, अबूहुरैरह जाओ, अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ। अस्हाबे सुफ़्फ़ा सत्तर आदमी थे। फ़रमाते हैं के मैं सोच में पड़ गया अगर मैं उन सत्तर बंदों को बुलाकर लाऊँगा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फ़रमाएंगे के अब तुम इनको दूध पिलाओ। इसका मतलब ये है के मेरा नम्बर आख़िर पर आएगा पता नहीं आज मेरे लिए बचेगा या नहीं बचेगा। बहरहाल मैं गया और अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाया।

जब सत्तर अस्हाबे सुफ़्फ़ा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन आ गए तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मुझे इर्शाद फ़रमाया, अबूहुरैरह! इन सबको दूध पिलाओ। कहते हैं के मैंने प्याला लिया और एक सहाबी को पीने के लिए दे दिया और देखने लगा के कुछ बचता है या नहीं। जब उसका पेट भर गया तो उसने प्याला

वापस दे दिया। मैंने देखा के कोई ख़ास कमी नहीं आई थी। फिर मैंने दूसरे सहाबी को दिया, यहाँ तक मैंने सत्तर बंदों को दूध का वो प्याला पिलाया लेकिन अभी भी दूध मौजूद था। उसके बाद वो प्याला मेरे हाथों में आया तो नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम मुझे फ़रमाने लगे, अबूहुरैरह! अब तू पी ले। तो हमने ख़ूब सैर होकर पिया। जब मेरा पेट भर गया और मैंने बस कर दी और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, अबूहुरैरह और पी तो मैंने और पिया यहाँ तक के ख़ूब पेट भर गया। अब जब हमने प्याला हटाया तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखकर मुस्कराए और फ़रमाया, अबू हुरैरह! और पी ले। मैंने फिर प्याला मुँह से लगाया और इतना पी लिया के मुझे महसूस हुआ के अब तो ये बाहर आ जाएगा। मैंने कहा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! अब मेरा पेट भर गया है। नबी अलैहिस्सलाम मुस्कराए और आप ने वो दूध का प्याला लेकर खुद नोश फ़रमाया और वो दूध ख़त्म हो गया।

एक बार ख़्वाजा फ़ज़ल अली क़ुरैशी रह० के खेत से गेहूँ निकाली गई। वही गेहूँ पकता था और ख़ानक़ाह के लोग खाते थे। अल्हम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने हमारे यहाँ ऐसा ही सिलसिला बना दिया है। हमारी अपनी ज़मीन का गेहूँ निकलता है और सारा साल उलमा और तलबा वही गेहूँ खाते हैं। उन्होंने वो गेहूँ मस्जिद के सहन में लाकर ढेर कर दी। उस वक़्त मिट्टी के भड़ौले बनाकर गेहूँ को महफ़ूज़ किया जाता था। मुरीदों ने वो गेहूँ उठाकर भड़ौलों में डालनी शुरू कर दी। वे गेहूँ उठा रहे थे मगर ढेर ख़त्म होने को नज़र नहीं आ रहा था। वो जितना गेहूँ ले जाते थे उतना ही पीछे पड़ी होती थी। वो देहाती लोग थे उन बेचारों की गर्दनें बोझ उठा उठाकर थक गयीं।

ख़्वाजा अब्दुल मलिक सिद्दीक़ी बड़े अक़लमंद थे। वो भी असल हक़ीक़त समझ गए चुनाँचे वो हज़रत क़ुरैशी रह० की ख़िदमत में गए और जाकर अर्ज़ करने लगे के हज़रत जो बरकत यहाँ ज़ाहिर हो रही है वो अंदर जाकर ज़ाहिर नहीं हो सकती? हज़रत ने फ़रमाया भाई मस्‌अला क्या है? अर्ज़ किया हज़रत गेहूँ उठाते-उठाते गर्दनें थक गयीं हैं, अब तो सिर्फ़ टूटनी रह गयीं हैं। लिहाज़ा मेहरबानी फ़रमा कर तवज्जेह फ़रमा दें। हज़रत ने फ़रमाया, चलो उठाते हैं। चुनाँचे हज़रत क़ुरैशी रह० साथ आए और सब ने मिलकर गेहूँ उठाई और हज़रत ने भी थोड़ी सी उठाई और एक बार में सारी गेहूँ अंदर चली गई, अल्लाहु अकबर।

ये क्या चीज़ थी? ये बरकत थी। ये बात ज़हन नशीन कर लें के पूरी दुनिया में जहाँ कहीं भी कोई दीन का काम करेगा वो हमेशा बरकत से चलेगा। बरकत न हो तोकाम चल नहीं सकता। दुनियावालों का काम तो बेबरकती से चल जाता है लेकिन दीन वालों का काम बेबरकती से नहीं चल सकता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से ये रहमतें और बरकतें दीन की वजह से होती हैं।

दुआ है के अल्लाह तआला हमें भी इख़्लास के साथ दीन का काम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और इस रास्ते में पेश आने वाले हालात को बर्दाश्त करने की तौफ़ीक़ व हिम्मत अता फ़रमा दें, आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾

بسم الله الرحمن الرحيم

وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَاءِO

तालिबे इल्म की शान

हज़रत अक्दस दामत बरकातुहू का ये बयान 19 दिसम्बर 2003 ई० को बुख़ारी शरीफ़ के इफ़्तिताह के सिलसिले में जामिया दारुल क़ुरआन, मुस्लिम टाउन, फ़ैसलाबाद में हुआ जिसमें मुल्क भर के जफ़यद उलमा और तुलबा के अलावा बड़ी तादाद में आम लोगों ने शिरकत की।

इक़्तिबास

तालिब इल्म उस नौजवान और बूढ़े को कहते हैं जिसके अंदर उस नूर की निस्बत को हासिल करने की प्यास मौजूद हो। आप ने स्फ़न्ज को देखा होगा। जब भी आप उसको पानी में डालें तो वो पूरे पानी को चूस लेता है और उसकी नस-नस में पानी पहुँच जाता है। इल्म चूस इंसान को तालिब इल्म कहते हैं। वो अपने उस्तादों की ख़िदमत में इस तरह बैठता है के जो लफ़्ज़ उनकी ज़बान से निकलता है वो उसकी याददाश्त का हिस्सा बनता चला जाता है। जैसे प्यासा इंसान गर्मी के मौसम में कितनी रग़बत और तलब के साथ ठंडा पानी पीता है। तालिब इल्म उससे ज़्यादा रग़बत और तलब के साथ अपने उस्ताद की बातों को सुनता है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी मुजद्दिददी मद्देज़िल्लहु

तालिबे इल्म की शान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِا للّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَالرَّبَّانِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ

شُهَدَاءِ○ (سورة المائده:٤٤)

وَقَالَ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَسَلَّم اَلْعِلْمُ نُوْرٌ

او كما قال عليه الصلوة والسلام.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

इल्म एक नूर है

इल्म एक नूर है जो हिदायत के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। अंबिया किराम ये नूर लेकर दुनिया में तशरीफ़ लाए और उन्होंने लोगों में इसे तक़्सीम किया। उनकी सोहबत में बैठने वालों ने ये इल्मी फ़ैज़ पाया और फिर ये इसको आगे लोगों तक पहुँचाया। अंबिया किराम की ये इल्मी मीरास चलते चलते आज भी इन मदरसों के ज़रिए से उम्मत को पहुँच रही है। मौल्लिमीन हज़रात पढ़ाते हैं और तुलबा पढ़ते हैं। उनका पूरा साल इसी

तालीम व तअल्लुम में गुज़रता है।

साल की इब्तिदा में इफ़्तिताह बुख़ारी के नाम से एक तक़रीब होती है ताके मुताल्लिक़ीन और मुतवस्सिलीन और इदारे के साथ मुहब्बत और ताल्लुक़ रखने वाले सब लोग इकठ्ठे हों और अपनी दुआओं से तालीमी साल का आगाज़ करें।

तालिबे इल्म की शान

ये तयशुदा बात है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जिस आदमी को इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं वो अल्लाह का चुना हुआ बंदा होता है। इर्शादे बारी तआला है :

﴿ثُمَّ اَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا. (سورة فاطر:٣٢)﴾

फिर हम ने किताब का वारिस अपने बंदों में से उनको बनाया जो हमारे चुने हुए बंदे थे।

ये तुलबा जो इस वक़्त बुख़ारी शरीफ़ पढ़ना चाह रहे हैं या वो तुलबा जो दूसरे दर्जो में पढ़ रहे हैं, ये सब के सब एक ख़ास मक़सद के तहत ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ इनका बड़ा मक़ाम है। ये वो दौलत हासिल कर रहे हैं जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने अंबिया किराम के ज़रिए से लोगों तक पहुँचाई। ये सच्चों की निस्बत है और इसके हासिल करने वाले भी सच्चे बन जाते हैं।

सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाते थे के अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से अफ़ज़ल कोई नहीं होता। बाज़ रिवायतों में आया है के जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त किसी आम बंदे से ख़ुश होते हैं तो उसके लिए जन्नत में घर बना देते हैं और जब तालिब इल्म से ख़ुश होते हैं तो उसके लिए जन्नत में एक शहर आबाद फ़रमा

देते हैं। फ़रिश्ते भी तुलबा से मुहब्बत करते हैं। यहाँ तक के जब वो इल्म हासिल करने के लिए चलते हैं तो वो उनके पाँव के नीचे अपने पर बिछाते हैं।

हक़ीक़ी तालिब इल्म कौन

तालिब इल्म उस नौजवान और बूढ़े को कहते हैं जिसके अंदर उस नूर की निस्बत को हासिल करने की प्यास मौजूद हो। आप ने स्फ़न्ज को देखा होगा। जब भी आप उसको पानी में डालें तो वो पूरे पानी को चूस लेता है और उसकी नस-नस में पानी पहुँच जाता है। इल्म चूस इंसान को तालिब इल्म कहते हैं। वो अपने उस्तादों की ख़िदमत में इस तरह बैठता है के जो लफ़्ज़ उनकी ज़बान से निकलता है वो उसकी याददाश्त का हिस्सा बनता चला जाता है। जैसे प्यासा इंसान गर्मी के मौसम में कितनी रग़बत और तलब के साथ ठंडा पानी पीता है। तालिब इल्म उससे ज़्यादा रग़बत और तलब के साथ अपने उस्ताद की बातों को सुनता है। ये मारे बांधे का काम नहीं है। पंजाबी में कहते हैं, "ख़ुशी दियाँ वंगाँ यानी ये तो ख़ुशी की बात है।

इल्म की शमा के चारों तरफ़ परवानों का झुरमट

इस नेमत को हासिल करने के लिए इंसान दिन व रात एक कर देता है। इसलिए तालिब इल्म की नज़र में दिन व रात का फ़र्क़ ख़त्म हो चुका होता है। हज़रत मदनी रह० जिन दिनों फ़िरंगी के ख़िलाफ़ तहरीक चला रहे थे उन दिनों अवाम में काम करना होता था। लिहाज़ा आप रात को बड़ी देर के बाद दारुल-उलूम वापस तशरीफ़ लाते थे। मगर तुलबा ऐसे थे के उन्होंने दरबान से कहा होता था के हज़रत का मामूल है के वो जब भी तशरीफ़ लाते हैं वुज़ू करके मस्जिद में नफ़्ल अदा करते हैं। जैसे वो तशरीफ़ लाएं

हमें जगा देना। इधर हज़रत नफ़्ल पढ़कर फ़ारिग़ होते और हदीस पाक की पूरी क्लास आपके पीछे किताबें लेकर मौजूद होती थी। उनके हाँ वक़्त का ताय्युन नहीं था। जब भी शेख़ तशरीफ़ ले आते थे तुलबा उसी वक़्त परवानों की तरह शमा के गिर्द जमा हो जाते थे।

इल्मी प्यास का लाजवाब इज़्हार

एक मर्तबा इब्ने तैमिया रह० को वक़्त के हाकिम ने क़ैद कर दिया। चंद दिन गुज़रे तो एक नौजवान हाकिमे वक़्त के दरबार में आया। वो ज़ार व क़तार रो रहा था। जिसने भी उसके चेहरे को देखा उसने उसके चेहरे पर इल्म का नूर महसूस किया। उसका चेहरा इस आयत का मिस्दाक़ बन रहा था :

﴿سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِم مِّنْ أَثَرِ السُّجُودِ. (الفتح:٢٩)﴾

उनकी निशानी ये है के उनके चेहरों पर सज्दों के असरात हैं।

वहाँ जितने भी लोग मौजूद थे, उनका जी चाहा के ये नौजवान जो भी सवाल लेकर आया है पूरा कर दिया जाए। हाकिमे वक़्त ने भी उसकी कैफ़ियत को महसूस किया। उसने कहा, ऐ नौजवान! तुम क्यों रोते हो, कोई तकलीफ़ है तो हम दूर कर देंगे। अगर कुछ चाहते हो तो हम तुम को दे देंगे। जब हाकिमे वक़्त ने ये बात कही तो उस नौजवान ने रोकर कहा के मैं ये दरख़्वास्त लेकर आया हूँ के आप मुझे जेल भेज दीजिए। अब ये अजीब सी बात थी। लिहाज़ा हाकिमे वक़्त ये सुनकर बड़ा हैरान हुआ। उसने पूछा, भई! आप को जेल क्यों भेजें? उसने जवाब दिया :

"जनाब! आपने मेरे उस्ताद को जेल भेजा हुआ है जिसकी वजह से कितने ही दिनों से मेरे सबक़ नाग़ा हो रहे हैं। अगर आप

मुझे जेल भेजेंगे तो मैं जेल की मुशक्क़तें और दुश्वारियाँ तो बर्दाश्त कर लूँगा मगर अपने उस्ताद से सबक़ तो पढ़ लिया करूंगा।"

इल्म के चाहने वाले ऐसे भी थे

शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपुरी रह० फ़रमाते हैं के जब मैं दारुलउलूम मे हाज़िर हुआ तो उस वक़्त क्लास में दाख़िले बंद हो चुके थे। नाज़िम तालीमात ने इंकार कर दिया के हम आपको दाख़िला नहीं दे सकते। मैंने उनसे गुज़ारिश की हज़रत आख़िर क्या वजह है। उन्होंने फ़रमाया के असल बात ये है के हमारे दारुलउलूम में मतबख़ नहीं है और न ही कोई तबाख़ है बल्के बस्ती वालों ने एक एक दो तालिब इल्मों का खाना अपने ज़िम्मे लिया है इसलिए जितने तुलबा का खाना घरों से पक कर आता है उतने तालिब इल्मों को दाख़िला देते हैं और बक़िया से माज़रत कर लेते हैं। अब कोई एक घर भी ऐसा नहीं है जो मज़ीद एक तालिब इल्म का खाना पकाने की हिम्मत रखता हो। हज़रत! फ़रमाते हैं के मैंने कहा के अगर खाने की ज़िम्मेदारी मेरी अपनी हो तो क्या पढ़ने के लिए आप मुझे क्लास में बैठने की इजाज़त दे सकते हैं। उन्होंने फ़रमाया ठीक है इस तरह उनको शर्त के साथ दाख़िला मिल गया। हज़रत फ़रमाते हैं के मैं सारा दिन तलबा के साथ बैठकर पढ़ता रहा। रात को तकरार करता और जब तलबा सो जाते हैं तो मैं उस्ताद की इजाज़त के साथ दारुलउलूम से बाहर निकलता बस्ती में सब्ज़ी या फ्रुट की दुकाने थीं, उस वक़्त तो वे दुकानें बंद हो चुकी होती थीं। मैं उनके सामने जाता तो मुझे कहीं से आम के छिलके, कहीं से ख़रबूज़े के छिलके और कहीं केले के छिलके मिल जाते। मैं उन्हें वहाँ से

उठाकर लाता और धोकर साफ़ करता और फिर खा लेता। मेरे चौबीस घंटे का ये खाना होता था। मैंने पूरा साल छिलके खाकर गुज़ारा मगर अपना सबक़ नाग़ा न किया।

ये भी तुलबा थे। उनकी ज़िंदगियों को देखकर महसूस हाता है के जैसे किसी चीज़ के लिए कोई तरस रहा होता है। ये हज़रात इल्म के लिए तरस रहे होते थे। इसलिए उनकी नज़र में उस्तादों का दर्स सुनना दुनिया की हर चीज़ से क़ीमती होता था। उनके हाँ नाग़ा का सवाल ही पैदा नहीं होता था, इल्लाह माशाअल्लाह। ये तलब है जो इंसान के सीने को नूर से रौशन कर देती है। चुनाँचे हमारे उलमा ने तलब इल्म में वे मुजाहिदे किए और दुख उठाए के पूरी दुनिया की तारीख़ उसकी मिसालें पेश नहीं कर सकती।

इल्मी प्यास की उम्दा दलील

एक मुहद्दिस फ़रमाते हैं के मुझे एक हदीस का पता चला के फ़लाँ शख़्स को ये मालूम है। वो हदीस पाक मुझे भी मालूम थी मगर उनकी सनद आला थी। उनकी रिवायत में नबी अलैहिस्सलाम के थोड़े वास्ते थे। लिहाज़ा मैं भी अपनी सनद को बुलन्द करने के लिए नौ सौ मील से ज़्यादा का सफ़र करके उनके हाँ पहुँचा। उनसे हदीस पाक सुनी। और उसी वक़्त सामाने सफ़र लेकर अपने घर आ गया। एक हदीस पाक को सुनने के लिए कम व बेश एक हज़ार मील का सफ़र करना उनकी इल्मी प्यास की कितनी उम्दा दलील है। मुहद्दिसीन किराम हुसूले हदीस के लिए यों लंबे इल्मी सफ़र किया करते थे।

इमाम शाफ़ई रहमतुल्लाहि अलैहि की दरख़्वास्त

इमाम मुहम्मद रह० एक जगह दर्स दे रहे थे। वहाँ कुछ मील के फ़ासले पर एक बस्ती थी। वहाँ से भी लोग उनके पास हाज़िर

हुए और अर्ज़ किया के हज़रत! आप हमारे हाँ भी दर्स दिया करें। उन्होंने फ़रमाया : मेरे पास वक़्त बहुत कम होता है। उन्होंने कहा, हज़रत! हम एक सवारी का बंदोबस्त कर देते हैं, आप दर्स देते ही उस सवारी पर सवार हों और हमारी बस्ती में आएं और वहाँ दर्स देकर जल्दी वापस आ जाएं। इस तरह पैदल आने जाने में जो वक़्त लगेगा वही दर्स में लग जाएगा। आपने क़ुबूल फ़रमाया लिया। जब आपने वो दर्स देना शुरू किया तो ये वे दिन थे जब इमाम शाफ़ई रह० उनकी ख़िदमत में पहुँचे हुए थे। उन्होंने भी अपनी दरख़्वास्त पेश करते हुए कहा, हज़रत! मुझे आपसे ये किताब पढ़नी है। हज़रत ने फ़रमाया, भई अब वक़्त कैसे फ़ारिग़ करेंगे? अब मुझे यहाँ भी दर्स देना होता है और वहाँ भी दर्स देना होता है। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत जब यहाँ से दर्स देने के बाद सवारी पर बैठकर अगली बस्ती की तरफ़ जाएंगे तो आप सवारी पर बैठे-बैठे दर्स दे दें। मैं सवारी के साथ दौड़ता भी रहूँगा और आपसे इल्म भी सीखता रहूँगा। तारीख़े इंसानियत तलबे इल्म की इससे आला मिसाल पेश नहीं कर सकती। ये दीने इस्लाम का हुस्न व जमाल है।

इल्मी ग़ैरत का हैरानकुन वाक़िआ

तालिब इल्मी के रास्ते में हमारे अकाबिरीन को मुजाहिदे भी करने पड़े। उस वक़्त की मुशक़्क़तें उठानी पड़ीं। ये हर्गिज़ नहीं था के उनको सहूलतें मैयस्सर थीं। मिसाल के तौर पर सुफ़ियान सौरी रह० अपने दो साथियों के साथ पढ़ने के लिए एक मुहद्दिस की ख़िदमत में पहुँचे। फ़रमाते हैं के हम तीनों के लिए गुज़र अवक़ात के लिए सत्तू वग़ैरह थे। हम उसी को थोड़ा थोड़ा करके इस्तेमाल करते रहे। हमारे सबक़ पूरा होने में अभी तीन दिन

बाक़ी थे के हमारे पास खाने की चीज़ें ख़त्म हो गयीं। हमने आपस में मशवरा किया के भई दो आदमी तो उस्ताद दर्स सुनने के लिए जाया करें और तीसरा मज़दूरी वग़ैरह करके खाने का बंदोबस्त करे ताके बक़िया दिनों के लिए खाने का कुछ इंतिज़ाम हो जाए। एक एक दिन सबको काम करना पड़ेगा और यूँ तीन दिन गुज़र जाएंगे। फ़रमाते हैं के बाक़ी दो तो दर्स सुनने के लिए चले गए और जिस आदमी को पहले दिन मज़दूरी करना थी, वो मस्जिद में चला गया। सोचने लगा के मख़्लूक़ की मज़दूरी करके मुझे क्या मिलेगा? क्यों न अपने मालिक की मज़दूरी कर लूँ, वास्ते से लेने के बजाए बिना वास्ता क्यों न हासिल करूं। लिहाज़ा उन्होंने नफ़्लें पढ़नी शुरू कर दीं। वे नफ़्लें पढ़ते रहे, दुआएं मांगते रहे। वो सारा दिन मस्जिद में गुज़ारकर शाम को वापस आ गए। बाक़ी दोस्तों ने पूछा, बताओ भई! कुछ इंतिज़ाम हुआ? कहने लगे जनाब! मैंने सारा दिन एक ऐसे मालिक की मज़दूरी की है जो पूरा पूरा हिसाब चुकाता है। इसलिए वो दे देगा। वे मुतमइन हो गए दूसरे दिन दूसरे की बारी थी। अपनी सोच के तहत उन्होंने भी यही रास्ता अपनाया। वो भी मस्जिद में सारा दिन अल्लाह की इबादत करते रहे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआएं मांगते रहे। शाम को दोस्तों ने पूछा, सुनाएं! कोई इंतिज़ाम हुआ? कहने लगे के मैंने एक ऐसे मालिक की मज़दूरी की है जो किसी का कर्ज़ नहीं रहने देता बल्के पूरा पूरा अदा कर देता है और उसका वादा है के तुम्हारा अज्र मिलकर रहेगा। तीसरे दिन तीसरे ने भी यही अमल किया। अल्लाह की शान के तीसरे दिन के बाद हाकिमे वक़्त रात को सोया हुआ था। उसने ख़्वाब में एक बहुत बड़ी बला देखी और उस बला ने अपना पंजा उसे मारने के लिए उठाया और कहा, सुफ़ियान सौरी रह० और उनके साथियों

का ख़्याल करो। ये मंज़र देखते ही उसकी आँख खुल गई। उसने हर तरफ़ आदमी दौड़ा दिए और कहा के पता करो सुफ़ियान कौन है? उसने हर एक को दिरहम व दीनार से भरी हुई थैलियाँ भी दे दीं और कहा ये तो इसी वक़्त उनको दे देना और बाद में जब मुझे इत्तिला करोगे तो मैं ख़ज़ाने का मुँह खोल दूंगा। इधर तालीम का दिन पूरा हुआ उधर पुलिस तलाश करते करते मस्जिद में पहुँची। पुलिस वालों ने पूछा यहाँ सुफ़ियान नामी कोई आदमी है? उन्होंने कहा के वक़्त के हाकिम को ये ख़्वाब आया है और उसने हमें भेजा है। सुफ़ियान सौरी रह० और उनके साथियों ने आपस में मशवरा किया के अब दो दरवाज़े हैं, एक मालिक का दरवाज़ा और एक हाकिमे वक़्त का दरवाज़ा। हमने जो इल्म पढ़ा है उसमें तो यही सीखा है के हमको मालिक से लेना है। लिहाज़ा हमारी इल्मी ग़ैरत गवारा नहीं करती के हम चलकर हाकिमे वक़्त के दरवाज़े पर जाएं। अल्लाहु अकबर! तीन दिन के भूखे थे मगर हाकिम वक़्त के पास जाना गवारा न किया बल्के उसी हालत में उन्होंने वापस अपने वतन का सफ़र मुकम्मल किया।

ये वे तुलबा थे जिनकी नज़र अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ज़ात पर रहती थी और इस इल्म को हासिल करने के लिए मुशक़्क़तें बर्दाश्त किया करते थे। फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से उनके लिए मदद व नुसरत भी आती थी।

इल्म के प्यासों की प्यास बुझना

दारुलउलूम देवबंद के इब्तिदाई ज़िम्मेदारों में हज़रत शाह रफ़िउद्दीन साहब रह० थे। वो एक सूफ़ी और ज़ाकिर शाग़िल बुज़ुर्ग थे। जब उन्होंने ज़िम्मेदारी संभाली तो एक दिन वो दारुलउलूम के कुँए पर वुज़ू करने के लिए तशरीफ़ ले गए। उस

वक़्त एक तालिब इल्म उनके पास आया। उसके पास प्याले में पतली सी दाल थी। उसने वो प्याला हज़रत को दिखाया और कहा, देखिए जी! आपकी निगरानी में दारुलउलूम में ऐसा सालन पक रहा है जिससे वुज़ू भी जाएज़ हो जाए। ये कहने के बाद प्याला उसके हाथ से गिरा और उलट गया।

वो लड़का तो भाग गया लेकिन जब उस्तादों को इत्तिला मिली तो उस पर बहुत ज़्यादा शर्मिन्दा हुए। के एक तालिब इल्म को ये हिम्मत कैसे हुई के उसने नाज़िम साहब के सामने ऐसी हरकत की। उस्ताद उनकी बुज़ुर्गी से वाक़िफ़ थे। लिहाज़ा वे आए और कहने लगे हज़रत! आप महसूस न करें, नादिम व शर्मिन्दा हैं के एक तालिब इल्म ने ऐसा किया है। हज़रत ने फ़रमाया : "नहीं, नहीं वो तो तालिब इल्म ही नहीं है।" अब उस्ताद कहते हैं के वो तालिब इल्म है और हज़रत फ़रमाते हैं के वो तालिब इल्म नहीं है। किसी ने कहा के रसोईघर से पता कर लो। वहाँ उसका नाम होगा। जब वहाँ से पता किया गया तो वाक़ई वहाँ भी उसका नाम था और वहाँ से बाक़ायदा खाना लिया करता था। ये मालूम करके वे फिर हज़रत के पास आए और कहने लगे, हज़रत! वो तालिब इल्म ही है, उसका नाम रसोईघर में भी लिखा हुआ है। फ़रमाने लगे नहीं, वो तालिब इल्म नहीं है। फिर किसी ने कहा क्लास के उस्ताद से पता कर लें। जब उस्ताद से पता चला तो उसका नाम तो वहाँ भी था मगर वो लड़का पढ़ने नहीं आता था बल्के किसी तालिब इल्म से राब्ता था और वो तालिब इल्म उसकी हाज़िरी लगवा देता था। वो सिर्फ़ खाना खाने के लिए रसाई में आता था और खाना खाकर वापस चला जाता।

जब उस्तादों को हक़ीक़त का पता चला तो वे सोच में पड़ गए के शाह साहब तो कभी-कभी आते हैं और हम हर वक़्त यहाँ

होते हैं। हमें तो उसकी पहचान न हुई और शाह साहब नें उसे पहचान लिया। वे और ज़्यादा शर्मिन्दगी महसूस करने लगे। लिहाज़ा उन्होंने हज़रत से माफ़ी मांगी और अर्ज़ किया, हज़रत! हमें ये समझ में नहीं आई के आप तो तलबा से इतना ताल्लुक़ भी नहीं रखते फिर आपको कैसे पता चला के वो तालिब इल्म है या नहीं? इस पर उन्होंने जवाब दिया : "जब मैं यहाँ का निगरां बना तो एक दफ़ा मैंने ख़्वाब में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा के आप इसी कुँए के ऊपर खड़े हैं। और आपके हाथों में पानी का डोल है, तालिब इल्म लाइन बनाकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर होते हैं और आप सबके डोल में पानी भरते जाते हैं। मैंने उस वक़्त मौजूद तमाम तलबा को देखा लेकिन उसकी शक्ल नहीं देखी थी। इस तरह मैं पहचान गया के वो दारुलउलूम का तालिब इल्म नहीं है।"

फिर एक ऐसा वक़्त आया के जब दारुलउलूम के तमाम उस्ताद और तुलबा, यहाँ तक के काम करने वाले दरबान दर्जे के लोग भी साहिबे निस्बत यानी औलिया अल्लाह हुआ करते थे। इसकी क्या वजह थी? वजह ये थी के वे तलबे इल्म में सच्चे थे। उनके दिलों में इल्म हासिल करने का इतना जज़्बा और शौक़ होता था के वो दिन व रात इसी काम में मुनहमिक रहते थे।

इमाम शाफ़ई रह० इमाम मालिक रह० की ख़िदमत में

अल्लाह तआला ने हमारे असलाफ़ के दिल में इल्म हासिल करने की ऐसी सच्ची तड़प पैदा कर दी थी के जब कोई उस्ताद बात कह देते थे तो वो उसी वक़्त उसको अपनी याददाश्त का हिस्सा बना लिया करते थे। इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं के मैं मस्जिदे नबवी में इमाम मालिक रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ।

मैंने देखा के एक ऊँचे क़द के शख़्स ने बैठकर कहना शुरू कर दिया "क़ाला क़ाला रसूलल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम" तो समझ गया के यही वो शख़्स हैं जिनको इमाम मालिक कहते हैं। उस वक़्त इमाम मालिक रह० तुलबा को इमला करा रहे थे। सब लोग हदीस पाक को सुनकर लिख रहे थे। वो फ़रमाते हैं के मैं चूँके मुसाफ़िर था इसलिए मेरे पास कुछ नहीं था। क़रीब ही एक तिनका पड़ा था। मैंने वो उठाया और मैंने तिनके के साथ हथेली पर लिखना शुरू कर दिया ताके मुझे उनके साथ मुशाबिहत नसीब हो जाए क्योंके ﴿من تشبه بقوم فهو منهم﴾ यानी जो शख़्स किसी क़ौम की मुशाबिहत अख़्तियार करता है तो उन्हीं में शुमार होता है।

जब अगली नमाज़ का वक़्त हुआ तो इमाम साहब रह० ने दर्से हदीस रोका और तुलबा उठकर नमाज़ की तैयारी करने लगे। मैं वहीं बैठा रहा। जब हज़रत की नज़र मुझ पर पड़ी तो मुझे पास बुलाया और पूछा, भई! आप क्या कर रहे थे? मैंने कहा के मैं अपनी हथेली पर हदीस पाक लिख रहा था। उन्होंने फ़रमाया, मुझे दिखाओ। मैंने कहा, हज़रत! वो क़लम तो नहीं था, वो तो तिनका सा था। फ़रमाया, भई ये तो अदब के ख़िलाफ़ है। मैंने कहा, मैं ज़ाहिर में तो हथेली पर तिनका चला रहा था मगर हक़ीक़त में अपने दिल में ये मज़मून लिख रहा था। हज़रत रह० ने पूछा, क्या मतलब? मैंने कहा, हज़रत! आपने जो कुछ कहा, वो मुझे सब याद है। हज़रत ने फ़रमाया, मैंने एक सौ ज़्यादा हदीसें इमला करवाई हैं, उनमें से अगर तुम आधी भी सुना दो तो बड़ी आला बात है। फ़रमाने लगे के उन्होंने तो आधी कहा मगर मैंने पहले नबंर से हदीस पाक सनद और मतन के साथ सुनानी शुरू की। जितनी लिखवाई थीं वे सब की सब सनद के साथ याद थीं। लिहाज़ा मैंने सारी हदीसें उनको ज़बानी सुना दीं।

इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाहि अलैहि का मुजाहिदा

जो हज़रात मेहनत व मुजाहिदा के साथ तलबे इल्म में लगते हैं। उन पर अल्लाह तआला की रहमतों की बारिशें होती हैं और उन्हें अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से क़ुबूलियत नसीब हो जाती है। इन हज़रात ने इल्म के हासिल करने में ऐसे मुजाहिदे किए के उन्होंने अपनी ज़रूरियात को कम कर दिया था। आज तो बाज़ तुलबा ऐसे होते हैं जो अपनी ख़्वाहिशात को भी छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। इमाम बुख़ारी रह० ने बीस साल तक ये मामूल रखा वो चौबीस घंटों में मग़ज़ बादाम के सात दाने खा लेते थे और उन्हीं पर उनका पूरा दिन गुज़र जाता था। वो फ़रमाते हैं के मैंने हदीस की तलब में कूफ़ा के इतने चक्कर लगाए के वो मेरी गिनती से भी बाहर हो गए। अब आज देखिए के उनको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क्या शान अता फ़रमाई के आज बुख़ारी शरीफ़ के इफ़्तिताह की महफ़िल है। वो हज़रात इल्म हासिल करने के लिए तड़प रहे होते थे जिसकी वजह से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको इतनी अज़्मत अता फ़रमाया करते थे।

उलमा की इस्तिक़ामत को सलाम

ये वे लोग थे जिन्होंने अल्लाह तआला के क़ुरआन की और महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान की हिफ़ाज़त की। ये हिफ़ाज़त दो तरह से होती है :

1. याददशात के ज़रिए,
2. अपनी ज़िंदगी में लागू करने के ज़रिए

इन हज़रात ने शरिअत के अहकाम को अमली तौर पर अपने ऊपर लागू किया था। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

﴿وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن كِتَابِ اللَّهِ. (المائدة:٤٤)﴾

और दरवेश और उलमा इसिलए के वे निगरान ठहराए गए हैं अल्लाह की किताब पर।

रब वाले जिनको हम अल्लाह वाले कहते हैं। अहबार हब्र की जमा, इल्म वाले यानी उलमा और सुल्हा। उनकी ज़िम्मेदारी क्या है? ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की किताब की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। आपने देखा होगा के पुल की हिफ़ाज़त करने के लिए पुलिस होती है। जिस तरह पुलिस पुल की हिफ़ाज़त के लिए डेरे डाले हुए होती है इसी तरह उलमा क़ुरआन के मज़मून में दख़ल अंदाज़ी की इजाज़त नहीं देते। अगर कोई कोशिश करता भी है तो वे हक़ और बातिल को वाज़ेह कर देते हैं। ये उनकी ज़िम्मेदारी है।

ये चीज़ कब पैदा होती है? जब वे इस किताब को मज़बूती से पकड़ते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتَابَ بِقُوَّةٍ. (مريم:١٢)﴾

ऐ याह्या किताब को मज़बूती से पकड़ लो।

इसका का क्या मतलब है? क्या यही मतलब है के हाथों से मज़बूती से पकड़ लीजिए। नहीं बल्के इसका मतलब है के इसकी तालीमात को मज़बूती के साथ अपनी ज़िंदगी के साथ में लागू कर लीजिए। ये तमस्सुक बिल किताब है।

तमस्सुक बिल किताब व सुन्नत सिर्फ़ पढ़ने से नसीब नहीं होता। इसलिए जिसका अमल न हो उसके बारे में क़ुरआन मजीद ने कहा :

﴿كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا. (الجمعة:٥)﴾

जैसे मिसाल गधे की पीठ पर उठाए चलता है किताबें।

तो इल्मे नाफ़े होता है वो ऐसा इल्म होता है जिस पर इंसान का अमल होता है। इसीलिए मुफ़्ती शफ़ी रह० फ़रमाया करते थे के इल्म वो नूर है जिसको हासिल करने के बाद उस पर अमल किए बग़ैर चैन नहीं आता। इसलिए हमारे अकाबिरीन की ज़िंदगियों को देखें तो वे सब आपको अपने इल्म पर अमल करते हुए नज़र आएंगे। उनकी ज़िंदगियों में तक़्वा व परहेज़गारी, अख़्लाक़े हमीदा और तवाज़ो व इन्किसारी नज़र आएगी।

अज़ीज़ तुलबा! ये अहले हक़ का क़ाफ़िला है। इस क़ाफ़िले के असल इमाम अंबिया किराम थे। वे अल्लाह तआला के चुने हुए बंदे थे। उनके बाद उनकी सोहबत-याफ़्ता और फिर उनके बाद उनके सोहबत-याफ़्ता उलमा और सुल्हा। ये एक क़ाफ़िला है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की की रज़ा हासिल करने के लिए अपनी ज़िंदगी गुज़ारकर इस जहान से अगले जहान की तरफ़ जा रहा है। बहुत से लोग दुनिया में आए और इख़्लास भरी ज़िंदगी गुज़ारकर चले गए। आज भी इन मदरसों में ऐसे तुलबा और उलमा मौजूद हैं जो सिर्फ़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिए अपनी ज़िंदगियाँ इस दीन की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर चुके हैं। चुनाँचे हमारे अकाबिरीन में से किसी ने तीस साल, किसी ने पैंतीस साल और किसी ने चालीस साल तक हदीस पाक पढ़ाई। उन्होंने चटाइयों पर बैठना गवारा किया और जो रूखी सूखी मिली उसको खाकर सब्र शुक्र कर लिया। उन्होंने कभी भी हाकिमे वक़्त की तरफ़ नहीं उठाई बल्के उन्होंने ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का एहसान माना और इन्हीं मदरसों में रहकर हिफ़ाज़ते किताब को अपनी ज़िम्मेदारी समझा और इसकी हिफ़ाज़त करके दिखाई। इन हज़रात को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़ज़ल व कमाल अता किया था। मैं सलाम करता हूँ उन उलमा की इस्तिक़ामत को के जिन्होंने

ज़िंदगी में पेश आने वाली ये मुशक़्क़तें बर्दाश्त तो कीं मगर हुकूमत के दरवाज़े देखने के बजाए अपने रब के दरवाज़े को देखा और उसी पर अपनी नज़रें जमाए रखीं। ये कौन लोग थे?

﴿وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ. (الاعراف:١٧٠)﴾ यानी और वे लोग जो मज़बूती से पकड़े हुए हैं।

किताब को। उन्होंने जानें तो दे दीं मगर किताब व सुन्नत के ख़िलाफ़ अमल न किया। अगर उनकी दास्तानें पढ़नी हों तो तारीख़ उलमाए देवबंद पढ़ लीजिए। उसके पन्ने गवाही दे रहे हैं के इन हज़रात ने हिफ़ाज़ते दीन की ख़ातिर कितनी क़ुर्बानियाँ दीं।

तलबे इल्म में एक शहज़ादे का मुजाहिदा

हारून रशीद का एक बेटा था। वो इब्तिदाई जवानी से ही बड़ा नेकोकार था और परहेज़गार था। उसके दिल में आख़िरत की तैयारी का ग़म लग गया था। वो महल में रहते हुए भी सादा कपड़े पहनता और दस्तरख़्वान पर सूखी रोटी भिगोकर खा लेता था। उसको दुनिया की रंगीनियों से कोई वास्ता नहीं था। गोया वो एक दरवेश था। अब लोग बातें बनाते के ये पागल हो गया है। एक दिन बादशाह को कुछ लोगों ने बहुत ही गुस्सा दिलाया के आप इसका ख़्याल नहीं करते और उसको समझाते नहीं। लिहाज़ा आप इस पर ज़रा सख़्ती करें, सीधा हो जाएगा। उसने बच्चे को बुलाकर कहा के तुम्हारी वजह से मुझे अपने दोस्तों में ज़िल्लत उठानी पड़ती है। उसने कहा अब्बा जान! अगर मेरी वजह से आपको ज़िल्लत उठानी पड़ती है तो मुझे आप इजाज़त दीजिए। मैं इल्म हासिल करने के लिए पहले भी कहीं जाना चाह रहा था। अगर आप इजाज़त दें तो मैं वहाँ चला जाता हूँ। बादशाह ने गुस्से में आकर कह दिया के चले जाओ। उसने तैयारी

कर ली। अब बादशाह ने अपनी बीवी को बताया लेकिन उस वक़्त पानी सर से ऊपर गुज़र चुका था। बच्चे ने कहा के अब तो मैं नीयत कर चुका हूँ। लिहाज़ा अब मैं नहीं रुकूँगा जब उसकी माँ ने उसका पक्का इरादा देखा तो उसने उसे एक क़ुरआन मजीद दे दिया और एक अंगूठी दे दी और कहा, बेटा! ये दो चीज़ें अपने पास रखना। क़ुरआन मजीद की तिलावत करना और अगर तुम्हें कहीं ज़रूरत पड़े तो अंगूठी को इस्तेमाल में ले आना। बच्चे ने वे दोनों चीज़ें अपनी माँ से ले लीं और रुख़्सत हो गया। वो नौजवान इतना ख़ूबसूरत था के लोग उसके चेहरे को देखा करते थे। उसके सामने दुनिया की सब नेमतें मौजूद थीं। अगर वो चाहता तो अय्याशी में अपना वक़्त गुज़ारता। अगर वो चाहता तो महलों की सहूलत भरी ज़िंदगी गुज़ारता। मगर नहीं। उसके दिल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत थी। उसके दिल में आख़िरत का ख़ौफ़ था। उसके दिल में इल्म की तलब का शौक़ था।

उसने कहा मुझे इस दुनिया की ज़िंदगी की लज़्ज़तें नहीं लेनी। मुझे तो हमेशा की लज़्ज़तें हासिल करनी हैं। लिहाज़ा वो अपने महल को छोड़कर चल पड़ा। यूँ वक़्त के शहज़ादों ने इल्म को तलब करने के लिए महलों की ज़िंदगी को भी लात मार दी। अब अगर तलबा में से कोई किसी अमीर बाप का बेटा हो तो वो भी इस बात पर ग़रूर न करे के मैं इतने बड़े घर को छोड़कर आया हूँ। अरे इस रास्ते पर तो वक़्त के शहज़ादे भी चटाइयों पर बैठे नज़र आते हैं।

منت منہ کہ خدمت سلطانی ہمیں کنی
منت شناس ازو کہ بخدمت گزاشتت

ऐ दोस्त! तू बादशाह पर एहसान न जतला के तू उसकी ख़िदमत करता है। उसकी ख़िदमत करने वाले लाखों हैं। ये बादशाह का

तुझ पर एहसान है के उसने तुझे ख़िदमत के लिए क़ुबूल कर लिया।

वो महलों को छोड़कर एक दूर एक ऐसी बस्ती में पहुँचा जहाँ उलमा रहते थे। उसने नीयत ये की के मैं मस्जिद में एतिकाफ़ की नीयत से वक़्त गुज़ारूँगा। सिर्फ़ पढ़ने के लिए उस्ताद की ख़िदमत में जाऊँगा और उन पर बोझ न बनूँगा। उसने गुज़ारे के लिए एक तर्तीब बनाई के मैं हफ़्ते में एक दिन मजूदरी करूँगा और उसके बदले मैं इतने पैसे लूँगा जिनसे छः रोटियाँ मिल सकें। छः दिन के बाद में सातवें दिन फिर मज़दूरी कर लूँगा। चुनाँचे वो छः दिन उस्तादों के पास जाकर सबक़ पढ़ता था। सातवें दिन छुट्टी होती थी। वो उस दिन मज़दूरी करके अपने छः दिन का इंतिज़ाम कर लेता था।

एक आदमी कहता है के मैंने घर बनाना था। मैं मज़दूर को लेने के लिए मज़दूरों की जगह पर पहुँचा। मैंने वहाँ एक ख़ूबसूरत नौजवान को बैठे देखा। वो क़ुरआन मजीद की तिलावत कर रहा था। जब मैंने उसके चेहरे को देखा तो दिल में कहा ﴿مَا هٰذَا بَشَرًا اِنْ هٰذَا اِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ (يوسف:٣١)﴾ ये कोई आदमी नहीं, ये तो कोई फ़रिश्ता है। वो मज़दूर नहीं नज़र आता था बल्के वो देखने से शरीफ़ों का बेटा मालूम होता था। मैंने उससे पूछा के ऐ नौजवान! क्या आप भी यहाँ मज़दूरी करने के लिए आए हैं? उसने जवाब में कहा, चचाजान! हम तो दुनिया में पैदा ही मज़दूरी के लिए हुए हैं।

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ. (البلد:٤)﴾ तहक़ीक़ हमने इंसान को मशक़्क़त के लिए पैदा किया है।

मैंने कहा मज़दूरी करोगे। वो कहने लगा जी करूँगा। मगर मेरी दो शर्तें होंगी। मैंने पूछा कौन सी? वो कहने लगा, चचाजान!

मैं आपसे पूरे दिन की इतनी मज़दूरी लूँगा। न इससे ज़्यादा लूँगा न उससे कम लूँगा। ये वो मिक्दार थी जिससे छः रोटियाँ आ जाती थीं। मैंने कहा ठीक है। अब दूसरी शर्त बताइए। वो कहने लगा, चचाजान! जब भी नमाज़ का वक़्त होगा तो आप मुझे कुछ नहीं कहेंगे। मैं तसल्ली से नमाज़ पढ़ूँगा। वो मेरे मालिक से मुलाक़ात का वक़्त है। मैं उस वक़्त दख़ल अंदाज़ी बर्दाश्त नहीं करता। अगर ये शर्तें मंज़ूर हैं तो मैं मज़दूरी के लिए हाज़िर हूँ।

वो कहने लगा के मैं उसको ले आया। शाम को देखा तो उस अकेले ने कई आदमियों के बराबर काम किया था। मैं बड़ा हैरान हुआ। मैंने उसका काम देखकर उसको ज़्यादा मज़दूरी देना चाही मगर उसने कहा चचाजान! मैंने कहा नहीं था के मैं ज़्यादा भी नहीं लूँगा और कम भी नहीं लूँगा। चुनाँचे उसने तयशुदा मज़दूरी ले ली और चला गया। मैंने नीयत कर ली के अगले दिन उसी को लाऊँगा।

जब मैं अगले दिन पहुँचा तो वो मज़दूरों की जगह पर न मिला। मैंने वहाँ पर मौजूद मज़दूरों से पूछा के वो तिलावत करने वाला मज़दूर कहाँ है? उन्होंने कहा, जनाब! वो तालिब इल्म है। वो क़ुरआन व हदीस पढ़ता है। हफ़्ते में एक दिन उस्ताद छुट्टी करते हैं। उस दिन वो मज़दूरी करके अपने छः दिनों के खाने का इंतिज़ाम करता है। क्योंके वो मस्जिद में एतिकाफ़ की नीयत से रहता है। वो किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता। मैंने कहा, अच्छा! मै। एक हफ़्ते इंतिज़ार कर लेता हूँ।

जब मैं अगले हफ़्ते उसी दिन पहुँचा तो मैंने देखा के वो नौजवान फिर बैठा हुआ था। कहने लगे के मैं उसे अपने घर ले आया मगर मैंने नीयत की के मैं देखूँगा के उस नौजवान के पास क्या हुनर है के जिसकी वजह से ये थोड़े वक़्त में ज़्यादा आदमियों

के बराबर काम कर लेता है। चुनाँचे मैंने छुपकर देखा तो एक अजीब मंज़र था। लोगों को तो एक ईंट रखनें में वक़्त लगता है। ईंट रखो फिर सीधा करो और फिर जमाओ। उसको मैंने देखा के वो गारा डालकर ईंट रखता जाता है और वो बिल्कुल सीधी चढ़ जाती थीं। मैंने कहा के इस बंदे के साथ वाक़ई अल्लाह तआला की मदद है। लिहाज़ा अब मैं अपना मकान उसी से बनवाऊँगा।

फ़रमाते हैं के जब मैं अगले हफ़्ते उसे लेने गया तो उसको फिर मौजूद न पाया। मैंने मज़दूरों से पूछा, भई! वो मज़दूर कहाँ है? उन्होंने जवाब दिया, जनाब! वो बीमार है और वो मस्जिद में ही लेटा हुआ है। मैं मस्जिद में चला गया। मैंने देखा के वो सर के नीचे ईंट रखकर चटाई के ऊपर लेटा हुआ है। और उसे इतना शदीद बुख़ार है के उसकी शिद्दत की वजह से उसका जिस्म सुर्ख़ और गर्म है। मै। उसके पास बैठ गया और मैंने मुहब्बत से उसके सर के नीचे से ईंट हाटा दी और उसके सर को अपनी गोद में डाल दिया। उसके बाद मैंने उससे कहना शुरू कर दिया, ऐ नौजवान! तू मुझे पैग़ाम भेज देता। मैं तेरे लिए दवाई का बंदोबस्त कर देता। जब मैंने ये कहा तो उसने जवाब दिया, चचाजान! जिस तबीब ने शिफ़ा देनी थी उसी ने तो मुझे बीमार किया है। मैं उसका जवाब सुनकर हैरान हुआ। फिर मैंने कहा, हम आपके लिए अच्छे ठिकाने का बंदोबसत करते हैं। उसने कहा, नहीं, मैं वो मुसाफ़िर हूँ के जिसकी मंज़िल क़रीब हैं। मगर मेरे पास तोशा थोड़ा है। मैंने उससे पूछा, आप क्या कह रहे हैं? वो कहने लगा, चचाजान! मेरा वजदान बताता है के मेरा वक़्त थोड़ा रह गया है। अब मैं आपसे एक दरख़्वासत करता हूँ के मेरे पास एक अमानत है वो आप मेरे बाद पहुँचा दीजिएगा। मैंने पूछा, कौन सी? कहने लगा, ये क़ुरआन मजीद है और ये अंगूठी है। ये

वक़्त के बादशाह को दे देना। उसके बाद अल्लाह तआला से मुनाजात करनी शुरू कर दी। वो मुनाजात में कहने लगा :

"ऐ मालिक! तू जानता है के मैंने महल्लात के ऐश व आराम की ज़िंदगी पर लात मारी और मैं तेरी तलब में इस जगह पर हाज़िर हुआ। मैंने तेरी ख़ातिर मुशक़्क़तें बर्दाश्त कीं। अब तेरे दरबार में मेरी हाज़िरी का वक़्त है। मैं इस बात से डरता हूँ के कहीं तू भी मुझे रद्द न कर दे। तेरे दर के सिवा मेरे लिए तो कोई दूसरा दर नहीं। ऐ मालिक! मेरे ऊपर रहम फ़रमाना। मैं वो मुसाफ़िर हूँ जिसका सफ़र लंबा है और उसके पास तोशा थोड़ा है।"

उसने ऐसी-ऐसी बातें कीं के मेरी आँखों में आँसू आ गए। उसी दौरान उसने कलिमा पढ़ा और उसने जान जाने आफ़रीन के सुपुर्द कर दी। वो कहने लगा के तब मुझे पता चला के जिस शहज़ादे की बातें होती थीं ये वही शहज़ादा था और इल्म हासिल करने के लिए मुशक़्क़तें बर्दाश्त कर रहा था, अल्लाहु अकबर।

वो कहते हैं के मैंने उसे नौजवान शहज़ादे को नहला कफ़नाकर दफ़न कर दिया और फिर मैं हारून रशीद के पास गया उस वक़्त उसकी सवारी गुज़र रही थी। मैंने उसे कहा, ऐ अमीरुल मोनिनीन! आपको नबी अलैहिस्सलाम से क़राबतदारी का वास्ता, आप मेरी एक बात सुन लीजिए। उसने सवारी रोकी तो मैंने क़ुरआन मजीद और अंगूठी दिखा दी। देखते ही उसके चेहरे का रंग बदल गया। फिर उसने कहा अच्छा महल में आ जाओ। जब मैं उसके पास महल में पहुँचा तो वो कहने लगा, ऐ अजनबी! मुझे लगता है के तू मेरे लिए कोई ग़म की ख़बर लाया है। बता मेरे बेटे के साथ क्या हुआ?

मैंने उसे तफ़्सीली वाक़िआ सुनाया के वो छः दिन इल्म हासिल करता था और सातवें दिन मज़दूरी करता था। वो मशक़्क़त तो उठाता था मगर किसी के सामने हाथ नहीं फैलाता था। और इस हाल में के मस्जिद की चटाई उसके नीचे थी और ईंट का सरहाना बना हुआ था उसने कलिमा पढ़ा और और अल्लाह तआला के हुज़ूर पहुँच गया।

जब हारून रशीद ने ये बातें सुनीं तो उसकी आँखों से आँसू आ गए और वो कहने लगा मेरे बेटे! तू उम्र में छोटा था लेकिन तूने वो बात समझ ली जो तेरे बूढ़े बाप के समझ में न आ सकी।

यही वो लोग थे जिनको क़ियामत के दिन इस किताब को मज़बूती से थामने वाला कहकर उठाया जाएगा। यही वो लोग हैं जिनकी ज़िंदगी गवाही देती थी के वाक़ई उनके दिल में सच्ची तलब थी। दरहक़ीक़त तालिब इल्म वही होते हैं जो दिलों में ये अहद कर चुके होते हैं के अब हमने अपनी ज़िंदगी क़ाललल्लाहू और क़ाला रसूल के लिए वक़्फ़ कर दी है। उनको उससे क्या ग़रज़ के हमें खाने को क्या मिलता है। रहने की जगह कहाँ मिलती है बल्के उनके नज़दीक ये चीज़ें आरज़ी बन जाती हैं और मक़सदे असली बन जाता है। उनके नज़दीक एक असल चीज़ इल्म हासिल करना है। ये हज़रात दिन रात चौबीस घंटे मुस्तइद और तैयार होते हैं।

अज़ीज़ तुलबा! जो आज बुख़ारी शरीफ़ की इब्तिदा कर रहे हैं या कर चुके हैं। आपकी ख़िदमत में गुज़ारिश है के ये आपकी तालीम का उमूमी तौर पर आख़िरी साल कहा जाता है। अब इस साल में उन अकाबिर की मिसालों को सामने रखें और इसी शौक़ और जज़्बे के साथ इल्म हासिल करें और उस पर अमल करते

रहें। फिर देखें के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमतें और बरकतें कैसे उतरती हैं। रब्बे करीम हमें भी इन तुलबा की बरकतों के सदक़े अपनी रहमतों से नवाज़े और हमारे सीनों को इलम के नूर से मुनव्वर फ़रमाए।

अल्लाह के वली तुलबा की ख़िदमत में

इन तुलबा का अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हाँ बड़ा मक़ाम होता है। हज़तर ख़्वाजा बाक़ी बिल्लाह रह० जो हज़रत मुजद्दिद अलफ़सानी रह० के पीर व मुर्शिद हैं। उनकी एक बात अभी ज़हन में आई है। वो इस मज़मून से ही मुताल्लिक़ है। इसलिए वो भी आप हज़रात की ख़िदमत में अर्ज़ कर देता हूँ। एक बार ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह के सामने ही किसी मुरीद ने कहा जी हमारे शेख़ तो ऐसे हैं जिनको अल्लाह तआला ने ऐसे ऐसे मुरीदीन अता किए और ये मुक़ामात अता किए हैं और हज़रत इस पर ख़ामोश रहे। अब इतनी ख़ामोशी पर अल्लाह तआला की तरफ़ से उनके ऊपर आज़माइश आ गई।

﴿حسنات الابرار سيئات المقربين.﴾ आम नेकों की नेकियाँ मुक़र्रिबीन के हक़ में बुराई का दर्जा रखती है। जी हाँ! जब बड़ों के साथ गहरा ताल्लुक़ होता है तो फिर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के नाज़ भी ज़्यादा होते हैं। जी हाँ! ये भी ख़ुदपसंदी में शामिल है के दूसरे ने तारीफ़ की और आप ख़ामोश रहे, उसे रोका क्यों नहीं। लिहाज़ा आज़माइश के तौर पर क़ब्ज़ की कैफ़ियत आ गई। सब कैफ़ियतें ख़त्म हो गयीं जिसकी वजह से आप कई दिन रोते रहे। आपने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ मांगी के ऐ मेरे मालिक! मेरी किस ग़लती की वजह से ये कैफ़ियतें बंद हो गयीं, आप मुझ पर खोल दीजिए। आख़िर आपको ख़्वाब में बताया गया के ये इस

वजह से कैफ़ियत पेश आई है और अब इसका हल ये है के आपके क़रीब मदरसे में छोटे-छोटे बच्चे अल्लाह का क़ुरआन पढ़ते हैं, आप जाएं और तलबा से दुआ करवाएं, उनकी दुआ की बरकत से वे चीज़ें फिर आपको नसीब हो जाएंगी। लिहाज़ा आप सुबह उठे और उस मदरसे में गए। जब ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह वहाँ पहुँचे तो अदब की वजह से उस्ताद भी खड़े हो गए और शागिर्द भी खड़े हो गए के ख़्वाजा साहब तशरीफ़ लाए हैं। ख़्वाजा साहब की आँखों में आँसू आ गए और फ़रमाने लगे के आप मुझे अल्लाह का बड़ा वली समझकर खड़े हो रहे हैं और मेरी हालत ये है के मुझे ख़्वाब में हुक्म हुआ है के मैं दुआ के लिए आप हज़रात के पास जाऊँ। लिहाज़ा अल्लाह तआला के हाँ आपका बड़ा मुक़ाम है, इसके बाद छोटे-छोटे बच्चों ने मिलकर दुआ की और अल्लाह तआला ने ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह रह० को वे कैफ़ियतें फिर वापस कर दीं, अल्लाहु अकबर।

परवरदिगार आलम आज की इस महफ़िल में हमारी हाज़िरी क़ुबूल फ़रमा ले और हमें भी अपने मक़्बूल बंदों में शामिल फ़रमा ले।

कौन मक़्बूल है कौन मरदूद है
बेख़बर! क्या ख़बर तुझको क्या कौन है
जब तुलेंगे अमल सबके मीज़ान पर
तब खुलेगा के खोटा खरा कौन है

हम वक़्त हमें इल्म हासिल करने की कोशिश करना चाहिए और अपने रब को मनाना है। परवरदिगार हमारी इन कोशिशों को क़ुबूल फ़रमा ले। (अमीन सुम्मा आमीन)

بسم الله الرحمن الرحيم

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلاً مِمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ○

अज़ान के फ़ज़ाइल

ये बयान रमज़ानुल मुबारक 1421 हि० मुताबिक़ दिसम्बर 2000 ई० को मस्जिद नूर लूसाका (ज़ाम्बिया) में दौराने एतिकाफ़ हुआ। मुख़ातबीन में उलमा, सुल्हा और अवामुन्नास की कसीर तादाद थी।

इक़्तिबास

परवरदिगार ने मौज़्ज़िन को हुक्म दिया के ऐ मेरे बंदे! तुम मेरी मख़्लूक़ को मेरे घर की तरफ़ बुलाओ और कहो के आओ उस परवरदिगार की तरफ़–

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत आग और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत हवा और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत पानी और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत ज़मीन और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

इसलिए जब मौज़्ज़िन अल्लाहु अकबर कहे तो फ़ौरन एहसास पैदा होना चाहिए के हमें किस परवरदिगार की तरफ़ बुलाया जा रहा है।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़्क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिदी मद्दज़िल्लहु

अज़ान के फ़ज़ाइल

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ○ (حم السجدہ:۳۳)

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

नमाज़ दीने इस्लाम के बुनियादी अरकान में से एक है और उसके लिए दिन में पाँच दफ़ा अज़ान की सूरत में पुकारा जाता है। आज इसी अज़ान से मुताल्लिक़ कुछ बातें आपकी ख़िदमत में पेश की जाएंगी।

अज़ान के लुग़वी मअनी है ऐलान करना। मुहावरे में अज़ान चंद मख़्सूस कलिमात का नाम है जिनके ज़रिए लोगों को नमाज़ के लिए बुलाया जाता है।

अज़ान की इब्तिदा

शुरू-शुरू में चूँके सहाबा किराम की तादाद थोड़ी थी। इसलिए बाज़माअत नमाज़ के लिए तयशुदा वक़्त पर जमा होने में कोई दिक़्क़त नहीं होती थी। अलबत्ता जब सहाबा किराम की तादाद बढ़कर गई तो वक़्त मुअय्यना पर लोगों को बाजमाअत नमाज़ के

लिए बुलाने के एहतिमाम की ज़रूरत पेश आई। चुनाँचे नबी अलैहिस्सलाम इस सिलसिले में फ़िक्रमंद थे। इसी फ़िक्र के तहत सहाबा किराम से मशवरा किया के नमाज़ के लिए लोगों को कैसे जमा किया जाए? किसी ने कहा के नमाज़ के वक़्त एक झंडा बुलन्द कर दिया जाए जो इसको देखेगा वो दूसरे को ख़बर देगा। लेकिन ये तजवीज़ आपको पसन्द न आई। किसी ने कहा एक नरसिंघा बनवा लीजिए जैसा के यहूदियों के यहाँ होता है। आपने इसको भी पसन्द न फ़रमाया के ये तो यहूदियों का तरीक़ा है। फिर आपके सामने नाक़ूस का ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया के ये नसारा का तरीक़ा। इसी ग़ौर व फ़िक्र में मज्लिस ख़त्म हुई। अब्दुल्लाह बिन ज़ैद एक सहाबी हैं। वो घर वापस आए लेकिन वो उस फ़िक्र में रहे के जिसमें रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे। उनकी इस फ़िक्र की वजह से ख़्वाब में उन्हें अजत्रन सिखा दी गई। रावी कहते हैं के अगले दिन सुबह को उन्होंने नबी अलैहिस्सलाम को ख़्वाब से बाख़बर किया और कहा या रसूलुल्लाह! मैं ख़्वाब और बेदारी की हालत था। एक शख़्स आया और उसने मुझे अज़ान सिखा दी। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब इससे पहले अज़ान को ख़्वाब में देख चुके थे मगर वो छुपाए रहे और अब्दुल्लाह बिन ज़ैद के बीस दिन बाद नबी अलैहिस्सलाम के सामने बयान किया। आपने पूछा तुम्हें बयान करने से किस चीज़ ने रोके रखा था? जवाब दिया के अब्दुल्लाह ने मुझसे पहले ख़्वाब बयान कर दिया। इसलिए बाद में बयान करने में मुझे शर्म महसूस हुई। तब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ बिलाल! उठो और जिस तरह अब्दुल्लाह बिन ज़ैद बताते जाएं तुम उसी तरह करते जाओ। लिहाज़ा हज़रत बिलाल ने अज़ान दी। यों अज़ान की इब्तिदा हुई।

बारगाहे नुबुव्वत के चार मुअज़्ज़िन

बारगाहे नुबुव्वत में चार हज़रात ने मुअज़्ज़िन होने का रुत्बा पाया :

1. एक हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु थे। उनके बारे में बहुत सी बातें मारूफ़ हैं।
2. दूसरे हज़रत अबू महज़ूरा रज़ियल्लाहु अन्हु थें एक मर्तबा लड़कपन की उम्र में हज़रत बिलाल की अज़ान की नक़ल उतारकर लड़कों को हँसा रहे थे। नबी अलैहिस्सलाम उनके क़रीब से गुज़रे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू महज़ूरा रज़ियल्लाहु अन्हु को पास बुलाया। छोटे बच्चे तो डर के मारे भाग और ये खड़े रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़रीब आकर उनके बालों को पकड़ लिया और फ़रमाया अबू महज़ूरा! तू जो कह रहा था अब फिर कह। उन्होंने पहले तो थोड़ी सी झिझक की लेकिन जब देखा के बाल पकड़े हुए हैं और कह रहे हैं तो उन्होंने अज़ान के अलफ़ाज़ कहने शुरू कर दिए। जब उन्होंने अज़ान मुकम्मल की ली तो नबी अलैहिस्सलाम ने वो बाल छोड़े और फ़रमाया, जाओ। लेकिन वो अरज़ करने लगे ऐ अल्लाह के नबी! अब मैं कहाँ जाऊँ, जहाँ आप जाएंगे अबू महज़ूरा भी वहीं जाएगा, सुब्हानअल्लाह।

यहाँ से उलमा ने एक मसअला निकाला के अगर कोई काफ़िर अपने इरादे से अज़ान दे दे तो उसके मुसलमान होने का हुक्म जारी कर दिया जाएगा। उलमा किराम इसी तरह क़ुरआन व हदीस की बातों से मसअले निकालते हैं। इसी को तफ़क़्क़ोह कहते हैं। याद रखें के फ़ुक़्हा मसाइल के जवाब

बनाते नहीं बल्के मसाइल के जवाब बताते हैं। बनाना तो उस चीज़ को पड़ता है जो पहले से मौजूद न हो। क़ुरआन व हदीस के अंदर पहले से ही मसाइल के जवाब मौजूद होते हैं। फ़ुक़्हा अवाम के अंदर मोतियों की तरह लिपटे हुए होते हैं। और फ़ुक़्हाए उम्मत ग़ोता लगाकर उन मोतियों को निकाल देते हैं। इसीलिए इब्ने दाऊद रह० ने कहा के उम्मत पर ये बात फ़र्ज़ है के वो अपनी नमाज़ों में इमामे आज़म अबूहनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि के लिए दुआ किया करे क्योंके उन्होंने अपनी ज़िंदगी में उसूल फ़िक़्ह को मुताइय्यन करके और छः लाख मसाइल को इकठ्ठा करके उम्मत के लिए अमल का रास्ता आसान कर दिया।

हज़रत अबू महज़ूरा की मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये आलम था के जिन बालों को नबी अलैहिस्सलाम ने पकड़ा था ये उन बालों को कटवाया नहीं करते थे। वो फ़रमाते थे के इन बालों को मेरे महबूब ने थामा था। इसलिए ये यादगार हैं। लिहाज़ा मैं इनकी पूरी ज़िंदगी नहीं कटवाऊँगा।

3. बारगाहे नुबुव्वत के तीसरे मुअज़्ज़िन हज़रत सअद बिन क़रज़ रज़ियल्लाहु अन्हु थे।
4. चौथे मुअज़्ज़िन हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

अज़मते इलाही का प्रचार

अज़ान के ज़रिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की अज़मत बयान की जाती है। आप ग़ौर कीजिए के अज़ान में चार मर्तबा कहा गया है, अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर! अल्लाहु अकबर इसकी क्या वजह है?

इसके पीछे एक हिकमत है। उलमा ने लिखा है के ये काएनात चार अनासिर से मिलकर बनी है। आग, पानी, हवा और मिट्टी। आज के दौर में इनको अनासिर के बजाए अज्ज़ा कहना चाहिए। इन अज्ज़ा में हर-हर जुज़्व की अपनी ताक़त है।

1. आग की ताक़त

पहला जुज़्व आग है। उसकी अपनी ताक़त है। जब ये जंगलों में लगकर फैलती है तो फिर इंसान इसके सामने बेबस हो जाता है। मिसाल के तौर–

1. अमरीका के जंगलों में जब आग लगती है तो दो-दो महीने तक वो जलती रहती है और कोई उसे बुझा नहीं सकता।
2. हमारे एक दोस्त हवाई सफ़र कर रहे थे समुन्दर के ऊपर से गुज़रते हुए उन्होंने देखा के नीचे आग के बड़े-बड़े शोले थे। वो बड़े हैरान हुए के आग कहाँ से आ गई। उन्होंने स्टाफ़ से पूछा। स्टाफ़ ने कहा के कैप्टन से पूछकर आते हैं। जब कैप्टन से पूछा तो उसने बताया के यहाँ के समुन्दर के अंदर तेल पैट्रोल का चश्मा है और उसके ऊपर उसकी गैस है। एक मर्तबा इस पर आसमानी बिजली गिरी और उसे आग लग गई। अब नीचे से पैट्रोल सप्लाई हो रहा है और ऊपर से आग लगी हुई है। उसे अब अल्लाह तआला ही बुझाएंगे क्योंके ये बंदों के बस की बात नहीं है।
3. हम लोग क़ज़ाक़िस्तान में सफ़र कर रहे थे। एक जगह से गुज़रते हुए हमने आग का एक शोला देखा जो हमारे हिसाब से कई फ़लाँग ऊँचा था। बस यों लगता था जैसे आग का एक सुतून है। हमने आग का इतना बड़ा सुतून अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखा था। मैंने साथ वाले से पूछा के ये

क्या माजरा है। उसने कहा जी यहाँ तेल का कुँआ खोदा गया था। जब बिल्कुल आख़िरी मरहले में था तो उसमें किसी टैक्निकल फ़ाल्ट की वजह से आग लग गई। अब नीचे से प्रेशर से तेल आ रहा है और उसको आग लगी हुई है। दो साल तक रशिया की सुपर पावर उसको बुझाने की कोशिश कर रही है। आख़िर दो साल के बाद थक हारकर उन्होंने पूरी दुनिया में ऐलान करवा दिया के अगर दुनिया का कोई मुल्क इस आग को बुझाने में मदद करेगा तो आग बुझने के बाद जितना तेल निकलेगा हम उसे आधा-आधा कर लेंगे। लेकिन आज तक दुनिया का कोई मुल्क इसको नहीं बुझा सका।

2. पानी की ताक़त

दूसरा जुज़्व पानी है। इसकी अपनी एक ताक़त है और इसमें अपनी मख़्लूक़ है। इसके अंदर बड़ी-बड़ी मछलियाँ होती है। न्युयार्क के एक मछली घर में लिखा हुआ है के एक व्हील मछली जब पैदा होती है तो हर दिन में उसका वज़न एक सौ किलोग्राम के हिसाब से बढ़ रहा होता है। समुन्दर में इतनी मछलियाँ होती हैं के कई मर्तबा छोटे जहाज़ मछलियों के ऊपर लंगरअंदाज़ हो जाते हैं। समुन्दर के अंदर अजीब ही जहान है। इस आजिज़ को समुन्दर के अंदर सैर करने का मौक़ा मिला। ऐसे लगता है के जितने अजूबे ज़मीन के ऊपर हैं शायद उससे ज़्यादा अजाइब ज़मीन के नीचे हैं। पानी की ताक़त भी अपनी है। मिसाल के तौर पर–

1. जब चाँद की चौदह तारीख़ होती है तो उस वक़्त समुन्दर में सबसे ज़्यादा हाई टाइड होता है। हाई टाइड का मतलब ये है के उस वक़्त समुन्दर की लहरें बहुत ज़्यादा ऊँची हो जाती हैं। उस वक़्त ये होता है के जब लहर आती है और जहाज़

उसके सामने होता है तो वो जहाज़ उसके साथ ही 45 से 60 दर्जे ज़ाविए पर झुक जाता है और जब लहर गुज़र जाती है तो फिर जहाज़ सीधा हो जाता है। गोया पूरा जहाज़ 45, 60 डिग्री के ज़ाविए पर मुसलसल झूल रहा होता है। उस वक़्त बड़े-बड़े जहाज़ भी रुक जाते हैं और लहरों के नार्मल होने का इंतिज़ार करते हैं।

2. साइंसदानों ने लिखा है के अगर हाईटाइड 60 के ज़ाविए से नीचे-नीचे रहे तो जहाज़ दोबारा सीधा हो जाता है ओर अगर 60 के ज़ाविए से ऊपर टाईड आ जाए तो जहाज़ उलट जाता है और जहाज़ में सवार तमाम अफ़राद समुन्दर के अंदर चले जाते हैं। जब हाई टाईड की वजह से जहाज़ यों कर रहा हो और चारों तरफ़ लहरें ही लहरें हों तो उस वक़्त काफ़िर और मुश्रिक भी दिल की गहराईयों के साथ बड़े ख़ुलूस से अल्लाह तआला ही को पुकारकर कहते हैं के अल्लाह! अब तो तू ही जान बचाने वाला है।

3. दुनिया कहती थी के हमने टाइटेनिक जहाज़ बना लिया है जो डूब ही नहीं सकता। जिसे वो नाक़ाबिले तसख़ीर कह रहे थे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने न सिर्फ़ उसे बीच समुन्दर में डुबोकर दिखाया बल्के दो टुकड़े भी कर दिया। यों अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त्त ने उनके दावों को तोड़कर रख दिया। तो समुन्दर की ताक़त का अंदाज़ा उस बंदे को होता है जिसको समुन्दर में सफ़र करने का मौक़ा मिला हो या उसने हाई टाईड का कुछ थोड़ा सा मंज़र देखा हो।

4. जब सैलाब आता हे तो शहरों के शहर बर्बाद हो जाते हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के वक़्त में जो सैलाब आया था उसने रूए ज़मीन के तमाम मकानात को ढा दिया था।

3. हवा की ताक़त

काएनात के अज्ज़ाए तर्कीबी में से तीसरा जुज़्व हवा है। उसकी भी अपनी एक ताक़त है। चंद मिसालों पर ग़ौर कीजिए :

1. क़ौमे आद पर हवा का अज़ाब आया था। ईमान वालों को महसूस था के खुशगवार हवा चल रही है और कुफ़्फ़ार के लिए वही हवा इतनी सख़्त थी के उनको इस तरह हवा के थपेड़े लगते थे के वो ज़मीन पर आकर गिरते थे। अगले दिन उनकी लाशें ज़मीन पर बिखरी पड़ी थीं। क़ुरआन अज़ीमुश्शान में है ﴿كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ. (الحاقة : ٧)﴾ (यानी जैसा के वो तने हैं खजूर के खोखले।) तफ़्सीरों में उनके क़द व क़ामत और ताक़त के बारे में लिखा है के उनके क़द साठ हाथ तक लंबे होते थे और उनकी छातियों की चौड़ाई तीस फ़ुट तक होती थी। क़ुरआन मजीद में आया है ﴿وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا. (الشعراء:١٤٩)﴾ वो पहाड़ों को खोदकर घर बनाते थे। और कहते थे ﴿مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً. (حم السجدہ:١٥)﴾ कौन है हमसे ज़्यादा ताक़त वाला। इससे पता चलता है के उनको अपनी ताक़त पर कितना नाज़ था। वाक़ई उनको अपनी ताक़त पर बड़ा मान था बल्के अल्लाह तआला भी इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ. (الفجر:٨)﴾

ऐसी ताक़तवर क़ौम फिर शहरों में पैदा नहीं की गई।

वो इतनी ताक़तवर क़ौम थी लेकिन जब अल्लाह तआला ने उन पर हवा का अज़ाब भेजा तो उनको यों उलट दिया जैसे खजूर के तने बिखरे हुए पड़े होते हैं। अल्लाह तआला एक और मक़ाम पर इर्शाद फ़रमाते हैं :

وَعَادًا وَّثَمُوْدَا وَاَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا م بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ۝ وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ

الْأَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا.(الفرقان:٣٨،٣٩)

और आद व समूद को और कुँए वालों को और उनके दर्मियान बहुत सी जमाअतों को। और सबको हम बयान कर दें मिसालें और सबको हमने ग़ारत करके हलाक कर दिया।

देखो कितना शाहाना कलाम है, अल्लाहु अकबर। फिर एक और जगह पर इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا.(مريم:٩٨)﴾

क्या तू आहट पाता है उनमें से किसी की या सुनता है उनकी भनक।

2. अब भी दुनिया की सबसे बड़ी साइंसी पावर में हवा के अज़ाब आते हैं। इनका नाम उन्होंने टोरेन्डो रखा हुआ है। ये टोरेन्डो क्या होता है। हवा कई सौ मील के दायरे में घूम रही होती है और इतनी सख़्त होती है के मकानों की छत को भी उड़ा के ले जाती है। एक मर्तबा अमरीका की एक रियासत टैक्सास में टोरेन्डो आया। उसकी ताक़त तीस नाइट्रोजन बमों से भी ज़्यादा थी। उसने मकानों की छतों को उड़ाकर रख दिया। कारों को उठाकर सैंकड़ों मील दूर फेंक दिया। और यों चंद लम्हों में ख़ूबसूरत आबादियाँ वीरानों और खंडरात में तब्दील हो गयीं।

हमने टोरेन्डो आने के बाद टैक्सास में ख़ुद जाकर ये मंज़र देखे। वहाँ एक घर की डाइनिंग टेबल जिस पर पंद्रह सोलह अफ़राद बैठकर खाना खा सकते थे वो एक दरख़्त की शाख़ पर लटकी हुई थी। इतनी बड़ी टेबल तो वज़नी भी बहुत होती है। उसको तो दस पंद्रह बंदे ही आसानी से नहीं उठा

सकते लेकिन वो एक दरख़्त पर इस तरह लटकर रही थी जैसे बच्चे ने टाफ़ी को दूर फेंक दिया हो।

इस टोरेन्डो ने एक कार को एक जगह से उठाकर तीन सौ किलोमीटर दूर फेंक दिया। उसका पता इस तरह चला के जब वो टोरेन्डो आया था, उस वक़्त से दो मिनट पहले कार वाले को टिकट दी थी जिसकी वजह से उसका नाम कम्पुयटर में आ गयाा था। जब वो चला तो ठीक दो मिनट के बाद वो उस जगह से तीन सौ किलोमीटर दूर था।

जब ये आजिज़ उस रियासत के दौरे पर जाने लगा तो मुझे दोस्तों ने पहले वहाँ जाने की ट्रेनिंग दी। वो कहने लगे, हज़रत! अगर वहाँ आपकी मौजूदगी में कभी टोरेन्डो आ जाए तो आप कार से निकलकर ज़मीन पर लेट जाना क्योंके अगर कोई चीज़ ज़मीन के साथ बिल्कुल चिपकी हुई हो तो हवा उसको नहीं उठाती लेकिन अगर ऊपर हो ख़ला होने की वजह से उसको हवा खींचती है। इस तरह एक टोरेन्डो के अंदर कई-कई बिलियन डॉलर का नुक़सान हो जाता है।

4. मिट्टी की ताक़त

काएनात का चौथा जुज़्व मिट्टी है। ज़मीन को मिट्टी कहते हैं। इसकी अपनी ताक़त है और अभी हमें इसका अंदाज़ा नहीं है। जब ज़लज़ला आता है तो ज़मीन में तबाही मच जाती है। मिसाल के तौर पर–

1. सोलहवीं सदी ईसवीं में चीन के सूबा चिनसी के अदंर एक ज़लज़ला आया था। जिसमें एक दिन में आठ लाख आदमी हलाक हो गए थे।
2. 1994 ई० में कैलिफ़ोर्निया का दौर किया। उस वक़्त इस

रियासत के शहर लॉस एंजिलस के चौराहों पर कई कई मीटर लंबे चौड़े लोहे के बोर्ड देखे जिन पर ओह् गॉड! लिखा हुआ था। जब चंद जगहों पर इस तरह लिखा देखा तो मैंने हैरान होकर अपने मेज़बान से पूछा भई ओह गॉड का क्या मतलब है?

वो कहने लगे जनाब! यहाँ चंद दिन पहले 17 जनवरी 1994 ई० को रात चार बजे तारीख़ का इबरतनाक ज़लज़ला आया था। इस ज़लज़ले का मर्कज़ सतह ज़मीन से नौ किलोमीटर नीचे था। इंजीनियरिंग के नुक़्तए नज़र से इस ज़लज़ले की वक़ूअ पज़ीर होने की उम्मीद दस हज़ार में से एक थी। इस ज़लज़ले की इत्तिला पहले से इत्तिला देने वाले आलात भी ख़ामोश रहे और इंजीनियर भी मुतमइन थे के ये ज़लज़ला कभी नहीं आएगा। लेकिन जब वो आ गया तो सुपर पावर की टेक्नोलोजी नाकाम होकर रह गई। वो ज़लज़ला इतना शदीद था के ख़ुदा की पनाह। ज़लज़ले का बढ़ाव सात से ज़्यादा था। 45 सेकेन्ड का वक़्त यों लगता था के कभी ख़त्म नहीं होगा। उस वक़्त लोग अपने बिस्तरों पर सोए हुए थे। उनको उस वक़्त पता चला जब वो गेंद की तरह उछलकर नीचे गिरे।

मज़े की बात ये है के इस ज़लज़ले में प्राईवेट प्रापर्टी का नुक़सान कम हुआ और सरकारी मिल्कियत का नुक़सान ज़्यादा हुआ। हालाँके उन्होंने इन इमारतों को नाक़ाबिले तसख़ीर डिज़ाईन के साथ बनाया था। मिसाल के तौर पर-हाईवे के बड़े-बड़े पुल-उन्होंने उनका इतना सेफ़्टी फ़ैक्टर रखा होता है के वो कहते हैं के अब ये सारी उम्र के लिए काफ़ी हैं।

हास्पिटल की बिल्डिंग— हस्पतालों को भी अमरीकी क़ानून के मुताबिक़ लाँग लाइफ़ डिज़ाईन पर तामीर किया जाता है ताके बदतरीन सूरतेहाल में भी ठीक रहें। अगर किसी बुरे वक़्त में हस्पताल की बिल्डिंग को ही नुक़सान पहुँच जाए तो मुतास्सिर लोगों की देखभाल कौन करेगा। इसी तरह पुलिस स्टेश भी सेफ़्टी फ़ैक्टर के तहत बनाए जाते हैं। जिनके गिरने का सवाल ही पैदा नहीं होता। लेकिन क़ुदरत का करना ये हुआ के ये बिल्डिंग सबसे पहले गिरी। इस आजिज़ ने ख़ुद अपनी आँखों से जाकर देखा।

आप यक़ीन करें के सबसे ज़्यादा नुक़सान इन्हीं सरकारी इमारतों का हुआ। मैंने देखा के दो-दो मीटर चौड़े सुतून तिनकों की तरह टूटे पड़े थे। हाईवे के पुल सौ फ़ुट की बुलन्दी से यों नीचे जा गिरे जैसे टाफ़ी को दूर फेंक देता है लेकिन हैरतन्कुन बात ये है के ज़लज़ले के मर्कज़ से तक़रीब पच्चीस फ़ुट के फ़ासले पर एक मस्जिद थी जो बिल्कुल महफ़ूज़ रही, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह की शान देखिए के ये सत्रह जनवरी की वही रात थी जब सुपर पावर ने बग़दाद के मुक़द्दस मक़ामात पर बम गिराए थे। इस ज़लज़ले में सरकारी नुक़सान का अंदाज़ा 30 बिलियन डॉलर लगाया गया। इतनी रक़म कुवैत की जंग में अमरीका ने कमाई थी। अल्लाह तआला ने एक ही झटके में हिसाब बराबर कर दिया।

उन्होंने बताया के ज़लज़ले के आने के बाद मुल्क के बड़े साहब ने तक़रीर की और इज़्हारे हमदर्दी करते हुए कहने लगा, "मदर नेचर हमारे साथ तआवुन नहीं कर रही है।"

साइंसदानों ने हुक्मरानों से कहा के अपने पादरियों से पूछो के

अगर कोई नजात का रास्ता है तो हमें बताएं। उन्होंने पूछा, वो क्यों? साइंसदानों ने जवाब दिया के जनाब! ये ज़लज़ला तो थोड़ा सा आया था। अभी कैलिफ़ोर्निया में आठ से दस लाइव फ़ाल्टस मौजूद हैं। एक इनमें से एक फ़ाल्ट बहुत बड़े ज़लज़ले का है जिसे हमने "बिग वन" का नाम दिया। ये ज़लज़ला किसी वक़्त भी आ सकता है। इसका एपी सेन्टर सतह ज़मीन से चंद मीटर नीचे है। लिहाज़ा नुक़सान का अंदेशा बेहद व हिसाब है। अगर ये बिग वन आ गया तो वो कैलिफ़ोर्निया और हॉलीवुड के इलाक़े को काटकर समुन्दर के अंदर फेंक देगा। क्योंके जो ज़लज़ला आया है उससे इस इलाक़े के चारों तरफ़ एक लकीर लग गई है। वहाँ से ज़मीन फट चुकी है और उसके अंदर एक सुराख़ हो चुका है और वो सुराख़ नीचे तक नज़र आता है। मैंने कहा, मैं आपकी बात मानता हूँ लेकिन मैं खुद भी देखना चाहता हूँ। वो अल्लाह का बंदा मुझे वहाँ ले गया और मैंने अपनी आँखों से ज़मीन के टुकड़ों को एक दूसरे से जुदा देखा। जहाँ तक नीचे देखो नज़र जा रही है। कितनी गहरी है, अल्लाह जाने। बस यों समझो के छोटा सा झटका लगा उस पूरे टुकड़े को अलैहिदा कर दिया गया। जब वो बिग वन आएगा तो ये पूरा टुकड़ा समुन्दर के अंदर चला जाएगा।

वो कहने लगे के ये सुनकर हुकूमत परेशान हुई। चुनाँचे उन्होंने पादरियों से पूछा के अब क्या करें? पादरियों ने यों के खुदा को याद करें। उन्होंने पूछा के खुदा को कैसे याद करें? तो पादरियों ने तजवीज़ दी के हुकूमत ने बड़े-बड़े चौराहों पर अल्लाह का नाम लिखकर लगाए ताके लोग अल्लाह को याद करें। लिहाज़ा हुकूमत ने बड़े-बड़े चौराहों पर OH GOD! (ऐ खुदा!) लिखवा दिया ताके "बिग-वन" न आए। सुब्हानअल्लाह।

हॉली वुड का इलाक़ा फ़िल्मी अदाकारों और हम जिन्सप्रस्तों

का इलाक़ा है। जिसे Sex centre of the world. (दुनिया की जिन्सी मर्कज़) कहा जाता है। अल्लाह की शान के हमारे एक दोस्त ने इस आजिज़ का प्रोग्राम हॉलीवुड में रखवा दिया। जब वो मुझे ले जा रहे थे तो मैं हैरान था के वो मुझे कहाँ ले जा रहा है। मैं साईन बोर्ड पढ़कर उससे पूछता के मुझे कहा ले जा रहे हो? वो कहता, हज़रत! वहाँ प्रोग्राम रखा हुआ है। अल्लाह की शान के अल्लाह तआला ने वहाँ भी दीन का काम लिया। वहाँ भी बयान हुआ। मेरा ख़्याल है के आने वालों में से अस्सी फ़ीसद लोगों ने शराब पी हुई थी। मगर अलहम्दुलिल्लाह के उनमें से पचास आदमियों ने बैअते तौबा की। अलहम्दुलिल्लाह अल्लाह तआला ने निस्बत का नूर वहाँ भी पहुँचा दिया।

इस ज़लज़ले की वजह से वहाँ एक हिन्दू की इमारत भी गिरी। वो हिन्दू इंडिया से अमरीका पहुँचा और वहीं इंजीनियर बना। उसने रियल स्टेट का काम शुरू कर दिया। बड़ा रुपया कमाया। तीस बिलियन डॉलर उसके अपने थे। उसकी पाँच मंज़िला बिल्डिंग थी। जब ज़लज़ला आया तो वो इमारत ज़मीन में बैठ गई। जो नीचे मंज़िल थी वो बिल्कुल आपस में मिल गई। मैंने वो इमारत खुद गिरी हुई देखी। ये वो बंदा था जब पैसा मिला तो ये अल्लाह तआला के वजूद का भी इंकार कर बैठा और अपना मज़हब छोड़कर दहरिया बन गया। पैसे के नशे ने उसको हर चीज़ को भुलाकर रख दिया। इस बिल्डिंग के नीचे आकर जितने लोग मरे उन्होंने दावे कर दिए। उसका टोटल निकाला तो तीस बिलियन बना। और वो अगले दिन फ़ुटबाथ पर खड़ा था। अमरीका के अख़बारात में उसकी इतनी बड़ी-बड़ी तस्वीरें के एक आदमी ने जितना कमाया एक झटके में उसका सब कुछ पराया

हो गया। इस दुनिया ने कितने बादशाहों को भीक मांगते हुए देखा और कितने घरानों में पैदा होने वालों को तख़्त की ज़ीनत बनते देखा।

तो बात चल रही थी के आग की अपनी मख़्लूक़ और अपनी ताक़त है, हवा की अपनी मख़्लूक़ और अपनी ताक़त है, पानी की अपनी मख़्लूक़ ओर अपनी ताक़त है, ज़मीन की अपनी मख़्लूक़ और अपनी ताक़त है।

जब इस ताक़त का इज़्हार होता है तो फिर बंदे के ये एहसास होता है के इसकी ताक़त कितनी है। चूँके अल्लाह तआला ने इन चार अज्ज़ा से काएनता को बनाया है इसलिए परवरदिगार ने मुअज़्ज़िन को हुक्म दिया के मेरे बंदे! तुम मेरी मख़्लूक़ को मेरे घर की तरफ़ बुलाओ और कहो के आओ उस परवरदिगार की तरफ़।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत आग और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत हवा और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत पानी और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

अल्लाहु अकबर– जिसकी अज़्मत ज़मीन और उसकी मख़्लूक़ से भी ज़्यादा है।

इसलिए जब मुअज़्ज़िन अल्लाहु अकबर कहे तो फ़ौरन एहसास पैदा होना चाहिए के हमें किसी परवरदिगार की तरफ़ बुलाया जा रहा है।

परवरदिगार की अज़मत का ख़्याल

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास जब मुअज़्ज़िन की अल्लाहु अकबर सुनते तो आँखों में आँसू आ जाते थे। किसी ने पूछा, हज़रत! आप अल्लाहु अकबर सुनकर बेअख़्तियार क्यों रो पड़ते हैं। फ़रमाया के मुझे अपने परवरदिगार की अज़मत का ख़्याल आ जाता है। उसकी हैबत मेरे सामने आ जाती है और मैं उसकी अज़मत और हैबत के इस्तेहज़ार की वजह से रोता हूँ।

फ़िक्र की घड़ी

अच्छा एक बात बताइए के अगर आप किसी बंदे को पैग़ाम भिजवाएं के मेरे घर आएं और वो न आए तो आपको ग़ुस्सा आएगा या नहीं? ज़रूर आएगा। ठीक इसी तरह जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अल्लाहु अकबर के ज़रिए अपने बंदों को अपने घर की तरफ़ बुलावाएं और बंदे न जाएं तो अल्लाह तआला को भी जलाल आएगा या नहीं आएगा। याद रखें के शैतान ने एक सज्दे से इंकार किया था तो अल्लाह तआला ने उसे अपने दरबार से हमेशा के लिए धक्का दे दिया। बे नमाज़ी रोज़ाना चालीस सज्दों का इंकार रहा होता है, उसका क्या बनेगा? ये तो परवरदिगार की रहमत है के उसने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुआओं के सदक़े हम पर फिर भी रहमतें नाज़िल की हुई हैं वरना तो हदीस पाक में कह दिया गया है के बे नमाज़ी का हशर क़ियामत के दिन फ़िरऔन, क़ारून और हामान के साथ किया जाएगा। इसलिए जब अज़ान की आवाज़ सुनें तो फ़ौरन मुतवज्जेह हो जाएं के हमारे परवरदिगार की तरफ़ से बुलावा आ रहा है।

अज़ान का जवाब

नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया के जब आदमी अज़ान

की आवाज़ सुने तो जैसे मुअज़्ज़िन अज़ान कहे वैसे ही साथ कहता रहे। सिवाए इसके जब वो हय्यअलस्सलाह और हय्यअलल फ़लाह कहे तो उसके जवाब में साथ "ला हवला वला क़ुव्वता इल्लाह बिल्लाह" भी पढ़ ले ताके शैतान भाग जाए और बंदे के लिए नमाज़ की तरफ़ जाना आसान हो जाए। अज़ान का इस तरह जवाब देने पर उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

ख़्वाब में अज़ान देने की मुख़्तलिफ़ ताबीरें

इब्ने सीरीन रह० की ख़िदमत में एक आदमी आया और उसने कहा, हज़रत! मैंन ख़्वाब देखा है के मैं अज़ान दे रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, तुझे इज़्ज़त मिलेगी। थोड़ी देर के बाद एक और आदमी आया और उसने भी कहा, हज़रत! मुझे ख़्वाब आया है के मैं अज़ान दे रहा हूँ। हज़रत ने फ़रमाया, तुझे ज़िल्लत मिलेगी। और ऐसा ही हुआ। लोगों ने पूछा, हज़रत! ये क्या मामला है? फ़रमाया के क़ुरआन मजीद में दो जगह अज़ान का लफ़्ज़ है। एक जगह सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम के हुक्म में है के ﴿وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ. (الحج:۲۷)﴾ (और मेरे ख़लील! लोगों में हज के लिए ऐलान कर दो।)

आवाज़ लगाना आपका काम है और लोगों तक उस आवाज़ को पहुँचाना मेरा काम है। मुझे पहले बंदे में नेकी नज़र आती थी। इसलिए मैंने इस आयत से उस ख़्वाब की ये ताबीर ली के उसको सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तरह इज़्ज़त मिलेगी और दूसरे आदमी मकें फ़िस्क़ के आसार नज़र आते थे और क़ुरआन मजीद में एक जगह पर है :

﴿ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَیَّتُهَا الْعِیْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ. (یوسف:۷۰)﴾ फिर एक निदा देने वाले ने निदा दी के ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम चोर हो।

इस इस आयत से मैंने ये ताबीर ली के इस आदमी को ज़िल्लत मिलेगी।

अगर कोई औरत ख़्वाब में देखे के मैं अज़ान दे रही हूँ तो इसका मतलब ये है के वो बीमार होगी। इसलिए के औरत के लिए अज़ान देना ख़िलाफ़े शरअ है। जब बग़ैर इजाज़त एक काम कर रही है तो वो गोया फ़ितरत से हटकर कर रही है। इसलिए इसका मतलब ये है के उसे सेहत के बजाए बीमारी मिलेगी।

इब्ने सीरीन रह० के पास एक आदमी आया और उसने कहा, हज़रत! मैंने ख़्वाब देखा है मैं मर्दों के मुँह पर और औरतों के पोशीदा आज़ा पर मुहर लगा रहा हूँ। उसने कहा, मैंने ये अजीब सा ख़्वाब देखा है। इसकी वजह से बहुत परेशान हूँ। आप मुझे इसकी ताबीर बता दें। इब्ने सीरीन रह० ने फ़रमाया के पहली बात तो ये है के लगता है तुम मौज़्ज़िन हो। उसने कहा, जी हाँ, मैं मौज़्ज़िन हूँ। फिर हज़रत ने फ़रमाया के इस ख़्वाब की ताबीर ये है के तुम रमज़ानुल मुबारक में सहरी के वक़्त तुलू फ़ज्र से पहले अज़ान दे देते हो और तुम्हारी वजह से लोगों का खाना पीना और जमा का मामला बंद हो जाता है।

एक फ़कीह का दर्जा पाने वाला लोहार

हमें अज़ान का एहतिराम करना चाहिए क्योंके हमें अल्लाह तआला की तरफ़ पुकारा जा रहा होता है। इसका एक अदब ये है के अज़ान सुनते ही दुनिया के कामों को छोड़कर नमाज़ की तैयारी करनी चाहिए। इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पड़ौस में एक लोहार रहता था। जब वो फ़ौत हुआ तो बाद में किसी मुहद्दिस ने ख़्वाब में देखा, उसने पूछा, सुनाइए, आगे क्या मामला पेश आया? वो कहने लगा के मुझे भी अहमद बिन हंबल के दर्जे में रख दिया

गया है और अब में उनके साथ रह रहा हूँ। जिस मुहद्दिस ने ये ख़्वाब देखा वो बड़े हैरान हुए के ये लोहार तो सारा दिन लोहा कूटता था और इमाम अहमद बिन हंबल दीन का काम करने वाले थे और मसअला ख़ल्के क़ुरआन के मामले में क़ुर्बानियाँ देने वाले अल्लाह के मक़बूल बंदे थे। इस लोहार को उनका मर्तबा दे दिया गया। लिहाज़ा उन्होंने दूसरे मुहद्दिस को बताया। उन्होंने जवाब दिया के इसको कोई न कोई अमल ऐसा है जो अल्लाह के यहाँ पसंद आ गया।

उन्होंने कहा अच्छा उनके घर वालों से पता करता हूँ। लिहाज़ा उन्होंने उस लोहार की बीवी से जाकर कहा के मैंने तुम्हारे ख़ाविन्द को ख़्वाब में बड़े अच्छे दर्जे में देखा है। मुझे लगता है के अल्लाह तआला को उसका कोई अमल पसंद आ गया है। आप मुझे उसका कोई ख़ास अमल बताएं। उसने जवाब दिया के वो एक अयालदार और ग़रीब आदमी था। सारा दिन भट्टी में लोहा कूटता रहता था और वक़्त पर नमाज़ें भी पढ़ता था। इसके अलावा उसकी कोई ख़ास इबादत नहीं होती थी। उन्होंने कहा, फिर भी ज़रा सोचकर बताएं। उसकी बीवी ने सोचकर बताया के मुझे उसकी ज़िंदगी में दो बातें नुमाया महसूस हो रही हैं, एक तो ये के उसके अंदर नमाज़ और अज़ान का इतना अदब था के अगर लोहा कूटते हुए कभी उसका हाथ ऊपर होता और उसके हाथ में हथौड़ा होता और ठीक उसी लम्हे अल्लाहु अकबर की आवाज़ आती तो वो उसको मारने के बजाए रख देता था के अब मेरे मालिक के मुनादी ने पुकारा है और मुझे अब उसके दरबार में हाज़िरी देनी है और दूसरी बात ये है के वो सारा दिन मेहनत करके रात को थका हुआ आता था तो हम मियाँ बीवी बच्चों के साथ अपने घर की छत पर सोते थे और हमारे पड़ौस में इमाम

अहमद बिन हंबल रह० रहते थे। इमाम अहमद बिन हंबल रह० सारी रात क़ुरआन पढ़ते हुए गुज़ार देते थे। ये उनकी तरफ़ देखता और हसरत से ठंडे साँस लेता और कहता के मेरे बच्चे ज़्यादा हैं और घर में कोई एक बंदा भी ऐसा नहीं जो मेहनत कर सके। मुझे ही सारा दिन लोहा कूटना पड़ता है और इस मेहनत की वजह से इतना थक जाता हूँ के मैं अल्लाह की इबादत नहीं कर सकता। अगर मेरी पीठ हलकी होती तो मैं भी इमाम अहमद बिन हंबल रह० की तरह क़याम करता। वो मुहद्दिस ये सुनकर फ़रमाने लगे के अज़ान के इस अदब और दिल में नेकी का शौक़ रखने की वजह से अल्लाह तआला ने उसको इमाम अहमद बिन हंबल रह० का रुत्बा अता फ़रमा दिया।

सुब्हानअल्लाह! इससे पता चलता है के अगर इंसान किसी ऐसे माहौल में फंस जाए के वो नेकी न कर सके तो कम से कम दिल में तपड़ ज़रूर रखनी चाहिए क्योंके कभी-कभी अल्लाह तआला दिल की तड़प पर भी वो नेमत और अज्र अता फ़रमा देते हैं।

टीले के बराबर आटा सदक़ा करने का अज्र

एक मर्तबा बनी इस्राईल में क़हत पड़ा। लोग भूख से मरने लगे। एक आदमी शहर से बाहर निकलने लगा। तो उसने अपने सामने रेत का एक टीला देखा जो पहाड़ की तरह था। ये देखकर उसके दिल में बात आई के अगर मेरे पास इतना आटा होता तो मैं शहर के सारे लोगों में तक़्सीम कर देता। हदीस पाक में आया है के अल्लाह पाक ने फ़रिश्ते को उस वक़्त हुक्म दिया के जाओ और मेरे बंदे के नामाए आमाल में इतना आटा सदक़ा करने का अज्र लिख दो।

अज़ान का अदब बख़्शिश का सबब बन गया

ज़ुबैदा ख़ातून अल्लाह तआला की एक नेक बंदी थी। वो फ़ौत हो गई। किसी ने उसको ख़्वाब में देखा के जन्नत में सैर कर रही है। उसने पूछा! ज़ुबैदा! तेरे नेक अमल तो बहुत ज़्यादा थे। इसी वजह से तुम्हें जन्नत के रुत्बे मिले हैं। वो कहने लगी, नहीं जिनको कामों को मैं नेकियाँ समझती थी उनको तो अल्लाह रब्बुनलइज़्ज़त ने देखा ही नहीं। एक काम ऐसा था जिसे मैं छोटा समझती थी। अल्लाह तआला को वो पसन्द आ गया जिसकी वजह से मेरी बख़्शिश हो गई। उसने कहा, वो कौन सा काम था? कहने लगी मेरी आदत थी के जब भी मस्जिद से अज़ान की आवाज़ आती थी तो अल्लाहु अकबर की आवाज़ सुनते ही मै। अदब की वजह से अपना दुपट्टा सर पर ठीक कर लेती थी। अल्लाह तआला ने अज़ान के अदब की वजह से मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी।

अहादीसे मुबारका में अज़ान की फ़ज़ीलत

अब मैं आपके सामने चंद अहादीस मुबारका बयान करता हूँ जिनसे आपको अज़ान की फ़ज़ीलत का पता चलेगा :

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत हे के अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया के तीन शख़्स जन्नत के टीलों पर होंगे–

1. वो गुलाम जिसने अल्लाह तआला का हक़ भी अदा किया और अपने आक़ा का भी।
2. वो शख़्स जिसने किसी क़ौम की इमामत की और लोग उसकी इमामत से राज़ी रहे।

3. वो आदमी जिसने हर रात दिन में पाँच नमाज़ों की अज़ान दी। (तिर्मिज़ी)

- हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लल्लहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के मुअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जितनी मुसाफ़त तक जिन्न व इन्स या कोई चीज़ सुनेगी क़ियामत के दिन उसके लिए शहादत देगी।
- हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा की रिवायत है के अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया के जिसने सवाब की उम्मीद से सात बरस तक अज़ान दी उसके लिए दोज़ख़ से नजात लिख दी जाती है। (तिर्मिज़ी)
- हज़रत सुहैल बिन सअद की रिवायत है के अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया के दो बातें ऐसी हैं जिनको रद्द नहीं किया जाता या फ़रमाया के कम रद्द किया जाता है—

1. अज़ान के वक़्त की दुआ।
2. जिहाद के वक़्त की दुआ जब लोग बाहम दस्त व गिरेबान होते हैं।

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस का बयान है के अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया के जब तुम मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनो तो जो वो कहता है तुम भी कहो। फिर मुझे दरूद पढ़ो। जो मेरे लिए दुआ करेगा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा। फिर मेरे लिए वसीला तलब करो। वसीला जन्नत के अंदर एक ख़ास मकाम है जिस पर अल्लाह के बंदों में से

किसी एक बंदे को फ़ाएज़ किया जाएगा और मैं उम्मीद करता हूँ के मैं वही बंदा हूँगा। पस जो मेरे लिए वसीला मिलने की दुआ करेगा उसके लिए मेरी शफ़ाअत लिख दी जाएगी। (मुस्लिम)

दुआए वसीला ये है :

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ

وَابْعَثْهُ مَقَامًا مَّحْمُوْدَ نِ الَّذِیْ وَعَدْتَّهٗ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادِ.

अल्लाहुम्मा रब्-ब हाज़िहिद्-दअ्वातित्-ताम्माति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदिनिल वसीलति वल फ़ज़ीलति वब-असहु मक़ामम महमूदनिल्लज़ी वअ़त्तहू इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल मीआ़द०

ऐ अल्लाह! इस दावते कामिल और खड़ी होने वाली नमाज़ के मालिक! तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को वसीला और फ़ज़ीलत अता फ़रमा दे। और उनको उस मक़ामे महमूद पर पहुँचा दे जिसका तूने वादा फ़रमाया है। बेशक तू अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता।

"तंबीहुल ग़ाफ़िलीन" में लिखा है के :

- हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत ख़ौला रज़ियल्लाहु अन्हा से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमान नक़्ल किया है :

"मरीज़ जब तक मर्ज़ की हालत में रहे अल्लाह तआला का मेहमान होता है। उसके लिए हर दिन सत्तर शहीदों का अमल आसमान पर चढ़ता है। फिर अगर उसे आफ़ियत बख़्श दें तो गुनाहों से यों पाक हो जाता है जैसा के आज ही माँ के पेट से

पैदा हुआ हो। और अगर उस मर्ज़ में मौत वाक़ेअ हो जाए तो उसे बग़ैर हिसाब व किताब के जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

- मुअज़्ज़िन अल्लाह तआला का दरबान है जिस हर अज़ान पर हज़ारों नबियों का सवाब होता है।
- इमाम अल्लाह तआला का वज़ीर है जिसे हर नमाज़ पर हज़ार सिद्दीक़ का सवाब मिलता है।
- आलिम अल्लाह तआला का वकील और नुमाइन्दा है जिसे क़ियामत में हर हदीस पर नूर अता होगा और हर हदीस के बदले उसके लिए हज़ार साल की इबादत लिखी जाती है।
- इल्म सीखने वाले मर्द हों या औरतें अल्लाह तआला के ख़ुद्दाम हैं जिनकी जज़ा जन्नत ही हो सकती है।
- हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी अलैहिस्सलाम से रिवायत करते हैं के आपने इर्शाद फ़रमाया के मैं पाँच क़िस्म के लोगों के लिए जन्नत का ज़ामिन हूँ :

1. नेक औरत जो अपने ख़ाविन्द की ताबे फ़रमान हो।
2. वो बेटा जो अपने वालदैन का फ़रमांबरदार हो।
3. वो शख़्स जो मक्का के रास्ते में फ़ौत हो गया हो।
4. वो शख़्स जो अच्छे अख़्लाक़ वाला हो।
5. वो शख़्स जो किसी मस्जिद में नेकी समझकर सवाब की ग़रज़ से अज़ान देता हो।

- फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी रह० फ़रमाते हैं के हज़रत ज़हाक रह० ने फ़रमाया के जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद ने ख़्वाब में अज़ान देखी और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को

सिखाई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत बिलाल को हुक्म फ़रमाया के छत पर चढ़कर अज़ान कहें। हज़रत बिलाल ने जब अज़ान देनी शुरू की तो लोगों ने मदीना मुनव्वरा में एक शदीद आवाज़ महसूस की। नबी अलैहिस्सलाम ने पूछा, जानते हो के ये आवाज़ कैसी है? सहाबा किराम ने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही बेहतर जानते हैं। इर्शाद फ़रमाया के तुम्हारे रब के हुक्म से आसमान के दरवाज़े अर्श तक बिलाल की अज़ान के लिए खोल दिए गए हैं। सैय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़ ने सवाल किया के ये ख़ुसूसियत सिर्फ़ बिलाल के लिए है या तमाम मुअज़्ज़िनों के लिए है? इर्शाद फ़रमाया के तमाम मुअज़्ज़िनों के लिए ये खुसूसियत है। फिर फ़रमाया के अज़ान देने वालों की रूहें शहीदों की रूहों के साथ इकठ्ठी रहती हैं। जब क़ियामत का दिन होगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा के मुअज़्ज़िन कहाँ हैं तो ये लोग मुश्क और काफ़ूर के टीलों पर खड़े हो जाएंगे।

सहाब किराम के दिल में अज़ान देने का शौक़

सहाबा किराम की ज़िंदगियों पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होता है के उनके दिल में अज़ान देने का बहुत शौक़ होता था। मिसाल के तौर पर–

- सैय्यदना इब्ने उमर ख़त्ताब फ़रमाते थे के अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो फ़र्ज़ हज अदा कर लेने के बाद कोई हज या उमरा करने की मुझे कोई परवाह न होती।
- हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं के मुझे एक बात के सिवा किसी बात का अफ़सोस नहीं के मैं इस

तमन्ना में ही रहा के नबी अलैहिस्सलाम से अपने बेटों सैय्यदना हसन और हुसैन के लिए मुअज़्ज़िन बनने की दरख़्वास्त कर लूँ।

- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद फ़रमाते थे के अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो किसी जिहाद में शामिन न होने की कोई परवाह न करता।
- हज़रत सअद बिन अबी वक़ास रज़ियल्लाहु अन्ह भी फ़रमाते थे के अगर मैं मुअज़्ज़िन होता तो जिहाद न करने की मुझे कोई परवाह न होती।

अज़ान का एक दिलचस्प सफ़र

अब बाप को एक दिलचस्प बात बताता हूँ। ज़मीन पर कोई लम्हा ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें अज़ान की आवाज़ बुलन्द न हो रही हो। सैंकड़ों बल्के हज़ारों मुअज़्ज़िन बयक वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तौहीद और उसके महबूब की रिसालत का प्रचार कर रहे होते हैं।

अगर दुनिया के नक़्शे पर ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा के इस्लामी मुमालिक में से इंडोनेशिया एक ऐसा मुल्क है जो ज़मीन ऐन मश्रिक़ में वाक़ेअ है। आबादी के लिहाज़ से ये एक गुंजान आबाद मुल्क है। इसकी आबादी अठ्ठारह करोड़ के लगभग है। इस मुल्क में बेशुमार जज़ीरे पाए जाते हैं जिसमें से सुमात्रा, जावा, स्लीबज़ और बोर्नियो बड़े-बड़े जज़ीरे हैं।

- तुलूए सहर स्लीबज़ के मश्रिक में वाक़ेअ जज़ाए में होती है। उस वक़्त वहाँ सुबह के साढ़े पाँच बज रहे होते हैं और ऐन उस वक़्त ढाका में रात के दो बज रहे होते हैं। तुलूए सहर

के साथ ही इंडोनेशिया के इंतिहाई मशिरक़ी जज़ीरों में अज़ान शुरू हो जाती है। और बयक वक़्त हज़ारों मुअज़्ज़िन तौहीद व रिसालत का ऐलान कर रहे होते हैं। मशिरक़ी जज़ीरों से ये सिलसिला मग़रिबी जज़ीरों की तरफ़ बढ़ता है और डेढ़ घंटे बाद जकारता में अज़ान देने की बारी आती है। जकारता के बाद ये सिलसिला सुमात्रा में शुरू हो जाता है और सुमात्रा के मग़रिबी क़स्बों और देहातों में अज़ानें शुरू होने से पहले ही मलाया में अज़ानों का जो सिलसिला शुरू होता है वो एक घंटे बाद ढाका पहुँचता है। बंगला देश में अभी अज़ानों का सिलसिला ख़त्म नहीं होता के कलकत्ता से श्रीनगर तक अज़ाने गूंजने लगती हैं। दूसरी जानिब ये सिलसिला कलकत्ता से बंबई की तरफ़ बढ़ता है और पूरे हिन्दुस्तान की फ़िज़ा तौहीद व रिसालत के ऐलान से गूंजने उठती है। श्रीनगर और स्यालकोट में अज़ाने फ़ज्र का एक ही वक़्त है। स्यालकोट से क्वेटा, कराची और गवादर तक चालीस मिनट का फ़र्क़ है।

- इस दौरान फ़ज्र की अज़ान पाकिस्तान में बुलन्द होती रहती है। पाकिस्तान में ये सिलसिला ख़त्म होने से पहले अफ़ग़ानिस्तान और मस्क़त में अज़ानों का सिलसिला शुरू हो जाता है। मस्क़त से बग़दाद तक एक घंटे का फ़र्क़ पड़ जाता है। और इस अरसे में अज़ानें सऊदी अरब, यमन, मुत्तहिदा अरब इमारात, कुवैत और इराक़ में गूँजती रहती हैं।

- बग़दाद से स्कन्दरिया तक एक घंटे का फ़र्क़ है। इस दौरान सूडान, शाम, मिस्र और सोमालिया में अज़ानें बुलन्द होती रहती हैं। स्कन्दरिया और स्तंबूल एक ही तूले बलद पर वाक़ेअ हैं। मशिरक़ी तुर्की से मग़रिबी तुर्की तक डेढ़ घंटे का

फ़र्क़ हैं। इस दौरान तुर्की में तौहीद व रिसालत की सदा बुलन्द होती रहती है। स्कन्दरिया से तराबलस तक एक घंटे का दौरानिया है। इस दोरान में शुमाली अफ़्रीका में लीबिया और त्यूनुस में अज़ानों का सिलसिला जारी रहता है। यों फ़ज्र की अज़ान की जिसका आग़ाज़ इंडोनेशिया के मश्रिक़ी जज़ीरों से हुआ था साढ़े नौ घंटे का सफ़र तय करके बहरे औक़ियानूस के मश्रिक़ी कनारे तक पहुँच जाती है।

- फ़ज्र की अज़ान बहेर औक़ियानूस तक पहुँचने से पहले ही मश्रिक़ी इंडोनेशिया में ज़ुहर की अज़ानों का सिलसिला शुरू हो जाता है।
- ज़ुहर की अज़ानों का ये सिलसिला ढाका में शुरू होने लगता है के मश्रिक़ी इंडोनेशिया में अस्र की अज़ानें बुलन्द होने लगती हैं।
- ये सिलसिला से डेढ़ घंटे तक बमुश्किल जकारता पहुँचता है के इंडोनेशिया में के मश्रिक़ी जज़ीरों में नमाज़ मग़रिब का वक़्त हो जाता है।
- मग़रिब की अज़ानें स्लीबज़ से बमुश्किल सुमात्रा तक पहुँचती हैं के इतने में इशा का वक़्त हो जाता है और मश्रिक़ी इंडोनेशिया में इशा की अज़ाने बुलन्द होना शुरू हो जाती हैं और मज़े की बात ये है के उस वक़्त मग़रिबी अफ़्रीक़ा में भी फ़ज्र की अज़ान गूँज रही होती हैं। इससे पता चला के दुनिया में एक सेकन्ड भी ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें अज़ान की आवाज़ बुलन्द न हो रही हो। सुब्हानअल्लाह तौहीद व रिसालत की इस सदाए मुसलसल से अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का वो फ़रमान बख़ूबी वाज़ेह हो जाता है जिसमें नबी

अलैहिस्सलाम को ख़िताब करके फ़रमाया गया है के ﴿وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ﴾ और ऐ महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! हमने आपका ज़िक्र बुलन्द कर दिया है। मुअज़्ज़िनों ने अज़ान क्या दी उन्होंने तो पूरी दुनिया की फ़िज़ा को अज़मते इलाही और रफ़अते मुस्तफ़ा की ख़ुशबू से मौत्तर कर दिया, सुब्हानअल्लाह।

अज़मते इलाही बयान करने का एक अजीब अंदाज़

शर्फ़ुद्दीन मुनीरी रह० ने अज़मते इलाही के बारे में एक अजीब मज़मून बाँधा है। वो पढ़कर बंदे को वज्द आता है। आप हज़रात भी ज़रा सुनिए ताके आपको पता चल जाए के जब इंसान नमाज़ में अल्लाहु अकबर कह रहा होता है तो उस वक़्त उसकी कैफ़ियत क्या होनी चाहिए। ये मज़मून तबियत पर हर वक़्त मुस्तहज़र (हाज़िर) रहना चाहिए। वो फ़रमाते हैं के अल्लाहु अकबर का एक मतलब तो ये है के अल्लाह सबसे बड़ा है और एक मतलब ये है के बड़ाई सिर्फ़ अल्लह के लिए है। देखो के हमें अल्लाहु अकबर के मआनी भी समझने की ज़रूरत है वरना हम तो अब तक अल्लाहु अकबर के यही मआनी समझते रहे के अल्लाहु सबसे बड़ा है। गोया हम औरों को भी बड़ा समझते रहे और अल्लाह तआला को सबसे बड़ा।

वो और फ़रमाते हैं के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ख़ालिक़ व मालिक है और ख़ालिक़ व मालिक को बहुत इख़्तियार होता है। लिहाज़ा अल्लाह तआला को बे इल्लत लुत्फ़ व क़हर का इख़्तियार है।

अगर वो चाहें तो ख़ाक से अफ़लाक (आसमान) तक पहुँचाएं और चाहें तो अफ़लाक से ख़ाक पर लाएं।

फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० को रहज़नों के गिरोह से चुना और वलियों का सरदार बनाया और बलअम बाऊर को चार सौ साल की इबादत के बावजूद वलियों के गिरोह से निकाल दिया।

ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु को बुतप्रस्ती से निकालकर तौहीद वाला बनाकर रख देते हैं और ताऊसुल मलाइका अज़ाज़ील को सात हज़ार साल की इबादत के बावजूद पटख़कर रख देते हैं।

वो चाहें तो सलमान फ़ारसी को बुतख़ाने से निकालकर सहाबियत की मैराज अता फ़रमाए और चाहे तो अब्दुल्लाह बिन उबई को मस्जिद में रखकर ज़लील बनाएं।

वो चाहें तो शक़ी के दाम के नीचे नबी को पालें और चाहें तो नबी के दाम के नीचे शक़ी को पैदा कर दें।

वो चाहे तो कुत्ते को वलियों की सिफ़्त में दाख़िल कर दें और चाहें तो वली को कुत्तों की मानिन्द बना दें।

चश्मे इबरत खोलो–

आदम अलैहिस्सलाम की हसरत, इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बेकामी, नूह अलैहिस्सलाम की फ़रियाद, याक़ूब अलैहिस्सलाम की मुसीबत, यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की बेबसी, ज़करिया अलैहिस्सलाम के सर पर चलता हुआ आरा, याहूया अलैहिस्सलाम की गर्दन पर चलती हुई तलवार और सैय्यदना रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बेताबा होकर बार-बार आसमान की जानिब देखा ये सब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की किबरियाई के जलवे हैं।

ख़लील अलैहिस्सलाम को आज़र के घर से निकलता हुआ देखो तो युख़रिजुल हय्या मिनल मैय्यत पढ़ो और किनआन को नूह अलैहिस्सलाम के घर से निकलता हुआ देखो तो युख़रिजुल मैय्य-त

मिनल हय्या पढ़ो। कभी लुत्फ़ बे इल्लत जोश में आता है तो कलबुहुम बासितुन कहकर उसका मर्तबा बढ़ा देते हैं और कभी क़हर बे इल्लत जोश में आता है तो मुअल्लिमुल मलूकूत का लिबास उतारकर इन्ना अलैका लअनति का दाग़ पेशानी पर लगा देते हैं। अगर मेहरबानी की नज़र डालें तो सब ऐब हुनर हैं। लुत्फ़े इलाही का झोंका चलता है तो मरदूद को मक़्बूल बनते और ख़ाक को कीमिया बनते हुए देर नहीं लगती।

ये बात जहाँ डरने की है वहीं उम्मत अफ़ज़ा भी है। अगर मामला इस्तेहक़ाक़ पर होता तो हम किसी गिनती में भी न आते। शुक्र है के इल्लत को दर्मियान से उठा दिया। जहाँ पाक लोग उम्मीदवार हैं वहाँ हम जैसे नापाक भी उम्मीदवार हैं।

कोई कितना ही आलूदा क्यों न हो, वो फ़िरऔन के जादूगरों से ज़्यादा आलूद नहीं, न ही अस्हाबे कहफ़ के कुत्ते से गया गुज़रा है, न तूरे सीना के पत्थर से ज़्यादा जामिद है, न उस्तवाना हनाना से ज़्यादा बेक़ीमत है।

वो तो हब्शा से ग़ुलाम पकड़कर लाते हैं और उसे भी अज़ीमत का ताज पहना देते हैं। सुब्हानअल्लाह। मालूम हुआ के चूँके वहाँ क़ाबलियत का मामला ही नहीं। इसलिए अगर हम भी उसके दर पर झुकेंगे तो हम खोटे सिक्के भी क़ुबूल हो जाएंगे। अल्लाह तआला हमारी टूटी फूटी इबादतों को क़ुबूल फ़रमा लें। आमीन सुम्मा आमीन।

इक़्तिबास

रमज़ानुल मुबारक का महीना मुमिनीन के लिए सालाना वर्कशाप की मानिन्द है। आज के साइंटिफ़िक दौर में प्रोफ़ेशनल लोग आपको अपडेट करने के लिए अपने प्रोफ़ेशनल नॉलेज में तरक़्क़ी के लिए और अपने लोगों की तरक़्क़ी के लिए सालाना कुछ न कुछ करते हैं। क़ुरआन मजीद ने चौदह सौ साल पहले ये तसव्वुर पेश कर दिया था के ईमान वालो! तुम्हें भी अपनी जज़्बात और कैफ़ियात को बरक़रार रखने के लिए अपने आपको रूहानी तौर पर अपग्रेड करने के लिए साल में एक महीना ऐसा दिया जा रहा है जिसमें तुम क़ुरआन मजीद की तालीमात शुरू से लेकर आख़िर तक नए सिरे से फिर सुनोगे और जज़्बों की सच्चाई के साथ फिर अमल का इरादा कर लोगे।

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद नक़्शबंदी
मुजद्दिदी मद्देज़िल्लहु

بسم اللہ الرحمن الرحیم

يَااَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ٥

रोज़ा और तरावीह के जिस्मानी फ़वाइद

हज़रत अक्दस दामत बरकातुहुम का ये बयान 19, अक्टूबर 2003 ई० को बाद नमाज़ मग़रिब रमज़ान के इस्तिक़्बाल के सिलसिले में जामा मस्जिद अल्लाहु अकबर डिफ़ेन्स हाउसिंग अथारिटी (लाहौर) में हुआ। जिसमें दूर नज़दीक के कसीर तादाद में मुतवस्सिलीन और आम लोगों ने शिर्कत की।

रोज़ा और तरावीह के जिस्मानी फ़वाइद

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَكَفٰى وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى اَمَّا بَعْدُ!

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ○ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ○ (البقرہ:۱۸۳)

وَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّوْمُ جُنَّةٌ اَوْ كَمَا قَالَ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ.

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ○ وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ○ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ○

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ.

शहंशाहे हक़ीक़ी का बराहेरास्त ख़िताब

अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ○ (البقرہ:۱۸۳)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे ऊपर रोज़े फ़र्ज़ किए गए जैसा के (ये रोज़े) तुम से पहलों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताके तुम परहेज़गार बन

जाओ।

इस आयत में रोज़ों की फ़र्ज़ियत का ऐलान किया गया लेकिन ज़रा इस आयत की बनावट पर ग़ौर कीजिए के इसमें ईमान वालों को बराहेरास्त ख़िताब किया गया ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا﴾ ऐ ईमान वालो यानी ऐ वो लोगों जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों को मानने का इक़रार कर चुके हो। ये अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का ईमान वालों से बराहेरास्त ख़िताब है।

तौरैत में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने बनी इस्राईल को एक मर्तबा बराहेरास्त ख़िताब किया। उस पर वो लोग इतने ख़ुश हुए के वो कहा करते थे :

﴿نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ (المائدة:١٨)﴾ हम अल्लाह तआला के बेटे और उसके चुने हुए बंदे हैं।

वो एक मर्तबा के ख़िताब पर (Superiority Complex) (बरतरी के वहम) में मुब्तला हो गए जबके अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उम्मते मुहम्मदिया के मोमिनीन को क़ुरआन मजीद में 88 मर्तबा बराहेरास्त ख़िताब फ़रमाया है।

इसकी मिसाल यों समझिए के वक़्त का बादशाह अगर किसी ख़ाकरूब को बुलाकर उससे ख़ुद बात करे तो उस ख़ाकरूब के लिए इसमें बड़ी इज़्ज़त होती है के वी०वी०आई० पर्सनलिटी ने मेरे ज़िम्मे काम लगाया है। यहाँ तो इससे भी अनोखा मामला है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त तो परवरदिगार आलम हैं और हम लोग उसके पैदा किए हुए हैं। अगर परवरदिगार हमें बराहेरास्त ख़िताब फ़रमाकर कुछ कहें तो वो कितनी अहमियत वाली बात हो जाएगी। इसीलिए अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाया करते थे के जब भी क़ुरआन पाक पढ़ते हुए ﴿يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ﴾

﴿اٰمَنُوْا﴾ या अय्युहल्लज़ीना आमनू के अलफ़ाज़ आएं तो पढ़ने वाले को चाहिए के वो मुतवज्जेह हो जाए के अब शहंशाहे हक़ीक़ी उससे बराहेरास्त ख़िताब फ़रमा रहे हैं।

रोज़ा क़ुर्बे इलाही का ज़रिया है

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ईमान वालों को अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करते हुए ये पैग़ाम दिया के ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ﴾ यानी तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किए गए हैं।

अब इस ख़िताब को सुनकर दिल में मुख़्तलिफ़ सोचें आती हैं। मुमकिन है के किसी के दिल में ये सोच भी आए के हम से हमारे मालिके हक़ीक़ी ख़फ़ा हो गए हैं। इसलिए साल में एक महीने हमें खाने से मना कर दिया है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस सोच को दुरुस्त करने के लिए इर्शाद फ़रमाया के हम पर ये रोज़ न तो सज़ा की वजह से फ़र्ज़ किए गए हैं और न ही इस वजह से किए के हमें अपने वसाइल (सामान) के ख़त्म होने का ख़तरा है बल्के फ़रमाया ﴿كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ﴾ जैसा के ये रोज़े तुम से पहलों पर फ़र्ज़ किए गए।

यानी ये तुम पर कोई नई पाबन्दी आएद नहीं की जा रही है बल्क ये इबादत का एक तसलसुल (Continuation) है और तुम से पहले आने वाले लोग भी ये काम करते रहे है। अब जब मोमिन ये सुनता है के पहले लोगों पर भी रोज़े फ़र्ज़ थे तो दिल को तसल्ली हो जाती है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त नाराज़ भी नहीं और सज़ा भी नहीं बल्के ये एक इबादत है जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के क़ुर्ब का ज़रिया है।

फिर रोज़ा फ़र्ज़ करने को मक़सद भी बताया गया है के तुम्हें भूके प्यासा रखकर तुम्हारे मालिक को कुछ नहीं मिलेगा बल्के

बल्के इसका फ़ायदा भी तुम्हारे लिए है। चुनाँचे फ़रमाया ﴿لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ﴾ यानी ताके तुम परहेज़गार बन जाओ।

मालूम हुआ के जो ये इबादत मोमिनीन पर फ़र्ज़ की गई उसका मक़सद भी मोमिनीन के अंदर अच्छी सिफ़ात का पैदा करना है। अब जब पूरी आयत को पढ़ते हैं तो फिर दिल को तसल्ली हो जाती है और दिल में ये शौक़ पैदा होता है के हम इस इबादत को बड़े एहतिमाम के साथ अदा करें।

नसीहत आमोज़ क़ुरआनी उसलूब (तरीक़ा)

इस आयत से हमें एक और नुक्ता भी मिला। हम भी अपने घरों में कभी बीवी को हुक्म देते हैं और कभी बच्चे को हुक्म देते हैं। हम सोचें के क्या हम भी क़ुरआनी उसलूब को अपनाते हैं? क्या हम उसको पहले प्यार से बुलाते हैं? जब उसको कोई बात कहते हैं तो क्या कभी उसके फ़वाइद और उसकी हिकमतें भी साथ बयान करते हैं तोके उनका शऊर साफ़ हो जाए के ये जो बात कही जा रही है उसके पीछे वजह क्या है। हम ग़लती करते हैं के फ़ौरन दो लफ़्ज़ों में एक बात कह देते हैं। जब सुनने वाला को पूरी वाज़ेह नहीं होती तो कई मर्तबा उसको तसलीम करने मुश्किलात पेश आ जाती हैं। तो क़ुरआन मजीद ने हमें कितना प्यारा उसलूब बताया है।

सालाना रूहानी वर्कशाप

रमज़ानुल मुबारक का महीना मुमिनीन के लिए सालाना वर्कशाप की मानिन्द है। आज के साइंटिफ़िक दौर में प्रोफ़ेशनल लोग आपको अपडेट करने के लिए अपने प्रोफ़ेशनल नॉलेज में तरक़्क़ी के लिए और अपने लोगों की तरक़्क़ी के लिए सालाना

कुछ न कुछ करते हैं। क़ुरआन मजीद ने चौदह सौ साल पहले ये तसव्वुर पेश कर दिया था के ईमान वालो! तुम्हें भी अपनी जज़्बात और कैफ़ियात को बरक़रार रखने के लिए अपने आपको रूहानी तौर पर अपग्रेड करने के लिए साल में एक महीना ऐसा दिया जा रहा है जिसमें तुम क़ुरआन मजीद की तालीमात शुरू से लेकर आख़िर तक नए सिरे से फिर सुनोगे और जज़्बों की सच्चाई के साथ फिर अमल का इरादा कर लोगे।

वाक़ई रमज़ानुल मुबारक में शुरू से लेकर आख़िर तक क़ुरआन मजीद तरावीह में पढ़ा जाता है। इसका मक़सद ये है के हमने अल्लाह तआला से जो अहद किया हुआ है उस अहद को पूरा करने के लिए अगर हम साल के दौरान सुस्ती की तो हम उसको एक मर्तबा फिर सुनें और नए सिरे से बैटरी चार्ज करके एक नए अज़्म के साथ अल्लाह तआला की रहमतों से एक इंक़लाबी ज़िंदगी का आग़ाज़ कर दें।

हुसूले इल्म का दरख़शाँ तसव्वुर

हमें एक मर्तबा एक कोर्स करने का मौक़ा मिला। इसका टॉपिक (Effective Managment) था। हमारे इंस्ट्रक्टर एक जर्मन डाक्टर थे। उनका नाम मिस्टर ब्राउडी था। वो इतने क़ाबिल थे के वो दुनिया की सात मुख़्तलिफ़ युनिवर्सिटियों के विज़िटिंग प्रोफ़ेसर थे। एक होता है क़ाबिल मैनेजर और एक होता है (Effective Manager) मौस्सिर मैनेजर। दोनों में फ़र्क़ है।

(Efficient Manager) क़ाबिल मैनेजर तो वो होता है जो दिन रात अपने काम में लगा रहता है ख़्वाह आउटपुट कुछ हो या न हो लेकिन (Effective Manager) मौस्सिर मैनेजर उसको कहते हैं जो आउटपुट प्रॉडक्शन दिखा रहा हो।

लैक्चर के दौरान उन्होंने कहा के लोगों के ज़हन में एक तसव्वुर था के लड़कपन में पढ़ते हैं, जवानी में काम करते हैं और बुढ़ापे में काम करते हैं। अब ये पुराना तसव्वुर ख़त्म हो गया है। अब यूरोपियन कम्युनिटी इस नतीजे पर पहुँची है के हमें लड़कपन में भी पढ़ना है और जवानी में भी जॉब के साथ-साथ पढ़ते रहना है। इसका तरीक़ा ये है के जब हम किसी प्रोफ़ेशन में काम कर रहे हों तो अपने प्रोफ़ेशनल नॉलेज को बढ़ाने के लिए हमें वर्कशाप्स, कानफ्रेन्सेस, सेमनीनार्स अटेन्ड करने चाहिएं और अपने आपको अपडेट रखना चाहिए वरना हम लोगों से पीछे रह जाएंगे।

जब उसने ये बात कही तो इस आजिज़ ने हाथ से इशारा किया के जी! मैं भी आपके साथ कुछ शेयर करना चाहता हूँ। उन्होंने कहाख ज़रूर शेयर कीजिए। मैंने कहा, जी गुज़ारिश ये है के ये तसव्वुर यूरोपियन कम्युनिटी का पेश किया हुआ नहीं बल्के इससे भी पुराना मामला है। उसने पूछा, वो कैसे? मैंने कहा, आज से चौदह सौ साल पहले जब हमारे नबी अलैहिस्सलाम इस दुनिया में तशरीफ़ लाए तो उस वक़्त इल्म का कोई क़द्रदान नहीं था। वो जिस क़ौम में पैदा हुए वो एक जाहिल क़ौम थी और जिस ज़माने में पैदा हुए उस ज़माने को ज़मानए जाहिलियत कहा जाता है। इतने जाहिल लोगों में पैदा होने वाले अल्लाह तआला के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब इंसानियत को तालीम दी तो इल्म हासिल करने के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

﴿اطلبوا العلم من المهد الى اللحد﴾ तुम इल्म हासिल करो पंघोड़े से लेकर अपनी क़ब्र में जाने तक।

लिहाज़ा आप जो ये कह रहे हैं के आज यूरोपियन कम्युनिटी इस नतीजे पर पहुँची है तो मैं ये कहना चाहता हूँ के आप इस

नतीजे पर बहुत देर से पहुँचे हैं और मेरे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये कहा दरख़्शाँ तसव्वुर पहले से दिया हुआ है।

जब मैंने उनको ये बात की तो थोड़ी देर तो वो सोचते रहे। फिर उन्होंने अपने ब्रीफ़केस में से एक डायरी निकाली और मुझे कहने लगे के आप इस के ऊपर अपने नबी अलैहिस्सलाम का फ़रमान अरबी में लिख दें और उसके नीचे इंगलिश ट्रान्सलेशन भी लिख दें। जब मैंने लिखकर दे दिया तो वो कहने लगे :

"इस वक़्त जितने भी डेलीगेटस यहाँ मौजूद हैं मै। उनके सामने वादा करता हू के आज के बाद मैं जिस युनिवर्सिटी में भी लैक्चर दूँगा मैं वहाँ लोगों को बताऊँगा के मुसलमानों के पैग़म्बर अलैहिस्सलाम ने आज से चौदह सौ साल पहले इस बात को हुक्म फ़रमा दिया था।"

ईमान की चार्जिंग

सुब्हानअल्लाह! दीने इस्लाम ने ऐसी तालीमात दीं जो क़ियामत तक के हर तक़ाज़े को पूरा करने के लिए काफ़ी, वाफ़ी और शाफ़ी हैं। आज दुनिया कान्फ़्रेन्सेस और सेमीनार्स की बातें करती है। अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आज से चौदह सौ साल एक तसव्वुर दे दिया था के तुम सारा साल अपने कामों में मशग़ूल रहोगे। कोई सनअतकार बनेगा, कोई ताजिर और कोई युनिवर्सिटियों में प्रोफ़ेसर बनेगा तो कोई हस्पतालों में सर्जन तो मुमकिन है के अपने-अपने कामों में मसरूफ़ियत की वजह से तुम्हारा ईमानी जज़्बा ठंडा पड़ जाए और ईमान की बैट्री डाउन हो जाए। जिस तरह (सेलफ़ोन) इस्तेमाल होता रहता है तो बैट्री डाउन हो जाती है और उसे फिर चार्जर से लगाना पड़ता है। इसी तरह रब्बे करीम ने भी रमज़ानुल मुबारक

का महीना ईमान वालों के लिए ईमान की चर्जिंग का महीना बनाया है। रमज़ानुल मुबारक की ख़ास बात ये है के इसके दिनों में रोज़ा रखना फ़र्ज़ कर दिया गया है और रात को तरावीह में क़ुरआन मजीद सुनना सुन्नत बना दिया गया है। इन दोनों कामों का ख़ुद इंसान को ही फ़ायदा होता है। इसमें उसके बहुत से रूहानी और अख़्लाक़ी पहलू भी हैं। इसके अलावा इंसानी जिस्म पर उनके बहुत अच्छे असरात पड़ते हैं। ये आजिज़ आज आपके सामने रोज़े और तरावीह के उन असरात को वज़ाहत से बयान करेगा जो इंसान के जिस्म पर मुरत्तब होते हैं। लेकिन इससे पहले एक वाक़िआ सुन लीजिए :

क़ुरआन व हदीस में तलबे रहमत के रहनुमा उसूल

हारून रशीद का ज़माना था। बादशाह के पास एक ईसाई पादरी आया जो बड़ा अच्छा हकीम भी था। उसने बादशाह से कहा के मैं आपसे एक बात करना चाहता हूँ। उसे मौक़ा दिया गया। उसने कहा के मैं दीन का इल्म भी रखता हूँ और हिकमत का इल्म भी जानता हूँ। आपसे मैं ये पूछता हूँ के आप जो ये कहते हैं के क़ुरआन मजीद में ज़िंदगी के तमाम उसूल मौजूद हैं। क्या क़ुरआन मजीद में इंसान की सेहत के बारे में कोई उसूल बताया गया है? हारून रशीद ने अपने पास मौजूद उलमा से कहा के आप इसके सवाल का जवाब दें। एक आलिम अली बिन हुसैन खड़े हुए और उन्होंने फ़रमाया, जी हमें क़ुरआन मजीद में जिस्मानी सेहत के बारे में एक सुनहरा उसूल बताया गया है। पूछा गया वो सुनहरी उसूल क्या है? उन्होंने फ़रमाया के क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया,

﴿كلو واشربوا ولا تسرفوا (الاعراف ٣١)﴾

तुम खाओ पियो मगर इसराफ़ (फ़ुज़ूलख़र्ची) न करो यानी ओवर ईटिंग। (बसियारख़ोरी) न करो बल्के जितनी ज़रूरत हो उतना खाइए और फिर अल्लाह के गीत गाइए। ये जो ओवर ईटिंग (ज़्यादा खाने) से मना किया गया है ये एक ऐसा बेहतरीन उसूल है के अगर इंसान इस पर अमल करे तो उसकी ज़िंदगी में बीमारियाँ आने की उम्मीद बहुत कम हो जाती है।

वो हकीम ये सुनकर कहने लगा के मैं हकीम हूँ और मैं ये तसीलम करता हूँ के ये एक बेहतरीन उसूल है। उसने फिर कहा, क्या तुम्हारे नबी अलैहिस्सलाम ने भी रूहानी तालीमात के साथ-साथ जिस्मानी सेहत के बारे में भी कोई उसूल बताया है के आदमी अपने जिस्म का ख़्याल कैसे रख सकता है? वो आलिम कहने लगे जी हाँ। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें जिस्मानी सेहत के बारे में भी बड़ा अनमोल उसूल बता दिया है। उन्होंने हदीसे पाक बयान की जिसका उर्दू तर्जुमा ये है :

मैदा तमाम बीमारियों की बुनियाद है। तुम जिस्म को वो दो जिसकी इसको ज़रूरत है। और परहेज़ इलाज से बेहतर है।

जब ईसाई हकीम ने अली बिन हुसैन की ज़बान से क़ुरआन व हदीस में मौजूदा तिब के ये रहनुमा उसूल सुने तो वो कहने लगा, "तुम्हारी किताब और तुम्हारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जालीनूस के लिए कोई तिब नहीं छोड़ी।" अल्लाहु अकबर।

आज डॉक्टर लोग तस्दीक़ करते हैं के हमारी खाने की आदतें ही हमारी बीमारियों को डिसाइड कर रही होती हैं। मसलन :

अगर हम बहुत ज़्यादा चीनी खाएंगे तो शुगर के मरीज़ बन जाएंगे।

अगर बहुत ही ज़्यादा मलाइदार और रस भरी चीज़ें खाएंगे तो कोलेस्ट्राल लेवल हाई कर बैठेंगे।

और अगर बहुत ही ज़्यादा चटपटी चीज़ें खाएंगे तो अलसर और ब्लडप्रेशर के मरीज़ बन जाएंगे।

इसलिए नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया के मेदा तमाम बीमारियों की बुनियाद है। यहीं से बीमारियाँ शुरू होती हैं। इसलिए जो बंदा अपने मेदे को कंट्रोल कर ले जो चीज़ें इंसान के लिए फ़ायदामंद हैं वो इस्तेमाल करे और जो चीज़ें नुक़सानदे हैं उनसे बच जाए तो वो इंशाअल्लाह इन बीमरियों से बच जाएगा। तो हदीस पाक का पहला हिस्सा ये है के मेदा तमाम बीमारियों की बुनियाद है।

हदीस पाक का दूसरा हिस्सा ये है के "तुम जिस्म को वो दो जिसकी उसको ज़रूरत है।"

अब कुछ सूफ़ी हज़रात बीमार होते हैं तो दवाई नहीं खाते। इसी तरह कई औरतें दवाई तो मंगा लेती हैं लेकिन कढ़वी होने की वजह से इस्तेमाल नहीं करतीं। ये नबी अलैहिस्सलाम की तालीमात के ख़िलाफ़ है क्योंके नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया है के जिस्म को वो दो जिसकी उसको ज़रूरत है। इस हदीस पाक की रू से अगर जिस्म को किसी चीज़ के खाने की ज़रूरत है तो उसे वो चीज़ देना हुक्मे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम है। और आगे फ़रमाया, "परहेज़ इलाज से बेहतर होता है।"

आज हम इस मामले में बहुत ही ज़्यादा सुस्ती करते हैं। जहाँ आप देखें के दस्तरख़्वान पर किसी ने स्वीट डिश की तरफ़ पहले हाथ बढ़ाया तो आप उसी वक़्त समझ लें के ये आदमी शूगर का

मरीज़ है। लोग परांठे खाएंगे उनकी शिरयानें भी बंद होंगी और फिर वो कहेंगे के अल्लाह मालिक है। भई! अल्लाह तआला तो मालिक हैं लेकिन परवरदिगार ने अक़्ल भी दो इस्तेमाल करने के लिए दी है। जब अक़्ल बता रही है के मैं मरीज़ हूँ और मुझे मिठाई से मना किया गया है तो मुझे रुक जाना चाहिए। लोग इसको तवक्कल समझते हैं हालाँके ये गुनाह है।

याद रखें, " जिस बंदे को डाक्टर किसी चीज़ से मना करें और कहें के ये तुम्हारे जिस्म के लिए नुक़सानदेह है वो उसको खाकर तवक्कल का मुज़ाहिरा न करे। इससे उसे तवक्कल का सवाब तो नहीं मिलेगा अलबत्ता अगर उसके खाने से मौत वाक़ेअ हो गई तो मुमकिन है के क़ियामत के दिन ख़ुदकशी का अज़ाब हो जाए।"

लोग तो मीठा खा रहे होते हैं लेकिन उनके लिए स्लो प्वाइज़न (सुस्त रफ़्तार ज़हर) है। जिसकी शूगर कंट्रोल में नहीं है और उसके पाँव पर ज़ख़्म भी बना हुआ है और उसके बावजूद भी वो मीठा खा रहा है तो उसे चाहिए के वो उसे मीठा मत समझे बल्के ये मिठाई की शक्ल में ज़हर है।

आजकी दुनिया में सब साइंसदान तसलीम करते हैं के परहेज़ इलाज से बेहतर है बल्के इंगलिश का मक़ूला भी है :

(Prevention is better than cure.) परहेज़ इलाज से बेहतर है।

ज़्यादा खाने से पैदा होने वाली बीमारियाँ

इंसान जो कुछ खाता है वो उसके बदन की ज़रूरत होती है। मगर अंग्रेज़ी का एक मक़ूला है :

Excess in everything is bad. (किसी भी चीज़ की ज़्यादती हमेशा नुक़सानदेह होती है।)

इस मक़ूले के पेशेनज़र अगर हम किसी भी मशीन को ओवरलोड कर देंगे तो ब्रेकडाउन के चान्सेज़ बढ़ जाएंगे। यही हाल इंसान के मेदे का है। इसको खाने की एक मख़्सूस मिक़्दार फ़ायदा देती है लेकिन अगर इसमें ज़्यादा फ़ीड करना शुरू कर देंगे तो फ़ायदे के बजाए उल्टा नुक़सान शुरू हो जाएगा। ओवर ईटिंग इंसान को सेहतमंद नहीं बल्के बीमार कर देती है।

ज़्यादा खाने से इंसान के अंदर चर्बी ज़्यादा आ जाती है। वो मोटा हो जाता है जिसकी वजह से उसका वज़न बढ़ जाता है। ये वज़न का बढ़ जाना मोमिन बंदे के लिए एक मुसीबत होती है। वो किसी काम का नहीं रहता। अगर वो पैदल भी चंद क़दम चल ले तो उसको साँस चढ़ जाता है। अब वो इबादत कैसे करेगा। इस तरह तो दुनिया के काम-काज भी नहीं हों सकेंगे। जिससे अपना आप नहीं संभाला जाता वो ख़ुदा के किसी दूसरे बंदे को क्या संभालेगा। याद रखें के सेहत मोटापे को नहीं कहते बल्के सेहत उसे कहते हैं के इंसान की जसामत ऐसी हो के वो देर तक काम भी करे तो वो थके नहीं। जब ऐसा जिस्म हो के काम करके थकावट महसूस न हो तो बंदा समझ ले के अब मेरी सेहत बहुत अच्छी है।

अगर आप ग़ौर करें तो आज के दौर में ऐसी बीमारियाँ बहुत आम हैं जिनका ताल्लुक़ ओवर ईटिंग से है। मसलन ब्लडप्रेशर, शूगर, गैस्ट्रिक, अलसर वग़ैरह। कम खाने से जो बीमारियाँ होती हैं वो आज के दौर में नहीं हैं। इसका मतलब ये है हमारे ऊपर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बहुत ज़्यादा नेमतें हैं। शायद के इतनी

मादूदी नेमतें पहलों के पास नहीं थीं। लेकिन कितनी अजीब बात है के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की जितनी नाशुक्री आजके दौर में हो रही है उतनी नाशुक्री पहले कभी नहीं होती थी।

कम खाने की आदत डालिए

इंसान की ख़ुराक हमेशा उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ रहनी चाहिए। अब हर इंसान की ख़ुराकउसके जिस्म के हिसाब से अपनी होती है। उलमा ने लिखा है के इंसान को जितनी भूक हो अगर वो उससे ज़्यादा दो चार लुक़्मे कम खाए तो ये एक अच्छी ईटिंग हैबिट है। हम ये नहीं कहते के इंसान के पास अल्लाह तआला की नेमतें हों और फिर भी भूका रहे और जिस्म को ग़िज़ा ही न दे। ज़रूर खाइए मगर कितना? बदन जितनी ज़रूरत महसूस करे उससे चंद लुक़्मे कम खा लीजिए ताके ख़ुराक अच्छे अंदाज़ से हज़्म होकर जिस्म का हिस्सा बन सके।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल

नबी अलैहिस्सलाम कम खाने के आदी थे। आपकी नुबुव्वत की पूरी ज़िंदगी में तीन दिन (लगातार) ऐसे नहीं आए के आपने तीनों दिन पेट भकर खाना खाया हो। अगर एक दिन खाना खाते तो दूसरे दिन फ़ाक़ा फ़रमाते और अगर दो दिन खाते तो तीसरे दिन फाक़ा हो जाता था।

एक मर्तबा फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा अल्लाह के महबूब की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो महबूबे दो आलम ने अपनी आदत के मुताबिक़ उनका खड़े होकर इस्तिक़बाल फ़रमाया। सैय्यदा फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने नबी अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया ऐ अब्बा जान! सैय्यदना अली! आटा लाए थे। मैंने रोटियाँ बनायीं।

एक-एक रोटी सबके हिस्से में आई। एक मेरे हिस्से में भी आई। जब खाने लगी तो मेरे दिल में ये ख़्याल पैदा हुआ के फ़ातिमा! तुम तो खा रही हो, पता नहीं तुम्हारे अब्बा हुज़ूर को कुछ खाने को मिला है या नहीं। इसलिए मैंने आधी रोटी बचा ली। अब मैं आपकी ख़िदमत में वो आधी रोटी तोहफ़े के तौर पर पेश करती हूँ। अल्लाह के महबूब ने वो आधी रोटी क़ुबूल फ़रमा ली और उसका एक लुक़्मा अपने मुँह मुबारक में डालकर फ़रमाया :

"मेरी बेटी फ़ातिमा! क़सम है उस परवरदिगार की जिसके कब्ज़ए क़ुदरत में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की जान है, तीन दिन से तेरे वालिद के मुँह में रोटी का कोई लुक़्मा नहीं गया।

सेहतमंदी का बेहतरीन राज़

एक हकीम साहब लोगों का इलाज करने के लिए मदीना मुनव्वरा पहुँचे। उनका ख़्याल था के मदीना मुनव्वरा में कोई हकीम नहीं है इसलिए मेरा काम ख़ूब चलेगा मगर कितने ही दिन गुज़र गए के उनके पास कोई मरीज़ भी न आया। चुनाँचे वो नबी अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर कहने लगे, जी मैं तो इसलिए आया था के मेरा काम अच्छा चलेगा लेकिन यहाँ तो मेरे पास कोई आया ही नहीं। नबी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

"ये लोग खाना उस वक़्त खाते हैं जब इन्हें सख़्त भूक लगी होती है और अभी कुछ भूक बाक़ी होती है के ये खाने से हाथ खींच लेते हैं। इस वजह से इनको बीमारियाँ कम लगती हैं।"

ये सेहतमंद का बेहतरीन राज़ है जो अल्लाह के महबूब ने उनको बताया।

पैग़ामे आफ़ियत

चूँके इंसान की समझ उनके एजुकेशन लेवल, उनके वसाइल और उनकी मआशी हालतें मुख़्तलिफ़ होती हैं। इसलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने बंदों पर ये मेहरबानी फ़रमाई के कोई बंदा खाने की अच्छी आदत अपनाता है या न हीं। उन पर एक महीना ऐसा भेज दिया के इस महीने में वो ज़बरदस्ती इसका पाबन्द होना चाहिए ताके उसको भी फ़ायदा मिल जाए। इस तरह हर तब्क़े के इंसानों के लिए रमज़ानुल मुबारक की सेहत का ज़रिया बन जाता है। गोया ये महीना हर तब्क़े इंसानी के लिए आफ़ियत का पैग़ाम देता है।

हक़्क़ानियते इस्लाम का एक वाज़ेह सुबूत

मुझे वर्जीनिया (अमरीका) में एक ईसाई इंजीनियर मले। बातें करते-करते वो मुझे कहने लगे के मैं आजकल रोज़ेदारी कर रहा हूँ यानी रोज़े रख रहा हूँ। मै।ने उनसे पूछा, भई क्या मतलब? वो कहने लगे, आप लोग भी तो एक महीने के लिए रोज़ेदारी किया करते हैं। मैंने कहा, हाँ। वो कहने लगे के इस में तिब्बी तौर पर इतने फ़ायदे हैं के मैंने उन ज़ाहिरी फ़ायदों की ख़ातिर अपनी ज़िंदगी का मामूल बना लिया है के मैं भी हर साल एक महीना रोज़े रखता हूँ। वो ग़ैर-मुस्लिम जिन्होंने अभी इस्लाम भी क़ुबून नहीं किया। वो इस्लामी तालीमात की हिकमतों को मानते हैं और कभी-कभी उनको अपनाकर दुनियावी फ़ायदे उठाते हैं।

शेर की सेहत का राज़

आज आमतौर पर हम जितना खाते हैं वो हमारी ज़रूरियात से बहुत ज़्यादा होता है। एक दो मिसालों से बात समझ में आ

जाएगी। शेर के बारे में कहते हैं के वो जंगल का बादशाह है। उसके जिस्म के अंदर आसाबी ताक़त इतनी होती है के अगर वो कभी किसी जानवर के सामने आ जाऐ तो उस जानवर की आधी जान तो उसी वक़्त निकल जाती है। जब वो चलता है और दौड़ता है तो उकसे जिस्म के ख़द व ख़ाल को देखकर बंदा हैरान होता है और कहता है के वाक़ई ये हक़ रखता है के इसको जंगल का बादशाह होना चाहिए। उसकी ख़ुराक कितनी होती है।

उसको एक हफ़्ते में एक मर्तबा गोश्त दिया जाता है। हमें दुनिया में बहुत ऐसी जगहों को देखने का मौक़ा मिला जहाँ शेरों की ख़ास नस्लों को अफ़ज़ाइश किया जाता है। हमने उनसे ये सवाल बहुत बार पूछा। पूरी दुनिया में हमें ये चीज़ यकसाँ मिली के शेर को हफ़्ते में सिर्फ़ एक दफ़ा ही ख़ुराक दी जाती है। और वो ख़ुराक उसके लिए पूरा हफ़्ता काफ़ी रहती है। हमने कहा इसको हफ़्ते में सिर्फ़ एक दफ़ा ख़ुराक देते हैं लेकिन हम एक दिन में माशाअल्लाह कितनी बार खाते हैं।

मगरमच्छ की सेहत का राज़

इस वक़्त दुनिया में जो जानदार मौजूद हैं उनमें से सबसे ज़्यादा उम्र वाला नौ मगरमच्छ है। इस वक़्त भी मगरमछ की उम्र डेढ़ सौ साल, पौने दो सौ साल, दो सौ साल तक जा रही है। उसके अंदर पठ्ठों की ताक़त इतनी ज़्यादा है के अगर वो शेर का बाज़ू भी अपने जबड़े में ले ले तो वो बाज़ू कट तो सकता है मगर वो छूटकर वापस नहीं आ सकता। अब इस बात पर रिसर्च की गई के इस लंबी ज़िंदगी और उसकी आसाबी ताक़त ज़्यादा होने की वजह क्या है तो पता चला के इस जानवर की ख़ुराक बहुत थोड़ी है।

आप हैरान होंगे के मगरमछ का वज़न 700 किलोग्राम होता है यानी अगर 70 किलोग्राम का एक बंदा हो उस जैसे दस आदमियों के वज़न के बराबर उस मगरमछ का वज़न होता है लेकिन वो चौबीस घंटों में सिर्फ़ 700 ग्राम खाता है यानी एक किलोग्राम से भी कम। सोचने की बात ये है के हमरा दोपहर का खाना भी माशाअल्लाह दो-दो किलोग्राम के बराबर होता है। और तीन खानों के अलावा चाय के नाम पर और पता नहीं के किस किस नाम पर हम और क्या-क्या खा रहे होते हैं। ये दस्तूर है के जब भी किसी मशीन को ओवर बर्डन कर दिया जाए तो उस मशीन की प्रोडक्शन सही नहीं होती।

सुस्ती क्यों पैदा होती है?

दिमाग़ हर वक़्त हमारे जिस्म के ख़ून को मुख़्तलिफ़ आज़ा के दर्मियान तक़्सीम कर रहा होता है। जब हम बहुत ज़्यादा खा लेते हैं तो हमारा दिमाग़ फ़ैसला कर लेता है के अब बदन में सबसे ज़्यादा ख़ून की ज़रूरत मेदे को है। जैसे कोई फ़ायर फ़ाइटिंग करता है के जहाँ ज़रूरत हो वहाँ ज़्यादा तवज्जेह दो। वहाँ एमरजेन्सी जारी कर दी जाती है। इसी तरह हमारे ख़ून का एक वाफ़र हिस्सा मेदे की तरफ़ मुतवज्जेह हो जाता है हत्ताके उस वक़्त हमारे दिमाग़ को भी थोड़ा ख़ून पहुँच रहा होता है। इसीलिए ऊँघ तारी होती है। ज़्यादा खा लेने के बाद जो ग़ुनूदगी सी तारी होती है उसकी बुनियादी वजह ये है के दिमाग़ जिस्म के दूसरे आज़ा से ब्लड कम करके मेदे को भेज देता है। गोया दिमाग़ ये कहता है के अब मुसीबत पड़ गई है, अब इस ख़ुराक को भी हज़्म करना है चूँके ख़ून बहुत कम हिस्से बाक़ी बदन को मिलता है इसलिए बंदा सुस्त हो जाता है और वो ज़्यादा वक़्त सोया रहता है।

मशहूर लोग और उनकी ख़ुराक

दुनिया में जितने मशहूर लोग गुज़रे हैं अगर आप उनकी ज़िंदगियों को इस एतिबार से देखें के वो कितना खाते थे तो ये चीज़ आपको यकसाँ नज़र आएगी के उनकी ख़ुराक बहुत वाजबी सी थी। मिसाल के तौर पर–

1. इमाम बुख़ारी रह० को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ऐसी ज़हानत दी थी के आपको लाखों हदीसें ज़बानी याद थीं। एक मर्तबा उनसे पूछा गया के आप दिन में कितना खाते हैं? तो फ़रमाया के मैं आजकल सात बादात खाकर अपने काम में मसरूफ़ हो जाता हूँ और मेरा पूरा दिन इसी पर गुज़र जाता है। अल्लाहु अकबर। जितने लोगों को आई क्यो लेवल अच्छा होता है ये सब वो लोग होते हैं जिनके अंदर चर्बी थोड़ी होती है और उनके जिस्म बहुत अच्छे होते हैं।

2. मुझे एक दफ़ा म्युज़ियम देखने का मौक़ा मिला। मैंने वहाँ आइन्सटाइन की ममी (मसाला लगी लाश) देखी। ये आइन्सटाइन आज की दुनिया में इस तरह मौज़्ज़िज़ है जैसे दीन के हल्क़ों में पैग़म्बरों की इज़्ज़त की जाती है। इसने Theory of Relativity (नज़रिया इज़ाफ़ात) पेश किया। मैं तो उसका दुबला पतला स्ट्रक्चर (ढाँचा) देखकर हैरान रह गया। मेरा ख़्याल है के उसका वज़न साठ किलोग्राम से ज़्यादा न होगा लेकिन अल्लाह तआला ने उसको ऐसा दिमाग़ दिया था के उसने माद्दे और अनर्जी के ट्रान्सफ़ार्म होने की जो Equation (मसावात) दी आज उसकी बुनियाद पर दुनिया के अंदर सबसे ज़्यादा रिसर्च की जा रही है।

हमारे नौजवानों को चाहिए के वो भी खाने की अच्छी आदत को अपनाएं। रमज़ानुल मुबारक का महीना अपनी इस आदत को

कंट्रोल करने के लिए एक गोल्डन चान्स है। रोज़े की कई हिकमतें हैं। इससे इंसान के अंदर सब्र पैदा होता है और अल्लाह तआला की नेमतों की क़द्र दिल में आती है। हम पता नहीं के कितना खाना ज़ाए कर देते हैं। जब खुद भूके होते हैं। तब चलता है के एक लुक़्मे की क्या वैल्यू होती है। तो जहाँ रोज़े के और फ़ायदे हैं के इंसान अपने खाने के निज़ाम को कंट्रोल कर सकता है।

वज़न कम करने का आसान नुस्ख़ा

एक होता है कम खाना। ये भी नबी अलैहिस्सलाम की मुबारक सुन्नत है और एक होता है आहिस्ता खाना, ये भी नबी अलैहिस्सलाम की मुबारक सुन्नत है। इसमें एक दिलचस्प नुक्ता है। आपने देखा होगा के हम लोग खाने के लिए दस्तरख़्वान पर बैठते हैं तो चंद मिनटों में दस्तरख़्वान से बहुत कुछ उनके पेट में शिफ़्ट हो चुका होता है। जब खाना खा लेते हैं तो थोड़ी देर के बाद पेट कह रहा होता है के यार आज तो बहुत खा लिया है। इसमें दिलचस्प नुक्ता ये है के मुझे एक मर्तबा एक ऐसा मज़मून पढ़ने का मौक़ा मिला जिसको किसी मुल्क के डाक्टरों की एक ऐसासियेशन ने छापा था। ये एक पक्की बात है। उन्होंने लिखा था के जो बंदा अपने वज़न को कम करना चाहे उसको चाहिए के वो आहिस्ता खाए। ये चीज़ पढ़कर ये आजिज़ बड़ा हैरान हुआ के अब तक तो कहते थे के जो वज़न कम करना चाहे वो डायटिंग करे और अब ये कह रहे हैं के जो वज़न कम करना चाहिए वो आहिस्ता खाए।

भूक ख़त्म होने का एहसास

खाने के मामले में लोग दो तरह के होते हैं। डायटिंग के

क़ायल होते हैं और कुछ डाई ईटिंग के क़ायल होते हैं। हमने ये पहली मर्तबा पढ़ा के आहिस्ता खाने से इंसान का वज़न घटता है। ये हमारे लिए एक नई चीज़ थी। हमने उस पूरे लिट्रेचर को पढ़ा। इसमें अजीब बात लिखी हुई थी। उसमें लिखा था के जब हम खाना खाते हैं तो हमारा दिमाग़ फ़ैसला करता है के हमने कितना खाया है।

यही बात एक मिसाल से समझें। इंसान का सर बिल्कुल सीधा है या झुका हुआ है इसका फ़ैसला आँखें नहीं करतीं बल्के इसका फ़ैसला दिमाग़ करता है। हमारे कानों में एक कैनल (नाली) है जिसमें लिक्विड होता है और वो लिक्विड अपना लेवल मेनटेन करता है। इस लेवल का सिगनल जब दिमाग़ को पहुँचता है तो दिमाग़ समझ लेता है के सर सीधा है या झुका हुआ है। इसी तरह पेट भरने का फ़ैसला हमारा दिमाग़ लेता है। इस सिलसिले में दिमाग़ दो तरह से फ़ैसला लेता है।

1. एक तो इस तरह के इंसान के पेट के ऊपर की जिल्द के अंदर ट्रान्सप्युसर लगे होते हैं। ये ऐसे ही होते हैं जैसे पिक-अप लगी होती है। जब इंसान खाना खाता है और मेदा ज़रा फैलता है तो ट्रांन्सप्युसर खुद ही एलनोगेट होकर अंदाज़ा लगा लेता है के अंदर कितनी खुराक चली गई है। मगर ये सुस्त रफ़्तार ट्रान्सप्युसर हैं। ये अपना सिगनल बनाकर दिमाग़ तक पहुँचाने में सात मिनट से लेकर दस मिनट तक ले सकता है यानी इतने वक़्फ़े के बाद पिक-अप दिमाग़ को बताएगा के पेट भर गया है।

2. इंसान को दूसरा सिगनल उसके मुँह से मिलता है। मुँह एक Curishing Unit रगड़ने वाली युनिट है। ये यूनिट जितनी तेज़ी से काम करता है ये भी दिमाग़ को पहुँच रहा होता है। इन

दो सिगनल्स को सामने रखकर इंसान का दिमाग़ फ़ैसला लेता है के पेट में कितनी ख़ुराक पहुँच चुकी है।

अब ज़रा ये देखें के हम क्या करते हैं?

हम ये करते हैं तीन चार मिनट के अंदर-अंदर दो रोटियाँ भी खा लेता हैं। पानी भी पी लेते हैं और स्वीट डिश भी खा लेते हैं। अभी पेट वाला सिगनल भी नहीं पहुँचा होता और उससे पहले हम Over Eat (ओवर ईट) कर ज़्यादा खा चुके होते हैं। लिहाज़ा जब असल सिगनल पहुँचतार है तब हम महसूस करते हैं के आज तो मैंने बहुत ज़्यादा खा लिया है।

इसका एक प्रुफ़ भी है। फ़र्ज़ करें के आप खाना खा रहे हैं और आपने अभी आधी रोटी खाई थी के इतने में कोई इंटरनेशनल कॉल आ गई और आप फ़ौन सुनने के लिए चले गए। अगर आप पाँच सात मिनट तक फ़ोन सुनते रहें। जब वापस आएंगे तो आपकी भूक मिट चुकी होगी। यही वजह है के लोग कहते हैं के भूक मर जाती है। भई! भूक नहीं मरती बल्के चंद मिनट गुज़रे उनमें पेट का सही सिगनल दिमाग़ तक पहुँच गया और दिमाग़ ने फ़ैसला ले लिया के बस इतनी ख़ुराक काफ़ी है।

स्लिमिंग कल्ब जाने की ज़रूरत नहीं

रमज़ानुल मुबारक में दिन में रोज़ा रखने का ये मतलब होता है के हमारे बदन में ज़रा ख़ुराक कम हो। अच्छा जब बदन में ख़ुराक कम होती है तो फिर क्या होता है? जब भी मेदे में ख़ुराक कम हो और बदन को भी उसकी ज़रूरत हो तो बदन चर्बी को उसी वक़्त शूगर में तब्दील करके इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। ये Steroids स्टेराइड होते है। जो बदन के अंदर पैदा हो

जाते हैं और वो इंसान की चर्बी को शूगर बना देते हैं। और फिर इंसान के बदन में इस्तेमाल होना शुरू हो जाती है। इसलिए जब इंसान भूका रहता है तो उसकी चर्बी पिघल रही होती है और उसका जिस्म स्मार्ट हो रहा होता है। इसलिए जो लोग स्लिमिंग कल्ब में जाते है। और फिर भी उनका जिस्म हल्का नहीं होता। उनको चाहिए के वो नबी अलैहिस्सलाम की इस मुबारक सुन्नत पर घर बैठकर ही अमल कर लें। इन्हें स्लिमिंग कल्ब जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी बल्के उनकी चर्बी अपने आप ही पिघलती चली जाती है।

तरावीह के जिस्मानी फ़वाइद

एक तो रमज़ानुल मुबारक में रोज़े रखवाए गए और दूसरा रात को तरावीह का हुक्म दिया गया। ज़हन में ये सवाल पैदा होता है के तरावीह के रूहानी फ़ायदे तो हैं, इसके जिस्मानी फ़ायदे क्या हैं? तो भई! नमाज़ के रूहानी फ़ापयदे तो बेशुमार हैं। उनके साथ साथ जिस्मानी फ़ायदे भी हैं।

1. इबादत भी वर्ज़िश भी

नमाज़ एक क़िस्म की वर्ज़िश है।

डाक्टर दस साल पहले कहते थे के जॉगिंग किया करें यानी भागा करें। फिर साबित हुआ के जॉगिंग ज़्यादा करते हैं बुढ़ापे में उनके पाँव की हड्डियाँ प्राब्लम करती हैं। लिहाज़ा डाक्टर आहिस्ता आहिस्ता Brisk Walk (ब्रिस्क वॉक) करने का कहते हैं। ब्रिस्क वॉक ज़रा तेज़ चलने को कहते हैं। डाक्टर कहते हैं के ये इंसान के लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदामंद है।

अल्लाह तआला की शान देखिए के ब्रिस्क वॉक यानी ज़रा

तेज़ी के साथ चलना भी मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। हदीस पाक में आया है के अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऐसे चलते थे जैसे कोई ऊँची जगह से नीची जगह की तरफ़ तेज़ी के साथ उतर रहा होता है। ये मेरे महबूब की सुन्नत है और आज दुनिया ने आख़िर में धक्के खाकर दुनिया के फ़ायदे की ख़ातिर मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत को अपना लिया है।

फिर डॉक्टरों ने कहा के ये जो हम दिन मे एक बार ब्रिस्क वॉक करते हैं ये भी इतनी फ़ायदामंद नहीं है। ये दिन में कई मर्तबा करनी चाहिए। अब यहाँ सवाल ये पैदा होता है के बंदा हर वक़्त वॉक ही करता रहे और और कोई काम न करे। उन्होंने कहा जी नहीं, इंसान इतनी वर्ज़िश कर ले जिससे उसकी दिल की धड़कन थोड़ी तेज़ हो जाए और जो Fluid (सय्याल माए) इंसान के अंदर ब्लड की शक्ल में बह रहा है उसकी मिक्दार बढ़ जाए ताके ये पूरी शिरयानों को साफ़ कर दे। उन्होंने कहा के चंद मर्तबा वर्ज़िश करे अगरचे थोड़ी ही हो। अगर वो लोग दिन में पाँच मर्तबा नमाज़ पढ़ने के आदी होते तो उनको ऐसी वर्ज़िश के बारे में सोचने की ज़रूरत ही न पड़ती।

हमारेरे एक दोस्त जापान गए। वहाँ एक जगह पर एक कंपनी के बोर्ड ऑफ़ डायरेक्टर्स की मीटिंग थी। उन्होंने भी उस मीटिंग में शिरकत की। वो कहने लगे के आठ दस घंटे की मीटिंग थी। इस मीटिंग के दौरान वो एक डेढ़ घंटे बाद खड़े हो जाते और अपनी कुर्सी के साथ ही कोई बाज़ू हिला रहा होता, कोई नीचे जा रहा होता कोई थोड़ा सा आगे पीछे हो रहा होता। गोया खड़े-खड़े हाथों से हल्की वर्ज़िश करते और बैठ जाते। वो कहने लगे के मैंने

उनसे तीन मर्तबा ब्रेक लेकर ये वर्ज़िश की। वो कहने लगे के मैंने उनसे पूछा के आप ये क्या कर रहे हैं? वो कहने लगे के हमारे डाक्टर इस नतीजे पर पहुँचे हैं के दिन में एक मर्तबा वर्ज़िश करने के बजाए चंद मर्तबा हल्की वर्ज़िश कर ली जाऐ तो इसका फ़ायदा ज़्यादा होता है।

ये सुनकर वो कहने लगे के मैंने उन्हें कहा, ओ अल्लाह के बंदो! तुम ये जो थोड़ी देर के बाद चंद मिनट की वर्ज़िश करते हो अगर इसके बजाए तुम दिन में पाँच मर्तबा नमाज़ पढ़ लिया करो तो ऑटोमैटिक वर्ज़िश हो जाएगी।

अब देखिए के एक मोमिन बंदा अल्लाह तआला का हुक्म समझकर ये अमल कर रहा होता है और वो मुफ़्त में जिस्मानी फ़ायदे हासिल कर रहा होता है हत्ताके के कोई अनपढ़ बंदा जो पहाड़ की चोटी पर रहता है उसे कुछ पता नहीं के नमाज़ में मेरा जिस्मानी फ़ायदा क्या है लेकिन अगर वो भी पाबन्दी के साथ नमाज़ पढ़ता है तो उसको भी जिस्मानी फ़ायदा मिल जाता है। अफ़सोस के हमारे कई नौजवान नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते और जो पाबन्दी करते हैं उनको इबादत का सवाब भी मिल जाता है और उनको वर्ज़िश भी हो जाती है।

2. दाएमी ख़ूबसूरती का राज़

हम एक मर्तबा वाशिंगटन में Simthsonian Space Musium (ख़लाई अजाएब घर) देख रहे थे। हमें वहाँ एक डाक्टर साहब मिले। उन्होंने हमारा मुसलमानों वाला हुलिया देखा तो बातचीत शुरू कर दी। वो मुझे कहने लगे के जो मुसलमानों में ज़्यादा इबादतगुज़ार होते हैं उनके चेहरे पर नूर होता है। मैंने कहा जी बिल्कुल सुल्हा का नूर होता है। वो कहने लगे के इसकी एक

वजह है। मैंने पूछा क्या वजह है? वो कहने लगे के इंसानी जिस्म के वो आज़ा जो दिल से नीचे हैं उनमें दिल के लिए ब्लड पहुँचाना आसान हो जाता है। इसलिए सर में जितना ख़ूनी बहाव जाना चाहिए उतना नहीं जाता। मुसलमान लोग जब नमाज़ पढ़ते हैं तो सज्दा भी करते हैं। सज्दे में उनका सर और चेहरा नीचे होता है और दिल ऊपर होता हैं यही एक ऐसी सूरत है के जिसमें ब्लड बह कर इंसान के सर, चेहरे और पूरी जिल्द के अंदर चला जा रहा होता है। फिर वो कहने लगे के अगर ज़रा लंबा सज्दा करें तो चेहरे के अंदर ख़ून महसूस होता है। मैंने कहा, हाँ। फिर उन्होंने कहा के ये ब्लड की सरकुलेशन जो हर रोज़ चेहरे पर फ़लडेड हो रही होती है ये इंसान के चेहरे को तर व ताज़ा बना देती है।

मैंने सोचा के अगर औरतों को इस उसूल का पता चल जाए के नमाज़ पढ़ने से इंसान का चेहरा देर तक मासूम नज़र आता है तो शायद वो क्रीमों को छोड़कर नफ़्ली नमाज़ों के पीछे पड़ जाएं। और वाक़ई आप देखेंगे के जो भी नेकोकार इंसान होगा उसके चेहरे पर आपको एक रौशनी नज़र आएगी। रूहानी असर अपनी जगह मगर नमाज़ का जिस्मानी फ़ायदा भी है के वो जो फ़लडेड ख़ून उनको सज्दों में पहुँच रहा होता है वो उनके चेहरों पर बहार की सी ताज़गी और ख़ूबसूरती अता फ़रमा देता है।

3. शूगर लेवल कंट्रोल करने का ज़रिया

डाक्टर इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं के आदमी जब सुबह के वक़्त सोकर उठता है तो उसका शूगर लेवल सबसे डाउन होता है। इसीलिए लेबारेट्री में कोलेस्ट्रोल चेक करवाना हो तो कहते हैं के सुबह के वक़्त खाने से पहले आएं। चूँके उस वक़्त इंसान का शूगर लेवल पहले ही डाउन होता है। इसलिए अल्लाह तआला ने

फ़ज्र की सिर्फ़ चार रकअतें बनायीं। इस वक़्त ज़्यादा लंबी वर्ज़िश करने की ज़रूरत नहीं होती। भले क़िरा'त जितनी लंबी कर ली जाए मगर वर्ज़िश सिर्फ़ चार रकअत है।

उसके बाद हमने दोपहर का खाना खाया और माशाअल्लाह ख़ूब पेट भरकर खाया। खाना खाने से शूगर लेवल ऊपर चला गया। अब चार रकअतें नहीं बल्के बारह रकअतें बना दी गयीं के अब तुम्हें ज़्यादा वर्ज़िश करने की ज़रूरत है। यानी अगर तुम ये वर्ज़िश करोगे तो तुम्हारा शूगर लेवल कंट्रोल हो जाएगा।

जब बारह रकअतें पढ़ने से शूगर लेवल कम हो गया तो फिर अस्र की नमाज़ में चार रकअतें आपशनल (ग़ैर मौक्कदा) बना दी गयीं के अगर तुम चाहो तो पढ़ लो वरना न कोई बात नहीं। तुम्हें माफ़ कर देंगे और बाक़ी चार फ़र्ज़ क़रार दी गयीं।

हो सकता है के किसी को अस्र के वक़्त भूक लगी हो और अस्राना में कुछ खा लिया हो या उसने चाय पी ली हो या आइस क्रीम खाई हो। इस तरह शूगर लेवल ज़रा हाई हो सकता है। इसलिए मग़रिब की नमाज़ में सात रकअतें बना दी गयीं।

आमतौर पर मग़रिब के बाद इशा का खाना खाया जाता है। जब हमने मग़रिब के बाद भारी खाना खाया तो शूगर लेवल फिर हाई हो गया। अब सात रकअतों पर हर्गिज़ गुज़ारा नहीं चल सकता था। इसलिए सत्रह रकअतें बना दी गयीं। अब यहाँ पर ज़हन में सवाल पैदा होता है के दोपहर में तो बारह से काम चल गया था। अब बारह क्यों नहीं, सत्रह क्यों? फ़रमाया के दोपहर में बारह रकअतों के बाद तुमने अभी जागकर काम करना था और शूगर लेवल डाउन होन के चान्सेज़ थे और अब इशा के बाद

तुमने सोना है लिहाज़ा बारह से काम नहीं चलेगा बल्के अब सत्रह रकअतें पढ़नी पड़ेंगी।

अल्लाह तआला की शान देखिए के रमज़ानुल मुबारक में तो बंदा सुबह रोज़ा रखता है औ सारा दिन भूका प्यासा रहता है तो शाम के वक़्त जब इफ़्तारी होती है तो फिर उस वक़्त ख़ूब भूक लगी होती है। रोज़ेदार उस वक़्त अच्छी ओवर डाईटिंग कर लेते हैं। वो मिल्क शेक भी पी लेते हैं, जूस भी पी लेते हैं और खाने भी ख़ूब खाते हैं। इस तरह उनका शूगर लेवल एकदम हाई हो जाता है। जब बहुत ज़्यादा ओवर डाईटिंग कर लेते हैं तो परवरदिगार फ़रमाते हैं के अब तुम्हारा काम सत्रह रकअत से भी नहीं चलेगा बल्के अब तुम्हें बीस रकअत (तरावीह) भी अदा करनी पड़ेंगी ताके तुम्हारे जिस्म को सही फ़ायदा पहुँच सके।

परवरदिगार आलम अपने बंदों पर कितने मेहरबान हैं के इबादत भी ऐसी रखी के जिसका बंदों को ही रूहानी और जिस्मानी फ़ायदा पहुँच रहा होता है। जब कोई आदमी सफ़र में निकलता है तो सफ़र में मशक़्क़त होती रहती है। लिहाज़ा परवरदिगार आलम ने फ़रमाया के अच्छा जो फ़र्ज़ थे वो भी हमने आधे कर दिए और जो नफ़्ल थे वो भी तुम्हें माफ़ कर दिए। सुब्हानअल्लाह।

रमज़ानुल मुबारक के लिए प्लानिंग की ज़रूरत

अब रमज़ानुल मुबारक का महीना आने वाला है। ये हमारे लिए रूहानी और जिस्मानी फ़ायदों के दरवाज़े खोल देगा। लिहाज़ा हमें इसके लिए अभी से तैयार हो जाना चाहिए। अच्छा बंदा हर चीज़ को पहले से प्लान करता है। इसीलिए कहते हैं के Well plan, half done. यानी जिसका काम को तुम अच्छा प्लान कर

लोगे समझ लो के वो काम आधा हो गया। आज तो शादी की प्लानिंग भी एक साल पहले से करनी शुरू कर देते हैं। बिजनेस की प्लानिंग भी पहले से करते हैं। इसी तरह हमें रमज़ानुल मुबारक की भी पहले से प्लानिंग कर लेनी चाहिए के हमने उसे कैसे गुज़ारना है। इसकी प्लानिंग के लिए कोई वर्ज़िश तो नहीं करनी होती के भई इतनी डंड बैठकें रोज़ निकालनी शुरू कर दो। इसकी प्लानिंग ये है के आप अपनी मसरूफ़ियात को अभी से ऐसे बना दें के रमज़ानुल मुबारक में अपने आपको लाइट यानी हल्का फुलका रखने की कोशिश करें। घर में शादी हो तो बंदा पूरा महीने अपने आपको हल्का फुल्का रखता है के जी मेरे घर में शादी है, मैंने अपने आपको लाइट रखा हुआ है ताके मैं शादी भुगता लूँ। जैसे शादी गुज़ारने के लिए एक महीना अपना निज़ाम टाइट कर देते हैं। इसी तरह हमें भी चाहिए के हम भी अल्लाह तआला की मग़फ़िरत से वाफ़र हिस्सा पाने के लिए अपने गुनाहों को बख़्शवाने के लिए और अपने रब को मनाने के लिए रमज़ानुल मुबारक के महीने के लिए लाइट प्लानिंग करें। और हम ये काम कर सकते हैं कितने काम होते हैं जो बंदा खुद करता है। लिहाज़ा हमें चाहिए के हम रमज़ानुल मुबारक में अपने सफ़रों को, अपने कामों को और अपनी मीटिंगस को इस तरह प्लान कर लें के हम कुछ हल्के फुलके रहने की कोकिश करें। जब हम ज़हनी तौर पर कुछ फ़ारिग़ होंगे तो यकसूई से नमाज़ भी पढ़ सकेंगे और तरावही भी पढ़ सकेंगे और फिर प्रेशर भी नहीं होगा के हमने फ़लाँ मीटिंग में जाना है।

एक तो ये तैयारी है के हम अपने आपको ज़रा हल्का फुल्का करें। दूसरे ये के हम अपने आपको रमज़ानुल मुबारक के सैकचोल

के साथ एडजस्ट करने के लिए ज़हनी तैयार कर लें। आदमी के ऊपर एक डर सा होता है के अगर मैंने रोज़ा रख लिया तो कहीं में कमज़ोर न हो जाऊँ। हम कालेज में इंटरमीडियट क्लास में पढ़ते थे। वहाँ हमारा एक दोस्त था। उस वक़्त अठ्ठारह साल उम्र थी। उसका जिस्म इतना Bulky (भारी) था के उस वक़्त उसका वज़न एक सौ पाँ किलोग्राम था। लेकिन वो रमज़ानुल मुबारक के रोज़े नहीं रखता था। एक दिन हमने उससे पूछा के रमज़ानुल मुबारक के रोज़े क्यों नहीं रखते। तो वो कहने लगा के मेरी अम्मी कहती है के अगर तुम रोज़े रखोगे तो तुम कमज़ोर हो जाओगे।

अब आप ज़हन को तैयार कर लीजिए के अगर हमने एक महीना तक कम भी खाया तो हमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। हमारे जिस्म की ज़रूरत तो बहुत थोड़ी होती है लेकिन हमारी खाने की आदत बहुत ज़्यादा होती है। डाक्टरों ने लिखा है के जो इंसान तीन खजूरें खा ले उसको इतनी कैलोरी मिल जाती है के उसको तीन दिन तक भूक की वजह से मौत नहीं आ सकती। तीन खजूरों में इतनी ग़िज़ाइयत होती है।

हम जितना खाना खाने के आदी हैं रमज़ानुल मुबारक में उससे कुछ कम खाने की कोशिश करें। ये न हो के सुबह की नमाज़ से खट्टे डकार आने शुरू हो जाएं। और ऐसा भी न हों के हम बिल्कुल ही न खाएं। कुछ दोस्त ऐसा करते हैं के वो इशा के वक़्त इतना खा लेते हैं के उनके लिए सुबह के वक़्त उठना मुश्किल होता है। वों कहते हैं के चलो रात हीमें जो खा लिया सो खा लिया। बस इसी पर रोज़े की नीयत करके सो जाते हैं। ये तर्तीब ग़लत है। रमज़ानुल मुबारक को अपनी तबियत में ढालिए

बल्के अपने आपको रमज़ानुल मुबारक की तर्तीब पर चलाने की कोशिश कीजिए। सहरी खाना भी मुस्तक़िल एक इबादत है और तहज्जुद में नवाफ़िल पढ़ना भी एक मुस्तकिल इबादत है।

लैलतुल क़द्र पाने का आसान तरीक़ा

अब आख़िर में एक नुक्ता अर्ज़ कर दूँ। वो ये के अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त बड़े करीम हैं। उन्होंने रमज़ानुल मुबारक में एक रात ऐसी बनाई जिस लैलतुल क़द्र कहते हैं। इसकी तलाश के लिए एतिकाफ़ में बैठा जाता है। लेकिन अगर कोई चाहे के मुझे रमज़ानुल मुबारक में लैलतुल क़द्र में इबादत का सवाब मिले तो उसको पाना बड़ा आसान है। बल्के हर बंदे के दिल में तमन्ना होती है के उसे लैलतुल क़द्र में इबादत करने का सवाब मिले। हमें सवाब मिल सकता है, मगर कैसे?

इसके लिए ये नुक्ता सुन लीजिए। ये बड़ा पक्का नुक्ता है। मालूम नहीं के कितने अल्लाह वालों की सोहबत में रहने के बाद ये नुक्ता मिला है।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं के के वो एक रात होती है जो हज़ार महीनों की इबादत से बेहतर होती है।

इस रात में सलामी और ख़ैर व बरकत नाज़िल होती है। ये सलामती व ख़ैर बरकत कब नाज़िल होती है। इसका किसीको पता नहीं। कोई नहीं कह सकता के किस रात में कितने बजे वो बरकतें नाज़िल हों मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक इशारा कर दिया। मुफ़स्सिरी ने लिखा है के परवरदिगार फ़रमाते हैं के जिस रात में भी वो बरकतें नाज़िल होती हैं

वो बरकात मतलऐ फ़ज्र (तुलू सुबह सादिक़) तक बाक़ी रहती हैं।

यहाँ से ये नुक्ता मिला के जब भी लैलतुल क़द्र होगी और उसकी ख़ास बरकतें जब भी शुरू होंगी वो शुरू होकर सुबह सादिक़ तक ज़रूर रहेंगी। लिहाज़ा हम जैसे कमज़ोर मोमिन जो सारी रात इबादत नहीं कर सकते जब रोज़ा रखने के लिए सहरी में उठते हैं अगर उस वक़्त हम तजहज्जुद के चंद नफ़ल भी पढ़ लें तो यक़ीनन हमें लैलतुल क़द्र की इबादत का सवाब मिल जाएगा।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें रमज़ानुल मुबारक में ज़्यदा से ज़्यादा इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे और इस महीने को हमारे लिए रहमत बनाकर हमारी परेशानियों को दूर फ़रमा दे। आमीन।

﴿وَاٰخِرُ دَعْوٰنَا اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾